(٩٠) (९०)

اگر عدالت دیوانی یا محکمہ اپیل یا منصفی سے صیغہ عدالت دیوانی کی تعمیل سمن وغیرہ کے واسطے لکہا آوے تو اوسکی تعمیل بموجب ہدایت ١٩ ستمبر ١٨٩١ء کراتے رہین اور محکمہ اپیل اور عدالت دیوانی کو بہی اطلاع تحریر ہو۔

١ نمبر شمار	٢ تاریخ منظوری
٩١	٢٨ دسمبر ١٨٩٣ء

(٩١) (९१)

٣ خلاصہ

درخواست ہاے رخصت مین سابقہ رخصت کا حال بہی درج ہوکر آیا کرے۔

٤ مضمون

محکمات ماتحت سے جو درخواست منظوری رخصت کی محکمہ عالیہ مین آتی ہین اون مین یہہ حال درج ہوکر نہین آتا کہ درخواست دہندہ نے رخصت اس سال مین پہلی کسقدر رخصت لی ہے لہذا معرفت سرداران اپیل کے جملہ حکام ماتحت کو اطلاع دی جاوے کہ جو درخواست رخصت کی آوے اوس مین یہہ حال بہی درج ہوکر آیا کرے کہ سائل نے سال بہر مین کس قدر رخصت پہلے لی ہے اور وہ رخصت رعایتی تہی یا عیوضی پر فقط

تمام شد

अगर अदालत दीवानी या महकमः अपील या मुनसफी से सीगे अदालत दीवानी की तामील समन वगैरह के वास्ते लिखा आवे तो उसकी तामील बमूजिब हिदायत १९ सितम्बर सन १८९१ ई. कराते रहें और महकमः अपील और अदालत दीवानी को भी इत्तलात हरीर हो-

१ नंबर शुमार	२ तारीख मंजूरी
९१	२८ दिसंबर सन १८९३ ई.

३ खुलासा

दरख्वास्त हाय रुखसत में साबिकः रुखसत का हाल भी दर्ज होकर आया करे-

४ मजमून

माहिकमात मातहत से जो दरख्वास्त मंजूरी रुखसत की महकमः आलियः में आती हैं उनमें यह हाल दर्ज होकर नहीं आता कि दरख्वास्त दिहंदः ने रुखसत इस साल में पहले किस क़दर रुखसत ली है लिहाज़ा मारफत सिरदारान अपील के जुमले हुक्काम मातहत को इत्तला दी जावे कि जो दरख्वास्त रुखसत की आवे उसमें यह हाल भी दर्ज होकर आया करे कि सायल ने साल भर में किस क़दर रुखसत पहले ली है और वः रुखसत रिआयती थी या ऐवजी पर-

—— ०(०)० ——

यह उनकी ग़लत फ़हमी है और इसकी वजह यह मालूम होती है कि मुख़्तारान अदालत ने जो कैफियत अदालत से मुनसफ़ी के नाम व हवाले हुक्म ६ अगस्त सन् १८९३ ई० जिसके जारी करने की उनको कोई जरुरत न थी जारी की उसके उनवान में यह इबारत (कि दरबारे तामील समन महकमात सदरा कि बाला बजरये थानेदारान व तहसीलदारान हुआ करे) और ईजाद करदी - क्योंकि निज़ामत सवाई जैपुर से महकमः फोजदारी व अदालत दीवानी व अपील के बरखिलाफ हिदायत नंबरी (७९) सन् १८८७ ई० अमल करने की शिकायत की गई है और इनही हरसः महकमात को यहां से बजरये हुक्म ६ अगस्त सन् १८९३ ई० हिदायत की तरफ़ तवज्जुह दिलाई है –

कोई आम हुक्म न था कि अदालत दीवानी ने मुनसफ़ी को भी इत्तलादी और जो इत्तला दी वो ह तो दुरस्त ही सही मगर उनवान में कैफियत की इबारत जो बढादी यह तो बिलकुल नावाजिब किया कि जिसकी वजह से यह नोबत पहोची लिहाजा मुनसफ़ी को लिखा जावे कि ब मूजिब हुक्म १२ नोंबर सन् १८९३ ई० तामील करें यहां से निजामतों को ताकीद लिख दी गई है और जुमले निजामतों को भी लिखा जावे कि

یہہ اون کی غلط فہمی ہے اور اسکی وجہ یہہ معلوم ہوتی ہے کہ مختاران عدالت نے جو کیفیت عدالت سے منصفی کے نام بحوالہ حکم ۶ اگست سنہ ۱۸۹۳ء جسکے جاری کرنے کی اونکو کوئی ضرورت نہ تھی جاری کی اوسکے عنوان مین یہہ عبارت (کہ درباره تعمیل سمن محکمات صدر کہ بالا بذریعہ تہانہ داران و تحصیلداران ہوا کرے) اور ایزاد کردی کیونکہ نظامت سوائی جےپور سے محکمہ فوجداری و عدالت دیوانی واپیل کے برخلاف ہدایت نمبری (۷۹) سنہ ۱۸۸۷ء عمل کرنے کی شکایت کی گئی ہے - اور ان ہی ہر سہ محکمات کو یہاں سے بذریعہ حکم ۶ اگست سنہ ۱۸۹۳ء ہدایت کی طرف توجہ دلائی گئی ہے -

کوئی عام حکم نہ تہا کہ عدالت دیوانی نے منصفی کو بہی اطلاع دے اور جو اطلاع دے وہ تو درست ہی صحیح مگر عنوان مین کیفیت کی عبارت جو بڑہادی یہہ تو بالکل ناواجب کیا کہ جسکی وجہ سے یہ نوبت پہونچی - لہذا منصفی کو لکہا جاوے کہ بموجب حکم ۱۲ نومبر سنہ ۱۸۹۳ء تعمیل کرین یہان سے نظامتون کو تاکید لکہدی گئی ہے - اور جملہ نظامتون کو بہی لکہا جاوے

(۹۰)
(۳۵)

रास्त थाने दारान व तहसीलन
से कराई जाया करे-इस हिदा
खास मुनसफी के समनों कि तामी
की बहेस नहीं है बल्कि जुर्माना वगैरः की कार
बाबत बहेस है-अलबत्तः ३ जुलाई
सन् १८८८ ई. को मुनसफी के समनों की खा
तामील के वास्ते हिदायत जारी हुई है कि
मारफ़त बाअख़्तियार तहसीलदारान और
नायबान निजामत के कराई जावे-

लेकिन यह हिदायत सीगे कलक्टरी से
१९ सितम्बर सन् १८९१ ई. को रोबकार जा
री होने पर कि तहसीलदारान की मारफ़त
सीगे अदालत दीवानी की कारवाई तामी
लात न हुआ करे-

यों तरमीम हो गई कि सन् १८९१ ई. के रो
बकार में दर्ज हो गया है कि-

अदालत दीवानी या फौजदारी से कि
सी समन की तामील या तलबी आसामि
यान की ज़रूरत हो तो वह भी नायब व अहे
लकारान सीगे अदालतेन से होती रहे
तहसीलदारान की मारफ़त न कराई जावे-

गर्ज़े कि साफ़ हिदायत हो चुकी कि सी
गे अदालत दीवानी की तामील मारफ़
त निज़ामत हस्ब मुन्दरजे बाला होती रहे

मुनसिफ़ान जो ६ अगस्त सन् १८९३
ई. के हुक्म से ऐसा समझ गये हैं कि मुनस
फी के समनों की तामील थानेदार करेंगे

براہ راست تہانہ داران و تحصیلداران
سے کرائی جایا کرے - اس ہدایت
مین خاص منصفی کے سمنون کی تعمیل کی
بحث نہین ہے بلکہ جرمانہ وغیرہ کی
کارروائی کی بابت بحث ہے -
البتہ ۳ جولائی ۱۸۸۸ع کو منصفی کے
سمنون کی خاص تعمیل کے واسطے
ہدایت جاری ہوئی ہے کہ معرفت بااختیار تحصیلداران
اور نائبان نظامت کے کرائی جاوے -

لیکن یہہ ہدایت صیغہ کلکٹری سے ۱۹
ستمبر ۱۸۹۱ع کو روبکار جاری ہونے
پر تحصیلداران کی معرفت صیغہ
عدالت دیوانی کی کارروائی تعمیلات
نہوا کرے -

یون ترمیم ہو گئی کہ ۱۸۹۱ع کی روبکار
مین درج ہو گیا ہے کہ -

عدالت دیوانی یا فوجداری سے کسی
سمن کی تعمیل یا طلبی آسامیان کی
ضرورت ہو تو وہ بہی نائب و
اہلکاران صیغہ عدالتین سے ہوتی رہے
تحصیلداران کی معرفت نکرائی جاوے -

غرضکہ صاف ہدایت ہو چکی کہ صیغہ عدالت
دیوانی کی تعمیل معرفت نظامت
حسب مندرجہ بالا ہوتی رہے -

منصفان جو ۶ اگست ۱۸۹۳ع
کے حکم سے ایسا سمجہہ گئے ہین کہ منصفی
کے سمنو کی تعمیل تہانہ دار کرین گے

(۹۱)
(८०)

इरां महकमः आलियः से १२ नोम्बर सन् १८९३ ई॰ को जवाब लिखा गया कि अदालत दीवानी सीग़े की तामील मारफ़त पुलिस के कराना खिलाफ़ ज़ाबिनः है आयंदः मारफ़त पुलिस के ऐसी तामीलात कराना नहीं चाहियेजो तामील कराना हो उसकी बाबत निज़ामत को लिखना चाहिये-

इसके जवाब मे मुंसिफ़ान ने बतरसील नक़ल कैफ़ियत महकमः आलियः मोसूमः महकमः अपील मवर्रिखः ६ अगस्त सन् १८९३ ई॰ व नक़ल कैफ़ियत अदालत दीवानी मोसूमः मुनसफी ब हवालः कैफियत महकमः आलियः मवर्रिखः ६ अगस्त सन् १८९३ ई॰ लिखा है कि यहांसे ब पाबंदी हिदायत महकमः आलियः तामील शुरू हुई है अब महकमः आलियः से यह हुक्म सादिर हुआ पस हिदायत साबिक़ः व हुक्म हाल पर गौर होकर हिदायत होनी चाहिये कि कौनसे हुक्म का अमलदरामद रक्खा जावे चुनाचे काग़ज़ात मुसतदलः मुंसफी बरामद कराके देखे गये और हिदायत पर नजर डाली गई तो मालूम हुआ कि हिदायत नंबरी (७९) जो २९ नोम्बर सन् १८८७ ई॰ को जारी हुई है उस में एक आम तौर पर इस कार्रवाई की बहस की गई है कि ऐसी तामील समन व वसूल जुर्मानः की कार्रवाई बिला विसातत निज़ामत बाला बाला

بران محکمہ عالیہ سے ۱۲ نومبر ۱۸۹۳ء کو جواب لکھا گیا کہ عدالت دیوانی صیغہ کی تعمیل معرفت پولیس کے کرانا خلاف ضابطہ ہے آئندہ معرفت پولیس کے ایسی تعمیلات کرانا نہین چاہیئے جو تعمیل کرانا ہو اوس کی بابت نظامت کو لکھنا چاہیئے۔

اس کے جواب مین منصفان نے بترسیل نقل کیفیت محکمہ عالیہ موسومہ محکمہ اپیل مورخہ ۶ اگست ۱۸۹۳ء و نقل کیفیت عدالت دیوانی موسومہ منصفی بحوالہ کیفیت محکمہ عالیہ مورخہ ۶ اگست ۱۸۹۳ء لکھا ہے کہ یہان سے بپابندی ہدایت محکمہ عالیہ تعمیل شروع ہوئی ہے۔ اب محکمہ عالیہ سے یہ حکم صادر ہوا پس ہدایت سابقہ و حکم حال پر غور ہوکر ہدایت ہونی چاہیئے کہ کونسے حکم کا عملدرآمد رکھا جاوے۔ چنانچہ کاغذات مستدلہ منصفی برآمد کراکر دیکھے گئے اور ہدایت پر نظر ڈالی گئی تو معلوم ہوا کہ ہدایت نمبری (۷۹) جو ۲۹ نومبر ۱۸۸۷ء کو جاری ہوئی ہے اور اس مین ایک عام طور پر اس کارروائی کی بحث کی گئی ہے کہ ایسی تعمیل سمن و وصول جرمانہ کی کارروائی بلاوساطت نظامت بالا بالا

(۸۹)
(८९)

اگر تحقیقات سے جائداد زیادہ قیمت
کی نظر آوے تو بقدر زر ڈگری جائداد
زیر قرقی رکھکر ماباقی جائداد کو مستثنیٰ کردیا
جاوے۔

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۹۰	۲۴ دسمبر ۱۸۹۳ع

(۹۰)
(९०)

۳
خلاصہ

بر ضمیمہ ہدایات نمبری ۹۷ مجریہ ۲۹ نومبر ۱۸۸۷ع و نمبری ۱۶۱ مجریہ ۱۶ ستمبر ۱۸۹۱ع بابت تعمیل سمن ہائے منصفی

۴
مضمون

بمقدمہ کانہا ولد گوبند رام دائرہ مدعی۔ بالا و کانہا پسران چھوٹو کلال مدعا علیہم۔ دعوے ۱۵ع بابت خط رہن۔ منصفان نے لکھا کہ اندرین مقدمہ سمن برائے تعمیل تھانہ سوائی جے پور میں بھیجے گئے تھے۔ محرر نے واپس کئے اور لکھا کہ معرفت تھانہ کے ایسی تعمیل ہونیکی ممانعت ہے۔ اور محکمہ عالیہ سے ۶ اگست ۱۸۹۳ع کو ہدایت ہو چکی ہے کہ معرفت تھانہ داران کے سمن کی تعمیل کرائی جاوے پس گیری کے نام اس ہدایت کی تعمیل کی تھانہ داران سے کرانے کے واسطے لکھا دیا جاوے

अगर तहक़ीक़ात से जायदाद ज़ियादः क़ीमत की नजर आवे तो बक़दर ज़र डिगरी जायदाद ज़ेर क़ुरक़ी रखकर मावक़ी जायदाद को मुसतसना करा दिया जावे-

१ नंबर शुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
९०	२४ दिसंबर सन् १८९३ ई.

३
ख़ुलासा

बज़मीमः हिदायात नंबरी ९७ मजरयः २९ नोवंबर सन् १८८७ ई. व नंबरी १६१ मजरये १६ सितंबर सन् १८९१ ई. बाबत तामील समन हाय मुनसफ़ी-

४
मज़मून

बमुक़दमः कान्हा वल्द गोविंदराम दायरे गा मुद्दई- बाला व कान्हा पिसरान छोटू कलाल मुद्दाइलेहुम- दावा १५) रु. बाबत खत रहन मुनसिफान ने लिखा कि अन्दरीं मुक़दमः समन बराय तामील थाना सवाई जैपुर में भेजे गये थे- मुहर्रिर ने वापिस किये और लिखा कि मारफ़त थाने के ऐसे तामील होने की मुमानिअत है- और महकमः आलियः से ६ अगस्त सन् १८९३ ई. को हिदायत हो चुकी है कि मारफ़त थानेदारों के समन की तामील कराई जाय पसगीराई के नाम इस हिदायत की तामील थानेदारन से कराने के वास्ते लिखा दिया जावे-

मद्यून के नीलाम कराये जाने की दरख्वास्त करते
हैं और तफ़सील जायदाद की भी दर्ज दरख्वास्त
करते हैं और अदालत इब्तदाई में जहां मुकद्दमा
इजराय डिगरी दायर होता है हस्ब दरख्वास्त डि
गरीदार कुरकी व नीलाम की कार्रवाई शुरू हो जा
ती है. बाज़ वक्त ऐसी सूरत भी पेश आती है कि ज़रडि
गरी कम होता है और जायदाद ज़ियादः मालियत की नीला
म हो जाती है और मद्यून को बज़रये मुराफ़ाया बमु
हक्मः आलियः यह उज़र करना पड़ता है और का
र्रवाई मुकद्दमः इजराय डिगरी को तवालत होती
है और फ़रीक़ैन मुकद्दमः हैरान होते हैं और
अदालत का वक्त भी इसमें सर्फ़ होता है इसलि
ये मुनासिब मालूम होता है कि ऐसी सूरत पेश
आने की हालत में जिस तौर पर कार्रवाई होना
वाजिब है इसकी सराहत की जाकर आम हि
दायत जारी की जाय लिहाज़ा हिदायत जा
री की जाती है कि —

जब कोई डिगरीदार अपने ज़रडिगरी
की तादाद से ज़ियादः कीमत की जायदाद
मद्यून की कुर्क करावे तो चाहिये कि जब इश्त
हार नीलामी जायदाद मद्यून पर चस्पां
किया जावे - उस इश्तहार की मीयाद में जि
हां से वोह इश्तहार जारी हुआ है वहां से मद्
यून इस की बाबत अपने उज़रात पेश
करे बाद पेश होने उज़रात के हाकिम मु
जविज़ इस अमर की तहक़ीक़ात करले
वे कि फ़िल वाक़े जायदाद मद्यून तादाद
ज़रडिगरी से ज़ियादः क़ीमत की है या क्या

مدیون کی نیلام کرائے جانیکی درخواست
کرتے ہیں اور تفصیل جائداد کی بھی درج
درخواست کردیتے ہیں اور عدالت ابتدائی میں
جہان مقدمہ اجرا ڈگری دائر ہوتا ہے حسب
درخواست ڈگریدار قرقی و نیلام کی کارروائی
شروع ہوجاتی ہے - بعض وقت ایسی صورت
بھی پیش آجاتی ہے کہ زر ڈگری کم ہوتا ہے اور جائداد
زیادہ مالیت کی نیلام ہوجاتی ہے اور مدیون کو
بذریعہ مرافعہ یا محکمہ عالیہ یہہ عذر کرنا پڑتا ہے اور
کارروائی مقدمہ اجرا ڈگری کو طوالت ہوتی ہے
اور فریقین مقدمہ حیران ہوتے ہیں اور عدالت کا وقت
بھی اسمین صرف ہوتا ہے اسلئے مناسب معلوم ہوتا ہے
کہ ایسی صورت پیش آنیکی حالت میں جسطور پر کارروائی
ہونا واجب ہے اسکی صراحت کیجاکر عام ہدایت
جاری کی جاوے لہذا ہدایت جاری
کی جاتی ہے کہ -

جب کوئی ڈگریدار اپنی زر ڈگری کی
تعداد سے زیادہ قیمت کی جائداد مدیون
کی قرق کراوے تو چاہیے کہ جب
اشتہار نیلامی جائداد مدیون پر چسپان
کیا جاوے اوس اشتہار کی میعاد میں جہانسے
وہ اشتہار جاری ہوا ہے وہان سے مدیون
اسکی بابت اپنے عذرات پیش کرے
بعد پیش ہونے عذرات کے حاکم مجوز
اس امر کی تحقیقات کر لیوے کہ فی الواقع
جائداد مدیون تعداد زر ڈگری
سے زیادہ قیمت کی ہے یا کیا -

(८८)

मातहत ने गल्ले ही दिलवाये जाने की तजवीज़ की मगर इजराय के वक्त बईं वजह कि डिगरी के वक्त कुछ हर्ज होता है हंगाम इजरा कुछ होता है फरीकैन की जानिब से उजरात चंद दरचंद हुआ करते हैं इस लिये बराय आयंदः यह हिदायत जारी की जाती है कि ऐसे दावा गल्ला के जो पेश हों उन की रसूम तो उस ही रोज के निर्ख से ली जावेगी जिस रोज दावा इबतिदाई महकमः में या मुराफा महिकमः बालादस्त में दायर रहे - और इजरा के वक्त तादाद जर डिगरी की उस निर्ख गल्ले से मुकर्रिर की जाय जो निर्ख गल्ले का बतारीख दायर है मुक़दमः इजराय डिगरी हो याकि डिगरीदार अगर असल गल्ला मुतदाविय: लेना चाहे तो उसी वक्त उस जर नक़द से उसी क़दर गल्ला ख़रीद सके -

१ नंबर शुमार	२ तारीख मनजूरी
८९	१४ दिसम्बर सन् १८९३ ई

(८९)

३
खुलासा

हिदायत बाबत कुरकी व नीलाम जायदाद बक़दर मतालिबः डिगरी-

४
मज़मून

मुक़द्दमात इजराय डिगरी में अकसर डिगरीदारान जायदाद ग़ैर मनकूलः

(۸۸)

ماتحت نے غلہ ہی دلوائے جانے کی تجویز کی مگر اجرائے کے وقت باین وجہ کہ ڈگری کے وقت کچھہ ہرج ہوتا ہے ہنگام اجرا کچھہ ہوتا ہے فریقین کی جانب سے عذرات چند در چند ہوا کرتے ہیں اسلئے برائے آیندہ یہہ ہدایت جاری کیجاتی ہے کہ ایسے دعوی غلہ کے جو پیش ہوں اونکی رسوم تو اوس ہی روز کے نرخ سے لیجاوے گی جس روز دعوی ابتدائی محکمہ میں یا مرافعہ محکمہ بالا دست میں دائر ہو - اور اجرا کے وقت تعداد زر ڈگری کی اوس نرخ غلہ سے مقرر کیجاے جو نرخ غلہ کا بتاریخ دائر ہے مقدمہ اجراء ڈگری ہو یاکہ ڈگریدار اگر اصل غلہ متدعویہ لینا چاہے تو اوسہی وقت اوس زر نقد سے اوسیقدر غلہ خرید سکے -

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۸۹	۱۴ دسمبر ۱۸۹۳ع

(۸۹)

۳
خلاصہ

ہدایت بابت قرقی و نیلام جائداد بقدر مطالبہ ڈگری -

۴
مضمون

مقدمات اجراء ڈگری مین اکثر ڈگریداران جائداد غیر منقولہ

اور مضروب ہوکر مرگیا اور کوئی امر
مشتبہ تحقیقات سے ظاہر نہیں ہوا نہ
ورثاے متوفی کو کسی پر کچھہ دعوے و
شبہہ تہا حکام ماتحت نے بتجویز اخراج
مثل کو بنا بر منظوری کے بہیجا-
مگر ناظم جی دوسرے نے یہہ بہی درج تجویز
کیا کہ پولیس نے ناحق مثل بنائی ایسے
وقوعہ کی صرف اطلاعی رپٹ درج
روزنامچہ ہوجانا کافی ہے مقدمہ مرتب
ہوکر محکمہ عالیہ تک جانا ضرور نہیں
لیکن یہہ رائے ناظم جی کی عملدرآمد
کے خلاف ہے اس قسم کے مقدمات
مرتب ہوتے ہین اور ہونے چاہئین تاکہ
کوئی واردات اس پیرایہ مین دب نہ جائے-
بواپسی مثل منظوری اخراج و تعمیل
سرداران اپیل کو لکہا گیا-

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۸۸	۵ دسمبر ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

ہدایت بابت نالشات دعوی غلہ و
اوسکے اجرائے کی-

۴

مضمون

ان دنون مین کئی مقدمات ایسے ملاحظہ
مین گزرے کہ مدعیان نے دادوستد غلہ کی
بابت غلہ کی تعداد ظاہر کرکر دعوی دائر کئے اور حکام

और मजरूब होकर मरगया और कोई अम
रमुशतबा तहक़ीक़ात से ज़ाहिर नहीं हुआ
न वुरसाय मुतवफ़ा को किसी पर कुछ दावा
वो शुबः था हुक्काम मातहत ने बतजवीज़ इख़
राज मिसिल को बिनाबर मनज़ूरी के भेजा-
मगर नाज़िम जी दोयम ने यह भी दर्ज तज
वीज़ा के थाकि पुलिस ने नाहक़ मिसिल बना
ई ऐसे वकूऐ की सिर्फ़ इत्तलाई रपट दर्ज रो
जनामचः होजाना काफ़ी है मुक़दमः मुरत्ति
ब होकर महकमः आलियः तक जाना ज़रूर
नहीं मगर यह राय नाज़िम जी की अमलदरा
मद के खिलाफ़ है इस क़िस्म के मुक़दमात
मुरत्तिब होते हैं और होने चाहिये ताकि कोई
वारदात इस पेराये में दब न जाय-
बवापिसी मिसिल ब मनज़ूरी इख़राज व तामील
सिरदारान अपील को लिखागया-

१	२
नंबर शुमार	तारीख मंज़ूरी
८८	५ दिसंबर सन १८९३ ई०

३

खुलासा

हिदायत बाबत नालिशात दावे गल्लः व उस
के इजराय की-

४

मज़मून

इन दिनों में कई मुक़दमात ऐसे मुलाहिज़े में गुज़रे कि
मुद्दईयान ने दादोसितद गल्ले की बाबत गल्ले की
तादाद ज़ाहिर करके दावे दायर किये और हुक्काम

पस अफसरान की राय पर हसर मुआयना कराने का रखना मुनासिब नहीं है- और इसी वजह से हिदायत मुनदर्जः सदर जारी की गई थी -

लिहाजा गीराई को लिखा जावे कि अफसरान थानेजात को मुकर्रर ताकीद तामील हिदायत मजरयः साबिक करके तामील कराई जावे- और गीराई से उसकी निगरानी कीजावे जिस की जानिब से अदम तामील जाहिर हो उसकी निसबत तजवीज मुनासिब अमल में आवे फक्त और नीज बाज मुकद्दमात कोतवाली में भी यह नुक्स देखा गया कि नाश का मुआयनः डाक्टरी नहीं कराया गया लिहाजा फौजदारी में भी एक नकल वासते तामील के भेजी जावे-

१ नंबर शुमार	२ तारीख मंजूरी
८७	२५ नोम्बर सन् १८९३ ई.

३

खुलासा

दरबाब तरतीब मुकदमात फौतीदगी इत्तफाकियः -

४

मजमून

मुकद्दमः फौतीदगी इत्तफाकियः मुसम्मा चुन्ना मजदूर मुरत्तिबः निजामत दोसः से जाहिर हुआ कि चुन्ना मजकूर मजदूरी पर दीवार तोड़ता था कि दीवार के साथ खुद भी गिरा

(۸۶)

(८६)

پس افسران کی راے پر حصر معائنہ کرانے کا رکہنا مناسب نہین ہے - اور اسی وجہ سے ہدایت مندرجہ صدر جاری کی گئی تھی -

لہذا گیرائی کو لکہا جاوے کہ افسران تہانجات کو مکرر تاکید تعمیل ہدایت مجریہ سابق کرکے تعمیل کرائی جاوے اور گیرائی سے اوس کی نگرانی کیجاوے جسکی جانب سے عدم تعمیل ظاہر ہو اوسکی نسبت تجویز مناسب عمل مین آوے فقط اور نیز بعض مقدمات کوتوالی مین بہی یہہ نقص دیکہا گیا کہ نعش کا معائنہ ڈاکٹری نہین کرایا گیا لہذا فوجداری مین بہی ایک نقل واسطے تعمیل کے بہیجی جاوے -

(۸۷)

(८७)

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۸۷	۲۵ نومبر ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

درباب ترتیب مقدمات فوتیدگی اتفاقیہ -

۴

مضمون

مقدمہ فوتیدگی اتفاقیہ مسمی چنا مزدور مرتبہ نظامت دوسہ سے ظاہر ہوا کہ چنا مذکور مزدوری پر دیوار توڑتا تھا کہ دیوار کے ساتھ خود بہی گرا

वाजिब नहीं है गर्ज इससे कार्रवाई जल्द होने से है -

१ नंबर शुमार	२ तारीख मंजूरी
८६	२५ नोम्बर सन् १८९३ ई॰

३

खुलासा

ब ताईद हिदायत नम्बरी (४२) मजरये २८ मई सन् १८९३ ई॰ बाबत मुआयनः डाकटरी नाशहाय फोती गैर मामूली -

४

मज़मून

तहकीकात मुकद्दमात गरकीदगी - फोतीदगी की बाबत व मुआयनः कार्रवाई हाय थाने जात २८ मई सन् १८९३ ई॰ को मारफत गीराई के थाने दारों को हिदायत की गई थी कि जब फोती मामूली न हो तब नाश का मुआयना जरूर कराया जावे -

मगर जो अमसलः इस किस्म की महकमः आलियः में मनजूरी के वास्ते आती हैं उनके मुलाहिजः से जाहिर है कि इस हिदायत की पूरी पूरी तामील थाने जात में नहीं होती है अकसर मुकद्दमात ऐसे देखे गये कि अफसरान थाने ने यह लिखकर कि कोई अमर मुशतबः नहीं पाया जाता इजाजत दाग की देदी और नाश का मुआयना डाकटरी नहीं कराया गया और ज़ाहिर है कि जिन मुक़द्दमात की तहकीकात होती है वोह मर्ग मामूली नहीं हुआ करती

واجب نہیں ہے غرض اس سے کارروائی جلد ہونے سے ہے -

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۸۶	۲۵ نومبر ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

بتائید ہدایت نمبری (۴۲) مجریہ ۲۸ مئی ۱۸۹۳ء بابت معائینہ ڈاکٹری نعش ہائے فوتی غیر معمولی -

۴

مضمون

تحقیقات مقدمات غرقیدگی - فوتیدگی کی بابت معائینہ کارروائیہائے تہانجات ۲۸ مئی ۱۸۹۳ء کو معرفت گیرانی کے تہانہ داران کو ہدایت کی گئی تہی کہ جب فوتی معمولی نہو تب نعش کا معائینہ ضرور کرایا جاوے -

مگر جو امثلہ اس قسم کی محکمہ عالیہ میں منظوری کے واسطے آتی ہیں اونکے ملاحظہ سے ظاہر ہے کہ اس ہدایت کی پوری پوری تعمیل تہانجات میں نہیں ہوتی ہے اکثر مقدمات ایسے دیکہے گئے کہ افسران تہانہ نے یہہ لکہکر کہ کوئی امر مشتبہ نہیں پایا جاتا اجازت داغ کی دیدی اور نعش کا معائینہ ڈاکٹری نہیں کرایا گیا اور ظاہر ہے کہ جن مقدمات کی تحقیقات ہوتی ہے وہ مرگ معمولی نہیں ہوا کرتی

यह तफ़रीक उस हिदायत में नहीं कीगई है कि जिस मेजिसटरेट के मुतअ़ल्लिक फ़ैसला उस मुक़द्दमे का हो उसके सामने तसदीक़ ऐसे बयान इक़बाली की कराई जाय - बलकि मक़सूद इजराय हिदायत मज़कूर का यह था कि मेजिसटरेट के सामने तसदीक़ होजाने पर मुलज़िम को मौक़ा इनकार का न मिले और बसूरत इनकार उसका बयान इनकारी क़ाबिल लिहाज़ न समझा जावे -

मगर बाज़ बाज़ हुक्काम मातहत ने इस हिदायत की मनशा के समझने में ग़लती की और ऐसा समझा कि बयान इक़बाली मुलज़िम का वोही हाकिम तसदीक़ करेगा कि जिसकी पेशी से फ़ैसलः उस मुक़द्दमः का सादिर कियाजायगा।

चुनान्चि एक मुक़द्दमः मुतअ़ल्लिक़ः निज़ामत दोसः में अफ़सर पुलिस बांदी कुई ने इज़हार आसामियान मुक़द्दमः संगीन की तसदीक़ मुंतज़िम हल्क़े बांदी कुई के सामने करानी चाही तो उसने इनकार करदिया कि यः मुक़द्दमः तअ़ल्लिक़ निज़ामत दोसः है हम तसदीक़ नहीं करसकते -

लिहाज़ा हुक्काम मातहत को बज़रीयः हिदायत साबिक़ मुत्तले किया जावे कि जब पुलिस किसी मुलज़िम इक़बाली मुक़द्दमः संगीन को वास्ते तसदीक़ बयान के पेश करे तो बमूजिब हिदायत के कार्रवाई तसदीक़ व क़लमबंदी बयान मुलज़िम की करदेनी चाहिये ब वजह तअ़ल्लुक निज़ामत दीगर के उसमें उज़र व इनकार करना

یہہ تفریق اوس ہدایت مین نہین کی گئی ہے کہ جس مجسٹریت کے متعلق فیصلہ اس مقدمہ کا ہو اوسکے سامنے تصدیق ایسے بیان اقبالی کی کرائی جاوے - بلکہ مقصود اجراے ہدایت مذکور کا یہہ تہا کہ مجسٹریٹ کے سامنے تصدیق ہوجانی پر ملزم کو موقع انکار کا نملے اور بصورت انکار اوس کا بیان انکاری قابل لحاظ نہ سمجہا جاوے -

مگر بعض حکام ماتحت نے اس ہدایت کی منشاء کے سمجہنے مین غلطی کی اور ایسا سمجہا کہ بیان اقبالی ملزم کا وہی حاکم تصدیق کریگا کہ جسکی پیشی سے فیصلہ اوس مقدمہ کا صادر کیا جائیگا -

چنانچہ ایک مقدمہ متعلقہ نظامت دوسہ مین افسر پولیس باندی کوئی نے اظہار آسامیان مقدمہ سنگین کی تصدیق منتظم حلقہ باندی کوئی کے سامنے کرانی چاہی تو اوسنے انکار کر دیا کہ یہہ مقدمہ تعلق نظامت دوسہ ہے ہم تصدیق نہین کر سکتے -

لہذا حکام ماتحت کو بذریعہ ہدایت سابق مطلع کیا جاوے کہ جب پولیس کسی ملزم اقبالی مقدمہ سنگین کو واسطے تصدیق بیان کے پیش کرے تو بموجب ہدایت کے کارروائی تصدیق و قلمبندی بیان ملزم کی کر دینی چاہیے بوجہ تعلق نظامت دیگر کے اوسمین عذر اور انکار کرنا

को बिनावर मनजूरी लिखाजावे और असल कागजात भेजेजावें - अब कागजात यहां आये गोर कियाजाता है तो राय मातहेत की दुरस्त मालूम होती है जवाब में मनजूरी लिखीजावे +

१ नंबरशुमार	२ तारीखमनजूरी
८५	२५ नोंबर सन १८९३ ई०

३
खुलासा

जमीमः हिदायत नंबरी ६२ मजरयः २० मार्च सन १८८४ ई० दर्बाब तसदीक इकबाल मुलाजिमान संगीन-

४
मजमून

२० मार्च सन १८८४ ई० को हिदायत नंबरी (६२) दरबाब तसदीक इकबाल मुलाजिमान संगीन जारी होचुकी है कि मुकद्दमात संगीन में जब कोई मुलाजिम इकरार वारदात का करे तब मुलाजिमान पुलिस फ़िलफ़ोर मुलजिम को रोबरू फ़ौजदार या नाजिम या उन तहसीलदारों के कि जिसको अखतयारात मेजिसटरेटी राजसे अता हुए हैं वासते कलमबंद कराने उसके इकरार के पेश कर दिया करें और हाकिमान मजकूर बिलातवक्कुफ़ फ़ौरन ऐसे मुलजिम के इज़हार अपने सामने खुद उस मुलजिम से बखूबी पूछकर लिखवा दिया करें और बाद तसदीक व सिबत दस्तखत मिसिल सुपुर्द पुलिस करके नकल फ़ौजदारी में जरिया को-

کو بنابر منظوری لکھاجاوے اور اصل کاغذات بھیجے جاوین - اب کاغذات یہان آئے غور کیاجاتا ہے تو رائے ماتحت کی درست معلوم ہوتی ہے جواب مین منظوری لکھی جاوے +

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۸۵	۲۵ نومبر ۱۸۹۳ع

۳
خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری (۶۲) مجریہ ۲۰ مارچ ۱۸۸۴ع درباب تصدیق اقبال ملزمان سنگین -

۴
مضمون

۲۰ مارچ ۱۸۸۴ع کو ہدایت نمبری (۶۲) درباب تصدیق اقبال ملزمان سنگین جاری ہوچکی ہے کہ مقدمات سنگین مین جب کوئی ملزم اقرار واردات کا کرے تب ملازمان پولیس فی الفور ملزم کو روبرو فوجدار یا ناظم یا اون تحصیلداران کے جنکو اختیارات مجسٹریٹی راج سے عطا ہوئے ہین واسطے قلمبند کرانے اوسکے اقرار کے پیش کردیا کرین اور حاکمان مذکور بلا توقف فوراً ایسے ملزم کے اظہار اپنے سامنے خود اوس ملزم سے بخوبی پوچھکر لکھوا دیا کرین اور بعد تصدیق و ثبت دستخط مثل سپرد پولیس کرکے نقل فوجداری مین بھیجدیا کرین -

(۸۴)
(۳۴)

یا نہین چنانچہ مختاران عدالت نے
باتفاق رائے منصفی بہیر را ظاہر کی کہ
شمار میعاد کا اوس تاریخ سے کیا جاتا ہے
کہ جس تاریخکو آخری رقم نام کی ہو یا جمع
تو اجرار ڈگری مین بہی آخری وصول سے
شمار میعاد کا ہونا واجب ہے خواہ عدالت کی
معرفت وصول ہوا ہو خواہ بطور خود دیا لیا
گیا ہو- بطور خود دینے لینے مین
عدالت کو اس امر پر غور کرنا ضرور ہوگا
کہ مدیون کو اس دینے سے اقرار ہے
یا نہین اگر اقرار ہووے تو شمار میعاد
کا اوس تاریخ سے کیا جاوے- اگر اقرار نہووے
تو عدالت سے باہر دیا گیا اسکے وضع
کرنے کی یا اسکی تحقیقات کرنیکے کوئی
ضرورت نہ سمجھی جاوے- مگر ہدایت جو
یکم مئی ۱۸۹۰ء کو جاری ہوئی ہے اوس
مین اسکی تصریح و توضیح صاف طور سے نہین ہے
اگر اوسمین تصریح درج ہوتی تو منصفان
کو اسمین کچھہ شک پیدا نہوتا- بنظر اصلاح
آیندہ اسکی توضیح ہدایت مین ہوجاوے
تو مناسب ہے مگر اس کی اصلاح
بمنظوری حکام بالادست ہوجانی واجب
لہذا کاغذات محکمہ اپیل مین بنا بر منظوری
صدر کے بہیجے جاوین- چنانچہ جب یہ کاغذات
محکمہ اپیل مین پہونچے تو سرداران اپیل
نے لکھا کہ رائے عدالت دیوانی ہمارے
نزدیک درست معلوم ہوتی ہے مع [illegible]

या नहीं चुनान्चि मुख्तारान अदालत ने बइ
त्तफ़ाक़ राय मुनसफ़ी यह राय ज़ाहिर की कि शुमा
र मीयाद का उस तारीख से किया जाता है कि जिस
तारीख को आख़िरी रकम नाम की हो या जमा की
हो इजराय डिगरी में भी आख़िरी वसूल से शुमा
र मीयाद का होना वाजिब है ख्वाह अदालत की
मारफ़त वसूल हुआ हो ख्वाह बतौर ख़ुद दिया
लिया गया हो बतौर ख़ुद देने लेने में
अदालत को इस अमर पर ग़ौर करना ज़रू
र होगा कि मदयून को इस देने से इक़रार है
या नहीं अगर इक़रार होवे तो शुमार मीयाद का
उस तारीख़ से किया जावे- अगर इक़रार न हो
वे तो अदालत से बाहर दिया गया इसके वजे
करने की या इसके तहक़ीक़ात करने की कोई
ज़रूरत न समझी जावे- मगर हिदायत जो
१ मई सन १८९० ई. को जारी हुई है उसमें उ
सकी तसरीह व तौज़ीह साफ़ तौर से नहीं है
अगर उसमें तसरीह दर्ज होती तो मुनसिफ़ान
को इसमें कुछ शक पैदा न होता बनज़र इस
लाह आयन्दः इसकी तौज़ीह हिदायत में हो
जावे तो मुनासिब है मगर इसकी इसलाह बमन
ज़ूरी हुक्काम बाला दस्त हो जानी वाजिब: लिहाज़ा
काग़ज़ात महकमः अपील में बिनाबर मनज़ू
री सदर के भेजा जावें- चुनान्चि जब यह काग़ज़ा
त महकमः अपील में पहुंचे तो सिरदारान अपी
ल ने लिखा कि राय अदालत दीवानी हमारे न
ज़दीक दुरुस्त मालूम होती है हम हुक्म आलिया

وتحصیل وغیرہ بن علیحدہ علیحدہ واقع ہوں
تو شحنہ یا تعلقدار جسجگہ سے پہلے مقرر کیا گیا ہو اوسی
کی معرفت دیگر بقایا کی وصول کی تسہیل و تعمیل بھی کرائے
ایسا نہو کہ ہر جگہ سے دو دو تین تین شحنہ تعلقدار مقرر کردی جاویں اور
باقیدار کی زیرباری و گانوکی بربادی ہو۔
اور یہہ ہی عمل سب ڈگریات
کی بابت جو ضبطی پیداوار وغیرہ ہو
اوسپر جاری رہے۔

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
نمبر ۸۴	۱۶ فروری سنہ ۱۸۹۳ء

۳
خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری ۶۳ مجریہ یکم مئی سنہ ۱۸۹۰ء بابت قاعدہ اجرائے ڈگریات۔

۴
مضمون

مقدمہ اجرائے ڈگری تعدادی [illegible]
ازان رام سہائے پوجاری
بنام پرشادی لال و خیراتی لال
کا نسبت مدعا علیہم ماتحت میں یہہ
بحث پیش آئی کہ اجرائے ڈگری
کا مقدمہ جو بعد چھہ سال کے دائر ہو
اس طرح پر کہ ڈگریدار اور مدیون میں
خانگی طور پر جو وصول ہوا اوس کے
آخری وصول کی رو سے ڈگری کے اجرا
کی میعاد باقی رہی ہو تو شمار میعاد کا
آخری وصول خانگی سے کیا جاوے

व तहसील वग़ैरह में अलहदा अलहदा वाक़े हों तो
शहना या तअल्लुक़ेदार जिस जगह से पहले
मुक़र्रर किया गया हो उसी की मारफ़त
दीगर बक़ाया के वसूल की सहील व तामील
भी कराली जावे ऐसा न हो कि हर जगह से दो दो
तीन तीन शहनः तअल्लुक़ेदार मुक़र्रर कर
दिये जावें और बाक़ीदार की ज़ेरबारी और गां
व की बरबादी न हो—
और यही अमल सब डिगरीयात की बाबत जो ज़ब्ती पैदावार
वग़ैरह हो उस पर जारी रहे—

१ नंबर शुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
८४	१६ फ़र्वरी सन् १८९३ ई॰

३
ख़ुलासा

ज़मीमः हिदायत नंबरी ६३ मजरयः १ मई
सन् १८९० ई॰ बाबत क़ायदः इजराय डि
गरीयात

४
मज़मून

व मुक़द्दमः इजराय डिगरी तादादी ९४)
रुपये १० आने ९ पाई अज़ां राम सहाय पु
जारी ब नाम परशादी लाल व खैराती ला
ल कायस्थ मुद्दा इलह— मातहत में यह
बहस पेश आई कि इजराय डिगरी का
मुक़द्दमः जो बाद छः साल के दायर हो इ
स तरह पर कि डिगरी दार और मदयून में
ख़ानगी तौर पर जो वसूल हुआ उसके आ
ख़िरी वसूल की रू से डिगरी के इजरा की
मीयाद बाक़ी रही हो तो शुमार मीयाद
का आख़िरी वसूल ख़ानगी से किया जावे

जावे और जो कोई गांव मुत्तफ़र्रक़ एक ठिकाने
के क़ाबिल माल ज़ब्त हैं तो ब शरह मुन्दर
ज: बाला शहन: व तअ़ल्लुक़दार की तकर्रु
री ब तजवीज़ तनख़्वाह तादाद मुनासिब अम
ल में आवे मक़सूद इस तकरीर शरह से यह है
कि इससे ज़ियादा तादाद पर तअ़ल्लुक़दार व
शहन: मुक़र्रर न हो -

(३) जो शहन: और तअ़ल्लुक़दार मु
क़र्रर किये जावें मोतबिर हों और उन का
नाम दर्ज हुक्म कर दिया जावे और ज़मानत
उसकी बा क़ायद: ली जाकर शामिल मि
सिल मुताल्लिक़: कर दी जाया करे -

(४) जिस क़दर ऐयाम माल ज़ब्त में
तनख़्वाह शहन: या तअ़ल्लुक़दार को दि
लाई जावे उसका हिसाब मिसिल में ज
रूर दर्ज रहे -

(५) नाज़िमान व तहसीलदार शहन
गी व तअ़ल्लुक़दारी पर किसी मुलाज़िम
ख़ानगी अपने को मुक़र्रर न करें वरन: मु
स्तोजिब बाज़पुर्स सख़्त होंगे -

(६) अगर कोई शहन: या तअ़ल्लुक़दा
र जाय मुक़र्रर: से गैरहाज़िर रहे तो उसका
तदारुक व बंदोबस्त फ़ौरन होता रहे -

(७) अगर कोई मोहकम: और कोई
क़िस्म की बाक़ी निसबत किसी जागीरदार
तनख़्वाहदार उदकी इनामी वग़ैरह के है
और इस्म बक़ाया के काग़ज़ निज़ामत

اور جو کوئی گانو متفرق ایک ٹھکانہ
کے قابل مال ضبط مین تو بشرح مندرجہ
بالا شحنہ و تعلقدار کی تقرری بہ تجویز
تنخواہ تعداد مناسب عمل مین آوے
مقصود اس تقریر شرح سے یہ ہے
کہ اس سے زیادہ تعداد پر تعلقدار
و شحنہ مقرر نہون -

(۳) جو شحنہ اور تعلقدار مقرر
کئے جاوین معتبر ہون اور اون کا
نام درج حکم کر دیا جاوے
اور ضمانت اوسکی باقاعدہ لیجا کر شامل مثل
متعلقہ کر دی جایا کرے -

(۴) جس قدر ایام مال ضبط مین
تنخواہ شحنہ یا تعلقدار کو دلائی
جاوے اوسکا حساب مثل مین ضرور
درج رہے -

(۵) ناظمان و تحصیلدار شحنگی و
تعلقداری پر کسی ملازم خانگی
اپنے کو مقرر نکرین ورنہ مستوجب
بازپرس سخت ہونگے -

(۶) اگر کوئی شحنہ یا تعلقدار جاے
مقررہ سے غیرحاضر رہے تو اوسکا
تدارک و بندوبست فوراً ہوتا رہے -

(۷) اگر کسی محکمہ اور کسی قسم کی
باقی نسبت جاگیردار تنخواہدار
ادد کی انعامی وغیرہ کی ہے
اور اون بقایا کے کاغذ نظامت

मालजबत

४

मज़मून

बमुलाहिज़ः कागजात सरकार हस्ब परचः खबर तहसील लाल सोठ मुद्दई शोरतीलाल तहसीलदार लाल सोठ मुद्दा इलह बाबत मुकर्रिर करदेने शहनगी मौज़े शिपो मडापटी किशन सिंहपर तहसीलदार ने मुलाजिम खुद को और वसूल न करने जर सिकारी के वाजह हुआ कि तहसीलात में तकरुरी शहनः तअल्लुकदार मालजबत बेजाबतः होने से कि जिससे जर सिरकारी वसूल होने में नुक़सान सिरकार और ज़ेरबारी गांव वाले की जहूर में आती है लिहाजा हिदायात मुसरहः ज़ेल काबिल इजरा है-

(१) अगर कोई ज़मीन जुज़वी काबिल जबती है तो उसका इनतजाम बजरये तहरीर मुचलकः व नविश्त पटैल पटवारियान देह किया जावे ऐसी ज़मीन पर शहनः मुकर्रिर करना ज़रूर नहीं-

(२) अगर सालिम गांव है तो पांच रुपये फी हजार आमदनी के हिसाब से शहनः मुकर्रिर किया जावे मगर इस अमर का लिहाज रहे कि असलन गांव दस हजार की जमा का है तो बहिसाब मुन्दरजः बाला ५०) रु॰ का तअल्लुकदार मुकर्रिर न किया जावे बल्कि बलिहाज़ इंतजाम ब तादाद माहवार मुनासिब तअल्लुकदार मुकर्रिर किया

مال ضبط

۴

مضمون

بملاحظہ کاغذات سرکار حسب پرچہ خبر تحصیل لال سوٹھہ مدعی شورتیلال تحصیلدار لالسوٹھہ مدعا علیہ بابت مقرر کردینے شحنگی موضع سوڈاپٹی کشن سنگہ پر تحصیلدار نے ملازم خود کو اور وصول نکرنے زر سرکاری کے واضح ہوا کہ تحصیلات میں تقرری شحنہ تعلقدار مال ضبط بے ضابطہ ہونے سے کہ جس سے زر سرکاری وصول ہونے میں نقصان سرکار اور زیرباری گانو والے کی ظہور میں آتی ہی لہذا ہدایات مصرحہ ذیل قابل اجرا ہیں-

(۱) اگر کوئی زمین جزوی قابل ضبطی ہے تو اوس کا انتظام بذریعہ تحریر مچلکہ و نوشت پٹیل پٹواریان دیہہ کیا جاوے ایسی زمین پر شحنہ مقرر کیا جانا ضرور نہیں-

(۲) اگر سالم گانو ہے تو پانچ روپیہ فی ہزار آمدنی کے حساب سے شحنہ مقرر کیا جاوے- مگر اس امر کا لحاظ رہے کہ مثلاً گانو دس ہزار کی جمع کا ہے تو بحساب مندرجہ بالا ۵۰) کا تعلقدار مقرر نکیا جاوے بلکہ بلحاظ انتظام بتعداد ماہوار مناسب تعلقدار مقرر کیا جاوے

४

मज़मून

फ़ौजदारी व निज़ामतों में जो रसान ब सीगे लावारसी आते हैं उन की चराई का रुपया राज से दिया जाता है मगर दरख्वास्त मनज़ूरी ज़र चराई के साथ कोई ऐसा नक़्शा नहीं आता है जिस से हाल आमदनी और खर्च का ज़ाहिर हो-

फ़ौजदारी और जुमले निज़ामतों से हमराह नक़्शा माहवारी इखराजात के जो बिनावर मनज़ूरी आता है एक नक़्शा हस्ब नमूना मिनसलक: के आना चाहिये लिहाज़ा फ़ौजदारी और जुमले निज़ामतों को बितरसील नमूना मिनसलका और रोबकार हाज़ा लिखा जावे कि माह रवां से इस की तामील करें-

नमूना नक़्शा चराई रसान लावारिस

बाबत माह सन् महकमः

नंबर शुमार	तारीख [illegible]	[illegible]	तादाद आमदनी			कैफ़ियत
			[illegible]	[illegible]	[illegible]	

१
नंबर शुमार
८३

२
तारीख मंज़ूरी
१४ नोंबर सन् १८८३ ई

३
खुलासा

क़ायदः तकर्रुरी शहनः व तअल्लुक़ दार

۴

مضمون

(۸۴) (८२)

فوجداری و نظامتوں میں جو رسان بصیغہ لاوارثی آتی ہیں اونکی چرائی کا روپیہ راج سے دیا جاتا ہے مگر درخواست منظوری زر چرائی کے ساتھ کوئی ایسا نقشہ نہیں آتا ہے جس سے حال آمدنی اور خرچ کا ظاہر ہو-

فوجداری اور جملہ نظامتوں سے ہمراہ نقشہ ماہواری اخراجات کے جو بنابر منظوری آتا ہے ایک نقشہ حسب نمونہ منسلکہ کے آنا چاہیے لہذا فوجداری اور جملہ نظامتوں کو بترسیل نمونہ منسلکہ اور روبکار ہذا لکہا جاوے کہ ماہ رواں سے اس کی تعمیل کریں-

نمونہ نقشہ چرائی رسان لاوارث بابت ماہ سنہ محکمہ

نمبر شمار	[illegible]	[illegible]	تعداد آمدنی			کیفیت
			[illegible]	[illegible]	[illegible]	

(۸۳) (८३)

نمبر شمار ۸۳ تاریخ منظوری ۲
۱۴ نومبر سنہ ۱۸۸۳ء

خلاصہ

قاعدہ تقرری شحنہ و تعلقدار

तरतीब रेजिस्टर-

४

मज़मून

जो हिदायत नंबरी १२६ सन १८८५ ई॰ बाबत क़वायद तलबी गवाहान के जारी थे उसकी द॰ (४) में बाबत तरतीब रेजिसटर हाज़री गवाहान के हिदायत दर्ज है मगर सरदारान अपील लिखते हैं कि दरयाफ़्त से मालूम हुआ कि तामील तरतीब रेजिसटर की किसी जगह नहीं हुई नमूना रेजिसटर का जो दर्ज कैफ़ियत है भेज कर हुक्काम को तामील की तवज्जह दिलाई जावे- चुनांचे जवाब में सरदारान अपील को मनज़ूरी लिखी गई-

नमूना रेजिसटर

१	२	३	४	५	६
नंबर शुमार	उनवान मुकदमा	गवाह मुद्दई	गवाह मुद्दा अलेह	तारीख हाज़िरी गवाहान	कैफ़ियत

१	२
नंबर शुमार	तारीख मंज़ूरी
८२	१२ नोम्बर सन १८९३ ई॰

३

खुलासा

चराई मवेशी लावारिस का एक नक़्शा माहवारी आया करे-

وترتیب رجسٹر-

۴

مضمون

جو ہدایت نمبری ۱۲۶ (۱۸۸۵ء) بابت قواعد طلبی گواہان کے جاری تھی اسکی دفعہ (۴) مین بابت ترتیب رجسٹر حاضری گواہان ہدایت درج ہے مگر سرداران اپیل لکھتے ہین کہ دریافت سے معلوم ہوا کہ تعمیل ترتیب رجسٹر کی کسی جگہ نہین ہوئی نمونہ رجسٹر کا جو درج کیفیت ہے بھیجکر حکام کو تعمیل کی توجہ دلائی جاوے- چنانچہ جواب مین سرداران اپیل کو منظوری لکھی گئی-

نمونہ رجسٹر

۱	۲	۳	۴	۵	۶
نمبر شمار	عنوان مقدمہ	گواہ مدعی	گواہ مدعا علیہ	تاریخ حاضری گواہان	کیفیت

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۸۲	۱۲ نومبر ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

چرائی مویشی لاوارث کا ایک نقشہ ماہواری آیا کرے-

तो उसमें तसदीक़ इज़हारात की बहस है सराह़त तहरीर इबारत तसदीक़ की कुछ नहीं है सो इसके वासते कोई तरीक़ः मुक़र्रर होजावे कि सब जगह यकसां क़ायदः रहे-

चुनांचि हिदायात मुन्दर्जे सदर को देखा गया तो गो उसमें यह सराहत नहीं की गई है कि इबारत तसदीक़ इस ही मज़मून के इज़हार पर दर्ज की जावे मगर जो मज़मून कि बिनाबर तसदीक़ इज़हारात दर्ज है उसका साफ़ मनशाय ह है कि इज़हारदिहंदः से हाकिम तसदीक़ करें और उस पर बाद तसदीक़ के दस्तख़त करदे ऐसी सूरत में बिला तहरीर इबारत के सिर्फ़ दस्तख़त करदेना ठीक नहीं है-

लिहाज़ा सरदारान अपील को लिखदिया जावे कि जुमले हुक्काम मातहत को मुत्तले कर दें कि बमूजिब हिदायात साबिक़ः इज़हार अपने रोबरू और अपनी निगरानी में तहरीर करावें व बाद तहरीर इज़हार के इज़हारदिहन्दः को सुनाकर जब कि वोह इक़रार करे कि मेरा यह ही बयान है तब उस पर इबारत तसदीक़ करने इज़हारदिहन्दः के लिखाकर बाद तहरीर तारीख़ के अपना दस्तख़त कर दिया करे-

नंबर शुमार[२]	तारीख़ मंज़ूरी
८१	१२ नोम्बर सन् १८९३ ई

ख़ुलासा[३]

मज़ीद ताकीद तामील हिदायत नम्बरी ११६ सन् १८८५ ई बाबत क़वायद तलबीगवाहान व

تو اوسمین تصدیق اظہارات کی بحث ہی صراحت تحریر عبارت تصدیق کی کچھہ نہین ہے سو اسکے واسطے کوئی طریقہ مقرر ہوجاوے کہ سب جگہہ یکسان قاعدہ رہے-

چنانچہ ہدایات مندرجہ صدر کو دیکھا گیا تو گو اوسمین یہہ صراحت نہین کی گئی ہے کہ عبارت تصدیق اسی مضمون کی اظہار پر درج کیجاوے مگر جو مضمون کہ بنا بر تصدیق اظہارات درج ہے اوسکا صاف منشا یہہ ہے کہ اظہار دہندہ سے حاکم تصدیق کرے اور اوسپر بعد تصدیق کے دستخط کردے ایسی صورت مین بلا تحریر عبارت کے صرف دستخط کردینا ٹھیک نہین ہے-

لہذا سرداران اپیل کو لکھدیا جاوے کہ جملہ حکام ماتحت کو مطلع کردین کہ بموجب ہدایات سابقہ اظہار اپنے روبرو اور اپنی نگرانی مین تحریر کرادین اور بعد تحریر اظہار کے اظہار دہندہ کو سنا کر جبکہ وہ اقرار کرے کہ میرا یہی بیان ہے تب اوسپر عبارت تصدیق کرنے اظہار دہندہ کی لکھکر بعد تحریر تاریخ کے اپنا دستخط کردیا کرے-

نمبر شمار[۲]	تاریخ منظوری
۸۱	۱۲ نومبر سنہ ۱۸۹۳ء

خلاصہ[۳]

مزید تاکید تعمیل ہدایت نمبری ۱۱۶ سنہ ۱۸۸۵ء بابت قواعد طلبی گواہان و

(۸۱)
(۲۹)

गुजारी सालाना के इसकी बाबत मुफ़स्सिल रिपोर्ट दर्ज करे कि एक साल का पिछला कागज़ ब मूजिब हिदायत के महाफ़िज दफ़्तर ने छांट दिया और इस कदर रद्दी काबिल फ़रोख्त बरामद हुई ताकि उसके फ़रोख्त व नीलाम की बाबत हुक्म सादिर हुआ करेगा-

मातहत मात हेत्त को बिनाबर तामील लिखवाजावे और तहरीर हो कि इब्तिदाय सन् १८९४ ई. से इस का इजरा अमल में लाया जावे

१ नंबर शुमार	२ तारीख मंजूरी
८०	१२ नोम्बर सन् १८९३ ई०

४
खुलासा

जमीमः हिदायत नंबरी ८ सन् १८८३ ई. व १६९ सन् १८८५ ई. बाबत तहरीर इबारत तसदीक़ इज़हारात-

५
मज़मून

सिरदारान अपील लिखते हैं कि एक मुक़दमः में नाज़िम जी शेखावाटी ने इज़हारात पर सिर्फ़ दस्तखत ही सब्त किये थे इबारत तसदीक़ दर्ज नहीं की थी इस का सबब पूछा तो यह लिखा कि हाकिम की दस्तखत ही तसदीक़ है- इबारत के लिखने का किसी हिदायत में हुक्म नहीं है चुनांचि हिदायत नंबर ८ सन् १८८३ ई. १६९ सन् १८८५ ई. को देखा गया

سالانہ کے اس کی بابت مفصل رپورٹ درج کرے کہ ایک سال کا پچھلا کاغذ بموجب ہدایت کے محافظ دفتر نے چھانٹ دیا اور اسقدر ردی قابل فروخت برآمد ہوئی تاکہ اوسکے فروخت و نیلام کی بابت حکم صادر ہوا کرے گا-

محکمات ماتحت کو بنابر تعمیل لکہا جاوے اور تحریر ہو کہ ابتدائے سنہ ۱۸۹۴ء سے اسکا اجرا عمل مین لایا جاوے-

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۸۰	۱۲ نومبر سنہ ۱۸۹۳ء

۴
خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری ۸ سنہ ۱۸۸۳ء و ۱۶۹ سنہ ۱۸۸۵ء بابت تحریر عبارت تصدیق اظہارات-

۵
مضمون

سرداران اپیل لکہتے مین کہ ایک مقدمہ مین ناظم جی شیخاواٹی نے اظہارات پر صرف دستخط ہی ثبت کئے تہے عبارت تصدیق درج نہین کی تہی اسکا سبب پوچھا تو یہ لکہا کہ حاکم کے دستخط ہی تصدیق ہین- عبارت کے لکہنے کا کسی ہدایت مین حکم نہین ہے چنانچہ نمبری ۸ سنہ ۱۸۸۳ء ۱۶۹ سنہ ۱۸۸۵ء کو دیکہا گیا

(۷۹) (७९)

चुनांचि इसके वास्ते यह तरीक़: मालूम होता
है कि जिन महकमात में कि दफ़तर की छांट हो
चुकी है या आयन्द: छांट खतम होजाय तो व
हां के मुहाफ़िज़ दफ़तर का ज़िम्म: रक्खा जावे
कि वोह हर साल एक साल गुज़िश्त: के काग
ज़ात को बमूजिब हिदायत छांट के छांट दिया क
रे मसलन अपील में सीगे फ़ौजदारी के मुक़द
मात सन् १८८४ ई॰ तक छूट गये हैं और अ
दालत सीगे के सन् १८८० ई॰ तक तो मुहाफ़िज़
दफ़तर सन् १८९४ ई॰ में काग़जात मुक़दमात
फ़ौजदारी सन् १८८५ ई॰ और मुक़दमात अदालत
सन् १८८१ ई॰ छांट दे- इसी तरह सन् १८९५ ई॰ में
मुक़दमात फ़ौजदारी सन् १८८६ ई॰ और मुक़द
मात अदालत दीवानी सन् १८८२ ई॰ की छांट करे
जिस्से यह नतीजा होगा कि जिस क़दर अरसे का
काग़ज़ तमाम व कमाल दफ़तर में रहना चाहि
ये मौजूद रहेगा और जिस क़दर ज़ियाद: अर
से का होकर बेकार होजायेगा वोह क़ाबिल छां
ट के हर साल छुट जाया करेगा हरमाहवारी पर
हाकिम मह़कम: मुहाफ़िज़ दफ़तर के काम की
परताल कर लिया करे कि आया उसने काम
छांट दफ़तर का भी किया है या नहीं और कि
या है तो किस क़दर अगर काम में कमी देखे तो मु
नासिब हिदायत करदे और माहवारी नक़शे में
इसका भी सिर्फ़ इस क़दर ज़िकर दर्ज करदे कि
मुहाफ़िज़ दफ़तर ने काम छांट का भी किया है
और इख़्तताम साल पर हमराह रिपोर्ट कार

چنانچہ اسکے واسطے یہہ طریقہ بہتر معلوم
ہوتا ہے کہ جن محکمات مین کہ دفتر کی چھانٹ
ہوچکی ہے یا آیندہ چھانٹ ختم ہوجاوے
تو وہان کے محافظ دفتر کا ذمہ رکھا جاوے
کہ وہ ہرسال ایک سال گزشتہ کی کاغذات
کو بموجب ہدایت چھانٹ کے چھانٹ
دیا کرے مثلاً اپیل مین صیغہ فوجداری کے
مقدمات ۱۸۸۴ع تک چھنٹ گئی ہین اور
عدالت صیغہ کے ۱۸۸۰ع تک - تو محافظ دفتر
۱۸۹۴ع مین کاغذات مقدمات
فوجداری ۱۸۸۵ع اور مقدمات عدالت
۱۸۸۱ع چھانٹ دے اسیطرح ۱۸۹۵ع
مین مقدمات فوجداری ۱۸۸۶ع اور مقدمات
عدالت دیوانی ۱۸۸۲ع کی چھانٹ کرے -
جس سے یہہ نتیجہ ہوگا کہ جسقدر عرصہ کا
کاغذ تمام وکمال دفتر مین رہنا چاہیے
موجود رہے گا - اور جسقدر زیادہ عرصہ
کا ہوکر بیکار ہوجاوے گا وہ قابل چھانٹ
کے ہرسال چھنٹ جایا کرے گا ہر ماہواری
پر حاکم محکمہ محافظ دفتر کے کام کی پڑتال
کرلیا کرے کہ آیا اوسنے کام چھانٹ
دفتر کا بھی کیا ہے یا نہین اور کیا ہے
تو کس قدر اگر کام مین کمی دیکھے تو مناسب
ہدایت کردے اور ماہواری نقشہ مین
اسکا بھی صرف اسقدر ذکر درج کردے
کہ محافظ دفتر نے کام چھانٹ کا بھی کیا ہے
اور اختتام سال پر ہمراہ رپورٹ کارگزاری

مضمون

چونکہ محکمہ اپیل و عدالت دیوانی و فوجداری منصفی کے دفترون کی چھانٹ ہوچکی ہے منصفی کے دفتر کی کسی قدر چھانٹ باقی ہے جسکا کام ابھی جاری ہے اور نظامت شیخاواٹی و سانبھر لیکن بھی چھانٹ دفتر کا کام جاری کردیا گیا ہے - چنانچہ دریافت سے معلوم ہوا کہ محکمہ اپیل مین مقدمات صیغہ فوجداری کے سنہ ۱۸۸۴ع تک اور مقدمات عدالت دیوانی کے سنہ ۱۸۸۰ع تک کے کاغذات کی چھانٹ ہوئی ہے اور عدالت مین سمبت ۱۹۴۸ تک کی کاغذات چھٹی ہین اور فوجداری مین سنہ ۱۸۸۹ع تک کے کاغذات چھانٹے گئے - اور منصفی مین سمبت ۱۹۴۴ تک کے اور سب قسم کے کاغذات چھنٹ گئے - اجرائے ڈگری کی مثل کسیقدر باقی ہین کی چھانٹ ہو رہی ہے -

اگر کسیقدر عرصہ تک یہہ کارروائی بلا چھانٹ کے رہی تو جسطرح سے کہ اب اسکی ضرورت پیش آئی اور بصرف کثیر اسکا انتظام کیا گیا آئندہ بھی اسیطرح سے ضرورت پیش آویگی -

اسواسطے برائے آئندہ کوئی قاعدہ مقرر ہوجانا بہتر معلوم ہوتا ہے تاکہ وقتاً فوقتاً دفتر کی چھانٹ ہوتی رہے اور نہ تو کاغذ بڑہے نہ صرف کی ضرورت ہو -

मज़मून

चो कि महकमः अपील व अदालत दीवानी फ़ौजदारी मुनसफ़ी के दफ़्तरों की छांट हो चुकी है मुनसफ़ी के दफ़्तर की किसी क़दर छांट बाक़ी है जिसका काम अभी जारी है और निज़ामत शेखावाटी व सांभर में भी छांट दफ़्तर का काम जारी करदिया गया है चुनाचे दरयाफ़्त से मालूम हुआ कि महकमः अपील में मुकदमात सीगे फौजदारी के सन् १८८४ ई. तक और मुकदमात अदालत दीवानी के सन् १८८० ई. तक के कागजात की छांट हुई है और अदालत में संबत् १९४८ तक के काग़जात छटे हैं और फौजदारी में सन् १८८९ ई. तक के कागजात छांटे गये - और मुनसफी में सम्बत् १९४४ तक के और सब क़िस्म के काग़ज़ात छुटगये-

इजराय डिगरी की असल: किसी क़दर बाक़ी हैं जिसकी छांट होरही है-

अगर किसी क़दर अरसे तक यह कार्रवाई बिला छांट के रही तो जिस तरह से कि अब इस की जरूरत पेश आई और बसर्फ़ कसीर इसका इंतज़ाम किया गया आयंदः भी इस तरह से जरूरत पेश आवे गी-

इस वास्ते बराय आयन्दः कोई क़ायदः मुकर्रिर होजाना बहतर मालूम होता है ता कि वक़्तन फ़वक़्तन दफ़्तर की छांट होती है और न तो कागज बढ़े न सर्फ़ की जरूरत है

ग्रौर जवानान मुलाज़िम बेडे पुलिस के पस्त: कद नहीं न ऐसे ज़ियाद: कद के आदमी मिल सकते हैं ग्रौर पैमान: अबतक तो कोई मुकर्रर: नहीं हुआ अगर मुनासिब होतो पैमान: मुकर्रर कर दिया जावे जो साढे पांच फुट का होना चाहिये चुनान्चि दरयाफ़्त किया गया कि इन जवानों का बमूजिब पैमान: के क्या कद है तो लिखते हैं कि इमाम बख्श का कद पांच फुट साढे पांच इंच्छ ग्रौर नन्ने खां के पांच फुट साढे ४ इंच्छ है जिससे ज़ाहिर है कि यह हरदो जवान बमूजिब पैमाने के पूरे कद के नहीं है मगर चूंकि अबतक कोई पैमाना मुकर्रर नहीं था ग्रौर इमाम बख्श सिर्फ़ आध इंच्छ कम है इसलिये इमाम बख्श की तो मनजूरी लिखी जावे ग्रौर नन्ने खां पैमान: से बहुत कम है इसलिये काबिल मनजूरी के नहीं है

ग्रौर आयन्द: साढे पांच फुट से कम कद के आदमी बेडे पुलिस में भरती न किये जावें फ़ौजदारी को वास्ते तामील के लिखा जावे

१ नम्बर शुमार	२ तारीख मनजूरी
७६	१२ नोंबर सन् १८८३ ई०

३ खुलासा

हिदायत बाबत छांट दफ़तर महकमात मातहत

اور جوانان ملازم بیڑہ پولیس کے پستہ قد نہین ہین نہ ایسے زیادہ قد کے آدمی ملسکتے ہین اور پیمانہ ابتک تو کوئی مقرر نہین ہوا اگر مناسب ہو تو پیمانہ مقرر کر دیا جاوے جو ساڑھے پانچ فٹ کا ہونا چاہیے چنانچہ دریافت کیا گیا کہ ان جوانون کا بموجب پیمانہ کے کیا قد ہے تو لکہتے ہین کہ امام بخش کا قد پانچ فٹ ساڑھے پانچ انچہ اور ننھے خان کا پانچ فٹ ۴½ انچہ ہے جس سے ظاہر ہے کہ یہہ ہر دو جوان بموجب پیمانہ کے پورے قد کے نہین ہین مگر چونکہ ابتک کوئی پیمانہ مقرر نہین تہا اور امام بخش صرف آدہ انچہ کم ہے اسلئے امام بخش کی تو منظوری لکہی جاوے اور ننھے خان پیمانہ سے بہت کم ہے اس لئے قابل منظوری کے نہین ہے۔

اور آئندہ ساڑھے پانچ فٹ سے کم قد کے آدمی بیڑہ پولیس مین بہرتی نہ کئے جاوین فوجداری کو واسطے تعمیل کے لکہا جاوے۔

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۷۹	۱۲ نومبر سنہ ۱۸۸۳ع

۳ خلاصہ

ہدایت بابت چہانٹ دفتر محکمات ماتحت۔

رہنا چاہیئے - اگر کوئی تقسیم نامہ
کسی عدالت مین کم قیمت اسٹامپ
پر پیش ہو تو اسپر باقاعدہ اخذ
تاوان کی کارروائی کرنا چاہیئے - اور
جو سادہ کاغذ پر بٹوارہ ہو تو وہ اگر بعد
اجرائے قانون مذکور لکھا گیا ہوگا جب تو
سماعت ہی نہین کیا جائیگا نہ
شہادت و ثبوت مین لیا جائیگا - اور
جو قانون مذکور سے پیشتر کا لکھا ہوا
ہوگا اوس پر کوئی اعتراض نہ ہوسکے
گا -

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۷۸	۳۰ اکتوبر ۱۸۹۳ء

۳ خلاصہ

بیڑہ پولیس مین ساڑہے پانچ فٹ سے کم قد
کے آدمی بہرتی نہ کئے جاوین -

۴ مضمون

نقشہ ماہ جون ۱۸۹۳ء مین مسمیان
امام بخش و نبی خان کو درج نقشہ
ملازمان بیڑہ پولیس کرکے فوجدار جی
نے منظوری چاہی اور ہر دو جوانون کو
بنابر ملاحظہ کے بہیجا - چنانچہ پستہ قد معلوم
ہو کر نامنظور کئے گئے تہے مگر فوجدار جی
نے مکرر سکرر یہہ بہی لکہا کہ یہہ جوان بنسبت

दरामद रहना चाहिये अगर कोई तकसीम
नामः किसी अदालत में कम कीमत इस्टाम्प
पर पेश होतो उस पर बाक़ायदः अखज़ता
वान की कार्रवाई करना चाहिये और जो सा
दा कागज़ पर बटवारा होतो वोह अगर बा
द इजरा क़ानून मजकूर के लिखा गया हो
गा जब तो समाअत ही नहीं किया जायगा न
शहादत व सबत में लिया जायगा और
जो कानून मज़कूर से पेशतर का लिखा हु
आ होगा तो उस पर कोई ऐतराज न होस
केगा -

१ नंबर शुमार	२ तारीख मन्जूरी
७८	३० अकतूबर सन् १८९३ ई०

३ खुलासा

बेडे पुलिस में साढे पांच फुट से कम कद के आद
मी भरती न किये जावें -

४ मज़मून

नक़शे माह जून सन् १८९३ ई० में मुसम्मियान
इमाम बख्श व नबी खां को दर्ज नक़शे मुलाज़ि
मान बेडे पुलिस करके फौजदारजी ने मन्ज़ू
री चाही और दोनों जवानों को बिना बर मुलाहि
ज़े भेजा - चुनान्चि पस्त: कद मालूम होकर ना
मंज़ूर किये गये थे मगर फौजदारजी ने मुकर्रर सिक
र्रर यह भी लिखा कि यह जवान ब निसबत

दरख़्वास्त के बारे में इस राय के साथ महिकः
अपील से मनज़ूरी चाही कि पाबंदी क़ानून के
लिये एक इश्तहार इस मज़मून का जारी होना
चाहिये कि जनवरी सन् १८९४ ई. से आय
न्दः का लिखा हुआ ऐसा तक़सीम नामः कि जो
पूरे काग़ज़ पर हस्ब मनशा क़ानून इस्टाम्प
होजाय ज़ नहीं समझा जायगा और न ऐ
से काग़ज़ की क़तअन समाअत होगी और
आयन्दः ऐसाही अमल दरामद अदालतों में
रहना चाहिये कि आमलोग पाबंदी क़ानून
के कारबंद रहें -

सिरदारान अपील ने अपनी राय में लि
खा कि जब क़ानून इस्टाम्प में यह अमूर द
र्ज हो चुके हैं कि काग़ज़ सादा की तहरीर
अदालत पिज़ीरा नहीं करेगी पस अब दु
बारः इश्तहार जारी किये जाने की जरूरत नहीं
मालूम होती बमूजिब क़ानून इस्टाम्प अम
ल दरामद रहना चाहिये अंदरीं सूरत इज
राय इश्तहार की बाबत जो राय मुख़्तारान
अदालत ने दी है ठीक नहीं है बाक़ी राय दु
रुस्त है और बज़रये कैफ़ियत ८ अक्तूब
र सन् १८९३ ई० के महकमः आलिया से
इस तसवाब किया -

जिस पर जवाब में लिखागया कि जब तक़
सीम नामे की बाबत क़ानून इस्टाम्प मजर
या सन् १८९१ ई. में सराहत होचुकी है तो ब
मूजिब इसके जुमले अदालतों में अमल

درخواست کے بارہ مین اس راے کے ساتھ
محکمہ اپیل سے منظوری چاہی کہ پابندی قانون
کے لئے ایک اشتہار اس مضمون کا جاری
ہونا چاہیئے کہ جنوری سنہ ۱۸۹۴ع سے آیندہ
کا لکھا ہوا ایسا تقسیم نامہ کہ جو پورے کاغذ
پر حسب منشاے قانون اسٹامپ ہوجائے
نہین سمجھا جائے گا اور نہ ایسے کاغذ
کی قطعاً سماعت ہوگی - اور آیندہ
ایسا ہی عمل درآمد عدالتون مین
رہنا چاہیئے کہ عام لوگ پابندی قانون
کے کاربند رہین -

سرداران اپیل نے اپنی راے مین لکھا
کہ جب قانون اسٹامپ مین یہہ امور
درج ہوچکے ہین کہ کاغذ سادہ کی تحریر
عدالت پذیرا نہین کرے گی پس اب
دوبارہ اشتہار جاری کئے جانے کی ضرورت
نہین معلوم ہوتی بموجب قانون اسٹامپ
عمل درآمد رہنا چاہیئے - اندرین صورت
اجراے اشتہار کی بابت جو راے مختاران
عدالت نے دی ہے ٹھیک نہین ہے -
باقی راے درست ہے - اور بذریعہ کیفیت
۸ اکتوبر سنہ ۱۸۹۳ع کے محکمہ عالیہ سے
استصواب کیا -

جسپر جواب مین لکھا گیا کہ جب تقسیم نامہ
کی بابت قانون اسٹامپ مجریہ
سنہ ۱۸۹۱ع مین صراحت ہوچکی ہے تو بموجب
اسکے جملہ عدالتون مین عملدرآمد

मज़मून

बमुक़द्दमः श्रीनारायन मुद्दई - चिमन लाल बिरादरश मुद्दाअलैः दावी बदस्तूर खुले रहने तीन दरतिबारा - मुनसिफ़ों ने दो अमर मुनदर्जः ज़ेल की मन्ज़ूरी मुख़्तारान अदालत से चाही थी -

(१) एक यह है कि क़ानून इस्टाम्प मजरयः सन् १८९१ ई० में तक़सीम नामे की तहरीर के लिये काग़ज़ इसटाम्प बशरह फ़ीसदी एक रुपया मुक़र्रिर किया गया है बिलमक़ता एक रुपये का काग़ज़ मुक़र्रिर होना चाहिये किसलिये कि जो क़ायदा इब्तदाय इजराय काग़ज़ इसटाम्प से मुक़र्रिर हो चुका है उस का तरमीम व तनसीख़ किया जाना मुनासिब नहीं है -

(२) दूसरा यह कि आम लोग क़ायदे की पाबन्दी नहीं रखते बतौर ख़ुद कोई सादे काग़ज़ पर तक़सीम नामः लिखवा लेता है कोई इस्टाम्प पर लिखवाता है मगर काग़ज़ कम बेश क़ीमत का होता है कोई बही में ही बटवारा दर्ज करा लेता है और वजह ऐसी कारवाई की यह है कि ऐसी तहरीरात पर ऐतराज़ नहीं होता बल्कि जब ऐसा काग़ज़ पेश होता है उस पर अदालतों से लिहाज़ होकर तजवीजें सादिर होती हैं -

मुख़्तारान अदालत ने दरख़्वास्त अव्वल को तो नामनज़ूर किया और दूसरी

مضمون

بمقدمہ سری نراین مدعی - چمن لال برادرش مدعا علیہ دعوی بدستور کہلے رہنے تین دربارہ - منصفون نے دو امر مندرجہ ذیل کی منظوری مختاران عدالت سے چاہی تہی -

(۱) ایک یہہ ہے کہ قانون اسٹامپ مجریہ سنہ ۱۸۹۱ع مین تقسیم نامہ کی تحریر کے لئے کاغذ اسٹام بشرح فیصدی ایک روپیہ مقرر کیا گیا ہے بالمقطع ایک روپیہ کا کاغذ مقرر ہونا چاہیے کیسلئے کہ جو قاعدہ ابتدائے اجرائے کاغذ اسٹامپ سے مقرر ہو چکا ہے اوس کا ترمیم و تنسیخ کیا جانا مناسب نہین ہے -

(۲) دوسرا یہہ کہ عام لوگ قاعدہ کی پابندی نہین رکہتے بطور خود کوئی سادہ کاغذ پر تقسیم نامہ لکہوا لیتا ہے کوئی اسٹامپ پر لکہواتا ہے مگر کاغذ کم و بیش قیمت کا ہوتا ہے - کوئی بہی مین ہی بٹوارہ درج کرا لیتا ہے - اور وجہ ایسی کارروائی کی یہہ ہے کہ ایسی تحریرات پر اعتراض نہین ہوتا بلکہ جب ایسا کاغذ پیش ہوتا ہے اوسپر عدالتون سے لحاظ ہوکر تجویزین صادر ہوتی ہین -

مختاران عدالت نے درخواست اول کو تو نامنظور کیا - اور دوسری

दरयाफ़्त करके बयान कि गई हो बल्कि ता वक़्तेकि कोई शख़्स शरीक वारदात न हो ऐसे हालात उस की जानिब से बयान किये जाना मुमकिन मालूम नहीं होता

इस मुक़दमे में मुलज़िमान को दोदो साल कैद की सज़ा दी गई है और उमराव सिंह भी मसावी सज़ा के क़ाबिल है मगर चूंकि इसकी मुख़बरी से बरामदगी माल की हुई है इस लिये मुनासिब ख़याल किया जाता है कि दीगर मुलज़िमान से निस्फ़ सजा उस को दीजावे इसलिये उमराव सिंह एक साल कैद रहे और फ़ौजदारी को लिखा जावे कि आयन्दः जब किसी मौक़े पर जरुरत मुआफ़ी क़सूर किसी मुलज़िम की मुनासिब मालूम हो तो अव्वल महकमः आलियः से बाज़ाबितः मनज़ूरी हासिल करलेना चाहिये बतौर ख़ुद बिला मनज़ूरी महकमः आलियः के ऐसी कार्रवाई ज़ाबितः के ख़िलाफ़ है

१	२
नंबर शुमार	तारीख़ मनज़ूरी
७७	२५ अक्तूबर सन् १८९३ ई०

३

ख़ुलासा

बज़मीमः कानून इस्टाम्प मजरयः सन् १८९१ ई० बाबत तहरीर तक़्सीम नामजात व क़ाबिल क़बूल अदालत होने न होने के-

دریافت کرکے بیان کی گئی ہون - بلکہ تاوقتیکہ کوئی شخص شریک واردات نہو ایسے حالات اوسکی جانب سے بیان کئے جانا ممکن معلوم نہین ہوتا -

اس مقدمہ مین ملزمان کو دو دو سال قید کی سزا دیگئی ہے اور امراوسنگہ بھی مساوی سزا کے قابل ہے مگر چونکہ اسکی مخبری سے برآمدگی مال کی ہوئی ہے اسلئے مناسب خیال کیا جاتا ہے کہ دیگر ملزمان سے نصف سزا اوسکو دیجاوے اس لئے امراوسنگہ ایک سال قید رہے اور فوجداری کو لکھا جاوے کہ آئیندہ جب کسی موقعہ پر ضرورت معافی قصور کسی ملزم کی مناسب معلوم ہو تو اول محکمہ عالیہ سے باضابطہ منظوری حاصل کرلینا چاہیئے بطور خود بلا منظوری محکمہ عالیہ کے ایسی کارروائی ضابطہ کے خلاف ہے -

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۷۷	۲۵ر اکتوبر ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

بہ ضمیمہ قانون اسٹامپ مجریہ ۱۸۹۱ء بابت تحریر تقسیم نامجات و قابل قبول عدالت ہونے نہونے کے

(۷۷) (۵۵)

کرلینا چاہیئے حکام ماتحت بطور خود
بلا منظوری محکمہ عالیہ تجویز معافی
قصور نہیں کرسکتے۔

۴

مضمون

بملاحظہ مسل مقدمہ شامان برہمن
مدعا علیہ اپیلانٹ۔ بنام گنیشی لال
برہمن مدعی رسپانڈنٹ علت چوری
۴۰۶ر وبرآمدگی مال ظاہر ہوا کہ
امراو سنگہ ملزم کی معافی قصور کی بابت
کوئی منظوری باضابطہ حاصل نہیں کی
گئی تہی اور صرف اوسکی مخبری اور
نشاندہی سے اور مال برآمد ہونیسے پولیس
نے اوسکو قابل معافی متصور درج
کردیا اور فوجدار جی نے اوس کو
بمعافی قصور بری کردیا۔ حالانکہ قاعدہ
یہہ ہے کہ جس ملزم کی معافی قصور بوجہ
مخبری وغیرہ کی ہوتی ہے اوسکی
منظوری اول محکمہ عالیہ سے حاصل
کرلیجاتی ہے بلا حصول منظوری
کے قصور کا معاف کیا جانا
ماتحت سے خلاف ضابطہ کے ہوا
اور بیان ملزمان سے اوسکا شریک
واردات سرقہ ہونا ظاہر ہے علاوہ
ازین جو حالات امراو سنگہ نے بیان کیے
اور بموجب اوسکے برآمدگی مال مسروقہ
کی ہوئی وہ ایسی نہیں ہین کہ کسی ذریعہ سے

लेना चाहिये हुक्काम मातहेत बतौर खुद
बिला मनज़ूरी महिकमः आलियः तजवीज़ मु
आफ़ी कसूर नहीं करसकते-

४

मज़मून

बमुलाहिज़ः मिसिल मुकदमः सामान ब्रह्मन
मुद्दाइलः अपीलांट- बनाम गनेशी
लाल ब्रह्मन मुद्दई रेसपान्डन्ट इल्लत चो
री ४०६) रु० व बरामदगी माल जाहिर हु
आ कि उमराव सिंह की मुआफ़ी कसूर की बाब
त कोई मनज़ूरी बाज़ाबितः हासिल नहीं की
गई थी और सिर्फ उसकी मुखबरी और नि
शानदिही से और माल बरामद होने से पुलिस
ने उस को क़ाबिल मुआफ़ी मुतसव्विर दर्ज
कर दिया और फ़ौजदार जी ने उस को मुआ
फ़ी क़सूर बरी कर दिया हालांकि कायदा
यह है कि जिस मुलज़िम की मुआफ़ी कसू
र ब वजह मुखबरी वग़ैरह के होने से उस की
मनज़ूरी अव्वल महिकमः आलियः से
हासिल करली जाती है बिला हसूल म
नज़ूरी के क़सूर का मुआफ़ किया जाना
मातहेत से खिलाफ़ ज़ाबिते के हुआ औ
र बयान मुलज़िमान से उस का शरीक वार
दात सिरकः होना ज़ाहिर है अलावा इस
के जो हालात उमराव सिंह ने बयान किये
और ब मूजिब उसके बरामदगी माल मसरू
कः के हुवे वोह ऐसे नहीं हैं कि किसी ज़रिये से

मुलज़िम को देकर पानी पीने गया - मुलज़िम ने जब यह ग़फ़लत देखी ऊँट पर सवार होकर मय हथकड़ी जो उसके हाथ में थी और दीगर असबाब के वहां से फ़रार होगया - सवार ने अगरचि तआक़ुब उसका किया मगर वोह सवार था और यह पैदल था गिरफ़्तारी से नाकाम याब रहा और अनजाम कार एक साल की क़ैद निसबत उसके तजवीज़ हुई -

चूंकि यह नाक़िस तरीक़ा चालान का ज़ाहिर हुआ कि जिस किसी मुलज़िम के साथ ऊँट वग़ैरह सवारी होती है उसी पर उसको सवार करके चालान किया जाता है सवारी से अलहदा चालान अमल में नहीं आया लिहाज़ा मुनासिब है कि बिनाबर इन्सदाद आयन्दः चालान मुलज़िम का अलहदा हिरासत ज़ाबिते में किया जाय और उसकी सवारी का जुदागाना जुमले थानेदारान व डिपटियान को मारफ़त गीराई के बमूजिब उसके कारबंद रहने के लिये लिखा जावे -

१ नंबरशुमार	२ तारीख़ मनज़ूरी
७६	२२ अक्तूबर सन् १८९३ ई०

३
ख़ुलासा

अगर किसी मौक़े पर ज़रूरत मुआफ़ी क़सूर किसी मुलज़िम के हो तो अव्वल महकमः आलियः से बा ज़ाबितः मनज़ूरी हासिल कर

(۷۵)
(۷۵)

ملزم کو دیکر پانی پینے گیا - ملزم نے جب یہ غفلت دیکھی اونٹ پر سوار ہوکر معہ ہتکڑی جو اوسکے ہاتھ میں تھی اور دیگر اسباب کے وہاں سے فرار ہوگیا - سوار نے اگرچہ تعاقب اوسکا کیا مگر وہ سوار تھا اور یہ پیدل تھا گرفتاری سے ناکامیاب رہا اور انجام کار ایکسال کی قید نسبت اوس کے تجویز ہوئی -

چونکہ یہ ناقص طریقہ چالان کا ظاہر ہوا کہ جس کسی ملزم کے ساتھ اونٹ وغیرہ سواری ہوتی ہے اوسی پر اوسکو سوار کرکے چالان کیا جاتا ہے - سواری سے علیحدہ چالان عمل میں نہیں آیا - لہذا مناسب ہے کہ بنابر انسداد آیندہ چالان ملزم کا علیحدہ حراست ضابطہ میں کیا جاوے اور اوسکے سواری کا جداگانہ جملہ تہانہ داران و ڈپٹیان کو معرفت گیرائی کے بموجب اوسکے کاربند رہنے کے لیے لکہا جاوے -

(۷۶)
(۷۶)

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۷۶	۲۲ اکتوبر سنہ ۱۸۹۳ء

۳
خلاصہ

اگر کسی موقعہ پر ضرورت معافی قصور کسی ملزم کی ہو تو اول محکمہ عالیہ سے باضابطہ منظوری حاصل

मुक़दमात बाबत आसामी चेले खवासों और जायदाद चेले खवास की हो उसका तसफ़िया अदालत से न हो जो दीगर जायदाद जाती किसी चेले खवास की मौरूसी या मकसूबः हो उसकी माफ़त अदालत दीवानी से की जाने की मुमानिअत नहीं है -

१ नंबर शुमार	२ तारीख मनज़ूरी
७५	१४ अक्तूबर सन १८९३ ई

३ खुलासा

मुलज़िम की सवारी का चालान मुलज़िम के चालान से अलहदा किया जावे -

४ मज़मून

निज़ामत रेनी इलाके बीकानेर से एक मुलज़िम देवलाजाट नामी मय अपने माल व असबाव के कि जिसमें एक ऊँट भी उसका था निज़ामत शेखावाटी में भेजने की गर्ज से थाने ब थाने चालान किया गया - असनाय राह में फ़ैज़ उद्दीन सवार की हिरासत से फरार होगया और सूरत इस वाक़ये की यों पेश आई कि - सवार ने अपनी सवारी तो ली नहीं जो मुलजिम का ऊँट था उसके पिछले आसन पर खुद बैठ लिया और अगले आसन पर उसको बिठा लिया राह में पानी पीने के लिये एक तालाव पर ऊँट को बिठाकर मुलजिम को भी उतारा और खुद भी उतर और ऊँट की नकेल

مقدمات بابت آسامی چیلہ خواصی اور جائداد چیلہ خواص کی ہو اوسکا تصفیہ عدالت سے نہو جو دیگر جائداد ذاتی کسی چیلہ خواص کی یا موروثی یا مکسوبہ ہو اوسکی معرفت عدالت دیوانی سے کیجانیکی ممانعت نہیں ہے -

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۷۵	۱۴ اکتوبر سنہ ۱۸۹۳ ع

۳ خلاصہ

ملزم کی سواری کا چالان ملزم کے چالان سے علیحدہ کیا جاوے -

۴ مضمون

نظامت رینی علاقہ بیکانیر سے ایک ملزم دیولاجاٹ نامی معہ اپنے مال و اسباب کے کہ جسمیں ایک اونٹ بھی اوس کا تھا نظامت شیخاواٹی میں بھیجنے کی غرض سے تھانہ بہ تھانہ چالان کیا گیا - اثنائے راہ میں فیض الدین سوار کی حراست سے فرار ہوگیا اور صورت اس واقعہ کی یوں پیش آئی کہ سوار نے اپنی سواری تو لی نہیں جو ملزم کا اونٹ تھا اوسکے پچھلے آسن پر خود بیٹھ لیا اور اگلے آسن پر اوسکو بٹھا لیا - راستہ میں پانی پینے کے لئے ایک تالاب پر اونٹ کو بٹھا کر ملزم کو بھی اوتارا اور خود بھی اوترا اور اونٹ کی نکیل

नंबरशुमार	तारीखमंजूरी
७४	१२अकतूबरसन१८९३ई

खुलासा

जमी मे हिदायात नंबरी (२२) मजरियः २६मार्चसन१८९३ई व नम्बरी (४३) मजरयः ३० मई सन१८९३ई बाबत समाअत नालिशात खवास चेलों के -

५
मज़मून

व मुक़दमः रामकवार गुमाश्ता खवास हरनारायणजी खिलफ़ खवास रामकिशोरजी मुद्दई रामकिशन व रामसिया व राम जानकी दास ना बालिग़ पिसरान राम किशोरजी व विलायत मुसम्मात धंनी वाल्दे मुद्दायलहम

दावा इसतक़रार हक़ बाबत जायदाद मोरूसी व मकसूबः ब सबब म ख़बूतुल हवासी पदर

मुख़तारान अदालत दीवानी ने बजरयः कैफियत ४ अकतूबर सन १८९३ ई० यह इसतसवाब कियाकि ऐसे मुक़दमात चेलान की समाअत कीबाबत मुमानिअत आचुकी है और वालिदः फरीकेन वजुमरः खवासान के हैं अदालत इस मुक़दमे का फ़ैसला कर सकती है या नहीं -

जिस पर जवाब में लिखा गयाकि जो हिदायत दरबारे समाअत मुकदमात चेले खवासान जारी हुई है उसका मनशा यह है कि जो

نمبر شمار	تاریخ منظوری
۷۴	۱۲ اکتوبر ۱۸۹۳ء

(۷۴)

خلاصہ

ضمیمہ ہدایات نمبری (۲۲) مجریہ ۲۶ مارچ ۱۸۹۳ء و نمبری (۴۳) مجریہ ۳۰ مئی ۱۸۹۳ء بابت سماعت نالشات خواص چیلون کے -

۵
مضمون

بمقدمہ رام کنوار گماشتہ خواص ہرنراین جی خلف خواص رام کشور جی مدعی - رام کشن و رام سیا و رام جانکی داس نابالغ پسران رام کشور جی بولایت مسماۃ دہنی والدہ مدعاعلیہم

دعوی استقرار حق بابت جائداد موروثی و مکسوبہ بسبب مخبوط الحواسی پدر

مختاران عدالت دیوانی نے بذریعہ کیفیت ۴ اکتوبر ۱۸۹۳ء یہہ استصواب کیا کہ ایسے مقدمات چیلان کے سماعت کی بابت ممانعت آچکی ہے اور والدہ فریقین بزمرہ خواصان کے ہین عدالت اس مقدمہ کا فیصلہ کرسکتی ہے یا نہین -

جسپر جواب مین لکہا گیا کہ جو ہدایت دربارہ سماعت مقدمات چیلہ خواصان جاری ہوئی ہے اوسکا منشا یہہ ہے کہ جو

इन कि जाय मीआद रहेन मुरतहिन ने ना
लिश करके कब्ज़ माला कलामी की डिगरी
मुनसफी से हासिल की और ब दरख्वा
स्त कब्ज़ माला कलामी मुक़दमा बसीगे
इजरा दायर किया-

मुनसिफ़ों ने मुख़तारान अदालत दी
वानी से इस तसवाब किया कि हंगाम इज
राय डिगरी क़बज़ माला कलामी मिसिल
कारवाई ख़त छपी इश्तहार जारी होना चाहि
थे कि अगर किसी मोके पर दावी शफा पेश हो तो
बनज़ीर मुक़दमात काशीनाथ जोहरी बाज़ा
बता उसमें तहक़ीक़ात व तजवीज़ सादर कर
ने का मोका हासिल रहे और बाबत हक़ ख़ालि
सा व बक़ाया व जुरमाने की भी कैफियतें जारी
हुआ करें कि ख़ालिस कारवाई में जो दरपेश
है रफ़ा होजाय-

मुख़तारान अदालत दीवानी ने इस रा
य से इत्तफ़ाक़ करके अपील को लिखा सिर
दारान अपील ने भी इस राय से इत्तफ़ाक़ कि
या और काग़ज़ात इस तसवाब के लिये महि
कमः आलियः में भेजे-

चुनांचि जवाब में लिखा गया कि जब दो
मुक़द्दमे काशीनाथ जोहरी के दावे शफ़ा की
नज़ीर मौजूद होना ख़ुद मुनसिफ़ी की तह
रीर में मौजूद है तो फिर म्वाफ़िक़ इसके
अमल करना चाहिये-

انقضائے میعاد رہن مرتہن نے نالش
کرکے قبض مالا کلامی کی ڈگری منصفی
سے حاصل کی اور بدرخواست
قبض مالا کلامی مقدمہ بصیغہ
اجرا دائر کیا-

منصفوں نے مختاران عدالت
دیوانی سے استصواب کیا کہ ہنگام
اجرائے ڈگری قبض مالا کلامی مثل کارروائی
خط چھپی اشتہار جاری ہونا چاہیے
کس لئے کہ اگر کسی موقع پر دعوی
شفعہ پیش ہو تو بنظیر مقدمات
کاشی ناتھ جوہری باضابطہ اسمین
تحقیقات و تجویز صادر کرنیکا موقع حاصل رہے
اور بابت حق خالصہ و بقایا و جرمانہ کی بھی
کیفیتیں جاری ہوا کریں کہ خلش کارروائی میں جو
درپیش ہے رفع ہو جاوے-

مختاران عدالت دیوانی نے اس رائے
سے اتفاق کرکے اپیل کو لکھا سرداران
اپیل نے بھی اس رائے سے اتفاق کیا او
کاغذات استصواب کے لئے محکمہ
عالیہ میں بھیجے-

چنانچہ جواب مین لکھا گیا کہ جب دو
مقدمہ کاشی ناتھ جوہری کے دعوے شفعہ
کی نظیر موجود ہونا خود منصفی کی تحریر
مین موجود ہے تو پھر موافق اس کے
عمل کرنا چاہیئے-

खत बज़ाबिता रजिस्टरी होना चाहि
ये और बाज़ाबिता तावान लेना चाहिये
इबतिदाई में जो मुहर्रिर ने हस्ब क़ायदा
साबिक़ ७७) रुपये का काग़ज़ इस्टाम्प
तहरीर खत में लगाया वह उसकी गलती है-
और असल काग़ज़ात भेज कर यहां
से इस तरह बाबक़िया - चूंकि राय सिरदा
रान अपील की दुरुस्त थी लिहाज़ा मनज़ू
री लिखी गई और तहरीर हुआ कि वाके
ई जो ज़ियादा क़ीमत पर खत रेहन लिखा
गया यह लिखवाने वाले की गलती है-
अदालत के हुक्म से ऐसा नहीं किया गया जो
अब इखज़ता वान की कार्रवाई में अदालत इस
बेशी क़ीमत काग़ज़ को मुजरा दे इसलि
ये अलावा क़ीमत काग़ज़ के तावान का लि
या जाना मुनासिब है -

नंबर शुमार १	तारीख मंज़ूरी २
७३	९ अक्तूबर सन १८९३ ई०

खुलासा ३

हंगाम इजराय डिगरी क़ब्ज़ मालाकलामी
की भी मिसल कार्रवाई खत छपी के इजरा
य इश्तहार का होना चाहिये -

मज़मून ४

बज़रिये खत रेहन मतबूआ संवत १९०७
जायदाद खैराती धोबी की महमूद खां पिसर
[illegible] है [illegible] नहीं करता मियाद मु
क़र्ररः मुर्तहिन के क़ब्ज़े में रही और बाद

۱۲
(७२)

خط باضابطہ رجسٹری ہونا چاہیئے
اور باضابطہ تاوان لینا چاہیئے
ابتدا میں جو مدعا علیہ نے حسب
قاعدہ سابق ۷۷) کا کاغذ
اسٹامپ تحریر خط میں لگایا یہ اسکی غلطی ہے —
اور اصل کاغذات بھیجکر یہاں
سے استصواب کیا - چونکہ راے
سرداران اپیل کی درست تھی لہذا
منظوری لکھی گئی اور تحریر ہوا کہ واقعی
جو زیادہ قیمت پر خط رہن لکھا گیا
یہ لکھوانے والے کی غلطی ہے —
عدالت کے حکم سے ایسا نہیں کیا گیا
بجواب اخذ تاوان کی کارروائی میں
عدالت اس بیشی قیمت کاغذ کو مجرا
دے اس لئے علاوہ قیمت کاغذ کے تاوان
کا لیا جانا مناسب ہے -

۱۳
(७३)

نمبر شمار	تاریخ منظوری
۷۳	۹ اکتوبر ۱۸۹۳ء

خلاصہ

ہنگام اجراے ڈگری قبض مالاکلامی کی
بھی مثل کارروائی خط چھپی کے اجراے
اشتہار کا ہونا چاہیئے

مضمون

بذریعہ خط رہن مطبوعہ سمت ۱۹۰۷
جائداد خیراتی دھوبی کی محمود خان پسر
گلاب خان کے ہاں [illegible] رہن ہو کر تا میعاد
مقررہ مرتہن کے قبضہ میں رہی اور بعد

क्योंकि अब भी जब जमाखर्चनवीस कलकटरी अपने रवड़र में जमाखर्च अ दालतेन का करता है तो वोही नतीजा निकलता है-

नम्बरशुमार १ तारीखमंजूरी २

७२ २७ सितंबर सन १८९३ ई०

खुलासा ३

अगर कोई शख्स इसटाम्प मुकर्रिरः से ज़ियादा क़ीमत के काग़ज़ पर तमस्सुक लिखावे मगर उसको बाक़ायदा न छपावे तो वोह क़ीमत काग़ज़ मुजरा नहीं होगी- और हस्ब क़ायदा उससे तावान लिया जावेगा-

मज़मून ४

निज़ामत हिंडोन में रामकरन जोशी टोडा भीम ने मदनलाल जोशी की निसबत मुखबरी की कि नामबुरदः ने गियारह सौ रुपये का खत रहेन जो ७७) रु० के काग़ज़ पर है उसको बाज़ाबिता नहीं छपवाया-

नाज़िमजी ने बितरसील खत मज़कूर सिरदारान अपील से दुरयाफ़्त किया कि इसका तावान लिया जावे या नहीं और लिया जावे तो किस मुवाफ़िक़ किसलिये कि अब बजी फ़ीसदी एक रुपये के काग़ज़ पर खत रहेन लिखा जाता है-

सिरदारान अपील ने अपनी मुहरा थ लिखकराके

کیونکہ اب بھی جب جمع خرچ نویس کلکٹری اپنے کہرڑ ہ مین جمع خرچ عدالتین کا کرتا ہے تو وہی نتیجہ نکلتا ہے-

نمبر شمار ۱ تاریخ منظوری ۲

۷۲ ۲۷ ستمبر ۱۸۹۳ء

خلاصہ ۳

اگر کوئی شخص اسٹامپ مقررہ سے زیادہ قیمت کے کاغذ پر تمسک لکہا وے مگر اوسکو باقاعدہ نہ چہپاوے تو وہ قیمت کاغذ مجرا نہیں ہوگی اور حسب قاعدہ اوس سے تاوان لیا جاوے گا-

مضمون ۴

نظامت ہنڈون مین رام کرن جوشی ٹوڈہ بہیم نے مدن لال جوشی کی نسبت مخبری کی کہ نامبردہ نے گیارہ سو روپیہ کا خط رہن جو ۷۷؎ کے کاغذ پر ہے اوسکو باضابطہ نہین چہپوایا-

ناظم جی نے بترسیل خط مذکور سرداران اپیل سے استصواب کیا کہ اس کا تاوان لیا جاوے یا نہین اور جو لیا جاوے تو کس موافق کس لیے کہ اب بہی فیصدی ایکروپیہ کے کاغذ پر خط رہن لکہا جاتا ہے-

سرداران اپیل نے اپنی راے لکہکر کہ

(71)
(93)

हिसाब को लिखा दिया जावे और नाजि
मान को और हरदो दीवानी को ज़ाहिर
है कि जो तरीका और इंतजाम तरतीब का
गज़ात हिसाब वा रसाल ज़र नक़द है उ
समें बिलकुल तग़ैयुर वा तबद्दुल की
कोई जरुरत नहीं है और न की गई बदस्तू
र हिसाब वा रुपया दीवानियों में आता रहे
सिर्फ़ निजामतों में इस बात का इंतजाम कि
या गया है कि हिसाब किताब रुपया अदाल
तेन सीग़े का जमा खर्च नवीस अदाल
तेन का ज़िम्मा रहे क्योंकि जब उस काम
के लिये जुदागाना अहलकार मुकर्रर
किया गया है तो फिर कुछ जरुर नहीं है कि
वोह अपना काम अंजाम न देवे और क
लकटरी सीग़े का जमा खर्च नवीस अपने ख
ड़े में अदालत सीग़े का रु॰ जमा कर लिया क
रे और जब रु॰ जमा करे या खजाने में भेजने
के लिये इरसाल करे तो बाज रकम इधर की उ
धर और उधर की इधर बराह ग़लती दर्ज कर दिया
करे सो इस पर नाजिमों को व दीवानों को लिहाज़
और ग़ौर रखना चाहिये कि सिर्फ़ अमर मज़
कूरे बाला के इंतजाम की गर्ज से यह बंदोब
स्त जारी किया गया है और जो तरीका भेजने
रुपये वग़ैरः का है वोह बदस्तूर रहेगा और
हरदो दीवानियों को यह भी लिखा जावे कि
खड़ा वास्ते इन्दिराज जमा खर्च सीग़े अ
दालतेन के बदस्तूर देते रहें कि हरज न हो

حساب کو لکھدیا جاوے اور ناظمان
کو اور ہر دو دیوانی کو واضح رہے
کہ جو طریقہ اور انتظام ترتیب
کاغذات حساب وارسال زر نقد ہے
اوس مین بالکل تغیر وتبدل کی
کوئی ضرورت نہین ہے اور نہ
کی گئی بدستور حساب و روپیہ دیوانیون
آتا رہے صرف نظامتو مین اس بات کا انتظام
کیا گیا ہے کہ حساب کتاب روپیہ عدالتین
صیغہ کا جمع خرچ نویس عدالتین کا ذمہ دار
ہے کیونکہ جب اوس کام کے لئے
جداگانہ اہلکار مقرر کیا گیا ہے
تو پہر کچہہ ضرور نہین ہے کہ وہ اپنا
کام انجام نہ دیوے اور کلکٹری
صیغہ کا جمع خرچ نویس اپنے کہڑے
مین عدالت صیغہ کا روپیہ جمع کرلیا
کرے اور جب روپیہ جمع کرے یا
خزانہ مین بہیجنے کے لئے ارسال
کرے تو بعض رقوم ادہر کی اودہر
اور اودہر کی ادہر براہ غلطی درج
کر دیا کرے سو اسپر ناظمون اور دیوانونکو
لحاظ اور غور رکہنا چاہیئے کہ صرف امر مذکورہ بالا کے
انتظام کی غرض سے یہہ بندوبست جاری کیا گیا اور
جو طریقہ بہیجنے روپیہ وغیرہ کا ہے وہ بدستور رہیگا اور ہر دو
دیوانیون کو یہہ بہی لکہا جاوے کہ کہڑہ
واسطے اندراج جمع خرچ صیغہ عدالتین
کے بدستور دیتے رہین کہ حرج نہو

कुछ इंतज़ाम नहीं हुआ अब यह हि
साब सीगे कलकटरी अलहदा रख
कर निज़ामत वार हिसाब तैयार करने
का हुक्म होगया क़ायदे हिसाब से हर
एक हिसाब में साबिक़ बाक़ी दर्ज हो
ना वाजिब है अलावा इस के यह हि
साब जुरमाना व थाना फोजदारी मख़
लूत होरहे हैं बहुत रक़में दुहार क़ैद
याफ़्तगी व मुआफ़ी के जमा शुदः र
हती हैं बहुतसी सिवाय अमानतज
मा हैं इस से अव्वल तो अबतरी हि
साब की है दूसरे ज़ियादती रिआया
मुतसव्विर है तीसरे नुक़सान सिरकारी
कि संबत् १९३८ में वसूली हिसाब हुआ
है जो नक़शे जुरमाना वग़ैरह के आये हैं
वोह व वजह न आने हिसाब बाक़ायदा
दाख़िला नहीं हुवे और उन की जमा बंदी
रुपया वसूल होने से मुल्तवी है बाद मु
लाहिज़े काग़ज़ात इंतज़ाम फ़रमाया जा
वे कि दुरुसती हिसाब की होजावे और
आयन्दा तामील में नुक़्स न रहे-

चुनांचे जवाब हरएक अमर का लि
खागया एक एक नक़ल पूरी उस की हर
एक निज़ामत और हरदे दीवानी में भेजदी
जावे और जिस बात के वासते कि मुहतमि
म हिसाब ने इसतसवाब किया है उसका
जवाब बज़रये कैफ़ियत मुहतमिम

کچھ انتظام نہین ہوا اب یہ حساب
صیغہ کلکٹری علحدہ رکھکر نظامت
وار حساب تیار کرنے کا حکم
ہوگیا قاعدہ حساب سے
ہر ایک حساب مین سابق باقی
درج ہونا واجب ہے علاوہ اسکے
یہہ حساب جرمانہ وتھانہ فوجداری
مخلوط ہورہے ہین بہت رقمین دوبار
قید یافتگی ومعافی کی جمع شدہ
رہتی ہین بہت سی سواے امانت جمع
ہین اس سے اول تو ابتری حساب
کی ہے دوسرے زیادتی رعایا
متصور ہے تیسرے نقصان سرکاری
کہ سمت ۱۹۳۸ سے وصولی حساب ہوا ہے
جو نقشہ جرمانہ وغیرہ کے آئے ہین
وہ بوجہ نہ آنے حساب باقاعدہ
داخلہ نہین ہوئے اور نہ اونکی جمعبندی
روپیہ وصول ہونے سے ملتوی ہے بعد
ملاحظہ کاغذات انتظام فرمایا جاوے
کہ درستی حساب کی ہوجاوے اور
آیندہ تعمیل مین نقص نہ رہے-

چنانچہ جواب ہر ایک امر کا لکھا
گیا ایک ایک نقل پوری اس کی
ہر ایک نظامت اور ہر دو دیوانی مین
بھیجدی جاوے اور جس بات کے واسطے کہ
مہتمم حساب نے استصواب کیا ہو اوسکا
جواب بذریعہ کیفیت مہتمم

अगर तहसीलात मज़कूर हमें नी रहेगा
तो कागज़ इस्टाम्प और अदालतैन का
रुपया जुडीशल अहिलकार के हवाले र
क्खा जावे और खर्ड़ा जुडीशल पर दस्त
खत तहसीलदार करे -

महकमे हिसाब से यह लिखा आया है
कि हिसाब थाने फ़ौजदारी की यह सूरत
है कि सम्वत १९४४ तक कुल निज़ामतों
का हिसाब एक होकर मारफ़त फ़ौजदारी
दाखल होता था सम्वत १९४५ में हुकम
अलहदा २ होने का सादर हुआ तामील
इसकी सम्वत १९४५ से अलहदा होती
रही और इसकी साबिक़ बाक़ी दुरस्त व
सही निज़ामतवार होजाने के लिये दर
ख्वास्त महकमे आलिया में की गई मगर
कारवाई हुवा करे तहसीलों के वास्ते मुहर्
रों के सपुर्द यह काम करदेना मुनासब नहीं
है इसमें तवालत काम की होगी और अन्देशा
बखेड़े का जैसा कि इस वक़्त अमलदरामद है
इसी तरह बदस्तूर रहेगा -

मुहतमिम हिसाब को लिखा जावे कि जो
उज़रात और इन्तज़ाम दुरस्ती कार की द
रख्वास्त इस इन्तज़ाम में करी है यह ठीक नहीं
है इस इन्तज़ाम से और इन बातों से क्या त
अल्लुक़ अगर किसी अमर का इसतस्वाब
करना मंज़ूर है तो अलहदा जो अमर किजि
स सीगे से मुतअल्लिक़ है करना चाहिये -

اگر تحصیلات مذکورہ مین بہی رہیگا
تو کاغذ اسٹامپ اور عدالتین
کا روپیہ جوڈیشل اہلکار کے
حوالہ رکہا جاوے اور کہرہ جوڈیشل
پر دستخط تحصیلدار کرے -

محکمہ حساب سے یہہ لکہا آیا ہے کہ
حساب تہانہ فوجداری کی یہہ صورت
ہے کہ سمت ۱۹۴۴ تک کل نظامتون
کا حساب ایک ہوکر معرفت فوجداری
داخل ہوتا تہا سمت ۱۹۴۵ مین حکم علیحدہ
علیحدہ ہونے کا صادر ہوا تعمیل
اسکی سمت ۱۹۴۵ سے علیحدہ ہوتی رہی
اور اس کی سابق باقی درست و صحیح
نظامت وار ہوجانے کے لئے
درخواست محکمہ عالیہ مین کی گئی مگر
کارروائی ہوا کرے تحصیلون کے واسطے
محررون کی سپرد یہہ کام کردینا مناسب
نہین ہے اسمین طوالت کام کی ہوگی اور اندیشہ
بکہیڑہ کا جیسا کہ اسوقت عملدرآمد ہے
اسی طرح بدستور رہیگا -

مہتمم حساب کو لکہا جاوے کہ جو عذرات
اور انتظام درستی کار کی درخواست اس
انتظام مین کری ہے یہہ ٹہیک نہین ہے
اس انتظام سے اور ان باتون سے کیا
تعلق اگر کسی امر کا استصواب کرنا
منظور ہے تو علیحدہ جو امر کہ جس صیغہ
سے متعلق ہے کرنا چاہئے -

ने जितना बैगीया निज़ामत में रहैंगी
दीवानी शरकी से यह इसतस्वाब है कि
तहसील में जो आमदनी जुडीशल का
जमाखर्च अलहिदा होगा वहां मुह
र्रर हैं इसका तअल्लुक निज़ामत से करदि
या जावे कि जमा खर्च नवीस निज़ामत
हर महीने की आमदनी बशमूल आमद
नी निज़ामत सदर में भेजा करें -

दीवानी ग़रबी से यह अमर दरयाफ़्त
तलब है कि यह अमलदरआमद निज़ाम
तों में रहैगा या उन तहसीलों में भी कि
जिन को जुडीशल अख़्तियारात दिये गये हैं

यह तजवीज़ अच्छी नहीं है इस में बखेड़ा ज़ि
यादा पड़ेगा जिस तरह कि तहसीलों से
बाला बाला अदालतों का रुपया मारफ़त
दीवानी के दाखल खज़ाने हुवा करता है इसी
तरह आयन्दा भी कार्रवाई का रहना मुनास
ब है अगर यह रुपया निज़ामत के ज़रये से भे
जा जावेगा तो बजुज़ बखेड़ा और ग़लती के
और कुछ असलूबी नज़र नहीं आती अल
बत्ते जो हिसाब माहवारी व शशमाही व
सालाना दीवानी व निज़ामत को तहसी
लों से जाता है बदस्तूर जाता रहै -

जिस तरह से कि जमा खर्च नवीस तहसील
का कलक्टरी का कागज़ और खर्डा साध
ता है और अदालतों की आमदनी और खर्च
अपने खर्डे में दर्ज करता है इस ही तरह बदस्तूर

یجی جاوے گی یا نظامت مین رہیگی۔
دیوانی شرقی سے یہہ استصواب ہے کہ
تحصیل مین جو آمدنی جوڈیشل کا
جمع خرچ علیحدہ ہوگا وہان محرر ہین اسکا
تعلق نظامت سے کر دیا جاوے۔
کہ جمع خرچ نویس نظامت ہر مہینہ کی
آمدنی بشمول آمدنی نظامت
صدر مین بہیجا کرین۔

دیوانی غربی سے یہہ امر دریافت طلب
ہے کہ یہہ عملدرآمد نظامتون
مین رہیگا یا اون تحصیلون مین بہی کہ جنکو
جوڈیشل اختیارات دیئے گئے ہین

یہہ تجویز اچہی نہین ہے۔ اسمین بکہیڑہ زیادہ
پڑیگا جسطرح کہ تحصیلون سے بالا بالا عدالتون کا
روپیہ معرفت دیوانی کے داخل خزانہ
ہوا کرتا ہے اسیطرح آیندہ بہی کارروائی
کا رہنا مناسب ہے اگر یہہ روپیہ نظامت
کے ذریعہ سے بہیجا جاویگا۔ تو بجز بکہیڑہ
اور غلطی کے اور کچہہ اسلوبی نظر نہین
آتی البتہ جو حساب ماہواری و ششماہی
و سالانہ دیوانی و نظامت کو تحصیلون
سے جاتا ہے بدستور جاتا رہے۔

جسطرح سے کہ جمع خرچ نویس تحصیل کا
کلکٹری کا کاغذ اور کہاتہ سادہ بناتا ہے
اور عدالتون کی آمدنی اور خرچ اپنے
کہاتہ مین درج کرتا ہے اوسیطرح بدستور

नाजिम जी गंगापुर यह दो अमर पूछते हैं एक यह कि रकूम जुरमाना तलबाना व गैरः हस्ब तहरीर अपील व फौजदारी व अदालत वगैरः वसूल होंगे वह जहां से लिखा आया है वहीं भेजे जायंगे या क्या	नाज़िम को वाज़े रहे कि जो रकूम मुतअल्लके सीगे अदालतैन हैं वह खर्डा अदालतैन में हमेशा दर्ज होकर जमा खर्च नवीस के तहवील में रहेंगे और जहां से उनके वसूल के वास्ते लिखा आया है वहीं भेजा जायगा और ऐसा रकूम की तलबी सीगे अदालतैन के सिवा और किसी जगह से नहीं हुवा करती है महकमे हिसाब से भी एक शाख अदालतैन की अलहिदा है	ناظم کو واضح رہے کہ جو رقوم متعلقہ صیغہ عدالتین ہیں وہ کھرڑہ عدالتین میں ہمیشہ درج ہو کر جمع خرچ نویس کی تحویل میں رہینگی اور جہان سے انکے وصول کے واسطے لکھا آیا ہے وہیں بھیجا جائیگا اور ایسی رقوم کی طلبی صیغہ عدالتین کے سوا اور کسی جگہہ سے نہیں ہوا کرتی ہے محکمہ حساب میں بھی ایک شاخ عدالتین کی علیحدہ ہے۔	ناظم جی گنگاپور یہہ دو امر پوچھتے ہیں — ایک یہہ کہ رقوم جرمانہ طلبانہ وغیرہ حسب تحریر اپیل و فوجداری و عدالت وغیرہ وصول ہونگی وہ جہان سے لکھا آیا ہو وہیں بھیجے جائینگے یا کیا۔
दूसरे यह कि अमानत सीगे की रकूम बमूजिब हुक्म दीवानी बाद शशमाही बिला मंज़ूरी नहीं दी जाती है पस तारीख जमा से शशमाही शुमार होगी या फागन सुदी ३ से शुमार की जावेगी और इखत्ताम शशमाही पर ऐसी रकूम खज़ा…	इसका यहां से हाल दर्याफ़्त करना फ़िज़ूल है दीवानी से दरयाफ़्त कर लेना चाहिए	اسکا یہاں سے حال دریافت کرنا فضول ہے دیوانی سے دریافت کرلینا چاہیے۔	دوسرے یہہ کہ امانت صیغہ کی رقوم بموجب حکم دیوانی بعد ششماہی بلا منظوری نہیں دیجاتی ہے پس تاریخ جمع سے ششماہی شمار ہوگی یا پھاگن سدی ۳ سے شمار کی جاوے گی اور اختتام ششماہی پر ایسی رقم خزانہ…

दूसरे यह कि ज़र जुरमाना सनै भाज या पा
उन डिगरयान का जो बाक़यात सरकार
में लिये गये हैं बमूजिब हुक्म दीवानी या
हिसाब या कमेटी बाक़यात वसूल होगा
वो ह किस सीग़े के खड़े में जमा होगा अगर
कलक्टरी के खड़े में जमा हो तो मतालबा अ
दालतैन का है और अगर अदालतैन के
खड़े में जमा किया जावे तो जिन महकमे
तमाल से वास्ते वसूल के लिखा आया है
वह बरवक़्त इत्तला के तसदीक़ वसूल की
नहीं करैंगे और अब तक कारवाई वसू
ल रक़ूमात मुन्दरजे सदर अहिलकार सीग़े
कलक्टरी के तअल्लुक़ रही है इसमें यह दि
क़्क़त वाक़े होगी कि एक सीगे में वसूल की
जाय और दूसरे सीगे में जमा किया जावे
एसा रुपया जो सीगे अदालतैन का है वह
जमा खर्च नवीस सीगे अदालतैन अपने खड़े
में दर्ज करेगा और अपनी तहवील में रक्खेगा
और उसकी इत्तला नाज़िम उस महकमे को
लिखेगा कि जहां से वसूल के वास्ते लिखा
आया है इसमें कोई हर्ज नहीं होगा यह मुना
सिब नहीं है कि डिगरयात या जुरमाना का
रुपया कलक्टरी के जमा खर्च नवीस के खड़े
में जमा हुआ करे इस ही नुक़्स के रफ़े के वास्ते
यह अहिकाम जारी किये गये हैं और नाज़ि
म फ़िर उस ही के ताईद में यह सवालात तह
रीर करता है–

دوسرے یہ کہ زر جرمانہ سین اغضیہ یا
اون ڈگریات کا جو باقیات سرکار
مین لئے گئے ہین بموجب حکم دیوانی یا
حساب یا کمیٹی باقیات وصول ہوگا
وہ کس صیغہ کے کہڑہ مین جمع ہوگا اگر
کلکٹری کے کہڑہ مین جمع ہو تو مطالبہ
عدالتین کا ہے اور اگر عدالتین کے
کہڑہ مین جمع کیا جاوے تو جن محکمہ جات
مال سے واسطے وصول کے لکہا آیا ہے
وہ بروقت اطلاع کے تصدیق وصول
کے نہین کرینگے اور ابتک کارروائی وصول
رقومات مندرجہ صدر اہلکار صیغہ کلکٹری
کے متعلق رہی ہے اسمین یہ دقت واقع ہوگی
کہ ایک صیغہ مین وصول کی جاوے
اور دوسرے صیغہ مین جمع کیا جاوے۔
ایسا روپیہ جو صیغہ عدالتین کا ہے وہ
جمع خرچ نویس صیغہ عدالتین اپنے کہڑہ
مین درج کرے گا اور اپنی تحویل مین رکہیگا
اور اوسکی اطلاع ناظم اوس محکمہ کو لکہیگا
کہ جہان سے وصول کے واسطے لکہا
آیا ہے اسمین کوئی حرج نہین ہوگا یہ
مناسب نہین ہے کہ ڈگریات یا جرمانہ کا
روپیہ کلکٹری کے جمع خرچ نویس کے کہڑہ
مین جمع ہوا کرے اس ہی نقص کے
رفع کے واسطے یہ احکام جاری کئے گئے ہین اور ناظم
اوس ہی کی تائید مین یہ سوالات تحریر
کرتا ہے۔

मुन्तज़िम / नाज़िम की दरख़्वास्त	हुक्म	حکم	منتظم / ناظم کی درخواست
मुन्तज़िम महल का बांदी कुई की यह दरख़्वास्त है कि इस निज़ामत में एक सरिश्तेदार और दो अहलमद मुकर्रर हैं और मिनजुमले अहलमदों के एक अहलमद काम जमाखर्चनवीसी का भी अंजाम देता है एक अहलमद का इज़ाफ़ा होना चाहिये -	नाज़िम को लिखा जावे कि यह दरख़्वास्त तुम्हारी काबिल मंज़ूरी के नहीं है आयन्दा सोच समझ कर दरख़्वास्त किया करो -	ناظم کو لکھا جاوے کہ یہہ درخواست تمہاری قابل منظوری کے نہین ہے آیندہ سوچ سمجھکر درخواست کیا کرو۔	منتظم محلہ باندی کوئی کی یہہ درخواست ہے کہ اس نظامت مین ایک سررشتہ دار اور دو اہلمد مقرر ہین اور منجملہ اہلمدون کے ایک اہلمد کام جمعخرچ نویسی کا بہی انجام دیتا ہے ایک اہلمد کا اضافہ ہونا چاہیئے۔
नाज़िम जी सवाई माधोपुर हस्बज़ैल इस्तफ़सार करते हैं अव्वल यह कि सीग़ा कलक्टरी से यह हिदायत है कि वसूल ज़रदादरसी या जुरमाना के वास्ते अहिलकारान सीगे कलक्टरी न जाया करें इस लिये जमाखर्चनवीस अदालतेन फ़सल के ऊपर देहात ज़ब्ती के काम के लिये जाया करता है खड़ा और रोकड़ उसके सपुर्द होते हैं देहात की तहसील क्योंकर होगी -	नाज़िम को लिखा जावे कि जो इस निज़ामत में यह काम जारी रखना पसन्द किया गया है कि जमाखर्चनवीस ज़रदादरसी के वसूल के वास्ते देहात में भेजा जाता है निहायत बेजा है आयन्दा को बिलकुल बन्द करदे और जिस तरह से कि और निज़ामतों से मारफ़त अफ़सरान थाना वगैरः के यह काम लिया जाता है इसी तरह नाज़िम को भी लेना चाहिये -	ناظم کو لکھا جاوے کہ جو اس نظامت مین یہہ کام جاری رکہنا پسند کیا گیا ہے کہ جمعخرچ نویس زر دادرسی کی وصول کے واسطے دیہات مین بہیجا جاتا ہے نہایت بیجا ہے آیندہ کو بالکل بند کردو اور جس طرح سے کہ اور نظامتون سے معرفت افسران تہانہ وغیرہ کے یہہ کام لیا جاتا ہے اسیطرح ناظم کو بہی لینا چاہیئے۔	ناظم جی سوائی مادہوپور حسب ذیل استفسار کرتے ہین اول یہہ کہ صیغہ کلکٹری سے یہہ ہدایت ہے کہ وصول زر دادرسی یا جرمانہ کے واسطے اہلکاران صیغہ کلکٹری نہ جایا کرین اس لئے جمعخرچ نویس عدالتین فصل کے اوپر دیہات ضبطی کے کام کو جایا کرتا ہے کہڑہ اور روکڑ اوسکی سپرد ہوتے ہین دیہات کی تحصیل کیونکر ہوگی۔

Hindi	Hindi	Urdu	Urdu
और तहसील से हिसाब अुदीशल आवेगा तो शामूल गोशवारा शशमाही और सालतमाम होगा या नहीं -	कर लेना चाहिये - दरहाले कि अभी तक अदालतैन का हिसाब तहसीलों का निज़ामतों में आकर दर्ज काग़ज़ात बसीगे अदालतैन माहवारी व शशमाही व साल तमाम हुवा करता है उसी तरह आयन्दा भी होता रहैगा इस इन्तज़ाम से असली मतलब यह है कि अहिलकार जिस काम का ज़िम्मे वार है उससे काम लिया जावे और जो अकसर अदालतैन की रक़म माल की रक़म में खल्त मल्त होकर मुद्दत तक उसका झगड़ा हुवा करता है यह न हुवा करे	کرلینا چاہیئے - درحالیکہ ابھی تک عدالتین کا حساب تحصیلون کا نظامتون مین آکر درج کاغذات بصیغہ عدالتین ماہواری و ششماہی و سالتمام ہوا کرتا ہی اوسیطرح آیندہ بھی ہوتا رہیگا اس انتظام سے اصلی مطلب یہہ ہی کہ اہلکار جس کام کا ذمہ وار ہی اوس سے کام لیا جاوے اور جو اکثر عدالتین کی رقوم مال کی رقوم مین خلط ملط ہوکر مدت تک اوسکا جھگڑہ ہوا کرتا ہی یہہ نہوا کرے -	اور تحصیل سے حساب جو شامل آویگا تو شمول گوشوارہ ششماہی اور سالتمام ہوگا یا نہیں -
नाज़िम जी दोसरा दरख़ास्त करते हैं कि खर्डों की मंजूरी होनी चाहिये और हिदायत में इतना फ़िकरा और ज़ियादा होना चाहिये कि ज़िम्मे वार खड़ा और रक़म के जमा खर्च नवीस रहैंगे -	दीवानी से हर एक नाज़िम खड़ा मुहरी मंगाले वें और आयन्दा मंगाया करें - बेशक ज़िम्मे वार रहैंगे और ज़मानतें जमा खर्च नवीसान की हस्ब दस्तूर जिन की कि नहीं ली गई हैं ली जावेंगी -	دیوانی سے ہر ایک ناظم کہرڑہ مہری منگالیوین اور آیندہ منگایا کرین - بیشک ذمہ وار رہین گے اور ضمانتین جمع خرچ نویسان کی حسب دستور جنکی کہ نہین لیگئی ہین لیجاوین گی -	ناظم جی دوسرے درخواست کرتے ہین کہ کہرڑہ کی منظوری ہونی چاہیئے اور ہدایت مین اتنا فقرہ اور زیادہ ہونا چاہیئے کہ ذمہ وار کہرڑہ اور رقم کے جمع خرچ نویس رہین گے -

जमा कराये उसमें फ़ीसदी =) परखाई के लिये जावें तो तनख़्वाह सर्राफ़ निकल सकती है इसकी मंज़ूरी होनी चाहिये –			جمع کرائے اوس میں سے فیصدی ۲ پرکہائی کے لئے جاوین تو تنخواہ صراف کی نکل سکتی ہے اسکی منظوری ہونی چاہئے۔
नाज़िमजी माल पुरा और सान्भर दरयाफ़्त करते हैं कि रक़ूम सीग़े अदालतैन जो इरसाल सदर होगी उसकी हुंडावन कहां से दी जावेगी आया अलहिदा मंज़ूरी होगी या सीग़े कलकरी से फ़ीसदी =) दी जाती है उसी तरह सीग़े कलकरी से दी जावेगी –	जिस तरह से कि अब तक सीग़े कलकरी से हुंडावन दिया जाता है उसी तरह से आयन्दा भी दिया जाया करेगा और दीवानी में रुपया लिया जाया करेगा मगर माल के रुपया से बिलकुल अलहिदा इरसाल हुवा करेगा ताकि मुग़ालता न हुवा करे –	جس طرح سے کہ ابتک صیغہ کلکٹری سے ہنڈاون دیاجاتا ہے اوسی طرح سے آیندہ بہی دیاجایا کریگا اور دیوانی میں روپیہ لیاجایا کریگا مگر مال کے روپیہ سے بالکل علیحدہ ارسال ہوا کریگا تاکہ مغالطہ نہوا کرے۔	ناظم جی مالپورہ اور سانبہر دریافت کرتے ہین کہ رقوم صیغہ عدالتین جو ارسال صدر ہوگی اوسکی ہنڈاون کہان سے دیجاویگی آیا علیحدہ منظوری ہوگی یا صیغہ کلکٹری سے فیصدی ۲ دیجاتی ہے اوسیطرح صیغہ کلکٹری سے دیجاویگی۔
नाज़िमजी सान्भर यह भी पूछते हैं कि बक़ाया सम्वत १९४९ की सम्वत १९५० सीग़े अदालतैन में खड़ी कलकरी से पकड़ी जायगी या नहीं और गोशवारा शशमाही साल तमाम में बाक़ी कौन से साल से पकड़ी जावेगी –	अगर बक़ाया संवत १९४९ सीग़े अदालतैन की रक़ूम अलहिदा खड़ी कलकरी में बज़ैल बाक़ी दर्ज है तो बेशक उसको जमा खर्च नवीस अदालतैन बक़ाया में दर्ज करके आयन्दा हिसाबों में लिखता रहेगा और जो कुछ इस बारे में ज़ियादा तरद्दुद [illegible] करना हो दीवानी से [illegible]	اگر بقایا سمت ۱۹۴۹ صیغہ عدالتین کی رقوم علیحدہ کہڑہ کلکٹری مین مذیل باقی درج ہے تو بیشک اوسکو جمعخرچ نویس عدالتین بقایا مین درج کرکے آیندہ حسابون مین لکہتا رہیگا اور جو کچہہ اسبارہ مین زیادہ تردد دریافت کرنا ہو دیوانی سے دریافت	ناظم جی سانبہر یہہ بہی پوچہتے ہین کہ بقایا سمت ۱۹۴۹ کی سمت ۱۹۵۰ صیغہ عدالتین مین کہڑہ کلکٹری سے پکڑی جاویگی یا نہین اور گوشوارہ ششماہی سالتمام مین باقی کونسے سال سے پکڑی جاویگی۔

	तो उसके पास कसरत काम की नहीं थी जो अब होजावेगी :	تو اوسکے پاس کثرت کام کی نہین ہے جو اب ہو جاویگی۔	
और अगर रुपया जमा खर्चनवीस अदालतेन के पास रहेगा तो वक्त दाखले खज़ाने के रुपया के खोटे खरे का ज़िम्मेवार कौन होगा किसलिये कि जमा खर्चनवीस अदालतेन रुपया परखने से आजिज़ होगा -	वही ज़िम्मेवार होगा कि जो तनख़्वाह पावेगा और यह काम करेगा और रुपया लेवेगा चुनांचि अबतक भी ऐसा ही होता है कि जमा खर्चनवीस कलक्टरी और किसी जगह जमा खर्चनवीस अदालतेन रुपया देख के लिया करते हैं इसही तरह नाज़िर निज़ामतों का लिया करता है यह कोई जदीद बात नहीं है-	وہی ذمہ دار ہوگا کہ جو تنخواہ پاوے گا اور یہہ کام کرے گا اور روپیہ لیویگا۔ چنانچہ ابتک بھی ایسا ہی ہوتا ہے کہ جمع خرچ نویس کلکٹری اور کسی جگہہ جمع خرچ نویس عدالتین روپیہ دیکھہ کے لیا کرتے ہین اسیطرح ناظر نظامت تو لیا کرتا ہے۔ یہہ کوئی جدید بات نہین ہے۔	اور اگر روپیہ جمع خرچ نویس عدالتین کے پاس رہے گا تو بوقت داخلہ خزانہ کے روپیہ کے کھوٹے کھرے کا ذمہ وار کون ہوگا۔ کس لئے کہ جمع خرچ نویس عدالتین روپیہ پرکھنے سے عاجز ہوگا۔
नाज़िमजी सवाईजैपुर दरख़्वास्त करते हैं कि रुपया परखने के लिये ७) माहवार का १ सराफ़ मुक़र्रर होना चाहिये जो शख़्स रुपया जमा कराये अगर पचास रुपया से कम जमा कराये तो उससे बाबत परखाई के कुछ न लिया जावे और जो ५०) रुपया से ज़ियादा	यह दरख़्वास्त नाज़िमजी की महज़ फ़िज़ूल है और नाक़ाबिल मंज़ूरी के है -	یہہ درخواست ناظم جی کی محض فضول ہے اور ناقابل منظوری کی ہے۔	ناظم جی سوائی جے پور درخواست کرتے ہین کہ روپیہ پرکھنے کے لئے للعہ روپیہ ماہوار کا ایک صراف مقرر ہونا چاہیے جو شخص روپیہ جمع کرائے اگر پچاس روپیہ سے کم جمع کرائے تو اوس سے بابت پرکھائی کے کچھہ نہ لیا جاوے اور جو پچاس روپیہ سے زیادہ

पा अंगरेज़ी महीनों से - नाज़िमजी शेखावाटी तोरावाटी मालपुरा सवाई जैपुर दरयाफ़्त करते हैं कि रुपया अबतक तहवील फ़ोतेदार में रहता है अब आयन्दा उसही के तहवील में रहेगा या जमा खर्च नवीस अदालतैन की तहवील में अगर रुपया जमा खर्च नवीस अदालतैन के तहवील में रहेगा तो एक २ संदूक और दो दो कुफ़ल की मंज़ूरी होनी चाहिये -	रुपया और खरड़ा ब तहवील जमा खर्च नवीस अदालतैन रहेगा - क्योंकि इसही नुक्स के रफ़े करने के वास्ते यह तजवीज़ की गई है कि मुलाज़म जिस काम का हो वह तो उस काम को अंजाम न देवे और दूसरा अंजाम देवे यह निहायत नाकिस कार्रवाई है और जहां जमा खर्च नवीस अदालतैन के पास संदूक और कुफ़ल नहीं है वहां से मय तख़मीना दरख़्वास्त मंज़ूरी आनी चाहिये और जहां मौजूद है वहां कोई ज़रूरत नहीं -	روپیہ اور کھرڑہ بہ تحویل جمع خرچ نویس عدالتین رہے گا - کیونکہ اس ہی نقص کے رفع کرنے کے واسطے یہہ تجویز کی گئی ہے کہ ملازم جس کام کا ہووہ تو اوس کام کو انجام نہ دیوے اور دوسرا انجام دیوے - یہہ نہایت ناقص کارروائی ہے اور جہاں جمع خرچ نویس عدالتین کے پاس صندوق اور قفل نہیں ہے وہاں سے مع تخمینہ درخواست منظوری آنی چاہئے اور جہاں موجود ہے وہاں کوئی ضرورت نہیں -	با انگریزی مہینوں سے - ناظم جی شیخاواٹی توراواٹی مالپورہ سوائی جےپور دریافت کرتے ہیں کہ روپیہ اب تک تحویل فوطہ دار میں رہتا ہے اب آیندہ اوسی کی تحویل میں رہے گا یا جمع خرچ نویس عدالتین کی تحویل میں اگر روپیہ جمع خرچ نویس عدالتین کی تحویل میں رہے گا تو ایک ایک صندوق اور دو دو قفل کی منظوری ہونی چاہئے -
नाज़िमजी शेखावाटी यह भी दरख़्वास्त करते हैं कि काम जमा खर्च नवीस अदालतैन के पास ज़ियादा है १७ माहवार का मददगार होना चाहिये -	यह दरख़्वास्त नाज़िमजी की काबिल मंज़ूरी के नहीं है क्योंकि जब जमा खर्च नवीस अदालतैन का मुतअल्लिक़े काम जमा खर्च नवीसी कलक्टरी अलावे काम कलक्टरी के अंजाम देता था	یہہ درخواست ناظم جی کی قابل منظوری کے نہیں ہے کیونکہ جب جمع خرچ نویس عدالتین کا متعلقہ کام جمع خرچ نویس کلکٹری علاوہ کام کلکٹری کے انجام دیتا تھا	ناظم جی شیخاواٹی یہہ بھی درخواست کرتے ہیں کہ کام جمع خرچ نویس عدالتین کے پاس زیادہ ہے عہ روپیہ ماہوار کا مددگار ہونا چاہئے -

नज़िमजी तोराबाटी दौसा सवाई माधोपुर सान्बर मालपुरा सवाई जैपुर गंगापुर हस्बनैल इसतस्वाब करते हैं	जवाब	جواب	ناظم جی توراواٹی دوسہ سوائی مادھوپور سانبھر مالپورہ سوائی جیپور گنگاپور حسب ذیل استصواب کرتے ہیں۔
(१) जो रुपया काबिल जमा किये जाने खज़ाने के होता है वह अब तक मारफ़त दीवानी के खज़ाने भेजा जाता है अब बदस्तूर मारफ़त दीवानी के खज़ाने भेजा जाया करेगा या मारफ़त अपील के	बदस्तूर मारफ़त दीवानी के खज़ाने भेजा जावे मगर उस रक़म के साथ जो नक़शा तफ़सील रक़ूमात का हो उस में कलक्टरी मीगा की रक़म हरगिज़ दर्ज न होना चाहिये	بدستور معرفت دیوانی کے خزانہ بھیجا جاوے مگر اس رقم کے ساتھ جو نقشہ تفصیل رقومات کا ہو اس میں کلکٹری صیغہ کی رقم درج ہونا چاہئے۔	(۱) جو روپیہ قابل جمع کئے جانے خزانہ کے ہوتا ہے وہ اب تک معرفت دیوانی کے خزانہ بھیجا جاتا ہے اب بدستور معرفت دیوانی کے خزانہ بھیجا جایا کرے گا یا معرفت اپیل کے۔
(२) माहवारी शशमाही सालनमाम हफ़्रोज़ह कहां भेजा जावेगा अब तक मारफ़त दीवानी भेजा जाता है	बदस्तूर मारफ़त दीवानी के भेजा जावे-	بدستور معرفت دیوانی کے بھیجا جاوے۔	(۲) ماہواری ششماہی سالتمام ہفت روزہ کہاں بھیجا جاوے گا اب تک معرفت دیوانی بھیجا جاتا ہے۔
(३) खरड़ा महकमह अपील से बाद सब्त मुहर आयेगा या बदस्तूर महकमः दीवानी से आयेगा-	महकमः दीवानी से बदस्तूर आयेगा	محکمہ دیوانی سے بدستور آئیگا۔	(۳) کھرڑہ محکمہ اپیل سے بعد ثبت مُہر آئے گا یا بدستور محکمہ دیوانی سے آئے گا۔
(४) तरतीब खरड़ा की हिन्दी महीनों से रहेगी	हिन्दी महीनों से बदस्तूर रहेगी-	ہندی مہینوں سے بدستور رہیگی۔	(۴) ترتیب کھرڑہ کی ہندی مہینوں سے رہیگی

निज़ामत में था बाद में वास्ते अदालतैन के
ईज़ाद कियागया पस वह पूरी तनख़्वाह पाता
है और अदालते का जमा ख़र्च नवीस है तो
क्यों नहीं सब काम अदालतैन का उसके ज़ि
म्मेवारी में रक्खा जावे और जो मुग़ालता रक़ू
म के जमा होने में हुवा करता है कि अदालतैन
का रुपया माल में जमा होजाता है और बरसों
उसकी छानबीन और पाबिन्दगान रुपया की
सर गरदानी हुवा करती है वह सब रफ़े होजावे
नाज़िम बाद परताल के खरड़ा अदालतैन पर
रोज़ मर्रह दस्तख़त किया करे और जो रुपया
सदर में भेजने के काबिल हो वह बज़रये फ़हर
स्त अलहदा २ भेजा जावे नाज़िम इसके बर
ख़िलाफ़ न होने दें जो जमा ख़र्च नवीस इसके
बर ख़िलाफ़ अमलदरामद रक्खेगा मस्तूजि
ब तदारुक होगा और नाज़िम ज़िम्मेवार स
मझा जावेगा - शुरू माह आयन्दा से इसका
अमलदरामद रक्खा जावे -
ज़ां बाद १० जून सन १८९३ ई० को यह हुकम जा
री कियागया कि अमलदरामद इसका भादों सु० ३
सम्बत १९५० यानी शुरू साल आयन्दा से किया जावे
और इस अरसे में हुक्काम मातहत को जो जो अमूर
इंतज़ाम तलब और मुश्तबह दरयाफ़्त तलब मालूम
हों वह दरयाफ़्त करलें चुनान्चे हुक्काम मातहत
ने जो अमूर दरयाफ़्त तलब लिखे वह हस्ब ज़ेल
हैं और उनका जवाब उन के मुक़ाबिल में तहरीर
किया जाता है -

نظامت مین تہا بعد مین واسطے عدالتین
کے ایزاد کیا گیا پس وہ پوری تنخواہ پاتا ہے
اور عدالتین کا جمع خرچ نویس ہے تو کیون
نہین سب کام عدالتین کا اوسکے ذمہ داری
مین رکہا جاوے اور جو مغالطہ رقوم کے
جمع ہونے مین ہوا کرتا ہے کہ عدالتین
کا روپیہ مال مین جمع ہوجاتا ہے اور برسون
چہان بین اور پابندگان روپیہ کی سرگردانی
ہوا کرتی ہے وہ سب رفع ہوجاوے ناظم
بعد پرتال کے کہرڑہ عدالتین پر روزمرہ
دستخط کیا کرے اور جو روپیہ صدر
مین بہیجنے کے قابل ہو وہ بذریعہ
فہرست علیحدہ علیحدہ بہیجا جاوے ناظم
اسکے برخلاف ہونے دین - جو جمع خرچ نویس
اسکے برخلاف عملدرآمد رکہے گا مستوجب
تدارک ہوگا اور ناظم ذمہ وار سمجہا جاویگا
شروع ماہ آیندہ سے اس کا
عملدرآمد رکہا جاوے -
زان بعد ۱۰ جون ۱۸۹۳ع کو یہ حکم جاری
کیا گیا کہ عملدرآمد اسکا بہادون سدی ۳/
سمت ۱۹۵۰ یعنی شروع سال آیندہ سے
کیا جاوے - اور اس عرصہ مین حکام ماتحت
کو جو جو امور انتظام طلب اور مشتبہ دریافت
طلب معلوم ہون وہ دریافت کرلین چنانچہ
حکام ماتحت نے جو امور دریافت طلب لکہی
وہ حسب ذیل مین اور اونکا جواب اونکے
مقابل مین تحریر کیا جاتا ہے -

سمجھنے میں دشواری اور مغالطہ واقع ہو۔

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۷۲	۱۳ ستمبر سنہ ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری (۴۹) مجریہ ۱۶ مئی سنہ ۱۸۹۳ء بابت جدا جدا کرنے کام جمع خرچ نویس کلکٹری و جوڈیشل۔

۴

مضمون

تحریر نظامت سانبھر سے ظاہر ہوا تھا کہ کام جمع و خرچ صیغہ کلکٹری اور صیغہ جوڈیشل کا مخلوط ہے اور جمع خرچ نویس عدالتین کھرڑہ صیغہ کلکٹری سے ایک سادہ کھرڑہ مین نقل لکھ لیتا ہے اور روپیہ عدالتین صیغہ کا ہر دو کی تحویل مین رہا کرتا ہے چنانچہ جملہ نظامتون سے اسکا حال دریافت ہو کر سرداران اپیل اور ہر دو دیوان اور مہتمم حساب سے رای لینے کے بعد ۱۶ ستمبر سنہ ۹۳ء کو یہہ ہدایت جاری کی گئی تھی کہ کام اور روپیہ جمع و خرچ نویس کلکٹری اور عدالتین کا علیحدہ علیحدہ رہا کرے ایک کا دوسرے سے کچھ واسطہ نہ رکھا جاوے ہر دو اپنے اپنے کام کے ذمہ وار رہیں اور اپنا اپنا کھرڑہ مُہری مرتب رکھا کرین۔ کیونکہ پیشتر صرف ایک جمع خرچ نویس

ब्रमझने मे दुशवारी और मुगालतह वाके हो -

१ नम्बरशुमार	२ तारीख मंजूरी
७२	१३ सितम्बर सन् १८९३ ई०

३

खुलासा

जमीमह हिदायत नम्बरी (४९) मजरयः १६ मई सन् १८९३ ई० बाबत जुदा २ करने काम जमाखर्च नवीस कलकरी व जुडीशल -

४

मज़मून

तहरीर निज़ामत साम्भर से ज़ाहर हुवा था कि काम जमा व खर्च सीगे कलकरी और सीगे जुडीशल का मख़लूत है और जमाखर्च नवीस अदालतैन खरड़ा सीगा कलकरी से एक सादा खरड़े में नकल लिखलेता है और रुपया अदालतैन सीगे का हरदो की तहवील में रहा करता है - चुनांचि जुमले निज़ामतों से इसका हाल दरयाफ़्त होकर सरदारान अपील और हरदो दीवान और मोहतमिम हिसाब से राय लेने के बाद १६ मई सन १८९३ ई० को यह हिदायत जारी की गई थी कि काम और रुपया जमाखर्च नवीस कलकरी और अदालतैन का अलहदा अलहदा रहा करे एक का दूसरे से कुछ वास्ता न रक्खा जावे हरदो अपने २ काम के ज़िम्मेवार रहैं और अपना अपना खरड़ा मुहरी मुरत्तब रक्खा करैं क्योंकि पेशतर सिर्फ़ एक जमाखर्चनवीस

۴

مضمون

سابق ازین ۱۴ اگست ۱۸۸۳ء کو ہدایت جاری ہوچکی ہے کہ جب کوئی مقدمہ بعد تحقیقات قابل فیصلہ معلوم ہووے تو سب سے پہلے فیصلہ اوس کا قلمبند کردیا جاوے جسمین بیانات فریقین امور تنقیح طلب ثبوت تردید تجویز حاکم درج ہون وغیرہ مگر دیکھا جاتا ہے تو ماتحت مین اسکے تعمیل پوری طور پر نہین ہوتی اور فیصلہ لکھولنے مین پوری توجہ نہین کی جاتی ہو یعنی عذرات فریقین کا مفصل طور پر تسلیم و تردید کے ساتھہ تصفیہ نہین کیا جاتا اور اسی وجہ سے اکثر اہل مقدمات کو بیوجہ موقع مرافعہ کرنیکا ملجاتا ہے کہ جس سے ناحق وقت عدالت بالادست کا فضول صرف ہوتا ہے۔ اگر فریقین کے کلی عذرات کا تصفیہ پورے طور پر تجویز مین کردیا جاوے تو پھر فریق ناکامیاب کو گنجایش مرافعہ ناحقہ کی نرہے اسلئے مناسب معلوم ہوتا ہے کہ جملہ حکام ماتحت کو لکھا جاوے کہ بروقت فیصلہ کے اسطرف پوری توجہ رکھی جاوے کہ فریقین مقدمہ کے کلی عذرات کا تصفیہ واضح طور پر فیصلہ مین کردیا جایا کرے مگر اسپر بھی لحاظ رہے کہ ایسی طول عبارت نہو کہ جسمین مطلب بھی فوت ہوجاوے اور

४

मज़मून

साबिक़ अज़ीं १४ अगस्त सन १८८३ को हिदायत जारी हो चुकी है कि जब कोई मुक़द्दमा बाद तहक़ीक़ात क़ाबिल फ़ैसला मालूम होवे तो सब से पहिले फ़ैसला उसका क़लमबन्द कर दिया जावे जिस में ब्यानात फ़रीक़ैन अमूर तनक़ीह तलब सुबूत तरदीद तजवीज़ हाकिम दर्ज हों वग़ैरः मगर देखा जाता है तो मातहत में इसकी तामील पूरे तौर पर नहीं होती और फ़ैसला लिखवाने में पूरी तवज्जुह नहीं की जाती है यानी उज़रात फ़रीक़ैन का मुफ़स्सल तौर पर तसलीम व तरदीद के साथ तसफ़ियह नहीं किया जाता और इसी वजह से अकसर अहिल मुक़द्दमात को बे वजह मौक़ा मुराफ़ा करने का मिल जाता है कि जिस्से नाहक़ वक़्त अदालत बालादस्त का फ़िज़ूल सर्फ़ होता है अगर फ़रीक़ैन के कुल्ली उज़रात का तसफ़ियह पूरे तौर पर तजवीज़ में कर दिया जावे तो फिर फ़रीक़ नाकामयाब को गुनजाइश मुराफ़ा नाहक़ की न रहे इस लिये मुनासिब मालूम होता है कि जुमले हुक्काम मातहत को लिखा जावे कि बवक़्त फ़ैसले के इस तरफ़ पूरी तवज्जुह रक्खी जावे कि फ़रीक़ैन मुक़द्दमा के कुल्ली उज़रात का तसफ़ियह वाज़ह तौर पर फ़ैसले में कर दिया जाया करे मगर इस पर भी लिहाज़ रहे कि ऐसी तवालत इबारत न हो कि जिस में मतलब भी फ़ौत हो जावे और

(६९)

मुकदमातोसीग़ेलकरीका और उसके फ़रे सीग़े अदालत दीवानी में - तअज्जुब है कि नाज़िम जीने ऐसी बेज़ाब्ता कार्रवाई की और सरदारान अपीलने भी इसपर लिहाज़ न किया -

लिहाज़ा बमंज़ूरी मुराफ़ा अपीलांट तजावज़ मातहत कलअदम कीगई और बनबस्तुन सरदारान अपील नाज़िम दौसा को लिखागया कि उज़रदार के उज़रदारी का तसफ़िया बसीग़े कलकरी करें इससे फ़रीक़ नाराज़ मुराफ़ा महकमें मजाज़ में करके अपनी चारा जोई करेगा। हां अगर सीग़े कलकरी से किसी फ़रीक़ को नम्बरी नालिश की हिदायत हो और वह फ़रीक़ हिदायत याफ़्तह सीग़े अदालत दीवानी में नम्बरी नालिश करेगा तो जो वाजिब होगा वह सीग़े अदालत से फ़ैसला होजायगा - यह कार्रवाई जो अब तक महकमात मातहत मे हुई है सरासर ख़िलाफ़ ज़ाब्ता हुई है बिलकुल कलअदम करदी जावे और सरदारान अपील को यह भी लिखा गया कि आयन्दा इसतरह पर सरसरी नज़र से फ़ैसला मुक़दमात का न किया करें तजावीज़ मातहत को अज़ रूए ज़ाब्ता देख लिया करें

१	२
नम्बर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
७०	१३ सितम्बर सन १८९३

(७०)

३

ख़ुलासा

जमींमे हिदायत नम्बरी २५ मजरयः १४ अगस्त

---

(۶۹)

مقدمہ تو صیغہ کلکٹری کا اور اوسکے فرع صیغہ عدالت دیوانی مین - تعجب ہے کہ ناظم جی نے ایسے بیضابطہ کارروائی کی اور سرداران اپیل نے بھی اسپر لحاظ نکیا -

لہذا بمنظوری مرافعہ اپیلانٹ تجاویز ماتحت کالعدم کی گئین اور بنوسط سرداران اپیل ناظم دوسہ کو لکھا گیا کہ عذردار کی عذرداری کا تصفیہ بصیغہ کلکٹری کرین اس سے فریق ناراض مرافعہ محکمہ مجاز مین کرکے اپنی چارہ جوئی کریگا - ہان اگر صیغہ کلکٹری سے کسی فریق کو نمبری نالش کی ہدایت ہو اور وہ فریق ہدایت یافتہ صیغہ عدالت دیوانی مین نمبری نالش کریگا تو جو واجب ہوگا وہ صیغہ عدالت سے فیصلہ ہوجاویگا - یہہ کارروائی جو ابتک محکمات ماتحت مین ہوئی ہے سراسر خلاف ضابطہ ہوئی ہے بالکل کالعدم کردیجاوے اور یہہ سرداران اپیل کو یہہ بھی لکھا گیا کہ آیندہ اسطرح پر سرسری نظر سے فیصلہ مقدمات کا نکیا کرین تجاویز ماتحت کو از روے ضابطہ دیکھہ لیا کرین -

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۷۰	۱۳ ستمبر ۱۸۹۳ء

(۷۰)

خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری ۲۵ مجریہ ۱۴ اگست

ہوسکتی ہے -

۴

مضمون

بملاحظہ مسل مقدمہ کنہی رام و مُہری لال مہاجن
سراوگی عذردار اپیلانٹ -
سرکار دولت مدار نمبر (۱) چندولال
سراوگی ساکن ایضاً مدعا علیہ
ریسپاڈنٹ - عذرداری بابت چسپان
ہونے اشتہار نیلام مکان مرہونہ بمقدمہ بقایا
سرکاری ذمگی چاندولال - ظاہر ہوا کہ بمقدمہ بقایا
تعدادی ۵۷؎ ذمگی چندولال
نظامت دوسہ سے بنابر وصول تعلقدار کو
لکہا گیا جواب مین تعلقدار نے لکہا کہ
باقیدار لاوارث مرگیا مگر مکانات
اوسکے موجود ہین - اس پر نظامت
سے حکم گیا کہ ان مکانات پر اشتہارات
میعادی پندرہ روز چسپان کرو -
چنانچہ جب تعلقہ سے اشتہار چسپان ہوئے
تو اس عذردار نے بابت ایک مکان
کے یہہ عذرداری کی کہ جسکو ناظم جی نے
بصیغہ عدالت دیوانی متفرق کاغذ پر دایر
کرکے بنا منظوری عذرات فیصل کیا اور
بمرافعہ عذردار سرداران اپیل نے بہی
تجویز نظامت بحال رکہی - حالانکہ قاعدہ
کے بموجب اس عذردار کا بہ شمول
مسل بقایا بصیغہ کلکٹری ناظم جیکو فیصلہ کرنا
چاہئے تہا یہہ کیا کہ اصل

हो सकती है -

४

मज़मून

बमुलाहज़े मिसल मुकद्दमा कन्हीराम व मुहरी
लाल म्हाजन सरावगी उज़रदार अपीलांट
सरकार दौलत मदार नं. (१) चन्दूलाल सराव
गी साकिन ऐज़न मुद्दआलेह रसपाडन्ट-उज़
रदारी बाबत चस्पां होने इश्तहार नीलाम ब
मकान मरहूना बमुकद्दमे बकाया सरकारी
ज़िम्मगी चांदूलाल - ज़ाहर हुवा कि बमुकद्द
मे बकाया तादादी ५७॥ ज़िम्मगी चन्दूला
ल निज़ामत दौसा से बिना वर वसूल तालुके
दार को लिखा गया - जवाब में तालुकेदार
ने लिखा कि बाकीदार लावारिस मर गया
मगर मकानात उसके मौजूद हैं - इस पर नि
ज़ामत से हुक्म गया कि इन मकानात पर इश्त
हारात मियादी पन्दरह रोज़ चस्पां करो चुना
चि जब तअल्लुके से इश्तहार चस्पां हुवे तो
इस उज़रदार ने बाबत एक मकान के यह उज़
रदारी की कि जिसको नाज़िम जी ने बसीगे
अदालत दीवानी मुतफ़र्रक़ काग़ज़ पर दायर
करके बिना मंज़ूरी उज़रात फ़ैसल किया और
बमुराफ़े उज़रदार सरदारान अपील ने भी
तजवीज़ निज़ामत बहाल रक्खी हालांकि कायदे
के बमूजिब इस उज़रदार का बशमूल मिसल
बकाया बसीगे कलक्टरी नाज़िमजी को फ़ैस
ला करना चाहिये था यह किया कि असल

नक़शा या दीगर काग़ज़ात वग़ैरः की तरफ़ मुख़ातिब को मुतवज्जह करते हैं तो ऐसे मौक़े पर अकसर यों दर्ज तजवीज़ किया करते हैं (कि देखो नक़शा फ़ुलां या इज़हार फ़ुलां जैसा कि आज ही मुक़द्दमः नारायण वल्द मगनी राम व म्हादेव व नारायण अगरवाल मुद्दई बनाम राज मल वल्द मोहन लाल ओ सुवाल मुद्दाअलह रसपाउन्ट अपील बदावी अदम तामीर बारा के देखने से वाज़ेह हुवा

चूंकि यह तर्ज़ तहरीर ज़बान उरदू मे निहायत नामौज़ूं और ख़िलाफ़ दाब अदालत है लिहाज़ा हिदायत जारी की जाती है कि जुमले मुजव्विज़ीन आयन्दा अपनी तजवीज़ में सामे को मुख़ातिब करने के लिये ऐसे मौक़े पर अलफ़ाज़ मुन्दरजे बाला का इस्तेमाल न किया करें बलकि ऐसे मौक़े पर अगर ज़रूरत देखें तो यह लिखा करें कि फ़लां काग़ज़ या नक़शा वग़ैरः के देखने से वाज़े होगा या उसमें ऐसा लिखा है इसका पूरा ख़्याल रहे

(५९)
(६९)

१ नम्बर शुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
६९	११ सितम्बर सन १८९३ ई॰

३

ख़ुलासा

जिस सीगे से कि कार्रवाई नीलाम की होती हो उस ही सीगे में अव्वल उज़रदारी भी समाअत

نقشہ یا دیگر کاغذات وغیرہ کی طرف مخاطب کو متوجہ کرتے ہین تو ایسے موقع پر اکثر یون درج تجویز کیا کرتے ہین (کہ دیکھو نقشہ فلان یا اظہار فلان جیسا کہ آج ہی مقدمہ نارائن ولد مگنی رام و مہادیو و نارائن اگروال مدعے بنام راج مل ولد موہن لال و سوال مدعا علیہ رسپاڈنٹ اپیل بدعوی عدم تعمیر بارہ کے دیکھنے سے واضح ہوا -

چونکہ یہہ طرز تحریر زبان اُردو مین نہایت ناموزون اور خلاف آداب عدالت ہے - لہذا ہدایت جاری کی جاتی ہے کہ جملہ مجوزین آیندہ اپنی تجویز مین سامع کو مخاطب کرنے کے لئے ایسے موقع پر الفاظ مندرجہ بالا کا استعمال نکیا کرین بلکہ ایسے موقع پر اگر ضرورت دیکہین تو یہہ لکہا کرین کہ فلان کاغذ یا نقشہ وغیرہ کے دیکھنے سے واضح ہوگا یا اوسمین ایسا لکہا ہے اسکا پورا خیال رہے -

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۶۹	۱۱ ستمبر سنہ ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

جس صیغہ سے کہ کارروائی نیلام کی ہوتی ہو اوسی صیغہ مین اول عذرداری بہی سماعت

دفعہ (۲۴) یہہ بہی واضح ہو کہ اگر یہہ جدید تجاویز قابل اطمینان ثابت نہون گی تو تجارت کہار کی نسبت مزاحمت کرنے کا جو دربار کو اختیار حاصل ہے اوسے پہر عمل مین لانے سے کوئی دفعہ اسکے مانع نہ ہوگی۔

دفعہ (۲۵) اب جو قواعد جاری کئے جاتے ہین وہ شرطیہ ہین اور دربار کو آیندہ کسی وقت مین اونکی ترمیم یا نظر ثانی کرنے کا اختیار ہے اور اگر ایسا ضروری معلوم ہوگا کہ کہار کی ساخت و برآمد موقوف کردیجاوے تو دربار کو ان قواعد کے باطل کردینے کا بہی اختیار ہے۔

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۶۸	۲۰ اگست ۱۸۹۳ع

۳

خلاصہ

تجاویز مین ایسے الفاظ کہ (دیکہو فلان نقشہ یا فلان اظہار) جو خلاف داب عدالت و ناموزون ہین آیندہ نہ لکہے جاوین۔

مضمون

بلاحظہ امثلہ محکمہ جات ماتحت ظاہر ہوتا ہے کہ تجاویز مین جب کسی

(२५) यह भी वाज़ेह है कि अगर यह जदीद तजावीज़ काबिल इत्मीनान साबित न होंगी तो तिजारत खार की निसबत मुज़ाहमत करने का जो दरबार को अख़्तियार हासिल है उसे फिर अमल में लाने से कोई दफ़े इसके माने न होगी -

(२६) अब जो क़वायद जारी किये जाते हैं वह शरत यह है और दरबार को आयन्दा किसी वक़्त में उनकी तरमीम या नज़र सानी करने का अख़्तियार है और अगर एसा ज़रूरी मालूम होगा कि खार की साख़्त व बरामद मोक़ूफ़ कर दी जावे तो दरबार को इन क़वायद के बातिल कर देने का भी अख़्तियार है +

१	२
नम्बर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
६८	२०अगस्तसन१८९३

३

ख़ुलासा

तजावीज़ में एसे अलफ़ाज़ कि (देखो फ़ुलां नक़शा या फ़ुलां इज़हार) जो ख़िलाफ़ दाब अदालत व नामौज़ूं हैं आयन्दा न लिखे जावें -

५

मज़मून

बमुलाहज़े अमसला महकमेजात मातहत ज़ाहर होता है कि तजावीज़ में जब किसी

होसकती है और हर एक तजवीज़ कैद कौंसिल की तहित मंजूरीमें रहेगी क्योंकि यह पसन्दीदा है कि जो अदूल हुक्मी बिला खुद ग़रज़ी या बिलाक़स्द अमल में आई हो उसकी निसबत सज़ाय कैद तजवीज़ नहीं होनी चाहिये –

(२१) इन्सपेक्टर हलके को वास्ते देखने काग़ज़ात हिसाब रेलवे बाबत बरामद खार व काग़जात हिसाब चौकी राज बाबत खानगी खार हर वक्त इजाजत रहेगी और वह अपने नक़शेजात को उनतादाद से मुक़ाबला कर लेगा – कि जो बाबत बरामद व खानगी खार मज़कूर के काग़जात मज़कूर में दर्ज होंगे ताकि इन्सपेक्टरान यह दरयाफ़्त कर सकै कि मुतअल्लिक़ बरामद खार के कोई फ़रेब तो नहीं किया गया –

(२२) हर हिन्दी सरिश्ते साल के खतम पर इन्सपेक्टरान को मुफ़स्सिल रिपोर्ट अपने अपने हल्क़े की बाबत साखत खार व तिजारत अन्दरूनी व बेरुनी को जो उस साल में उसके हलके में हुई है महकमे आलया कौंसिल में पेश करनी होंगी –

(२३) नक़ल रिपोर्ट हाय मज़कूरा बख़िदमत साहब रज़ीडन्ट बहादुर इत्तलाअन मुरसिल होंगे –

ہوسکتی ہیں اور ہر ایک تجویز قید کونسل کی تحت منظوری میں رہیگی کیونکہ یہہ پسندیدہ ہے کہ جو عدول حکمی بلا خود غرضی یا بلا قصد عمل میں آئی ہو اوسکی نسبت سزاے قید تجویز نہیں ہونی چاہیئے۔

دفعہ (۲۱) انسپکٹر حلقہ کو واسطے دیکھنے کاغذات حساب ریلوے بابت برآمد کہار و کاغذات حساب چوکی راج بابت روانگی کہار ہر وقت اجازت رہیگی اور وہ اپنے نقشجات کو اون تعداد سے مقابلہ کر لیگا کہ جو بابت برآمد و روانگی کہار مذکور کے کاغذات مذکور میں درج ہونگے تاکہ انسپکٹران راج یہہ دریافت کرسکین کہ متعلق برآمد کہار کے کوئی فریب تو نہین کیا گیا۔

دفعہ (۲۲) ہر ہندی سررشتہ سال کے ختم پر انسپکٹران کو مفصل ریورٹ اپنے اپنے حلقہ کی بابت ساخت کہار وتجارت اندرونی و بیرونی کے جو اوس سال مین اوس کے حلقہ مین ہوئی ہے محکمہ عالیہ کونسل مین پیش کرنی ہوگی۔ (دفعہ ۲۳) نقول ریورٹ ہاے مذکورہ بخدمت صاحب رزیڈنٹ بہادر اطلاعاً مرسل ہونگے۔

ہوگا ریلوے اسٹیشن پر لیجانے کے اجازت
دے گا اور اوسکے ساتھ کسی ملازم
چوکی کو اس نگرانی کے لئے بہیجے گا
کہ کہار مذکور اوس افسر ریلوے کو کہ جو
واسطے روانگی کے کہار کے لینے کا مجاز
ہے سپرد کردیا گیا -

دفعہ (۱۹) جن قطعات سے حالیں کہار
حاصل ہوتا ہے وہ ایسی جگہہ واقع
ہوتی پائی جاتی ہین کہ جس سے معلوم
ہوتا ہے کہ قطعات مذکور مین جو کہار
پیدا ہوتا ہے وہ اسٹیشن ریلوی آسلپور ہی
سے نہایت آسانی ریل مین روانہ ہوسکتا ہے اسلئے
کہار کی برآمد اسٹیشن ریلوی مذکور پر محدود کردینے
چاہئے اور اہالیان ریلوے تاکیدی
احکام صادر کردین گے کہ کہار اونکے
کسی اور اسٹیشن سے روانہ ہونے
نہ پاوے اگر بعد اسکے کسی اور ریلوے
اسٹیشن یا اسٹیشن ہا سے برآمد کہار کی
کارروائی دربار مناسب سمجہین گے تو
معرفت رزیڈنسی کے ویسا بندوبست
کرنے کے لئے اہالیان ریلوے
سے درخواست کیجائیگی -

۲۰- جو کوئی خلاف قواعد از نمبر ۱۲
تا نمبر ۱۳ و ۱۵ و ۱۷ و ۱۸ و ۱۹ کارروائی
کرے گا وہ مستوجب سزا ہوگا -
اور اس سزا کی بابت چہہ مہینے
تک کی قید یا جرمانہ یا ہر دو تجویز

होगा रेलवे इस्टेशन पर लेजाने की इजाज़
त देगा और उसके साथ किसी मुलाज़ि
म चौकी को इस निगरानी के लिये भेजदे
गा कि खार मज़कूर उस अफ़सर के रेलवे
को कि जो वास्ते रवानगी के खार के लेने
का मजाज़ है सपुर्द कर दिया गया -

(१९) जिन कितआत से हाल में खार हासिल
होता है वह एसी जगह वाके होते पाये जा
ते हैं कि जिस्से मालूम होता है कि कितआत
मज़कूर में जो खार पैदा होता है वह इस्टेश
न रेलवे आसलपुर ही से निहायत बआ
सानी रेलवे में रवाना होसक्ता है इस लिये
खार के बरामद इस्टेशन रेलवे मज़कूर प
र महदूद कर देनी चाहिये और अहालया
न रेलवे ताकीदी अहकाम सादिर करदें
गे कि खार उनके किसी और इस्टेशन
से रवाना होने न पावे अगर बाद इस के
किसी और रेलवे इस्टेशन या इस्टेशनहा से
बरामद खार की कार्रवाई दर्बार मुनासिब सम
झेगी तो मारफ़त रज़ीडन्सी के वैसा बन्दो
बस्त करने के लिये अहालयान रेलवे से
दरख्वास्त की जायगी -

(२०) जो कोई खिलाफ़ कवायद अज़ नम्बर ७
ता नम्बर १३ व १५ व १७ व १८ व १९
कार्रवाई करेगा वह मसतूजिब सज़ा
होगा और इस सज़ा की बाबत छः महीने
तक की कैद या जुरमाना या हरदो तजवीज़

नम्बर१० कोई इत्तला चौकी पर मौसूल नहीं हुई तो वह खार चौकी पर रोक लिया जायगा और अफ़सर चौकी उस हलके के इन्सपेक्टर को रिपोर्ट करेगा और इन्सपेक्टर मज़कूर फ़ौरन तहक़ीक़ात करेगा और मुक़द्दमा की निसबत तजवीज़ करके मुन्तज़िम राहदारी के पास वास्ते मंज़ूरी के भेजदेगा

(१७) जबशरायत मुन्दरजे इक़रारनामे नमक सन १८७९ ई० अफ़सरान मुख़्तलिफ़ चौकी हावाके कुल रियासत हाय तिजारती इलाके जैपुर को यह हमेशा निगरानी रखनी पड़ती है कि खारी या नमक क़ाबिल खाने के किसी और जिन्स के नाम से न लेजाई जावे अब इन्सपेक्टरान मज़कूर को खास कर इस अमर की हिफ़ाज़त रखनी लाज़िम होगी कि खारी या नमक क़ाबिल खाने के खार के नाम से न लेजाया जावे-

(१८) जब खार उस चौकी पर पहुंचे कि जिसके क़रीब वह इस्टेशन है कि जहां से खार रेल में रवाना किया जावेगा तो अफ़सर चौकी खार की सम्हाल हस्ब हिदायत मुन्दरजे क़ायदा नम्बर ११ करलेगा और जब उस को यह इतमीनान हो जायगा कि सिवाय खार के बोरी हाय में और कोई शै नहीं है तो साफ़ तौर पर चौकी की मुहर उसपर करदेगा और बाद उसके खार मज़कूर को जिसके साथ रवन्ना चौकी राहदारी

نمبر ۱۰ اگر کوئی اطلاع چوکی پر موصول نہین ہوئی تو وہ کہار چوکی پر روک لیا جاویگا اور افسر چوکی اوس حلقہ کے انسپکٹر کو رپورٹ کریگا اور انسپکٹر مذکور فوراً تحقیقات کریگا اور مقدمہ کی نسبت تجویز کر کے منتظم راہداری کے پاس واسطے منظوری کے بہیجدیگا-

دفعہ (۱۷) حسب شرائط مندرجہ اقرارنامہ نمک سنہ ۱۸۷۹ء افسران مختلف چوکی ہا واقع کل ریاستہا ی تجارتی علاقہ جے پور کو ہمیشہ نگرانی رکہنی پڑتی ہے کہ کہاری یا نمک قابل کہانے کے کسی اور جنس کے نام سے نہ لیجائی جاوے اب انسپکٹران مذکور کو خاصکر اس امر کی حفاظت رکہنی لازم ہوگی کہ کہاری یا نمک قابل کہانیکے کہار کے نام سے نہ لیجایا جاوے-

دفعہ (۱۸) جب کہار اوس چوکی پر پہنچے کہ جسکے قریب وہ اسٹیشن ہے کہ جہانسے کہار ریل مین روانہ کیا جاویگا تو افسر چوکی کہار کی سنبہال حسب ہدایت مندرجہ قاعدہ نمبر ۱۱ کرلیگا اور جب اوسکو یہ اطمینان ہوجائیگا کہ سوائے کہار کے بوریہاے مین اور کوئی شی نہین ہے تو صاف طور پر چوکی کی مہر اوسپر کردیگا اور بعد اوس کے کہار مذکور کو جسکے ساتہ روانہ چوکی راہداری

जाल साज़ी से बने हुवे खारको नाज़िमके सपुर्द कर देगा और नाज़िम मुक़द्दमेकी कारवाई शुरू करके अपनी तजवीज़ की रिपोर्ट महकमे आलयेकौनसिल में करेगा -

(१४) हस्ब हिदायत मुन्दरजे क़ायदे नम्बर ११ खारकी बोरीहाके हर दरमियानी चौकी पर बरवक़्त पहुंचने के समहाल कीजायगी और हस्ब हिदायत मुन्दरजे क़ायदे नम्बर ११ व १२ नतीजे के मुताबिक़ कारवाई कीजायगी -

(१५) अगर खार उस चौकी राहदारी पर कि जहां हस्ब क़ायदे नम्बर १० रवानगी की रपोर्ट भेजी गई थी वक़्त पर न पहुंचेगी तो अफ़सर चौकी उसी वक़्त इन्सपेक्टर को इत्तला देगा और इन्सपेक्टर मज़कूर उस खारकी तलाशी में फ़ौरन रवाना होगा और अगर हमराही या हमराहियान खारने जाल साज़ी से खारका मुआयना चौकी पर न कराया होगा तो इन्सपेक्टर मज़कूर मुजरिम या मुजरिमान को सज़ा दिलाने के लिये बाज़ाबते कारवाई करेगा और वह खार क़ायदे के मुआफ़िक़ कुर्क़ कर लिया जायगा

(१६) अगर कोई खार किसी चौकी पर लाया जायगा कि जिसके फ़रोख्त की निसबत हस्ब हिदायत मुन्दरजे क़ायदा

جعلسازی سے بنے ہوئے کہار کو ناظم کے سپرد کردیگا اور ناظم مقدمہ کی کارروائی شروع کرکے اپنی تجویز کی رپورٹ محکمۂ عالیہ کونسل مین کرے گا۔

دفعہ (۱۴) حسب ہدایت مندرجہ قاعدہ نمبر ۱۱ کہار کے بوریہا کی ہر درمیانی چوکی پر بروقت پہنچنے کے سنبھال کیجائیگی اور حسب ہدایت مندرجہ قاعدہ نمبر ۱۱ و ۱۲ نتیجہ کے موافق کارروائی کی جائیگی۔

دفعہ (۱۵) اگر کہار اوس چوکی راہداری پر کہ جہان حسب قاعدہ نمبر ۱۰ روانگی کی رپورٹ بھیجی گئی تھی وقت پر نہ پہنچے گی تو افسر چوکی اوسیوقت انسپکٹر کو اطلاع دیگا اور انسپکٹر مذکور اوس کہار کی تلاشی مین فوراً روانہ ہوگا اور اگر ہمراہی یا ہمراہیان کہار نے جعلسازی سے کہار کا معائنہ چوکی پر نکرایا ہوگا تو انسپکٹر مذکور مجرم یا مجرمان کو سزا دلانے کے لئے باضابطہ کارروائی کرے گا اور وہ کہار قاعدہ کے موافق قرق کرلیا جائے گا۔

دفعہ (۱۶) اگر کوئی کہار کسی چوکی پر لایا جائے گا کہ جسکی فروخت کی نسبت حسب ہدایت مندرجہ قاعدہ

जावेगा वह सारटी फ़िकट दे दिया जावेगा
इस दाइसितद की इत्तला राहदारी के क़री
बतर चौकी पर की जायगी और उसमें उ
सशख़्स का नाम कि जिसके खार सपुर्द
किया गया है और वह रास्ता कि जिस रा
स्ते से खार जावेगा और नाम इस्टेशन कि
जहां से खार बज़रये रेल रवाना किया जा
वेगा यह सब हाल दर्ज किया जावेगा -

(९१) खार मज़कूर के चौकी राहदारी पर पहुं
चते ही अफ़सर चौकी खार के हर बोरे को
एक आले से कि जो हर चौकी पर रक्खा
जायगा समहाल कर लेगा -

(९२) बाद कामिल तौर से यह इतमीनान कर
लेने कि बोरे हाथ में सिवा पर खार के और
कोई शै नहीं है अफ़सर चौकी बाद वसूल
करने मामूली हासिल राज के एक रवन्ना
या पास खार को आगे ले जाने के लिये दे
देगा और उसी वक़्त एक तहरीरी इत्तला
अगले क़रीबतर चौकी पर इस मज़मून की
भेज देगा कि समहाल के वक़्त उसकी दा
निस्त में कोई शै मुश्तबह बोरी हाथ में
नहीं ज़ाहिर हुई -

(९३) जिस सूरत में बोरी हाथ में कुल्ली या जु
ज़वी खारी पाई जायगी तो अफ़सर चौ
की राहदारी उन अशखास की निसबत
कि जिनकी सपुर्दगी में बोरी हाथ होंगी
बाज़ाबते कार्रवाई करेगा और इस -

پایگا دیہار تفلٹ دیدیا جاویگا اِس داد
ستد کی اطلاع راہداری کی قریب تر
چوکی پر بھیجی جاویگی اور اس مین اوس
شخص کا نام کہ جسکے کہار سپرد کیا
گیا ہے اور وہ راستہ کہ جس راستہ
سے کہار جاوے گا اور نام اسٹیشن کہ
جہان سے کہار بذریعہ ریل روانہ کیا جاویگا
یہ سب حال درج کیا جاوے گا —

دفعہ (11) کہار مذکور کے چوکی راہداری
پر پہنچتے ہی افسر چوکی کہار کے ہر بورہ کو
ایک آلہ سے کہ جو ہر چوکی پر رکہا جاویگا
سنبہال کر لے گا —

دفعہ (۱۲) بعد کامل طور سے یہہ اطمینان کر لے
کہ بورے ہاتھ مین سوائے کہار کے اور
کوئی شے نہین ہے افسر چوکی بعد وصول
کرنے معمولی حاصل راجکے ایک روانہ یا پاس
کہار کو آگے لیجانے کے لئے دیدیگا
اور اوسی وقت ایک تحریری اطلاع
اگلے قریب تر چوکی پر اس مضمون کی
بہیجے گا کہ سنبہال کے وقت اوسکی
دانست مین کوئی شے مشتبہ بوری ہاتھ مین
نہین ظاہر ہوئی —

دفعہ (۱۳) جس صورت مین بوری ہاتھ مین کلی
یا جزوی کہاری پائی جائیگی تو افسر چوکی
راہداری اون اشخاص کی نسبت کہ جنکی
سپردگی مین بوری ہاتھ سے ہون گی
باضابطہ کارروائی کریگا اور اِس —

फ़ौरन बाज़ाबिते कार्रवाई करेंगे और यह ख़बर रक्खेंगे कि उनको मुनासिब सज़ा दी गई या नहीं ‐

(८) साख़्त खार के हर मौसम के ख़तम पर इन्सपेक्टरान मज़्कूर नतीजा मुआयना किया र हाय खार की रिपोर्ट अपने र हलके की निसबत कौनसल में करेंगे और सहीह तफ़सील पैदावार खार हरहर किता और मिक़दार बरामद खार व ज़ख़ीरे मौजूदा के भी पेश करेंगे ‐

(९) जागीरदारान व दीगर ज़िमींदारान कि जिनके मक़बूज़ात में अलाहिदा २ कितआत खार होंगे उनको हिसाबात सहीह पैदावार खार कि जो उनकी हर आराज़ी मक़बूज़े में होगा और नीज़ हालात मुतअल्लिक़ फ़रोख़्त खार कि जो साल भर में पैदा हुवा है रखने होंगे और इन्सपेक्टरान मज़्कूर के पास भेजने होंगे ‐

(१०) जब कभी खार की कोई मिक़दार रिआया राज या बाहर के ब्योपारी के हाथ फ़रोख़्त की जायगी तो असल मालिक को ख़्वाह वह ज़िमींदार हो या राज की तरफ़ से तहसीलदार हो एक सारटी फ़िकट राज के इन्सपेक्टर से हासिल करना होगा कि जो खार मज़्कूर के साथ रहेगा और अफ़सर रेलवे को कि जिसको खार बज़रिये रेल रवाना करने के लिये सुपुर्द किया

فوراً باضابطہ کارروائی کرینگے اور یہہ خبر رکھین گے کہ اون کو مناسب سزا دیگئی یا نہین ـ

دفعہ (۸) ساخت کہار کے ہر موسم کے ختم پر انسپکٹران مذکور نتیجہ معائنہ کیارہاے کہار کی رپورٹ اپنے اپنے حلقہ کی نسبت کونسل مین کرین گے اور صحیح تفصیل پیداوار کہار ہر ہر قطعہ اور مقدار برآمد کہار و ذخیرہ موجودہ کے بہی پیش کرین گے ـ

دفعہ (۹) جاگیرداران و دیگر زمینداران کہ جنکو مقبوضات مین علیحدہ علیحدہ قطعات کہار ہون گے اون کو حسابات صحیح پیداوار کہار کہ جو اونکی ہر اراضی مقبوضہ مین ہوگا اور نیز حالات متعلق فروخت کہار کہ جو سال بہر مین پیدا ہوا ہے رکہنے ہون گے اور انسپکٹران مذکور کے پاس بہیجنے ہون گے ـ

دفعہ (۱۰) جب کبہی کہار کی کوئی مقدار رعایاے راج یا باہر کے بیوپاری کو ہاتہہ فروخت کیجائیگی تو اصل مالک کو خواہ وہ زمیندار ہو یا راج کی طرف سے تحصیلدار ہو ایک سارٹیفکیٹ راج کے انسپکٹر سے حاصل کرنا ہوگا کہ جو کہار مذکور کے ساتہہ رہیگا اور افسر ریلوے کو کہ جسکو کہار بذریعہ ریل روانہ کرنے کے لئے سپرد کیا

करनी चाहेगा एक नविश्त लिख देनी होगी
कि जिससे यह इस निगरानी का पाबन्द रहेगा
कि चोरी से या अलानिया खार के नाम से
उसकी आराज़ी मक़बूज़े में कोई नमक
क़ाबिल खाने के न बनाया जावे इस बारे में
हर ग़फ़लत के पादाश में कि जो जागीरदार
या ज़िमींदार से होगी सज़ाए सख़्त जुरमाने
की दी जावेगी और जागीरदार की आराज़ी
मक़बूज़े में जो साख्त खार का उसको इस
तहक़ाक़ होगा उससे भी वह महरूम कर
दिया जायगा -

(६) मवाज़आत खालसाई में ज़िम्मेवारी
मज़कूरे बाला पटैल व पटवारयान पर
रक्खी जायगी और अगर वह क़ाबिल स
ज़ा ग़फ़लत करेंगे तो वह हक़ूक़ पटैलाई
व पटवारगरी से भी अलावे सज़ा के महरू
म कर दिये जांयगे -

(७) बमूजिब इक़रारनामें नमक सन १८७ ई
के जो दो इन्सपैक्टरान दरबार की तरफ़
से वास्ते मुआयने कि पार हाय नमकब
न्द शुदह के मुक़र्रर हैं उनका यह खास
फ़र्ज़ होगा कि अपने २ हलके के कुल कित
आत खार को कम से कम चार बार साल में
मुआयना करके खास तवज्जुह के साथ
यह देखें कि किसी क़िते में खारी तो नहीं
बनाई गई इन्सपेक्टरान मज़कूर जिन मु
जरमान को गिरफ़्तार करेंगे उनकी निसबत

کرنی چاہے گا ایک نوشت لکھ دینی ہوگی کہ جس
سے وہ اس نگرانی کا پابند رہے گا
کہ چوری سے یا علانیہ کہار کے نام سے
اوسکی اراضی مقبوضہ مین کوئی نمک
قابل کہانے کے بنایا جاوے اس بارہ
مین غفلت کے پاداش مین کہ جو جاگیردار
یا زمیندار سے ہوگی سزائے سخت جرمانہ
کی دیجاوے گی اور جاگیردار کی اراضی
مقبوضہ مین جو ساخت کہار کا اوسکو
استحقاق ہوگا اوس سے بہی وہ محروم
کر دیا جاویگا۔

دفعہ (۶) مواضعات خالصائی مین ذمہ
داری مذکورہ بالا پٹیل و پٹواریان پر رکہی
جاویگی اور اگر وہ قابل سزا غفلت
کرین گے تو وہ حقوق پٹیلائی
و پٹوارگری سے بہی علاوہ سزا کے محروم
کردئے جاوین گے۔

دفعہ (۷) بموجب اقرارنامہ نمک ۱۸۷۹ء
کے جو دو انسپکٹران دربار کی طرف
سے واسطے معائنہ کیارہائے نمک بند
شدہ کے مقرر ہین اونکا یہہ خاص
فرض ہوگا کہ اپنے اپنے حلقہ کے کل قطعات
کہار کو کم از کم چار بار سال مین معائنہ
کرکے خاص توجہ کے ساتھہ یہہ دیکھین
کہ کسی قطعہ مین کہاری تو نہین بنائی
گئی۔ انسپکٹران مذکور جن مجرمان
کو گرفتار کرین گے اون کی نسبت

खार का सही रक़बा और उसके नमकीमादे की क़िस्म बख़ूबी तहक़ीक़ करके फ़ह्रिस्त मज़कूर में दर्ज की जावेगी और इस फ़हरिस्त से यह भी ज़ाहर होगा कि कौन कौनसे क़ितआत खार जागीर में हैं और कौन कौन से क़ितआत खार ख़ालसाई हैं -

दफ़ा (३) फ़हरिस्त मज़कूर के तैयार होने ही दर्बार से उसके सेहत की निसबत इतमीनान किया जायगा और बाद उसके साख़्त खार के बारा जारी करने की निसबत उन क़ितआत में हुक्म जारी किया जायगा कि जहां सिर्फ़ खार पैदा होता है और वहां खारी या नमक क़ाबिल खाने के नहीं पैदा होता है हर क़िते खार में जिस क़दर कियार खार के बनाये जा सक्ते हैं उन की तादाद उस हुक्म में कि जिस्से हर क़िते खार में साख़्त खार की इजाज़त दी जायगी दर्ज की जायगी -

(४) बिला इजाज़त कौंसल जदीद क़ितआत कियार वास्ते बनाने खार के न जारी किये जावेंगे और ज़ायद कियार जाय खार नहीं बनाये जायंगे इस क़ायदे की जो कोई अदूल हुक्मी करेगा उस को सज़ा दी जायगी -

(५) हर जागीरदार या ज़िमींदार को कि अपनी आराज़ी मक़बूज़े के अन्दर साख़्त खार की इजाज़त दर्बार से हासिल

کہار کا صحیح رقبہ اور اوسکی نمکی مادّہ کی قسم بخوبی تحقیق کرکے فہرست مذکور مین درج کیجاویگی اور اِس فہرست سے یہہ بھی ظاہر ہوگا کہ کون کون سے قطعات کہار جاگیر مین ہین اور کون کون سے قطعات کہار خالصائی ہین -

دفعہ (۳) فہرست مذکور کے تیار ہوتے ہی دربار سے اوسکے صحت کی نسبت اطمینان کیا جاوے گا - اور بعد اوسکے ساخت کہار کی دوبارہ جاری کرنے کی نسبت اون قطعات مین حکم جاری کیا جائیگا کہ جہان صرف کہار پیدا ہوتا ہے اور وہان کہاری یا نمک قابل کہانیکے نہین پیدا ہوتا ہے - ہر قطعہ کہار مین جسقدر کیار کہار کے بنائے جاسکتے ہین اونکی تعداد اوس حکم مین کہ جس سے ہر قطعہ کہار مین ساخت کہار کی اجازت دیجائیگی درج کیجائیگی -

۴- بلا اجازت کونسل جدید قطعات کیار واسطے بنانے کہار کے نہ جاری کئے جاوینگے اور زاید کیار سے کہار نہین بنائے جائین گے - اِس قاعدہ کی جو کوئی عدول حکمی کریگا اوس کو سزا دیجاوے گی -

دفعہ (۵) ہر جاگیردار یا زمیندار کو جو اپنے آراضی مقبوضہ کے اندر ساخت کہار کی اجازت دربار سے حاصل

کرائی جاوے اگر فریقین یا کوئی فریق
موجود نہ پاوے تو بلا انتظار انکی ناظر
واوستاکار تعمیل انجام کرلین - اور کم
از کم دو شخص اہل محلہ کو شہادتاً
موقع پر طلب کرلین مگر اوستاکار
و ناظر اس امر کا پورا خیال رکھین
کہ قبل از بٹوارہ کے فہرست جائداد
کی جو پیش ہوئی ہے یا مرتب کی گئی ہو
اوسکو موقع پر مطابق کرکے اس
امر کی تشریح کرلین کہ کون کون
مکانات مندرجہ فہرست مقبوضہ مدیون
ڈگری ہین اور کون کون مکانات
مقبوضہ عذرداران کے ہین جب اس امر
کی تشریح کرلین تب پانے بٹوارہ کے اسطرح تیار کرین
کہ مکانات مقبوضہ فریقین کی وہ ہی قیمت ہو جو دیگر
حصہ داران کی ہے اگر کم وبیش ہو تو
دیکھنا چاہیئے کہ کون کون مکانات
کمی والہ کو دلانے سے قیمت برابر ہو سکتی
ہے - اور بٹوارہ مین یہہ بھی لحاظ رکھا
جانا چاہیئے کہ مکانات مقبوضہ مدیون
بحصہ حصہ داران و مکانات حصہ
داران بحصہ مدیون نہ آجاوین کیونکہ
متامنبت عرصہ کی جائداد غیر منقولہ مشترکہ
مین ہر ایک قابض اون مکانات سے
ایک نسبت پیدا کردیتی ہے -

احتیاطاً کوئی موقع ایسا پیش آجاوے
کہ مکان مقفل ہو تو پولیس کی

कराई जावे अगर फ़रीक़ैन या कोई फ़रीक़
मौजूद न पावे तो बिला इन्तज़ार उनके नाज़ि
र व उस्ताकार तामील अंजाम करलें और
कम अज़ कम दो शख़्स अहिल मुहल्ले को
शहादतं मौक़े पर तलब करलें मगर उस्ता
कार व नाज़िर इस अमर का पूरा ख़्याल र
क्खें कि क़बल अज़ बटवारे के फ़हरिस्त
जायदाद की जो पेश हुई है या मुरत्तब की
गई है उसको मौक़े पर मुताबिक़ करके
इस अमर की तशरीह करलें कि कौन कौन
मकानात मुन्दरजे फ़हरिस्त मक़बूज़ा मदयून डि
गरी हैं और कौन २ मकानात मक़बूज़ा उज़्रदार
न के हैं जब इस अमर की तशरीह करलें तब पा
ने बटवारे के इस तरह तैयार करें कि मकाना
त मक़बूज़ह फ़रीक़ैन की वह ही क़ीमत हो जो
दीगर हिस्सेदारान की है अगर कम व बेश
हो तो देखना चाहिये कि कौन २ मकानात
कमी वाले को दिलाने से क़ीमत बराबर हो
सक्ती है और बटवारे में यह भी लिहाज़ र
क्खा जावे कि मकानात मक़बूज़ह मदयून
व हिस्सा हिस्सेदारान व मकानात हिस्सेदा
रान व हिस्सा मदयून न आजावें क्योंकि मुक़ादि
जात असे की जायदाद ग़ैर मंक़ूलः मुशतरकः मे
हर १ क़ाबिज़ उन मकानात से १ निसबत पैदा कर
देती है

अहतियातं कोई मौक़ा ऐसा पेश आजा
वे कि मकान मुक़फ़्फ़ल हो तो पुलिस की

میں مدیون کے مکان مقفل کرجانے یا
عذر دار کے غیر حاضر ہونے یا اوستاکار کو فرصت
نہونے کی وجہ سے اکثر دیر ہوجایا کرتی ہے
اور باہم عدالت و منصفی و عمارت
کے فضول بار بار تحریرات کا اجرا
ہوکر کارروائی تعویق مین پڑجاتی ہے
اس لئے اس قسم کی تعمیل آیندہ حسب ذیل
طریقہ سے ہونی مناسب ہے۔
جب بٹوارہ یا تخمینہ کہ اسکی ضرورت
ہو تو اہل مقدمہ سے ایک فہرست
مفصل جائداد کی داخل کرائی جایا کرے
یا اونکی تصدیق سے مرتب کر لیجایا کرے
بعد تیاری فہرست کے اوسکی تعمیل
کے واسطے عدالت سے جہان کارروائی
درپیش ہے ایک تاریخ مقرر کیجاکر
محکمہ عمارت و فریقین کو اطلاع دیجاوے
محکمہ عمارت کو ہنگام مطلع ہونے تاریخ
سے اوستا کو تعمیل کے لئے حکم دیکر
قبل از تاریخ منصفی یا عدالت کو
بقید نام اوستا اطلاع دینی چاہئے
اور اگر کوئی وجہ ایسی پیش آجاوے
کہ جسکے سبب سے اوستاکار تاریخ
مذکور پر تعمیل نہین کرسکتا تو ویسی اطلاع
دینی ہوگی تاکہ آیندہ دوسری تاریخ
مقرر ہوجاوے اور بتاریخ مقررہ ناظر
و خبرنویس عدالت یا منصفی کو معہ
اوستاکار کے موقع پر بھجواکر تعمیل

में मद्यून के मकान मुक़फ़्फ़ल कर जाने या उज़्र
दार के गैर हाज़िर होने या उस्ताकार को फ़ुरस
त न होने की वजह से अक्सर देर हो जाया क
रती है और बाहम अदालत व मुनसफ़ी व
इमारत के फ़िज़ूल बार बार तहरीरात का
इजरा होकर कार्रवाई तावीक़ में पड़ जा
ती है इस लिये इस किस्म की तामील आ
यन्दा हस्बज़ैल तरीके से होनी मुनासिब है
जब बटवारा या तख़मीना कराने की ज़रूर
त हो तो अहिल मुक़दमा से एक फ़ेहरिस्त मु
फ़स्सल जायदाद की दाख़िल कराई जाया
करे या उनकी तसदीक़ से मुरत्तब कर लीजा
या करे बाद तैयारी फ़हरिस्त के उसकी तामी
ल के वास्ते अदालत से जहां कार्रवाई दरपेश
है एक तारीख़ मुक़र्रर कीजाकर महकमः
इमारत व फ़रीक़ैन को इत्तला दीजावे महक
मः इमारत को हंगाम मुत्तले होने तारीख़
से उसता को तामील के लिये हुकम देकर
क़ब्ल अज़ तारीख़ मुनसफ़ी या अदालत
को बक़ैद नाम उसता इत्तला देनी चाहिये
और अगर कोई वजह ऐसी पेश आजावे
कि जिसके सबब से उसताकार तारीख़ मज़
कूर पर तामील नहीं कर सक्ता तो वैसी इत्तला
देनी होगी ताकि आयन्दा दूसरी तारीख़ मु
क़र्रर हो जावे और बतारीख़ मुक़र्ररह नाज़िर
व ख़बरनवीस अदालत या मुनसफ़ी को मय
उस्ताकार के मौके पर भिजवाकर तामील

ऐसे नहीं हैं कि जिनका महकमः आलया तक इत्तला न देना मुनासब हो क्यों कि उनका तअल्लुक़ कभी कभी सीग़े इलाक़े ग़ैर से भी होजाता है -

फ़ौजदारजी ने बज़रये कैफ़ियत ७ अगस्त सन १८९३ ई॰ यह इसतसवाब किया कि अमसला बरदा फ़रोशी की दरजा बदरजा मंज़ूरी के लिये महकमा आलयः तक जावेंगी या जिस महकमे में ऐसा मुक़दमा दायर हो वहां से सिर्फ़ इत्तला महकमः आलया को जावेगी -

जवाब में फ़ौजदारी को लिखा गया कि ऐसी अमसले का दरजा बदरजा महकमः आलया में आना मुनासिब है -

१	२
नम्बर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
६६	१० अगस्त सन १८९३ ई॰

३

ख़ुलासा

क़ायदा बाबत तरतीब पाना बटवारा व तख़मीना जायदाद के -

४

मज़मून

बाज़ वक़्त मुक़दमात इजराय डिगरी में मारफ़त उसताकारान महकमः इमारत अदालत दीवानी व मुनसफ़ी में बवजह उज़रदारी पाने बटोना या तख़मीना जायदाद मदयून का तैयार कराया जाता है उसकी तामील

ایسی نہیں ہین کہ جنکا محکمہ عالیہ تک اطلاع نہ دینا مناسب ہو کیونکہ اونکا تعلق کبھی کبھی صیغہ علاقہ غیر سے بھی ہوجاتا ہے -

فوجدار جی نے بذریعہ کیفیت ۷ اگست سنہ ۱۸۹۳ء یہہ استصواب کیا کہ امثلہ بردہ فروشی کی درجہ بدرجہ منظوری کے لئے محکمہ عالیہ تک جاوینگی یا جس محکمہ مین ایسا مقدمہ دایر ہووہان سے صرف اطلاع محکمہ عالیہ کو جاویگی -

جواب مین فوجداری کو لکھا گیا کہ ایسی امثلہ کا درجہ بدرجہ محکمہ عالیہ مین آنا مناسب ہے -

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۶۶	۱۰ اگست سنہ ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

قاعدہ بابت ترتیب پانہ بٹوارہ و تخمینہ جائداد کے -

۴

مضمون

بعض وقت مقدمات اجرا ڈگری مین معرفت اوستاکاران محکمہ عمارت عدالت دیوانی و منصفی مین بوجہ عذرداری پانہ بٹوتہ یا تخمینہ جائداد مدیون کا تیار کرایا جاتا ہے اوس کی تعمیل

اور جس تجویز کی بحالی کا حکم دیا جاوے
اوسکی مدت اسقدر ست لکھنے پر ہی اکتفا
کیا کرین کہ فلان تاریخ کی تجویز صیغہ
سے اتفاق ہے بلکہ اوس تجویز کا
ماحصل بھی حکم مین بقید تاریخ اختصار کے
ساتھ لکھا کرین اور تبدیل و تنسیخ تجاویز
صیغہ کی مختصر وجوہ بھی لکھی جایا کرین
تاکہ پھر اس قسم کا مغالطہ نہووے اطلاعیابی
جملہ اہلکاران کی کرالی جاوے
اور واسطے آگہی اور تعمیل جملہ حکام
و اہلکاران محکمات ماتحت کے
ایک نقل اس کی محکمہ اپیل مین
بھی بھیجدی جاوے تاکہ ایسا کبھی مغالطہ
واقع نہو۔

١ نمبر شمار	٢ تاریخ منظوری
٦٥	١٠ اگست ١٨٩٣ع

٣

خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری (٦٠) مجریہ ٥ اگست ١٨٩٣ع بابت مقدمات بردہ فروشی وغیرہ کہ درجہ بدرجہ محکمہ عالیہ مین آیا کرین۔

٤

مضمون

٥ اگست ١٨٩٣ع کو ہدایت جاری کی گئی تھی کہ مقدمات بردہ فروشی

और जिस तजवीज़ की बहाली का हुकम दियजा
वे उसके सिर्फ़ इस क़दर लिखने पर ही इत्तफ़ा
क़ किया करें कि फ़ुलां तारीख़ की तजवीज़ सी
ग़े से इत्तफ़ाक़ है बल कि उस तजवीज़ का माह
सल भी हुकम में बक़ैद तारीख़ इख़्तसार के सा
थ लिखा करें और तबदील व तनसीख़ तजा
वीज़ सीग़े की मुख़्तसिर वजूह भी लिखे जाया
करें ताकि फिर इस किसम का मुग़ालतः न हो
वे इत्तला याबी जुमले अहलकारान की करा
ली जावे और वास्ते आगही और तामील जुम
ले हुक्काम व अहलिकारान महकमात मातह
त के एक नक़ल इसकी महकमः अपील में भी
ज दी जावे ताकि ऐसा कभी मुग़ालतः वाक़े
न हो -

१ नम्बरशुमार	२ तारीमंजरी
६५	१० अगस्त सन १८९३ ई०

३

खुलासा

ज़मीमा हिदायत नम्बरी (६०) मजरियह ५ अगस्त सन १८९३ ई० बाबत मुक़द्दमात बरदा फ़रोशी वग़ैरः कि दरजह बदरजा महकमह आलिया में आया करें -

४

मज़मून

५ अगस्त सन १८९३ ई० को यह हिदायत जारी की गई थी कि मुक़द्दमात बरदा फ़रोशी

ब मुलाहज़े निसल मुक़द्दमः बच्चूलाल मुद्दई
बनाम मालीराम बालिग़ व शिव परताब ब्र
हमन मुश्तरी मुद्दाअलेह दावा हक़ दूकान
मुबई वाज़े हुवा कि इस मुक़द्दमे में सीग़े से
अव्वल एक तजवीज़ मुशअ्अर डिसमिस कि
ये जाने दावा मुद्दई तारीख़ १७ अगस्त स
न १८९२ ई० को हुई थी और इजलास जुमले
मैम्बरान से इत्तफ़ाक़ कियागया था
बाद में ब मंज़ूरी उज़रात एक फ़रीक़ के सीग़े
से तारीख़ १२ जोलाई सन १८९२ ई० तज
वीज़ साबक़ः तबदील कीगई और दावा
मुद्दई डिगरी कियागया और इस ही तजवी
ज़ मुशअ्अर डिगरी दावा मुद्दई से इजलास
जुमले मैम्बरान में इत्तफ़ाक़ कियागया
मगर हुक्म में हवाला तजवीज़ १७ अगस्त
सन १८९१ ई० से इत्तफ़ाक़ करने का लिखा
गया जो मुशअ्अर डिसमिस कियेजाने दा
वा मुद्दई के थे अगर हुक्म में सिर्फ़ हवाला
तारीख़ पर ही इकतफ़ा न कियाजाता औ
र यह भी लिखा जाता कि जो तजवीज़ सी
ग़ा मुशअ्अर डिगरी दावा मुद्दई हुई है इस से
इत्तफ़ाक़ है तो यह मुग़ालतह वाक़े न होता
लिहाज़ा जुमले अहिलकारान सरिश्तः
सिकरटेरेट इसका पूरा लिहाज़ रक्खें कि
जब इस क़िस्म की तबदील व तनसीख़
तजावीज़ में हुवा करे तो उस वक़्त जिस तज
वीज़ से इजलास में इत्तफ़ाक़ कियाजावे

بملاحظہ مسل مقدمہ بچولال مدعی
بنام مالی رام بالغ و شیو پرتاب
برہمن مشتری مدعا علیہ دعوی حق دوکان
مبیعہ ۔ واضح ہوا کہ اس مقدمہ میں صیغہ سے
اول ایک تجویز مشعر ڈسمس کئے جانے
دعوی مدعی تاریخ ۱۷ اگست سنہ ۱۸۹۲ء
کو ہوئی تھی اور اجلاس جملہ
میمبران سے اتفاق کیا گیا تھا۔
بعد میں بمنظوری عذرات ایک فریق
کے صیغہ سے تاریخ ۱۲ جولائی سنہ ۱۸۹۲ء
تجویز سابقہ تبدیل کی گئی اور دعوی
مدعی ڈگری کیا گیا اور اس ہی تجویز
مشعر ڈگری دعوی مدعی سے اجلاس
جملہ میمبران میں اتفاق کیا گیا۔
مگر حکم میں حوالہ تجویز ۱۷ اگست سنہ ۱۸۹۱ء
سے اتفاق کرنے کا لکھا گیا
جو مشعر ڈسمس کئے جانے دعوے
مدعی کے تھی اگر حکم میں صرف حوالہ
تاریخ پر ہی اکتفا نکیا جاتا اور یہ بھی
لکھا جاتا کہ جو تجویز صیغہ مشعر ڈگری
دعوی مدعی ہوئی ہے اس سے
اتفاق ہے تو یہ مغالطہ واقع نہوتا۔
لہذا جملہ اہلکاران سررشتہ سکرٹریٹ
اسکا پورا لحاظ رکھیں کہ جب اس قسم
کی تبدیل و تنسیخ تجاویز میں ہوا کرے
تو اوس وقت جس تجویز سے
اجلاس میں اتفاق کیا جاوے

مکان بیع یا رہن کرے اور مشتری یا مرتہن طوائف ہو یا جو مکانات نیلام کئے جاوین اومین طوائف بولی بولکر خرید کرے تو اوسمین بہی اثر اس ہدایت کا پڑیگا یا نہین ۔

جسپر جواب لکہا گیا کہ حسب فرقہ طوائف کے نام کی خطا جیہی کی بابت یہہ حکم جا چکا ہے کہ بعد حصول اجازت محکمہ عالیہ کرو تو نیلام مین بہی چونکہ پروانہ راج سے دیا جاتا ہے بلا اجازت محکمہ عالیہ طوائف کے نام جائداد منتقل نہین ہوسکتی غرض اس تجویز سے یہہ ہے کہ طوائفان کی ایسی جگہہ بود و باش نہو جاوے جہان گرستی و عیالدار رہتے ہین کیونکہ اونکی قرب وجوار مین اس گروہ کی بود و باش بابت نامناسب ہے ۔

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
٦٤	۱۰ اگست ۱۹۳ء

۳ خلاصہ

احکام اجلاس جلسہ ممبران مین صرف تاریخ تجویز معیشہ کے اندراج پر ہی اکتفا نکیا جاوے بلکہ ماحصل بہی اختصار کے ساتھ درج حکم کیا جاوے ۔

۴ مضمون

मकान बय या रहन करे और मुश्तरी या मुर्तहन तवायफ़ हो या जो मकानात नीलाम किये जावें उनमें तवायफ़ बोली बोलकर ख़रीद करे तो उसमें भी असर इस हिदायत का पड़ेगा या नहीं -

जिस पर जवाब लिखा गया कि जब फ़िरके तवायफ़ के नाम की ख़त छपी के बाबत यह हुकम जा चुका है कि बाद हसूल इजाज़त महक्मः आलियः करो तो नीलाम में भी चुंकि परवाना राज से दिया जाता है बिला इजाज़त महक्मः आलियः तवायफ़ के नाम जायदाद मुन्तक़िल नहीं हो सक्ती ग़रज इस तजवीज़ से यह है कि तवायफ़ान की ऐसी जगह बूदबाश न हो जावे जहां गिरस्ती और अयालदार रहते हैं क्योंकि उनके कुर्बवजवार में इस गिरोह की बूदबाश बहुत नामुनासिब है -

१ नम्बर शुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
६४	१० अगस्त सन १८९३ ई०

३ खुलासा

अहिकाम इजलास जुमले मेम्बरान में सिर्फ़ तारीख़ तजवीज़ सीग़ा के इन्दराज पर ही इकतफ़ा न किया जावे बलकि महसल भी इख़्तसार के साथ दर्ज हुकम किया जाय

४ मजमून

کی جاتی ہے کہ مینون کی کاشتکاری کے
نیلام وادرسی مین مدعیان کو دلانہ جاوین
کیونکہ اونکے دلانے سے انتظام کاشتکاری
کا جاتا رہتا ہے۔ معرفت گیرائی
کے جملہ افسران تہانہ کو اسکی اطلاع
دیجاوے اور ناظمون اور تحصیلدارون
کو بہی اس سے مطلع کیا جاوے۔

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۶۳	۱۰ اگست ۱۸۹۳ء

۳
خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری (۳۶) مجریہ ۳ جون ۱۸۹۲ء کہ بلا اجازت محکمہ عالیہ نیلام مین بہی طوائفون کے نام جایداد منتقل بالنسبین ہو سکتی۔

۴
مضمون

۳ جون ۱۸۹۲ء کو ہدایت نمبری (۳۶) شائع ہوئی تہی کہ جو مکان کہ طوائف خریدین اوسکی خط چہپی منصفی وعدالت سے بلا اجازت محکمہ عالیہ کے نہوا کرے۔
مختاران عدالت دیوانی نے بذریعہ کیفیت ۷ اگست ۱۸۹۳ء مقدمہ اجرای ڈگری مساۃ کشنی زوجہ درگا مہرہ مین یہ استصواب کیا کہ جو کوئی

कीजानी है कि मीनों की काश्तकारी के नीलाम दादरसी में मुद्दईयान को दिलाये न जावें क्योंकि उनके दिलाने से इन्तज़ाम काश्तकारी का जाता रहता है मारफ़त गीराई के जुमले अफ़सरान थाने को इसकी इत्तला दीजावे और नाज़मो और तहसीलदारों को भी इस्से मुत्तला किया जावे

१ नम्बरशुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
६३	१० अगस्त सन १८९३ई

३
ख़ुलासा

ज़मीमः हिदायत नम्बरी (३६) मजरयः ३ जून सन १८९२ई० कि बिला इजाज़त महकमः आलियः नीलाम में भी तवायफ़ों के नाम जायदाद मुन्तक़िल नहीं हो सक्ती

४
मज़मून

३ जून सन १८९२ई० को यह हिदायत नम्बरी (३६) शाया हुई थी कि जो मकान कि तवायफ़ ख़रीदें उसकी रहन छपी मुनसफ़ी व अदालत से बिला इजाज़त महकमः आलियः के न हुवा करे
मुख़्तारान अदालत दीवानी ने बज़रिये कैफ़ियत ७ अगस्त सन १८९३ई० मुक़द्दमः इजराय डिगरी मुसम्मात किशुनी ज़ौजह दुर्गा महिरा में यह इस्तसवाब किया कि जो कोई

१	२
नम्बरशुमार	तारीख मंज़ूरी
९२	७ अगस्त सन १८९३ ई०

३

खुलासा

मीनों के क़ाशतकारी के बैल दादरसी में मुद्दैयान को न दिलाई जावें –

४

मज़मून

ठाकुर बहादुर सिंहजी रानावत ने बाबत गुज़ारह मीनगान आमाड़ः अफ़सर बरवारः की शिकायत की थी कि मुसम्मयान सदा और नंदा चौकीदारान आमाड़ः के पास क़ाशतकारी के दो बैल थे अफ़सर ने मेडः खाती को बाबत दादरसी ज़र चोरी अपने रोबरू दिलवा दिये यह अफ़सर क़ाबिल मौक़ूफ़ी के है और बैल वापस चौकीदारों को दिलाये जाने के लायक़ हैं –

जिस पर गिरदाई के मारफ़त अफ़सर से दरयाफ़्त किया गया तो उसने यह बयान किया कि बैल जबरं चौकीदारों से नहीं दिलाये गये बलकि उन्होंने अपनी रज़ामन्दी से दे दिये – और राज़ीनामा होने के छः माह पहिले से ज़राअत चौकीदारों ने छोड़ दी थी चुनान्चि इत्तलाइसकी बाक़ायदे गिरदाई को दे दी गई थी –

अन्दरीं सूरत यह आम हिदायत जारी

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۹۲	۷ اگست ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

مینون کی کاشتکاری کے بیل دادرسی مین مدعیان کو نہ دلائے جاوین -

۴

مضمون

ٹھاکر بہادر سنگھ جی راناوت نے بابت گزارہ میناگان اماڑہ افسر برواڑہ کے شکایت کی تہی کہ مسمیان سدا اور نندا چوکیداران اماڑہ پاس کاشتکاری کے دو بیل تہے افسر نے میڈا کہاتی کو بابت دادرسی زرچوری اپنے روبرو دلوادئے یہہ افسر قابل موقوفی کے ہے اور بیل واپس چوکیداران کو دلائے جانے کے لائق ہین -

جسپر گرداوری کی معرفت افسر سے دریافت کیا گیا تو اوسنے یہہ بیان کیا کہ بیل جبراً چوکیدارون سے نہین دلائے گئے بلکہ اونہون نے اپنی رضامندی سے دیدئے اور راضی نامہ ہونے کے چہہ ماہ پہلے سے زراعت چوکیدارون نے چہوڑدی تہی چنانچہ اطلاع اسکی باقاعدہ گرداوری کو دیدی گئی تہی -

اندرین صورت یہہ عام ہدایت جاری

(٦٩)

افزونی پیداوار اراضی ان چاہات کے
ذریعہ سے اور جب چاہات سے پانی کی پیداوار
کا تخمینہ ہو گیا تو اصل قیمت چاہات سے
بحث نہین ہوتی - اور جو جاگیردار بھومیہ
وغیرہ حقیت کی نالش کرتے ہین وہ
حصہ زمین کی پیداوار سالانہ کے حساب
سے سہ چند رسوم داخل کرتے ہین - تعداد
چاہات واقع دیہہ قطعات اراضی کو کوئی
مستغیث ظاہر بھی نہین کرتا - اور ایک
ایک گانو مین بیس پچیس بلکہ سو پچاس چاہات
بھی ہوتے ہین اوسکا تخمینہ پیداوار دیہہ سے
علحدہ ہوتا اور اوسکا زر رسوم لئے
جانے کی تعداد فیس بہت کچھہ
بڑھ جاوے گی -

اور اسطرح پر مقدمات مختصا سارٹیفکیٹ
کی صورت ہے - اسپر غور ہوکر حکم مناسب
صادر فرمایا جاوے -

جسپر جواب مین سرداران اپیل کو لکھا
گیا کہ چاہات آبنوشی رفاہ عام
کے لئے ہوتے ہین ایسے چاہات سے
کوئی نفع دنیاوی چاہ بنوانے والے
کو مقصود نہین ہوتا اسلئے ایسے چاہات کی بابت
رسوم نہین لی جانی چاہئے ہان جو چاہات
آبپاشی کے لئے بنوائے جاوین اونکی
رسوم لیجانی مناسب ہے -

—(٥)—

अफ़ज़ूनी पैदावार आराज़ी उन चाहात के ज़रिये से हैं और जब चाहात के पानी की पैदावार का तख़मीना होगया तो असल क़ीमत चाहात से बहस नहीं होती - और जो जागीरदार भूमियां वग़ैरः हक़ीयत की नालिश करते हैं वह हिस्सा ज़मीन की पैदावार सालाना के हिसाब से सःचन्द रसूम दाख़ल करते हैं - तादाद चाहात वाक़े देह क़ितआत आराज़ी को कोई मुस्तग़ीस ज़ाहर भी नहीं करता - और एक एक गांव में बीस पच्चीस बल्कि सौ पचास चाहात भी होते हैं - उसका तख़मीना पैदावार देह से अलहदा होया और उसका ज़र रसूम लिये जाने की तादाद फ़ीस बहुत कुछ बढ़ जायगी -

और इस तरह पर मुक़दमात अनापसारटी फ़िकट की सूरत है - इस पर ग़ौर होकर हुक्म मुनासिब सादिर फ़रमाया जावे -

जिस पर जवाब में सरदारान अपील को लिखा गया कि चाहात आबनोशी रिफ़ाह आम के लिये होते हैं एसे चाहात से कोई नफ़ा दुनयावी चाह बनवाने वाले को मक़सूद नहीं होता इस लिये एसे चाहात की बाबत रसूम नहीं लीजानी चाहये - हां जो चाहात आबपाशी के लिये बनवाये जावें उन की रसूम लीजानी मुनासिब है -

—(०)—

۴

مضمون

بتاریخ ۱۷ جون سنہ ۱۸۹۳ء کو استصواب
ناظم جی ہنڈون پر یہ ہدایت جاری
ہوئی تھی کہ وہ مندر اور کوٹھیات کہ جو
سرکاری ہوں انکی قیمت کا تخمینہ ہو کر
زر رسوم حسب ضابطہ لیا جاوےگا۔

بعد اجراے ہدایت مذکورہ ناظم جی
سوائی مادھوپور سے تحصیلداران اپیل
یہ استصواب کیا کہ چاہات کا تخمینہ
ہو کر رسوم لینے کا حکم کن چاہات
کے واسطے ہے۔

آیا اون چاہات سے مطلب ہے کہ جو کوئی
شخص اپنے کاروبار خانگی کے واسطے پانی پینے
کو بنوائے۔ یا تمام رعایا کے پانی پینے کو
بنوایا ہو۔

یا اون چاہات سے مقصود ہے کہ جو اراضی
کاشتکاری میں واقع ہوں اور اونسے
آبپاشی ہوتی ہو۔

اگر صورت اول کے واسطے حکم ہے
تو بہتر ہے۔

رہی دوسری صورت اوسکی یہ کیفیت ہے
کہ آبپاشی اراضی کے چاہات مذکورہ سے
ہوتی ہے اور تخمینہ پیداوار اراضی کا موافق
ہیچ زمین چاہی کے ہوا کرتا ہے۔
ایسے چاہات کا تخمینہ لاگت کا علحدہ
اب تک نہیں ہوا کس لئے کہ

४

मज़मून

तारीख़ १७ जून सन १८९३ ई॰ को इस्तसवाब
नाज़िमजी हिनडोन पर यह हिदायत जारी हुई
थी कि वह मन्दर और कोठयात कि जो सरका
री हों उनके क़ीमत का तख़मीना होकर
ज़र रसूम हस्ब ज़ाब्ता लिया जावेगा-

बाद इजराय हिदायत मज़कूरः नाज़िम जी
सवाई माधोपुर ने मारफ़त सररदारान अ
पील यह इस्तसवाब किया कि चाहात का
तख़मीना होकर रसूम लेना का हुकम किन
चाहात के वास्ते है-

आया उन चाहात से मतलब है कि जो कोई श
ख़्स अपने कारोबार ख़ानगी के वास्ते पानी लेने को
बनवाये या तमाम रिआया के पानी पीने को
बनवाया हो-

या उन चाहात से मक़सूद है कि जो अ
राज़ी काश्तकारी में वाक़े हों और उनसे आब
पाशी होती हो-

अगर सूरत अव्वल के वास्ते हुकम है तो बह
तर है

रही दूसरी सूरत उसकी यह कैफ़ियत है कि
आबपाशी अराज़ी के चाहात मज़कूरह से
होती है और तख़मीना पैदावार अराज़ी
का मुवाफ़िक़ भेज ज़मीन चाही के हुवा कर
ता है- ऐसे चाहात का तख़मीना लागत का
अलहदा अब तक नहीं हुआ किस लिये कि

(٦٠)
٤٥

کی بابت ایسی نہیں ہی کہ جس سے ایسے
مقدمات کا درجہ بدرجہ منظوری کو آنیکی
ضرورت رکہی گئی ہو - اگر مرضی حکام یہی
ہے کہ بردہ فروشی کے مقدمات بہی کہ
یہہ جرم نہایت سنگین ہے منظوری کیلئے
آیا کریں تو عام ہدایت اس بارہ مین
جاری کیجائے -
لہذا فوجداری کو جواب مین لکہا گیا کہ
مقدمات بردہ فروشی کے ایسے نہین ہین
کہ جنکا محکمہ عالیہ تک اطلاع نہ دینا
مناسب نہو کیونکہ اونکا تعلق کبہی کبہی
صیغہ علاقہ غیر سے بہی ہو جاتا ہے
اور صرف ایسے مقدمات بردہ
فروشی پر منحصر نہین ہے بلکہ جس مقدمہ
مین کہ اطلاع دہی محکمہ عالیہ مناسب
و مصلحت معلوم ہو اوسکی اطلاع
دینے مین کوئی حرج نہین ہی - اور سرداران
اپیل کو بہی اسکی اطلاع لکہی گئی اور
تحریر کیا گیا کہ حکام ماتحت کو بہی اس
سے مطلع کر دیا جاوے -

١	٢
نمبر شمار	تاریخ منظوری
٦١	٢٠/ اگست ١٨٩٣ع

(٦١)
٤٦

٣
خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری ٤٨ مجریہ ١٧/ جون ١٨٩٣ع
بابت اخذ رسوم چاہات وغیرہ -

फ़ीबाबत ऐसी नहीं है कि जिससे ऐसे मुक़द्दमा
त का दरजा बदरजा मंज़ूरी के लिये आने की ज़
रूरत रक्खी गई हो अगर मरज़ी हुक्काम यह
ही है कि बरदा फ़रोशी के मुक़द्दमात भी कि
यह जुर्म निहायत संगीन है मंज़ूरी के लिये
आया करें तो आम हिदायत इस बारे में जा
री की जाय —
लिहाज़ा फ़ौजदारी को जवाब में लिखा ग
या कि मुक़द्दमात बरदा फ़रोशी के ऐसे न
हीं हैं कि जिनका महकमः आलिया तक इ
त्तला न देना मुनासब न हो क्यों कि उन का त
अल्लुक़ कभी रसीगे इलाक़ा ग़ैर से भी हो जा
ता है और सिर्फ़ ऐसे मुक़द्दमात बरदा फ़रो
शी पर मुनहसर नहीं है बल्कि जिस मुक़द्द
मः में कि इत्तला दिही महकमः आलियः मु
नासब व मसलहत मालूम हो उसकी इत्तला
देने में कोई हर्ज नहीं है — और सरदारान अ
पील को भी इसकी इत्तला लिखी गई और
तहरीर किया गया कि हुक्काम मातहत को
भी इससे मुत्तला कर दिया जावे —

१	२
नम्बर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
६१	२० अगस्त सन १८९३ ई०

३
ख़ुलासा

ज़मीमः हिदायत नम्बरी ४८ मजरियः १७ जून
सन १८९३ ई० बा अख़ज़ रसूम चाहात वग़ैरह —

۴

مضمون

مسل مقدمہ مسمے ہنمان ولد گمانا مالی
ساکن چاکسو مدعی۔

بنام

مسماتان نابھی و نتھی طوائفان
وکانہا و بردہا مالی ساکن الیفا
مدعا علیہ۔

علت فروخت کردینا مسماۃ
چھوٹی دختر مدعی کو

ناظم سوائی جیپور نے بعد تجویز ۱۸-
فروری سنہ ۱۸۹۳ء کو بنابر منظوری
فوجداری مین بھیجی۔

فوجداری سے ۷ مارچ سنہ ۱۸۹۳ء کو
اس حکم سے اصل واپس کردی گئی
کہ مقدمات بردہ فروشی کے یہانتک
منظوری کے لئے آنے کا کوئی قاعدہ نہین ہے
مناسب ہے کہ باضابطہ اپنی تجویز اختیاری کا
اجرا کرو جو فریق ناراض ہوگا باضابطہ
چارہ جوئی کرے گا۔

چنانچہ فوجداری سے دریافت کیا گیا
کہ ایسا کونسا حکم محکمہ عالیہ سے
جاری ہوا ہے کہ جسکے بموجب اس مسل
کا نہ بھیجنا فوجداری سے قرار دیا جاکر
مسل واپس کردی گئی۔

جواب مین فوجداری سے لکھا آیا کہ کوئی
ہدایت بردہ فروشی کے مقدمات

४

मज़मून

मिसल मुक़द्दमः मुसंमा हनुमान वल्द गुमाना
माली साकिन चाकसू मुद्दई–

बनाम

मुसम्मातान नाभी व नन्थी तवायफ़ान
व कान्हां व बिरधा माली साकिन खैज़न मु
द्दा इलह–

इल्लत फ़रोख़्त करदेना मुसम्मा
त छोटी दुख़तर मुद्दई को–

नाज़िम सवाईजेपुर ने बादतजवीज़ १८ फ़
रवरी सन १८९३ ई० को बिनांबर मंज़ूरी फ़ौ
जदारी में भेजी।

फ़ौजदारी से ७ मार्च सन १८९३ ई० को इ
स हुक्म से असल वापिस करदी गई कि मुक़द्द
मात बर्दा फ़रोशी के यहां तक मंज़ूरी के लि
ये आने का कोई क़ायदा नहीं है मुनासिब है
कि बाज़ाब्ता अपनी तजवीज़ अख़्तियारी का
इजरा करो जो फ़रीक़ नाराज़ होगा बाज़ाब्ता
चाराजोई करेगा–

चुनांचि फ़ौजदारी से दरयाफ़्त किया गया
कि ऐसा कौनसा हुक्म महकमः आलियह
से जारी हुवा है कि जिसके बमूजिब इस मि
सल का न भेजना फ़ौजदारी से क़रार दिया
जा कर मिसल वापस कर दी गई–

जवाब में फ़ौजदारी से लिखा आया कि
कोई हिदायत बर्दा फ़रोशी के मुक़द्दमात

मुलज़िमान पर ज़ेर दफ़े (१९) फ़हरिस्त जरा
यम जो मुताबिक़ दफ़े (१७०) ताज़ीरात हिं
न्द है जुर्म क़ायम किया गया है और इस दफ़े
के मुवाफ़िक़ जुर्म का वक़ूअ खास मुसाफ़िर
खाना इस्टेशन रेलवे पर हुवा है कि जिस मु
क़ाम के वक़ूअ की बाबत समाअत और तज
वीज़ महकमे हाज़ा के मुतअल्लिक़ है — अब यक़ी
न किया जाता है कि आयन्दा के वास्ते राज
से ऐसा इन्तज़ाम कर दिया जायगा कि इस
क़िसम के मुक़दमात की तहक़ीक़ात व समा
अत बिला इत्तला व इस्तमज़ाज महकमे हा
ज़ा के अदालत हाय राज में कार्रवाई नहीं हु
वा करेगी — लिहाज़ा फ़ौजदारी को लिखा
गया कि आयन्दा इस क़िसम के मुक़दमात
की समाअत और तहक़ीक़ात बिला इत्तला
महकमे रज़ीडन्सी न किया करें और इत्तला
के लिये महकमः आलिया को लिखा करें —

१	२
नम्बर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
६०	५ अगस्त सन १८९३ ई०

३

खुलासा

मुक़द्दमात बरदा फ़रोशी व नीज़ जिन मुक़द्दमात में कि महकमः आलियः कौनसल को इत्तला देना मुनासिब व मसलहत हो उनकी इत्तला महकमः आलियः को देना चाहिये

ملزمان پر زیر دفعہ (۱۹) فہرست
جرائم جو مطابق دفعہ (۱۷۰) تعزیرات ہند
سے جرم قائم کیا گیا ہے اور اس دفعہ
کے موافق جرم کا وقوعہ خاص مسافرخانہ
اسٹیشن ریلوے پر ہوا ہے کہ جس
مقام کے وقوعہ کی بابت سماعت اور
تجویز محکمہ ہذا کے متعلق ہے - اب یقین
کیا جاتا ہے کہ آیندہ کیواسطے راج سے
ایسا انتظام کر دیا جاوے گا کہ اس
قسم کے مقدمات کی تحقیقات و سماعت
بلا اطلاع و استمزاج محکمہ ہذا
کے عدالت ہاے راج میں کارروائی
نہیں ہوا کرے گی لہذا فوجداری کو لکھا گیا
کہ آیندہ اس قسم کے مقدمات کی
سماعت اور تحقیقات بلا اطلاع
محکمہ رزیڈنسی نکیا کریں اور اطلاع
کے لئے محکمہ عالیہ کو لکھا کریں -

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۶۰	۵ اگست ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

مقدمات بردہ فروشی و نیز جن مقدمات میں کہ محکمہ عالیہ کونسل کو اطلاع دینا مناسب و مصلحت ہو انکی اطلاع محکمہ عالیہ کو دینا چاہیئے -

इसलियेनक़लइसकी सीग़ेकलक्टरीमें दी जावे

१	२
नम्बरशुमार	तारीख़ मंज़ूरी
५९	१ अगस्त सन १८९३ई०

३

खुलासा

जब किसी जुर्म का वक़ूअ अन्दर मुसाफ़रख़ाना हद्द इस्टेशन रेलवे के हो तो फ़ौजदारी उसकी तहक़ीक़ात व समाअत बिला इत्तला व इसतमज़ाज महकमः रज़ीडन्सी न किया करे और महकमः आलयः को बिनाबर इत्तला लिखा करें

५

मज़मून

मिसल मुक़द्दमः कल्लूजान तवायफ़ साकिन सरसावः ज़िला सहारनपुर मुद्दई

मुहम्मद इसहाक़ व सुभान ख़ां माख़ूज़ प्यारेलाल मफ़रूर मुद्दआ अलैहुम

इल्लत मुलाज़िम सरकारी बन कर तलाशी लेना और धमकाना मुद्दईयः को बनीयत फ़ासिद ज़ेर दफ़ः (१९) फ़ेहरिस्त जराइम मरजूआ १७ मई सन ९३

महकमः रज़ीडन्सी शरक़ी में तलब की गई थी और बाद मुलाहज़ा बज़रिये कैफ़ियत २२ जोलाई सन १८९३ई० इस हुकम से वापिस आई कि मुलाहज़ा मिसल मुरत्तबः राज से वाज़ह होता है कि अदालत फ़ौजदारी राज के

اس لئے نقل اسکی صیغہ کلکٹری مین دیجاوے +

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۵۹	یکم اگست ۱۸۹۳ع

خلاصہ

جب کسی جرم کا وقوعہ اندر مسافر خانہ حد اسٹیشن ریلوے کے ہو تو فوجداری اوسکی تحقیقات وسماعت بلا اطلاع واستمزاج محکمہ رزیڈنٹی کیا کرین - اور محکمہ عالیہ کو بنابر اطلاع لکہا کرین -

۴

مضمون

مسل مقدمہ کلوجان طوائف ساکن سرساوہ ضلع سہارنپور مدعے

محمد اسحاق و سبحان خان ماخوذ پیارے لال مفرور مدعا علیہم

علت ملازم سرکاری بنکر تلاشی لینا اور دہمکانا مدعیہ کو بہ نیت فاسد زیر دفعہ (۱۹) فہرست جرائم مرجوعہ ۱۷ مئی ۱۸۹۳ع

محکمہ رزیڈنسی شرقی مین طلب کی گئی تہی اور ملاحظہ بذریعہ کیفیت ۲۲ جولائی ۱۸۹۳ع اس حکم سے واپس آئی کہ ملاحظہ مسل مرتبہ راج سے واضح ہوتا ہے کہ عدالت فوجداری راج

वुह ही का विज़ रहे बाद इख़तताम मीयाद चक
बन्दी के दूसरे शख़्स का दख़्ल हो सक्ता है
सरदारान अपील ने भी अपनी यही राय
ज़ाहर करके महकमे आलियः से इसतसवा
ब किया कि हमारी राय में भी तामियाद
चक बन्दी क़बज़ा उस ही का रहिना चा
हिये कि जिस के नाम चक बन्दी है बाद
मियाद चक बन्दी मुद्दई क़बज़ा पा सकता है
चूंकि यह अमर कोई ज़रूरी नहीं कि तामि
याद चक बन्दी क़बज़ा मदयून का ही आ
राज़ी पर रहै और मुद्दई डिगरी दार जिसके ह
क़ में डिगरी हो कर नातिक़ हो गई है अरसे
तक महरूम रहे मदयून के नाम से इस
ज़मीन का चक मुन्तकिल करके मुद्दई डि
गरीदार के नाम बांध दिये जाने में नुक़सा
न सरकार का कुछ नहीं है जिस तरह मद
यून रुपया जमा कराता था अब डिगरी
दार कराता रहेगा और अलावे अज़ीं इ
स ही क़िस्म के मुक़द्दमे फ़क्कुलरहिन राम
नरायन ब्रह्मन मुद्दई चुन्नी लाल बुहरा
मद्दा यलेह में चक हसबुलहुक्म ९ नवम्ब
र सन १८९१ ई॰ मुन्तकिल किये जाने की
तजवीज़ हो चुकी है अब कोई वजह नहीं
कि इस मुक़द्दमे में मदयून के नाम से चक मुन्तकि
ल न किया जावे लिहाज़ा सरदारान अपील
को जवाब लिखा जावे और चूंकि इंतक़ाल नाम
की कार्रवाई मुतअल्लिक़ ब सीगे कलक्टरी है

وہی قابض رہے۔ بعد اختتام میعاد
چکبندی کے دوسرے شخص کا دخل ہو سکتا ہے
سرداران اپیل نے بھی اپنی یہی رائے
ظاہر کر کے محکمہ عالیہ سے استصواب
کیا کہ ہماری رائے میں بھی تا میعاد چک
بندی قبضہ اُس ہی کا رہنا چاہیئے
کہ جسکے نام چک بندی ہے بعد
میعاد چکبندی مدعی قبضہ پا سکتا ہے۔
چونکہ یہ امر کوئی ضروری نہیں کہ تا میعاد
چکبندی قبضہ مدیون کا ہی اراضی پر
رہے اور مدعی ڈگری دار جس کے
حق میں ڈگری ہو کر ناطق ہو گئی ہے عرصے
تک محروم رہے۔ مدیون کے نام سے
اس زمین کا چک منتقل کر کے مدعی
ڈگریدار کے نام باندھ دیئے جانے میں نقصان
سرکار کا کچھ نہیں ہے جس طرح مدیون روپیہ
جمع کراتا تھا اب ڈگریدار کراتا رہے
گا اور علاوہ ازیں اس ہی قسم
کے مقدمہ فک الرہن رام
نراین برہمن مدعی چنی لال بوہرہ
مدعا علیہ میں چک حسب الحکم ۹ نومبر
سنہ ۱۸۹۱ء منتقل کئے جانے کی تجویز
ہو چکی ہے اب کوئی وجہ نہیں کہ اس
مقدمہ میں مدیون کے نام سے چک
منتقل نکیا جاوے لہذا سرداران اپیل
کو جواب لکھا جاوے اور چونکہ انتقال نام
کی کارروائی متعلق بصیغہ کلکٹری ہے

اجرا مین اُسکا چک بنام ڈگریدار
منتقل ہو کر قبضہ دلایا جا سکتا ہے۔

۴

مضمون

بملاحظہ مثل مقدمہ گنیش پروہت ساکن
نوائی مدعی ڈگریدار - کانہا بیاس
مدیون ڈگری دعوے اجرائے
ڈگری دخلیابی ۱۲ بیگہہ اراضی ظاہر
ہوا کہ ڈگریدار نے تحصیل نوائی مین
دعوے ۱۲ بیگہہ زمین کا بمقابلہ
مدعاعلیہ دائر کرکے ڈگری پائی اور
مقدمہ ناطق ہوگیا۔ ڈگریدار مقدمہ بصیغہ
اجرا دائر کرکے دخلیابی کا خواستگار
ہوا۔ مگر یہ زمین جسکی بابت مدعی
نے دعوے کرکے ڈگری پائی ہے
سمت ۱۹۴۲ سے سمت ۱۹۵۶ تک
چکبندی مین بنام مدعاعلیہ بندھی ہوئی
ہے اور مدعاعلیہ ہی قابض ہے۔
تحصیلدار نے ناظم جی سے دریافت
کیا۔ ناظم جی نے اپنی یہ راے
لکھکر سرداران اپیل سے استصواب
کیا کہ چکبندی کا بصیغہ کلکٹری
یہ قاعدہ ہے کہ سمت ۱۹۴۲ سے سمت
۱۹۵۶ تک جن کے نام چکبندی ہوگئی
اور جسکے قبضہ مین زمین ہو - اور وہی
زمین کاشت کرتا ہو اور روپیہ راج
کا دیتا ہو تو تا اختتام چکبندی کے

इजराय में उसका चक बनाम डिगरीदार मुन
तकिल हो कर क़बज़ा दिलाया जा सक्ता है

४

मज़मून

बमुलाहज़े मिसल मुक़दमा गनेश पिरोहत
साकिन निवाई मुद्दई डिगरीदार कान्हा
बियास मदयून डिगरी दावा इजराय डि
गरी दखलयाबी १२ बीघा आराज़ी ज़ाहर
हुवा कि डिगरीदार ने तहसील निवाई में
दावा १२ बीघा ज़मीन का बमुक़ाबले मुद्दा
यलेह दायर करके डिगरी पाई और मुक़द
मां नातिक़ होगया डिगरीदार मुक़दमां
बसीगे इजरा दायर करके दखलयाबी का
ख्वास्तगार हुवा मगर यह ज़मीन जिसकी
बाबत मुद्दई ने दावा करके डिगरी पाई है
सम्बत १९४२ से सम्बत १९५६ तक चकब
न्दी में बनाम मुद्दायलेह बंधी हुई है और मु
द्दायलः ही क़ाबिज़ है -
तहसीलदार ने नाज़िमजी से दरयाफ़्त कि
या नाज़िमजी ने अपनी यह राय लि
खकर सरदारान अपील से इसतसवाब
किया कि चकबन्दी का बसीगे कलकरी
यह क़ायदा है कि सम्बत १९४२ से सम्बत
१९५६ तक जिनके नाम चकबन्दी हो गई
और जिसके क़बज़े में ज़मीन हो और वह
ही ज़मीन काश्त करता हो और रुपया रा
ज का देता हो तो ता इख़तताम चकबन्दी के

(५७)

होनी चाहिये कि किस तरह से मुलजिम मफ़
रूर हुवा और उसकी हिरासत का बन्दोब
स्त क्या क्या किया गया था बावजूद बन्दोब
स्त हिरासत के फिर मफ़रूरी क्योंकर वकू़य
में आई अकसर तहिक़ीक़ात से मालूम हुवा
कि बन्दोबस्त हिफ़ाज़त का नाकाफ़ी होता
है जिस्से मफ़रूरी वकू़य में आती है लेकिन
तहिक़ीक़ात कुनिन्दा वजह मफ़रूरी और
कमी बन्दोबस्त हिफ़ाज़त की तरफ़ तवज्ज
ह नहीं करते - इस सबब से क़सूरकुनिन्द
गान सज़ायाब नहीं हो सक्ते और यह बात नि
हायत बदनज़मी और बदनामी की है लि
हाज़ा गिराई को लिखा जावे कि इसका बन्दो
बस्त मुनासिब करना चाहिये और जिन लो
गों का क़सूर पाया जाय उनकी निसबत
सख़्त तदारुक होना चाहिये बग़ैर ग़फ़लत
और सहिल इनकारी और कमी बन्दोबस्त
हिफ़ाज़त हिरासत के मुलज़िम मफ़रूर नहीं
हो सकता -

१	२
नम्बरशुमार	तारीख़ मंज़ूरी
५८	१९ जोलाई सन १८

३

खुलासा

अगर किसी को डिगरी दख़ल याबी ज़मीन
की मिल कर नातिक़ होजाय और निस फ़ ज़
मीन का चक मदयून के नाम बंध रहा हो तो

(۵۷)

ہونی چاہیئے کہ کسطرح سے ملزم
مفرور ہوا اور اُسکی حراست کا بندوبست
کیا کیا گیا تھا باوجود بندوبست
حراست کے پھر مفروری کیونکر وقوع
مین آئی اکثر تحقیقات سے معلوم ہوا
کہ بندوبست حفاظت کا ناکافی ہوتا
ہی جس سے مفروری وقوع مین آتی ہی
لیکن تحقیقات کنندہ وجہ مفروری اور
کمی بندوبست حفاظت کی طرف توجہ
نہین کرتے - اس سبب سے قصور کنندگان
سزایاب نہین ہوسکتے اور یہہ بات
نہایت بدنظمی اور بدنامی کی ہی لہذا
گیرائی کو لکھا جاوے کہ اِسکا بندوبست
مناسب کرنا چاہیئے - اور جن لوگون
کا قصور پایا جاوے اُنکی نسبت سخت
تدارک ہونا چاہیئے بغیر غفلت اور
سہل انکاری اور کمی بندوبست
حفاظت حراست کے ملزم مفرور
نہین ہوسکتا -

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۵۸	۱۹ - جولائی ۱۸۹۳ع

(۵۸)

۳

خلاصہ

اگر کسی کو ڈگری دخلیابی زمین کی
مل کر ناطق ہوجاوے اور نصف زمین
کا چک مدیون کے نام بندھ رہا ہو تو

کو تقاسم - بابند بکو ئی بین الساعمل نہین ہی
اگرچہ اس تحریر سے کوئی نفع نقصان
نظر نہین آیا مگر اس لحاظ سے کہ
سب جگہہ یکسیان کارروائی رہنی چاہئیے
جملہ محکمات ماتحت کو اس کارروائی کے
اجرا کے واسطے لکھوا دیا جاوے
جواب مین سرداران اپیل کو لکھا گیا
کہ بعض کاتبان اظہار جو بقلم خود تحریر
کرنا اظہار کا لکھنے مین فضول ہی - اسلئے
عام اجرا کی ضرورت نہین سمجھی گئی تو
جہان اسکا عملدرامد ہی اُس کو بھی
جاری رکھنا کچھہ ضرور نہین -

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۵۷	۱۷ - جولائی سنہ ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

ہدایت درباب انتظام مفروری ملزمان زیر تجویز -

۴

مضمون

اسامیان زیر تجویز کی مفروری جسطرح کہ سابق بکثرت وقوع مین آتی تھی - ویسی ہی فی الحال کثرت وقوع سے مفروری ملزمان زیر تجویز کی تھانون سے ہو رہی ہی اور یہہ امر متعلق انتظام گیرائی کے ہی - بروقت مفروری تحقیقات

कोटका सम बादी कुई में इस का अमल नहीं है
अगर चि इस तहरीर से कोई नफ़ा नुक़सान
नज़र नहीं आया मगर इस लिहाज़ से कि
सब जगह इकसां कारवाई रहिनी चाहिये
जुमले महकमात मातहत को इस कारवाई के
इजरा के वास्ते लिखवा दिया जावे -
जवाब में सरदारान अपील को लिखा गया
कि बाज़ कातिबान इज़हार जो बक़लम ख़ुद तह
रीर करना इज़हार का लिखने में फ़िज़ूल है इ
सके आम इजरा की ज़रूरत नहीं समझी गई
तो जहां इसका अमल दरामद है उसको जा
री रखना कुछ ज़रूर नहीं -

१ नम्बर शुमार	२ तारीख मंज़ूरी
५७	१७ जोलाई सन १८९३

३

खुलासा

हिदायत दरबाब इन्तज़ाम मफ़रूरी मुलज़िमान ज़ेरतजवीज़ -

४

मज़मून

आसामियान ज़ेरतजवीज़ की मफ़रूरी जिसतरह कि साबिक़ बकसरत वक़ूप में आती थी वैसी ही फ़िलहाल कसरत वक़ूप मफ़रूरी मुलज़िमान ज़ेरतजवीज़ की थानो से हो रही है और यह अमर मुतअल्लिक़ इन्तज़ाम गीराई के है बरवक़्त मफ़रूरी तहक़ीक़ात

۵۵ ५५

مناسب تھا کہ درخواست انخلا
کرایہ دار کے ساتھ اس کی تشریح
کی جائے۔ مگر نہ وہاں ہوئی نہ نمبر
(۳۹) پر ہوئی۔ اس واسطے عملدرآمد
مختلف طور پر عدالت ہا میں ہوتا ہے
اس نقص کے رفع کے واسطے ہدایت کا
جاری ہونا مناسب ہے کہ جو شرح
قیمت کاغذ جس پر نقل کرایہ نامہ
لکھے جانے کی ہدایت انخلا
میں درج ہے۔ اسکے بموجب عملدرآمد
رہنا چاہئے۔ نالش انخلا میں پابندی
شرح کاغذ نمبری (۳۹) قانون اسٹامپ کی ضروری ہونا چاہئے۔

نمبر شمار	تاریخ منظوری
۵۶	۱۲-جولائی ۱۸۹۳ء

۵۶ ५६

۳

خلاصہ

اظہار پر کاتب اظہار کے نام درج ہونے کی ضرورت نہیں۔

۴

مضمون

سرداران اپیل نے بذریعہ کیفیت ۲۰-جون ۱۸۹۳ء استصواب کیا تھا کہ جملہ محکمات ماتحت میں اظہار پر نام کاتب اظہار کا لکھا جاتا ہے اس سے یہ معلوم ہو سکتا ہے کہ یہ اظہار فلاں شخص کا فلاں وقت میں لکھا ہوا ہے۔ مگر نظامت دوسہ

मुनासिब था कि दरख्वास्त इनख़ला
प किरायादार के साथ इसकी तशरी
ह की जाय मगर न वहां हुई न नम्बर
(३९) पर हुई इस वास्ते अमलदरामद
मुख्तलिफ़ तौर पर अदालत हा में होता है
इस नुक़्स के रफ़े के वास्ते हिदायत का
जारी होना मुनासब है कि जो शरह
क़ीमत कागज़ जिस पर नक़ल किराय
नामा लिखे जाने की हिदायत इनख़
ला में दर्ज है उसके बमूंजिब अमल दरा
मद रहिना चाहिये नालिश इनख़ला में पाबंदी
शरह कागज नंबर (३९) कानून इस्टाम्प की लाज़िमी होनी चाहिये

नम्बर शुमार	तारीख मंज़ूरी
५६	१२ जोलाई सन १८९३

३

खुलासा

इज़हार पर कातिब इज़हार के नाम दर्ज होने की ज़रूरत नहीं—

४

मज़मून

सरदारान अपील ने बज़रिये कैफ़ियत २० जून सन १८९३ ई० इस्तसवाब कि या था कि जुमले महकमात मातहत में इज़हार पर नाम कातिब इज़हार का लिखा जाता है इससे यह मालूम हो सक्ता है कि यह इज़हार फ़लां शख्स का फ़लां वक्त में लिखा हुवा है मगर निज़ामत दोसा

شرح کاغذ اسٹامپ نقول کرایہ نامجات

مضمون

ہدایت انخلاے مکان از کرایہ داران نمبری (۴۰) ۱۸۸۷ء جو جاری ہوئی اُس میں شرح قیمت کاغذ اسٹامپ نقل کرایہنامہ جو ہمراہ عرضی دعوی نالش انخلا داخل ہوگا اس طرح پر درج ہے کہ اگر کرایہ نامہ ۸ ر یا ۱۲ ر کے کاغذ اسٹامپ سے کم قیمت پر ہو تو اُسکی نقل ۲ ر کے کاغذ ہو کر شمول عرضی دعوی داخل ہوگی۔ اور اگر کرایہ نامہ ۸ ر کے کاغذ سے زائد پر ہو تو ۸ ر کے کاغذ پر نقل ہو کر شامل عرضیدعوی کیجاویگی۔

قانون اسٹامپ جو مرتب ہو کر ۱۸۹۱ء میں جاری ہوا اُسمین کاغذ عرضیدعوی مقدمات انخلائی مکانات کی تعداد بموجب ہدایت مذکورہ بالا انخلا کے لکھی گئی۔ مگر اُس مقام پر بابت تعداد قیمت کاغذ نقول کرایہ نامجات درج نہیں ہوئی۔ اور قانون اسٹامپ مین نمبر (۳۹) جو تعداد قیمت کاغذ اسٹامپ بنا بر نقول دستاویزات یا بہی یا فرد وغیرہ جو ہمراہ عرضیدعوے کے داخل ہوں بالمقطع ۸ ر کے کاغذ پر درج ہے۔

शरह कागज़ इस्टाम्प नकूल किरायेनामजात

मज़मून

हिदायत इनख़ला मकान अज़ किरायादारान नम्बरी (४०) सन १८८७ ई० जो जारी हुई उसमें शरह कीमत कागज़ इस्टाम्प नकल किरायानामा जो हमराह अर्ज़ी दावा नालिश इनख़ला दाख़िल होगा इस तरह पर दर्ज है कि अगर किरायानामा ॥) या ॥) आने के कागज़ इस्टाम्प से कम कीमत पर हो तो उसकी नकल =) के कागज़ पर होकर बशमूल अर्ज़ी दावा दाख़िल होगी।

और अगर किरायानामा ॥) के कागज़ से ज़ायद पर हो तो ॥) के कागज़ पर नकल होकर शामिल अर्ज़ी दावा की जावेगी।

क़ानून इस्टाम्प जो मुरत्तब होकर सन १८९१ ई० में जारी हुवा उसमें कागज़ अर्ज़ी दावा मुक़द्दमात इनख़िलाय मकानात की तादाद बमूजिब हिदायत मज़कूरा बाला इनख़िलाय का लिखी गई मगर उस मुक़ाम पर बाबत तादाद क़ीमत कागज़ नक़ूल किरायानामजात दर्ज नहीं हुई। और क़ानून इस्टाम्प में बनंबर (३९) जो तादाद क़ीमत कागज़ इस्टाम्प बिनावर नक़ूल दस्तावेज़ात यावही या फ़र्द वग़ैरह जो हमराह अर्ज़ी दावे के दाख़िल हों बिलमक़ता आठ आने के कागज़ पर दर्ज है।

نمبر شمار	تاریخ منظوری
۵۴	یکم جولائی سنہ ۱۸۹۳ء

(۵۴)
(५४)

خلاصہ

ہر حاکم مجوز کو ملزم کا اظہار مفصل تحریر کرنا - اور اُسکی عذرات کی سماعت کرنا اور ثبوت بریت لینا واجب ہی -

مضمون

چونکہ یہ طریقہ ٹھیک نہیں ہی کہ جس مقدمہ میں جو ملزم سزا یاب ہوں انکا جواب نہ لکھا جاوے - اور اُن سے ثبوت بریت کا نہ پوچھا جاوے اور اُنکے عذرات نہ سُنے جاویں لہذا ایک عام ہدایت جاری ہونی چاہئے کہ ہر حاکم مجوز کو ملزم کا اظہار مفصل تحریر کرنا مناسب ہی اور اُسکے عذرات کا سماعت کرنا اور ثبوت بریت کا لینا واجب ہی - اگر پولیس نے روبرو کسی حاکم کے اظہار نبشتہ ملزم کو تصدیق کرایا اور بعد ازان وہ مثل مرتب ہو کر اُس حاکم مجاز کے روبرو فیصلہ کے واسطے آئی تو یہ مناسب نہیں ہی کہ اُسی تصدیق پر اکتفا کیا جاوے بلکہ واجب یہ ہی کہ اُسکا اظہار مکرر لکھا جاوے جیسا کہ اوپر تحریر ہوا -

نمبر شمار	تاریخ منظوری
۵۵	۵ جولائی سنہ ۱۸۹۳ء

(۵۵)
(५५)

خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری ۵۰ سنہ ۱۸۸۷ء بابت

नम्बर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
५४	१ जोलाई सन १८९३ ई०

खुलासा

हर हाकिम मुजव्विज़ को मुलज़िम का इज़हार मुफ़स्सिल तहरीर करना और उसके उज़रात की समाअत करना और सबूत बरयत लेना वाजिब है -

मज़मून

चूंकि यह तरीक़ः ठीक नहीं है कि जिस मुक़द्दमे में जो मुलज़िम सज़ायाब हों उनका जवाब न लिखा जावे और उनसे सबूत बरयत का न पूंछा जावे और उनके उज़रात न सुने जावें -

लिहाज़ा १ आम हिदायत जारी होनी चाहिये कि हर हाकिम मुजव्विज़ को मुलज़िम का इज़हार मुफ़स्सल तहरीर करना मुनासब है और उसके उज़रात का समाअत करना और सबूत बरयत का लेना वाजिब है अगर पुलिस ने रूबरू किसी हाकिम के इज़हार नविश्ते मुल्ज़िम को तसदीक़ कराया और बाद अज़ां वह मिसल मुरत्तब होकर उस हाकिम मजाज़ के रोबरू फ़ैसलह के वास्ते आई तो यह मुनासब नहीं है कि उसी तसदीक़ पर इक्तफ़ा किया जावे बलकि वाजिब यह है कि उसका इज़हार मुकर्रर लिखा जावे जैसा कि ऊपर तहरीर हुआ -

नम्बर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
५५	५ जोलाई सन १८९३

खुलासा

ज़मीमः हिदायत नम्बरी ५० सन १८८७ ई० बाबत

लिखा गया है और उस पर अमल दरामद है और जिन मुकद्दमात में असल कैद तजवीज़ न हो सिर्फ़ जुरमाना ही हो या जुरमाना और दादरसी दोनों तहरीर हों तो उन मुकद्दमात में अगर तादाद जुरमाना और तादाद ज़र दादरसी ५० ५० तक या उसके अन्दर हो तो बसूरत अदम अदाय जुरमाना या ज़र दादरसी के दो दो महीने तक की कैद की मिकदार से मियाद कैद ज़ियादा न होगी –

और अगर जुरमाना व दादरसी ५० ५० से ज़ियादा सौ सौ रुपया तक होतो चार चार माह तक की मियाद से मियाद कैद ज़ियादा न होगी –

और अगर तादाद जुरमानः व दादरसी ज़ाइद अज़ सौ सौ रुपया हो तो मियाद कैद छः महीने तक से ज़ाइद न होगी और दर्ज रहे कि दादरसी से वह दादरसी मुराद नहीं है जो बमूजिब दस्तूर के ज़िम्मेदारान मौके से कराई जाती है और जो ऊपर यह बात लिखी गई कि जुर्माना या दादरसी ५० ५० तक हो तो बसूरत अदम अदाय के दो दो माह तक सज़ाय कैद तजवीज़ हो सकी है सो इससे मुराद यह नहीं है कि ५० की दादरसी या जुर्माने के एवज से सज़ाय कैद दो माह दी जाय बल्कि मतलब इसका यह है कि बलिहाज़ तादाद जुर्माना और तादाद दादरसी के तजवीज़ सज़ाय कैद की दो माह के अन्दर अन्दर की जाय –

لکھا گیا ہے اور اُس پر عمل درآمد ہے اور جن مقدمات مین اصل قید تجویز نہو صرف جرمانہ ہی ہو یا جرمانہ اور دادرسی دونون تحریر ہوں تو اُن مقدمات مین اگر تعداد جرمانہ اور تعداد زر دادرسی ۵۰ ۵۰ تک یا اُسکے اندر ہو تو بصورت عدم ادائے جرمانہ یا زر دادرسی کے دو دو مہینے تک کی قید کی مقدار سے میعاد قید زیادہ نہو گی –

اور اگر جرمانہ و دادرسی ۵۰ ۵۰ سے زیادہ سو سو روپیہ تک ہو تو چار چار ماہ تک کی میعاد سے میعاد قید زیادہ نہو گی –

اور اگر تعداد جرمانہ و دادرسی زائد از سو سو روپیہ ہو تو میعاد قید چھہ مہینے تک سے زائد نہو گی اور درج رہے کہ دادرسی سے وہ دادرسی مراد نہین ہے جو بموجب دستور کے ذمہ داران موقع سے کرائی جاتی ہے اور جو اوپر یہ بات لکھی گئی کہ جرمانہ یا دادرسی ۵۰ ۵۰ تک ہو تو بصورت عدم ادائے کے دو دو ماہ تک سزای قید تجویز ہو سکتی ہے سو اس سے مراد یہ نہین ہے کہ ۵۰ کی دادرسی یا جرمانہ کے عوض سے سزائے قید دو ماہ دیجائے بلکہ مطلب اسکا یہ ہے کہ بلحاظ تعداد جرمانہ اور تعداد دادرسی کے تجویز سزائے قید کی دو ماہ کے اندر اندر کیجائے –

१ नम्बरशुमार	२ तारीखमंजूरी
५३	२९जूनसन१८८३ई

३

खुलासा

तशरीहतादादमीयाद कैद एवज़जुरमाना वदाद रसी-

४

मज़मून

मुलज़िम

अकसर मुक़दमात मातहत में जब किसी की निसबत बपादाशजुर्म सिर्फ़ जुरमाना किया जाता है तो उसके वास्ते कोई पैमाना तादाद सज़ाय कैद एवज़ जुरमाना मुक़र्रर नहीं है - मुख्तलिफ़ तौर पर कार्रवाई होती है - और अगर किसी मुक़दमे में जुरमाना के अलावा दाद रसी का भी हुक्म होता है तो अमल दरामद इस तरह पर हो रहा है कि बएवज़ दाद रसी के सज़ाय कैद एवज़ जुरमाना से चहारुम हिस्सा कैद की तजवीज़ हुवा करती है - हालां कि किसी हिदायत महकमे आलयह का यह मंशा नहीं है कि सज़ाय कैद एवज़ जुरमाना से चहारम हिस्सा एवज़ दाद रसी की तजवीज़ की जाया करे - जब किसी मुक़दमे में सज़ाय कैद और जुरमाना की सज़ा की जावे तो बसूरत अदम अदाय जुरमाना के असली कैद की तादाद से उसके चहारम हिस्से तक सज़ाय कैद एवज़ जुरमाना हो सकती है जैसा कि फहरिस्त जरायम में

نمبر شمار	تاریخ منظوری
۵۳	۲۹ - جون ۱۸۸۳ء

۳

خلاصہ

تشریح تعداد میعاد قید عوض جرمانہ وداد رسی -

۴

مضمون

اکثر مقدمات ماتحت مین جب کسی ملزم کی نسبت بپاداش جرم صرف جرمانہ کیا جاتا ہے تو اس کے واسطے کوئی پیمانہ تعداد سزاے قید عوض جرمانہ مقرر نہین ہے مختلف طور پر کارروائی ہوتی ہے - اور اگر کسی مقدمہ مین جرمانہ کے علاوہ دادرسی کا بھی حکم ہوتا ہے تو عمل درآمد اس طرح پر ہو رہا ہے کہ بعوض دادرسی کے سزاے قید عوض جرمانہ سے چہارم حصہ قید کی تجویز ہوا کرتی ہے - حالانکہ کسی ہدایت محکمۂ عالیہ کا یہ منشا نہین ہے کہ سزاے قید عوض جرمانہ سے چہارم حصہ عوض دادرسی کے تجویز کی جایا کرے - جب کسی مقدمہ مین سزاے قید اور جرمانہ کی سزا کی جاوے تو بصورت عدم ادائے جرمانہ کے اسلی قید کی تعداد سے اُسکے چہارم حصہ تک سزاے قید عوض جرمانہ ہوسکتی ہے جیسا کہ فہرست جرائم مین

५२

बमुकद्दमे गणेशनरायन वगोबिन्दनरायन
पिसरान जोशी जोहरीलाल मुद्दई अपीलांट
गुमाशता ओझा उमांदत्तजी मुद्दआलेह रस-
पाडन्ट - अपील बनाराज़ी तजवीज़ अदाल
तदीवानी बदावे (१८२७) सरदारान अपील
ने बज़रये कैफ़ियत १८ जून सन १८८३ ई० प
ह इसतसवाब किया कि इस मुकद्दमे में इब्त
दाई तजवीज़ पेशी ठाकुर अजीत सिंहजी
सरदार अपील से हुई - मुनशी गोबिन्द सिं
हजी सरदार ने उस तजवीज़ से इत्तफ़ाक़ किया
मुहम्मद अबदुलवाहिद अली ख़ांजी सर
दार ने बइस्तसनाय सूद इत्तफ़ाक़ किया -
बाद में नज़र सानी के पेश होने पर कार्रवाई
ज़ाब्ता शुरू हुई - तामुल इसमें यह है कि
आया इस नज़र सानी की तजवीज़ ठाकुर
अजीत सिंहजी ही के इजलास में जो रूख़सत
पर हैं होना चाहिये या और किसी सरदार
की पेशी में भी हो सक्ती है - अब इसबारे में जै
सा राज लिखावें उस मुवाफ़िक़ तामील की
जावे -
चुनांचि जवाब में यह लिखा गया कि जब नफ़्स
मुकद्दमः हर सेह सरदारान अपील की पेशी से
तै हुवा है तो फिर तजवीज़ दरख़ास्त नज़र सानी
के लिये ठाकुर अजीत सिंहजी के इन्तज़ार में मि
स्ल का मुलतवी रखना कुछ ज़रूर नहीं है -
बाक़ी दो सरदारान अपील भी तजवीज़
कर सकते हैं -

بمقدمہ گنیش نراین و گوبند نراین
پسران جوشی جوہرلال مدعی اپیلانٹ
گماشتہ اوجہا اومادت جی مدعاعلیہ رسپانڈنٹ
اپیل بنا راضی تجویز عدالت
دیوانی بدعوی (۱۸۲۷) روپیہ سرداران
اپیل نے بذریعہ کیفیت ۱۸ - جون ۱۸۸۳ع
یہہ استصواب کیا کہ اس مقدمہ مین
ابتدائی تجویز پیشی ٹھاکر اجیت سنگہ جی
سردار اپیل سے ہوئی - منشی گوبند سنگہ
جی سردار نے اُس تجویز سے اتفاق کیا
محمد عبدالواحد علیخان جی سردار نے
باستثنائے سود اتفاق کیا - بعد مین
نظر ثانی کے پیش ہونے پر کارروائی
ضابطہ شروع ہوئی - تامل اسمین یہی ہے کہ
آیا اس نظر ثانی کی تجویز ٹھاکر اجیت سنگہ
جی ہی کے اجلاس مین جو رخصت پر ہین
ہونا چاہئے یا اور کسی سردار
کی پیشی مین بھی ہوسکتی ہے - اب اسبارہ
مین جیسا راج لکھادین اُس موافق
تعمیل کی جاوے -
چنانچہ جواب مین یہہ لکھا گیا کہ جب
نفس مقدمہ ہرسہ سرداران اپیل کی
پیشی سے طی ہوا ہے تو پھر تجویز درخواست
نظر ثانی کے لئیے ٹھاکر اجیت سنگہ کے
انتظار مین مثل کا ملتوی رکھنا کچھہ ضرور نہین
باقی دو سرداران اپیل بھی تجویز
کرسکتے ہین -

चूंकि अदालत दीवानी के नाम तो अन्दरीं बाब २६ अपरेल और ३० अपरेल सन १८९३ ई० को यह हुक्म जारी हो चुका है कि सिवाय रहिन नामां और बय नामा और पुन्यपत्र के कि जिनकी खत छपी का खास क़ानून जारी है दीगर वसायक़ ता आंकि कोई क़ायदा अन्दरीं बाब महकमः आलिया से जारी हो रजिस्टरी न की जावें - अब बमूजिब हुक्म २१ जून सन १८९३ ई० बाक़ी जुमले महकमात मातहत को लिख दिया जावे कि सिवाय बयनामां व रहिननामां व पुन्य पत्र जिनकी खत छपी का खास क़ानून जारी है दीगर वसायक़ ता आंकि कोई क़ायदा अन्दरीं बाब महकमः आलियह से जारी हो रजिस्टरी न करें।

१	२
नम्बरशुमार	तारीख मंजूरी
५२	२७ जून सन १८९३ ई

३

खुलासा

जब नफ़स मुक़द्दमे में जुमले सरदारान अपील की पेशी से तजवीज़ हो जाय तो दरख्वास्त नज़र सानी में बइन्तज़ार एक सरदार अपील के जो मौजूद न हो मुक़दमा मुलतवी नहीं रहि सक्ता बाक़ी दो सरदार अपील तजवीज़ कर सक्ते हैं

४

मज़मून

٥١ ५१

چونکہ عدالت دیوانی کے نام تو اندرین باب ۲۶ - اپریل اور ۳۰ - اپریل ۱۸۹۳ء کو یہہ حکم جاری ہو چکا ہے کہ سوائے رہن نامہ اور بیعنامہ اور رہن پتر کے کہ جنکی خط چھپی کا خاص قانون جاری ہے دیگر وثائق تا آنکہ کوئی قاعدہ اندرین باب محکمہ عالیہ سے جاری ہو رجسٹری نہ کی جاوین - اب بموجب حکم ۲۱ - جون ۱۸۹۳ء باقی جملہ محکمات ماتحت کو لکھہ دیا جاوے کہ سوائے بیعنامہ و رہن نامہ و رہن پتر جنکی خط چھپی کا خاص قانون جاری ہے دیگر وثائق تا آنکہ کوئی قاعدہ اندرین باب محکمہ عالیہ سے جاری ہو رجسٹری نہ کرین -

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۵۲	۲۷ - جون ۱۸۹۳ء

٥٢ ५२

۳

خلاصہ

جب نفس مقدمہ مین جملہ سرداران اپیل کی پیشی سے تجویز ہو جاوے تو درخواست نظر ثانی مین بانتظار ایک سردار اپیل کے جو موجود نہوں مقدمہ ملتوی نہین رہ سکتا باقی دو سردار اپیل تجویز کر سکتے ہین -

۴

مضمون

इज़हार किसी वजह ख़ास के महिज़ अपनी ज़िद् और ख़ुद सरी से अपने शोहर के घर जाने और उसके पास रहिने से इनकार करती है तो एसी हालत में उस औरत की निसबत हस्ब कायदा मजरयह रियासत हाज़ा बाबत अदूल हुकमी सज़ाय तजवीज़ कैद की जाके फ़ौरन वह औरत बिनाबर ईफ़ाय सज़ा हिरासत पुलिस में कर दी जाती है कि जिस्से औरत को फिर तबदील मज़हब या ख़ुदकुशी वग़ैरः पर आमादा होने का मौका ही नहीं मिलता और इस ही सबब से यहां कभी एसी सूरत वकूय ही में नहीं आई - और जब कि औरत एक मरतबे सज़ाय अदूल हुकमी पा लेती है तो फिर दख़ल ज़ोजयत की बाबत अदालत में कोई कारवाई नहीं होती -

اظہار کسی وجہ خاص کے محض اپنی ضد اور خود سری سے اپنے شوہر کے گھر جانے اور اُسکے پاس رہنے سے انکار کرتی ہو۔ تو ایسی حالت میں اُس عورت کی نسبت حسب قاعدہ مجریہ ریاست ہذا بابت عدول حکمی سزائے تجویز قید کی جا کے فوراً وہ عورت بنا بر ایفاے سزا حراست پولیس میں کر دی جاتی ہو کہ جس سے عورت کو پھر تبدیل مذہب یا خود کشی وغیرہ پر آمادہ ہونے کا موقع ہی نہیں ملتا اور اس ہی سبب سے یہاں کبھی ایسی صورت وقوع ہی میں نہیں آئی۔ اور جب کہ عورت ایک مرتبہ سزاے عدول حکمی پا لیتی ہو تو پھر دخل زوجیت کی بابت عدالت میں کوئی کارروائی نہیں ہوتی۔

१	२	۲	۱
नम्बर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी	تاریخ منظوری	نمبر شمار
५१	२५ जून सन १८९३ ई०	۲۵-جون ۱۸۹۳ء	۵۱

३

ख़ुलासा

ज़मीमे हिदायत नम्बरी (२७) मजरयह २६ अपरेल सन १८९३ ई० बाबत इसके कि अक़्लाव बय नामा और रहिन नामा और पुन्य पत्र के जिन की ख़त छपी का कायदा जारी है दीगर वसीके जात रजिस्टरी न की जावें -

۳

خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری (۲۷) مجریہ ۲۶ اپریل ۱۸۹۳ء بابت اس کے کہ علاوہ بیعنامہ اور رہن نامہ اور پن پتر کے جن کی خط چھپی کا قاعدہ جاری ہو دیگر وثیقجات رجسٹری نہ کی جاوے۔

४

मज़मून

۴

مضمون

لہٰذا دریافت طلب یہ امر ہی کہ جو مقدمات اس طرح کے ریاستہائے کوٹہ بوندی اور جیپور میں ہوتے ہیں تو کارروائی انکی کس طریقے سے ہوتی ہے۔
چنانچہ جواب اس کا حسب صراحت ذیل لکھا گیا۔

مقدمات دخل زوجیت میں یہ عمل درآمد جاری ہے کہ بعد اصدار ڈگری دخل زوجیت اگر عورت بتعمیل حکم عدالت اپنے شوہر کے گھر چلی جاوے اور برضامندی اُس کے پاس رہنے لگے تو صورت نزاع رفع ہو کر مقدمہ وہیں طے ہو جاتا ہے۔
اور اگر عورت اپنے شوہر کے گھر جانے میں کچھ عذرات کرے کہ مجکو میرا شوہر بلا وجہ مار پیٹ کرتا ہے یا کہ حسب حیثیت خود نان و پارچہ نہیں دیتا ہے۔ یا کہ اُس کی دوسری عورت مجکو تکلیف دیتی ہے یا کہ خود شوہر اوباش و بدچلن ہے تو ایسی صورت میں حسب ضابطہ اُسکے بیان کی تصدیق کی جا کر بشرط تصدیق تجویز تحریر مچلکہ وغیرہ سے انسداد احتمال تکلیف رسانی کیا جا کر پھر عورت کو ہدایت کی جاتی ہے۔ کہ وہ اپنے شوہر کے گھر رہے۔
اس کارروائی کے بعد بھی اگر عورت تعمیل حکم عدالت سے گریز کرتی ہے۔ یا بلا

लिहाज़ा दरयाफ़्त तलब यह अमर है कि जो मुक़दमात इस तरह के रियासत हाय कोय ओर बूंदी ओर जैपुर में होते हैं तो कार्रवाई उनकी किस तरीके से होती है -
चुनांचि जवाब इसका हस्ब सराहत ज़ैल लिखा गया -

मुक़दमात दख़ल ज़ोजियत में यह अमल दरामद है कि बाद इस्दार डिगरी दख़ल ज़ोजियत अगर औरत बतामील हुक्म अदालत अपने शौहर के घर चली जावे और ब रज़ामन्दी उसके पास रहने लगे तो सूरत निज़ाय रफ़े होकर मुक़दमा वहीं ते हो जाता है -
ओर अगर ओरत अपने शौहर के घर जाने में यह उज़रात करे कि मुझको मेरा शोहर बिला वजह मार पीट करता है या कि हस्ब हैसियत ख़ुद नान व पारचा नहीं देता है - या कि उसकी दूसरी औरत मुझको तकलीफ़ देती है या कि ख़ुद शौहर औबाश और बदचलन है - तो ऐसी सूरत में हस्ब ज़ाब्ता उसके बयान की तसदीक़ की जाकर बशर्त तसदीक़ तजवीज़ तहरीर मुचलका वग़ैरः से इन्सदाद एहतमाल तकलीफ़रसानी किया जाकर फिर औरत को हिदायत की जाती है कि वह अपने शौहर के घर रहे -
इस कार्रवाई के बाद भी अगर औरत तामील हुक्म अदालत से गुरेज़ करती है - या बिला

बइमदाद अदालत उनके ख़्वास्तगार होते हैं
और अदालत से बनज़र इस्तहक़ाक़ जो शौहरों
को हासिल होता है बादीउलनज़र में ताकीद
के साथ औरतें उनके सपुर्द करा दी जाती हैं
और जो औरतें तकलीफ़दिही शौहर ख़ुद मि
स्ल ज़दोकोब बिला वजह ज़ाहिर करती हैं
उनका इन्तज़ाम ब अख़्ज़ मुचलका व ज़मा
नत वग़ैरः करा दिया जाता है और बाज़ औ
रतें इस इन्तज़ाम पर भी रवादार अपने शौ
हर के साथ जाने की नहीं होतीं और जो अदा
लत से तम्बीह होती है तो आमादे नफ़्सकु
शी होती हैं इसमें जो ग़ौर किया जाता है तो
बाज़ औरात तो वाक़ई बदवज़ई ख़ुद से मु
रतकिब ऐसे अमूर की होती हैं और बाज़
की निसबत शौहरों की जानिब से बेजा ज़ि
यादतियां मरई पाई जाती हैं जैसा कि मौ
ज़े बारी परगना जेहड़ा में एक औरत अप
ने शौहर साकिन इलाक़े ग़ैर के यहां से
बसबील रुख़सत अपने वालदैन के यहां
आ गई जब शौहर उसको बुलाने आया
तो जाने से इनकार किया - हस्ब इस्तग़ा
से नामबुर्दा मुसम्मात पर ताकीद की गई
तो वह ऐन दरवाज़े अदालत पर पहुंचते
ही आमादा इस बात पर हो गई कि मुसल
मान सिपाहियों के घड़ों का पानी पी लेवे
या आंकि ख़ुदकुशी की मुर्तकिब हो - चूंकि
यह मुआमला मज़हब अहिल हनूद का है

بامداد عدالت اُن کے خواستگار ہوتے ہیں
اور عدالت سے بنظر استحقاق جو شوہرون کو
حاصل ہوتا ہے بادی النظر مین تاکید
کے ساتھ عورتین اُن کے سپرد کرا دی
جاتی ہین - اور جو عورتین تکلیف دہی
شوہر خود مثل زدوکوب بلا وجہ ظاہر
کرتی ہین اُنکا انتظام باخذ مچلکہ و ضمانت
وغیرہ کرا دیا جاتا ہے - اور بعض عورتین اس
انتظام پر بھی روادار اپنے شوہر کیساتھ
جانے کی نہین ہوتین - اور جو عدالت
سے تنبیہ ہوتی ہے تو آمادہ نفس کشی ہوتی
ہین - اس مین جو غور کیا جاتا ہے تو بعض
عورات تو واقعی بدوضعی خود سے مرتکب
ایسے امور کی ہوتی ہین اور بعض کی
نسبت شوہرون کی جانب سے بیجا زیادتیان
مرعی پائی جاتی ہین - جیسا کہ موضع باری
پرگنہ جہیڑہ مین ایک عورت اپنے
شوہر ساکن علاقہ غیر کے ہان سے بسبیل
رخصت اپنے والدین کے ہان آگئی
جب شوہر اُس کا بُلانے آیا تو جانے
سے انکار کیا - حسب استغاثہ نامبردہ
مسماۃ پر تاکید کی گئی تو وہ عین دروازہ
عدالت پر پہنچتے ہی آمادہ اس بات پر ہوگئی
کہ مسلمان سپاہیون کے گھڑونکا پانی
پی لیوے یا آنکہ خودکشی کی مرتکب ہو -
چونکہ یہ معاملہ مذہب
اہل ہنود کا ہے -

पर उनकी अरज़ियां नली जाया करें इस बारे में हुक्म मुनासिब सादर फ़रमाया जावे जिसपर जवाब में मारफ़त अपील नाज़िमजी को लिखा गया कि बाद हसूल डिगरी रुपया वसूल होने लगे तो फिर हैसयत अफ़लास उनकी बदल जाती है मिस्ल आम मुस्तग़ीसों के इसको भी कागज़ इस्टाम्प पर अराय ज़ पेश करना चाहिये और सरदारान अपील को यह भी लिख दिया गया कि जुमले महकमात मातहत को इत्तलाद दें –

१	२
नम्बरशुमार	तारीख़ मंज़ूरी
५०	२२ जून सन १८९३ ई

३
खुलासा

क़ायदा बाबत इजराय मुक़द्दमात दख़ल ज़ौजियत

४
मज़मून

मुक़द्दमात तनाज़ा बाहमी ज़न व शौहर अक़वाम हनूद में मारफ़त रज़ीडन्सी रियासत टोंक से अलावे रियासत हाय कोटा और बूंदी यहां से भी तरीक़ा कार्रवाई का बिदीं सराहत दरयाफ़्त किया गया था कि अकसर औरात ब्याहता अपने शौहरों के साथ जाने पर रज़ामन्द नहीं होती हैं बलकि मुनहरफ़ होती हैं और शौहर उनके

پر انکی عرضیاں نہ لی جایا کریں اسبارہ مین حکم مناسب صادر فرمایا جاوے - جس پر جواب مین معرفت اپیل ناظمجی کو لکھا گیا کہ بعد حصول ڈگری روپیہ وصول ہونے لگے تو پھر حیثیت افلاس اسکی بدل جاتی ہے مثل عام مستغیثون کے اسکو بھی کاغذ اسٹامپ پر عرائض پیش کرنا چاہئے - اور سرداران اپیل کو یہ بھی لکھدیا گیا کہ جملہ حکمات ماتحت کو اطلاع دیدین -

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۵۰	۲۲ - جون سنہ ۱۸۹۳ء

۳
خلاصہ

قاعدہ بابت اجراء مقدمات دخل زوجیت -

۴
مضمون

مقدمات تنازع باہمی زن وشوہر اقوام ہنود بین معرفت رزیڈنسی ریاست ٹونک سے علاوہ ریاستہاے کوٹہ اور بوندی یہان سے بھی طریقہ کارروائی کا بدین صراحت دریافت کیا گیا تھا کہ اکثر عورات بیاہتا اپنے شوہرون کے ساتھ جانے پر رضامند نہیں ہوتی ہین بلکہ منحرف ہوتی ہین - اور شوہران انکے

(۵۰) ५०

जब मुफ़लिस को बज़रये डिगरी कुछ रुपया
वसूल हो जाय तो उसकी हालत अफ़लास बद
ल जाती है मिस्ल आम मुस्तग़ीसों के उसको
भी इस्टाम पर अरायज़ वग़ैरः पेश करना चाहिये

४

मज़मून

नाज़िम जी दौसा ने बज़रये कैफ़ियत २८ मई
सन १८९३ ई० के इसतस्वाब किया था कि
अकसर अरायज़ सादा मुद्दैयान मुफ़लिस
की तरफ़ से पेश होती हैं अगरचि मुफ़लि
सी की बिनाय पर उसके दावे पेश होने की
वजह में वह अरायज़ ली जाती हैं और क़री
ब २ कुल जगह यह ही तरीक़ा है मगर ऐसी
हालत में कि उनको डिगरी मिल चुकी और
कुछ रुपया भी वक़्तं फ़वक़्तं वसूल होता है
यह तरीक़ा दुरुस्त नहीं मालूम होता कि अ
रसा ग़ैर महदूद तक उनकी अरायज़ मुफ़लि
साना समाअत हुवा करें क़ितानज़र इसके मु
फ़लिस की हालत तीन महीने के अन्दर ब
दल जाती है और जैसा कि क़ानून और रिवा
ज है कि बाद इस मियाद के मुफ़लिसी क़ा
यम रह सके तो ऐसी हालत में कोई वजह
नहीं है कि ख़्वाह मख़्वाह मुफ़लिसी में नालि
श होने की वजह से ताबेबाक़ी डिगरी बाव
ज़ूदे कि रुपया दरमियान में वसूल होता र
हा हो सादा अरायज़ ली जाया करें और
मिसल दीगर मुस्तग़ीसों के ~) के काग़ज़

(۷۷)

جب مفلس کو بذریعۂ ڈگری کچھ روپیہ
وصول ہو جائے تو اُسکی حالت افلاس
بدل جاتی ہے مثل عام مستغیثوں کے اُسکو
بھی اسٹام پر عرائض وغیرہ پیش کرنا چاہئے

۴

مضمون

ناظم جی دوسہ نے بذریعۂ کیفیت ۲۸ مئی
۱۸۹۳ء کے استصواب کیا تھا کہ
اکثر عرائض سادہ مدعیان مفلس کی
طرف سے پیش ہوتی ہیں اگرچہ مفلسی
کی بنا پر اُسکے دعوے پیش ہونیکی
وجہ میں وہ عرائض لیجاتی ہیں اور
قریب قریب کل جگہ یہی طریقہ ہے مگر
ایسی حالت میں کہ اُنکو ڈگری مل چکی اور
کچھ روپیہ بھی وقتاً فوقتاً وصول ہوتا
یہ طریقہ درست نہیں معلوم ہوتا کہ
عرصہ غیر محدود تک اُنکی عرائض مفلسانہ
سماعت ہوا کریں۔ قطع نظر اس کے
مفلس کی حالت تین مہینے کے اندر
بدل جاتی ہے اور جیسا کہ قانون اور رواج
ہے کہ بعد اس میعاد کے مفلسی قائم رہ
سکے تو ایسی حالت میں کوئی وجہ
نہیں ہے کہ خواہ مخواہ مفلسی میں نالش
ہونے کی وجہ سے تابیباقی ڈگری باوجودیکہ
روپیہ درمیان میں وصول ہوتا رہا ہو
سادہ عرائض لی جایا کریں۔ اور
مثل دیگر مستغیثوں کے ۲ کے کاغذ

वह मनदिरवकोठपात किजो सरकारी हों उनकीकीमत का तखमीनाहोकर ज़र रसूमलिपाजावे –

४

मज़मून

मुसम्मीयान सुन्दरदास व कलयानदास सुवामयों ने दावा हक्कीयत एक मन्दर ठाकुर जीश्री सीता रामजी का मये अराज़ी भोग पैदावार ११५) सालाना की निसबत मूलचन्द बिरहमन के निज़ामत हिनडोनमें दायर किया और बमूजिब पैदावार ज़मीन के सहचन्द हासिल के २१) का कागज़ दाखिल किया मुद्दायलह ने मारफ़त सरदारान अपील यह इसतसवाब किया कि मन्दर और चाहात का तखमीना होकर फ़ीस ली जावेगी या सिर्फ़ ज़मीन की पैदावार पर ही इक्तफ़ा किया जावेगा –

चुनांचि जवाब में सरदारान अपील को लिखा गया कि मन्दर व कोठयात अगर सरकारी नहीं हैं तो बेशक बमूजिब ज़ाबतः के उनकी कीमत का तखमीना होकर ज़र रसूम हस्ब ज़ाबतः लिया जावेगा –

१	२
नम्बरशुमार	तारीखमंज़ूरी
४९	१७ जून सन १८९३

३

खुलासा

۴۸ وہ مندر و کوٹھیات کہ جو سرکاری ہوں
۴۹ اُن کی قیمت کا تخمینہ ہو کر زر رسوم
لیا جاوے

۴

مضمون

مسمیان سندر داس و کلیان داس
شوامیون نے دعوی حقیت ایک مندر
ٹھاکر جی سری سیتا رام جی کا معہ اراضی بھوگ
پیداوار مالیت ۱۱۵ سالانہ کی نسبت
مولچند برہمن کے نظامت ہنڈون
مین دائر کیا اور بموجب پیداوار زمین
کے سہ چند حاصل کے ۲۱ کا کاغذ
داخل کیا - مدعا علیہ نے معرفت
سردار ان اپیل یہ استصواب کیا کہ
مندر اور چاہات کا تخمینہ ہو کر
فیس لی جاویگی یا صرف زمین کی پیداوار
پر ہی اکتفا کیا جاویگا -
چنانچہ جواب مین سرداران اپیل کو
لکھا گیا کہ مندر و کوٹھیات اگر
سرکاری نہیں ہین تو بیشک بموجب ضابطہ کے
انکی قیمت کا تخمینہ ہو کر زر رسوم حسب
ضابطہ لیا جاویگا -

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۴۹	۱۷ - جون ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

मुनसफ़ी की अदालत दीवानी से तरमीम हुई है
चुनांचि अब यह मुराफ़ा यहां हुवा है -
चूंकि हिदायत मजरये में ऐसी सराहत नहीं है
कि नफ़्स मुआमले के सिवा अगर दीगर
उमूर मुतअल्लिक़ मुक़द्दमे की बाबत इख़्ति
लाफ़ तजवीज़ मुनसफ़ी और अदालत दीवा
नी में हुवा करे तो वह तजवीज़ तरमीम ही ख़्या
ल की जावेगी या कि इत्तफ़ाक समझा जायगा
इसकी सराहत होनी चाहिये -
चुनांचि जवाब में लिखा गया कि मुनसफ़ी
और अदालत की तजवीज़ में किसी किस्म का
इख़्तलाफ़ हो मुराफ़ा उसका महक्मे अपील
ही में होगा क्योंकि हिदायत मजरया में जब
ऐसी सराहत नहीं है कि अगर फ़लां सूरत से
इत्तफ़ाक या इख़्तलाफ़ होगा तो महकमे आ
लिया या अपील में मुराफ़ा होगा - बल्कि मंशाए हि
दायत का सिर्फ़ इतना ही है कि बसूरत इत्त
फ़ाक राय मुनसफ़ी व अदालत का मुराफ़ा
महकमे आलिया में होगा फिर अब जिस कि
स्म का इख़्तलाफ़ मुनसफ़ी और अदालत
की तजावीज़ में होगा मुराफ़ा इसका अपी
ल ही में होना चाहिये -

१ नम्बर शुमार	२ तारीख़ मंजूरी
४८	१७ जून सन १८९३

३ ख़ुलासा

منصفی کی عدالت دیوانی سے ترمیم ہوئی
ہے چنانچہ اب یہ مرافعہ بیان ہوا ہے
چونکہ ہدایت مجریہ مین ایسی صراحت نہین ہے
کہ نفس معاملہ کے سوا اگر دیگر
امور متعلق مقدمہ کی بابت اختلاف
تجویز منصفی اور عدالت دیوانی
مین ہوا کرے تو وہ تجویز ترمیم ہی خیال
کی جاوے گی یا کہ اتفاق سمجھا جاوے گا
اسکی صراحت ہونی چاہیئے -
چنانچہ جواب مین لکھا گیا کہ منصفی
اور عدالت کی تجویز مین کسی قسم کا
اختلاف ہو مرافعہ اس کا محکمہ اپیل
ہی مین ہو گا کیونکہ ہدایت مجریہ مین جب
ایسی صراحت نہین ہے کہ فلان صورت سے
اتفاق یا اختلاف ہو گا تو محکمہ عالیہ
یا اپیل مین مرافعہ ہو گا - بلکہ منشاء ہدایت
کا صرف اتنا ہی ہے کہ بصورت اتفاق
رائے منصفی و عدالت مرافعہ محکمہ
عالیہ مین ہو گا - پھر اب جس قسم
کا اختلاف منصفی اور عدالت
کی تجاویز مین ہو گا مرافعہ اسکا اپیل
ہی مین ہونا چاہیئے -

۲ تاریخ منظوری	۱ نمبر شمار
۱۷ جون سنہ ۱۸۹۳ء	۴۸

۳ خلاصہ

۴۷ (۵۷)

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۴۷	۱۷- جون ۱۸۹۳ء

۳
خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری ۲۱۶ مجریہ ۱۶- ستمبر ۱۸۹۰ء بابت مرافعہ جات منصفی متفقہ مختاران عدالت دیوانی-

۴
مضمون

بمقدمہ رام پرتاب دھابھائی مدعا علیہ اپیلانٹ - گھاسی رام مالی مدعی رسپانڈنٹ مرافعہ بنا راضی تجویز مختاران عدالت دیوانی بدعوی ۵۸۹ بموجب گواہی گواہان - سرداران اپیل نے بذریعہ کیفیت ۴- جون ۱۸۹۳ء یہ استصواب کیا تھا کہ مرافعہ اپیلانٹ کے دیکھنے سے ظاہر ہوا کہ محکمہ منصفی اور عدالت دیوانی سے بالاتفاق دعوی مدعی ڈگری کیا گیا - لیکن بابت وصول حاصل رہن نامہ کے تجویز منصفی اور عدالت دیوانی مین اختلاف رہا - اپیلانٹ نے اس خیال سے کہ نفس معاملہ مین اتفاق رہا کیہ مرافعہ محکمہ عالیہ مین پیش کیا کہ وہان سے واپس دیا گیا - اور وجہ واپسی کی یہی پائی جاتی ہے کہ تجویز

१ नम्बरशुमार	२ तारीख मंजूरी
४७	१७ जून सन १८९३

३
खुलासा

ज़मीमे हिदायत नम्बरी २१६ मजरया १६ सितम्बर सन १८९० ई० बाबत मुराफ़ेजात मुनसफ़ी मुत्तफ़िके मुख़्तारान अदालत दीवानी

४
मज़मून

बमुकद्दमे रामपरताब धाबाई मुद्दा अलेह अपीलान्ट घासीराम माली मुद्दई रसपाडन्ट मुराफ़ा बनाराज़ी तजवीज़ मुख़्तारान अदालत दीवानी व दावी ५८९॥) बमूजिब गवाही गवाहान - सरदारान अपील ने बज़रये केफ़ियत ४ जून सन १८९३ ई० यह इसतसवाब किया था कि मुराफ़ा अपीलान्ट के देखने से ज़ाहर हुवा कि महकमे मुनसफ़ी और अदालत दीवानी से बिल इत्तफ़ाक दावा मुद्दई डिगरी किया गया लेकिन बाबत वसूल हासिल रहिननामा के तजवीज़ मुनसफ़ी और अदालत दीवानी में इख़्तलाफ़ रहा - अपीलान्ट ने इस ख़याल से कि नफ़स मुआमले में इत्तफ़ाक रहा यह मुराफ़ा महकमे आलिया में पेश किया वहां से वापिस दिया गया - और वजह वापसी की यही पाई जाती है कि तजवीज़

वमुक़द्दमे वहिड़ो सिंह जागीरदार बड़पाल मु
द्दाअलेह अपीलान्ट - फ़तह सिंह मुद्दई रसा
इन्ट दावा इजराय डिगरी दख़ल आबी शशमा
ही जागीर (६१२) बर हस्ब गुज़रने अरज़ी मु
ख़्तार अपीलान्ट महकमे अपील से हाल दर
याफ़्त किया गया तो जवाब में बज़रये कैफ़ि
यत ४ जून सन १९०३ ई. लिखा आया कि
यह मुक़द्दमः बसीग़े इजरा निज़ामत में दा
यर है - नाज़िम जी ने मुताबिक़ तजवीज़
अख़ीर बज़ब्ती पैदावार रुपया वसूल कराए
ये जाने का हुक्म सादिर किया है उसका मु
राफ़ा जानिब मदयून से यहां पेश हुवा म
गर मिस्ल अब तक निज़ामत से नहीं आई
मदयून ने मुराफ़ा हो जाने की वजह में अरज़ी
व दरख़्वास्त इल्तवाय इजरा पेश की मगर
बवजह न आने मिस्ल के उस पर यह हुक्म
लिखा गया कि बग़ैर देखने मिसिल के दर
ख़्वास्त पर कोई हुक्म नहीं हो सक्ता -
इस पर सरदारान अपील को जवाब में लि
खा गया कि दर सूरते कि मुराफ़ा महकमे अ
पील में हो गया है तो कारवाई इजरा मु
लतवी रखने के लिये लिख देना चाहिये
कि क़ायदे के मुवाफ़िक़ महकमे बालादस्त
में मुराफ़ा हो जाने पर मातहत में इजरा मु
क़द्दमे का नहीं हो सक्ता है -

بمقدمہ بہیدو سنگہ جاگیردار بڑپال
مدعا علیہ اپیلانٹ - فتح سنگہ مدعی رسپانڈنٹ
دعوی اجرا ڈگری دخل آبی ششماہہ
جاگیر ساعت (۶۱۲) بر حسب گزرنے عرضی
مختار اپیلانٹ محکمہ اپیل سے حال
دریافت کیا گیا تو جواب مین بذریعہ کیفیت
۴ جون ۱۹۰۳ء لکھا آیا کہ یہ مقدمہ
بصیغہ اجرا نظامت مین
دائر ہی - ناظم جی نے مطابق تجویز
اخیر بضبطی پیداوار روپیہ وصول کرائے
جانے کا حکم صادر کیا ہی اُس کا
مرافعہ جانب مدیون سے یہان پیش ہوا
مگر مثل اب تک نظامت سے نہین آئی
مدیون نے مرافعہ ہو جانیکی وجہ مین عرضی
بدرخواست التوائے اجرا پیش کی مگر
بوجہ نہ آنے مثل کے اُس پر یہ حکم
لکھا گیا کہ بغیر دیکھنے مثل کے
درخواست پر کوئی حکم نہین ہو سکتا -
اس پر سرداران اپیل کو جواب مین
لکھا گیا کہ درصورتیکہ مرافعہ محکمہ
اپیل مین ہو گیا ہی تو کارروائی اجرا
ملتوی رکھنے کے لئے لکھ دینا چاہئے
کہ قاعدہ کے موافق محکمہ بالادست
مین مرافعہ ہو جانے پر ماتحت مین اجرا
مقدمہ کا نہین ہو سکتا ہی -

के लिये भेजे गये

तो जवाब में डाकट वहां का मवर्रिखे ६ जून सन १८९३ ई० बहवाले तहरीर साहब रजिस्ट्रार अदालत खफ़ीफ़ा कलकत्ता मये ज़र फ़ीस इस मज़मून से मौसूल हुवा कि कमीशन ब मूजिब क़ायदे के तख़्ते पर चस्पां करा दिया गया लेकिन कोई शख़्स उसकी तामील के लिये दरख़्वास्त करने हाज़िर नहीं हुवा आयन्दा ऐसे कमीशनों के भेजने के वक़्त फ़रीक़ैन मुतअल्लिक़ को हिदायत कर देनी चाहिये कि वह बज़रये वकील या मुख़्तार के गवाहों की हाज़री का मुनासिब बन्दोबस्त करा दिया करें

लिहाज़ा बन्द सवाल और ज़र कमीशन मुनसफ़ी में वापिस भेजकर लिखा गया कि इसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करते रहो और महकमे अपील और अदालत दीवानी को भी लिखा जावे कि आयन्दा इस मुवाफ़िक़ कार्रवाई करते रहो

१ नम्बर शुमार	२ तारीख मंजूरी
४६	१२ जून सन १८९३ ई०

३

खुलासा

महकमे बालादस्त में मुराफ़ा होजाने पर मातहत में इजराय मुक़द्दमें का नहीं होसक्ता

४

मज़मून

کے لئے بھیجے گئے ۔

تو جواب میں ڈاکٹ وہاں کا مورخہ ۶ جون سنہ ۱۸۹۳ع بحوالہ تحریر صاحب رجسٹرار عدالت خفیفہ کلکتہ مع زر فیس اس مضمون سے موصول ہوا کہ کمیشن بموجب قاعدہ کے تختہ پر چسپان کرا دیا گیا لیکن کوئی شخص اسکی تعمیل کے لئے درخواست کرنے حاضر نہیں ہوا آیندہ ایسے کمیشنوں کے بھیجنے کیوقت فریقین متعلقہ کو ہدایت کر دینی چاہیئے کہ وہ بذریعہ وکیل یا مختار کے گواہوں کی حاضری کا مناسب بندوبست کرا دیا کریں ۔

لہذا بند سوال اور زر کمیشن منصفی میں واپس بھیجکر لکھا گیا کہ اس کے موافق کارروائی کرتے رہو اور محکمۂ اپیل اور عدالت دیوانی کو بھی لکھا جاوے کہ آیندہ اس موافق کارروائی کرتے رہو ۔

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۴۶	۱۲ جون سنہ ۱۸۹۳ع

۳

خلاصہ

محکمۂ بالادست میں مرافعہ ہو جانے پر ماتحت میں اجراء مقدمہ کا نہیں ہو سکتا

۴

مضمون

लिहाज़ा अपील को लिखा गया कि एक साल के लिये यही क़ायदा बदस्तूर जारी रक्खें और गीराई को इत्तलात हिरीरी हो कर लिखा गया कि बाद एक साल के नतीजे से इत्तला दें -

१	२
नम्बर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
४५	१० जून सन १८९३

३

ख़ुलासा

जब बन्द सवाल मय फ़ीस वास्ते क़लमबन्दी शहादत किसी गवाह के बज़रिये रज़ीडन्टी इलाके ग़ैर में भेजे जावें तो फ़रीक़ैन को हिदायत कर दी जाय कि वह बज़रिये वकील या मुख़्तार के हाज़िरी गवाहों का मुनासब बन्दोबस्त कर दिया करें -

४

मज़मून

बमुक़द्दमे सुजानमल सरावगी मुद्दई इबारउल्ला जुलाहा मुद्दायलेह दावी २८८ मुनसिफ़ी ने बंद सवालात मीरू जुलाहा गवाह मुद्दई मुक़ीम कलकत्ता के नाम के मय ज़र फ़ीस महकमे आलिया में भेज कर दरख़्वास्त की कि मारफ़त अदालत कलकत्ता बाद ख़ानेपुरी बन्द सवालात वापसी भिजवाये जावें महकमे आलिया से बन्द सवालात और ज़र फ़ीस महकमे रज़ीडन्सी शरक़ी में तामील

لہذا اپیل کو لکھا گیا کہ ایک سال کے لیے یہی قاعدہ بدستور جاری رکھیں اور گیرائی کو اطلاع تحریری ہو کر لکھا گیا کہ بعد ایک سال کے نتیجہ سے اطلاع دیں۔

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۴۵	۱۰ جون ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

جب بند سوال معہ فیس واسطے قلمبندی شہادت کسی گواہ کے بذریعۂ رزیڈنٹی علاقہ غیر میں بھیجے جاویں تو فریقین کو ہدایت کر دی جاوے کہ وہ بذریعۂ وکیل یا مختار کے حاضری گواہوں کا مناسب بندوبست کر دیا کریں۔

۴

مضمون

بمقدمہ سجان مل سراوگی مدعی عباد اللہ جولاہہ مدعا علیہ دعوے ۲۸۸ مالوجہ منصفی نے بند سوالات میرو جولاہہ گواہ مدعی مقیم کلکتہ کے نام کے معہ زر فیس محکمۂ عالیہ میں بھیجکر درخواست کی کہ معرفت عدالت کلکتہ بعد خانہ پری بند سوالات واپسی بھجوائے جاویں محکمۂ عالیہ سے بند سوالات و زر فیس محکمۂ رزیڈنسی شرقی میں تعمیل

इसकी दी जाकर लिखा गया कि बाद एक साल के नतीजे से इत्तला दें-

चुनांचि बाद खतम साल जनरल सपुरन्टेन्डेन्ट गिराई ने बज़रये कैफ़ियत ३० मई सन १८९३ ई० लिखा गया कि सज़ाय मुजव्विज़ा ने बदमाशों पर अपना ऐसा बखूबी असर पैदा किया कि जिस्से ग़ैर हाज़री साल बसाल कम होती रहे - और जो बदमाश ग़ैर हाज़िर हो गये थे वह भी हाज़िर आये सन १८९० ई० में (२२९) नफ़र इलाके से ग़ैर हाज़िर हुवे थे सन १८९१ ई० में (१४९) और सन १८९२ ई० में (५७) ग़ैर हाज़िर हुवे और अब के दौरे शेखावाटी व तोरावाटी में उन मीने हाय मांवडा वग़ैरः इलाके तोरावाटी और फल्लंगी वग़ैरः इलाके शेखावाटी में से जो नामी बदमाश थे (१०३) कि स हलके तोरावाटी के और (९९) नफ़र इलाके शेखावाटी के हाज़िर आये - ग़रज़े कि इस तजवीज़ कैद एक साला से उमदा नतीजा बरआमद हुवा कि ग़ैर हाज़िर होना इन लोगों का कम होगया और जो ग़ैर हाज़िर थे और उम्मेद जिनकी हाज़िरी की न थी वह हाज़िर होगये और वारदात हाय इलाके ग़ैर का इन्सदाद होगया अगर इस ही तरह सिलसिला सज़ा का जारी रहेगा तो कवी उम्मेद है कि और भी ज़ियादा उमदा नतीजा इन्तज़ाम में पैदा होगा -

اسکی دی جاکر لکھا گیا کہ بعد ایکسال کے نتیجہ سے اطلاع دین-

چنانچہ بعد ختم سال جنرل سپرنٹنڈنٹ گیرائی نے بذریعہ کیفیت ۳۰ مئی ۱۸۹۳ء لکھا کہ سزائے مجوزہ نے بدمعاشون پر اپنا ایسا بخوبی اثر پیدا کیا- کہ جس سے غیر حاضری سال بسال کم ہوتی رہی ہے - اور جو بدمعاش غیر حاضر ہوگئے تھے وہ بھی حاضر آئے ۱۸۹۰ء مین (۲۲۹) نفر علاقہ سے غیر حاضر ہوگئے تھے ۱۸۹۱ء مین (۱۴۹) اور ۱۸۹۲ء عیسوی مین (۵۷) غیر حاضر ہوئے اور اب کی دورہ شیخاوائی و توراوائی مین اُن مینہا سے ماونڈہ وغیرہ علاقہ توراوائی اور پھلنگی وغیرہ علاقہ شیخاوائی مین سے جو نامی بدمعاش تھے (۱۰۳) کس حلقہ توراوائی کے اور (۹۹) نفر علاقہ شیخاوائی کے حاضر آئے - غرضکہ اس تجویز قید یکسالہ سے عمدہ نتیجہ برآمد ہوا کہ غیر حاضر ہونا ان لوگون کا کم ہوگیا اور جو غیر حاضر تھے اور امید جن کی حاضری کی نہ تھی وہ حاضر ہوگئے اور وارداتہائے علاقہ غیر کا انسداد ہوگیا - اگر اس ہی طرح سلسلہ سزا کا جاری رہیگا تو قوی امید ہے کہ اور بھی زیادہ عمدہ نتیجہ انتظام مین پیدا ہوگا-

एकबरस के वास्ते इज़ाज़त दी जाकर तामील के लिये मातहत को लिखा गया बाद एक साल के इस का नतीजा देखा जावे कि गुज़िश्ता तीन सालों से इसका क्या नतीजा बरआमद हुवा

चुनान्चि बाद खतम साल गिराई से हाल नतीजे का दरयाफ़्त किया गया तो बवसूल जवाब व नकशेजात सामयान मुतअल्लिके यह अमर दरयाफ़्त हुवा कि अकसर आसामियों की निसबत तो कोई इत्तला तजवीज़ सज़ा की निज़ामतों से गिराई में नहीं आई और जिनकी सजा का हाल गीराई को मालूम हुवा उनकी निसबत सजा कम हुई

इस पर महकमे अपील से अदम निगरानी और कम दिये जाने सज़ाओं का हाल दरयाफ़्त किया तो बाद दरयाफ़्त अज़ नाज़मान सरदारान अपील ने लिखा कि मंशाय हिदायत की समझने में नाज़मों को धोका रहा किसलिये कि हुक्म ९ मई सन १८८८ ई० में लफ़्ज़ (तक) दर्ज है जिस्से ख्याल पैदा होता है कि एक साल की सजा इन्तहाई है चूंकि हुक्म ९ मई सन १८८८ इसवी की पूरी तामील नहीं हुई थी और इस ही वजह से नतीजा भी कारवाई का दरयाफ़्त नहीं हो सका था लिहाज़ा तारीख २३ जून सन १८९१ ई० इजाज़त एक साल के वास्ते इस सराहत से दी गई कि तामियाद एक साल बजुर्म गैरहाज़री निसबत मीनों के नाज़िम केद एक साल की तजवीज़ करते रहें और इत्तला गिराई को देते रहें और गिराई को भी इत्तला

ایک برس کے واسطے اجازت دیکر تعمیل کیلئے ماتحت کو لکھا گیا۔ بعد ایک سال کے اسکا نتیجہ دیکھا جاوے کہ گزشتہ تین سالوں سے اسکا کیا نتیجہ برآمد ہوا۔

چنانچہ بعد ختم سال گیرائی سے حال نتیجہ کا دریافت کیا گیا تو بوصول جواب و نقشہ اسامیان متعلقہ یہ امر دریافت ہوا کہ اکثر اسامیوں کی نسبت تو کوئی اطلاع تجویز سزا کی نظامتوں سے گیرائی میں نہیں آئی۔ اور جنکی سزا کا حال گیرائی کو معلوم ہوا انکی نسبت سزا کم ہوئی۔

اس پر محکمہ اپیل سے عدم نگرانی اور کم دئے جانے سزاؤں کا حال دریافت کیا گیا تو بعد دریافت از ناظمان سرداران اپیل نے لکھا کہ منشائے ہدایت کے سمجھنے میں ناظموں کو دھوکہ رہا کس لئے کہ حکم ۹ مئی ۱۸۸۸ء میں لفظ (تک) درج ہے جس سے خیال پیدا ہوتا ہے کہ ایک سال کی سزا انتہائی ہے۔

چونکہ حکم ۹ مئی ۱۸۸۸ء کی پوری تعمیل نہیں ہوئی تھی اور اس ہی وجہ سے نتیجہ بھی کارروائی کا دریافت نہیں ہو سکتا تھا لہذا بتاریخ ۲۳ جون ۱۸۹۱ء اجازت ایکسال کیواسطے اس صراحت سے دی گئی کہ تا میعاد یکسال بجرم غیر حاضری نسبت مینوں کے ناظم قید ایکسال کی تجویز کرتے رہیں۔ اور اطلاع گیرائی کو دیتے رہیں۔ اور گیرائی کو بھی اطلاع

اور سرٹیفکٹ وراثت ہر دو قسم کے
مقدمات کو داخل دفتر کرکے مدعیان
کو بموجب ہدایت مجریہ اپنی چارہ جوئی کی
ہدایت کردو اور یہ بھی اُن کو ہدایت
کردو کہ معرفت اپنے افسر کے صیغہ
کلکٹری میں کارروائی کریں۔

۴۳

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۴۴	۶- جون ۱۸۹۳ع

۴۴

۳

خلاصہ

ضمیمۂ ہدایت نمبری (۵۱) مجریہ ۹- مئی ۱۸۸۸ع دربارۂ غیر حاضری مینگان ماونڈہ اور کم ہونے تجویز نسبت غیر حاضران

۴

مضمون

گیرائی سے غیر حاضری مینگان ماونڈہ اور کم تجویز ہونے سزا نسبت مینگان غیر حاضر کی شکایت بذریعۂ کیفیت ۱۴- مارچ ۱۸۸۸ع محکمۂ عالیہ میں لکھی آئی تھی اور درخواست انتظام کی کیگئی تھی۔

محکمۂ عالیہ صیغۂ علاقہ غیر سے بعد طلب رائے ۹- مئی ۱۸۸۸ع کو جواب میں لکھا گیا تھا کہ جرم غیر حاضری کی سزا چھ ماہ تک کی ہے۔ اب حسب درخواست گیرائی سزا قید ایک سال تک کے لیے

औरसरटीफ़िकट विरासत हरदो क़िस्मके
मुक़दमात को दाख़िलदफ़्तर करके मुद्दईयान
को बमूजिब हिदायत मजरया अपनी चारेजोई
की हिदायत करदो और यह भी उनको हिदाय
त करदो कि मारफ़त अपने अफ़सर के सीग़े
कलक्टरी में कार्रवाई करें

४३

१ नम्बरशुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
४४	६ जून सन १८९३ ई०

४४

३

ख़ुलासा

ज़मीमे हिदायत नम्बरी (५१) मजरया ९ मई सन १८८८ दरबारे ग़ैर हाज़िरी मीनगान मावडः और कम होने तजवीज़ निसबत ग़ैरहाज़िरान

४

मज़मून

गीराई से ग़ैर हाज़िरी मीनगान मावडः और कम तजवीज़ होने सज़ा निसबत मीनगान ग़ैरहाज़िर के शिकायत बज़रिये कैफ़ियत १४ मार्च सन १८८८ ई० महकमे आलिये में लिखी आई थी और दरख़्वास्त इन्तज़ाम की कीगई थी -

महकमे आलिया सीग़े इलाके ग़ैर से बाद तलबराय ९ मई सन १८८८ ई० को जवाब में लिखागया था कि जुर्म ग़ैर हाज़िरी की सज़ा छःमाह तक की है अब हस्ब दरख़्वास्त गीराई सज़ा क़ैद एक साल तक के लिये

نالشات تبنیت وسارٹیفکٹ خواص
چیلون کے -

۴

مضمون

۱۲- مارچ ۱۸۹۳ء کو بعد معلوم
بندگان عالی سری جی دام اقبالہم بابت
نالشات تبنیت خواص چیلگان یہ
ہدایت جاری ہوئی تھی کہ چیلہ خواصوں کی
گودنشینی کے مقدمات عدالت میں نہ
سماعت کئے جایا کریں ان لوگوں کو واجب ہے
کہ اپنے بیڑہ کے افسر کی معرفت سیغہ
کلکٹری میں درخواست پیش کیا کریں -
چنانچہ اس ہدایت کے جاری ہونے پر مختاران
عدالت دیوانی نے تین مقدمات کے عنوان
درج کرکے استصواب کیا کہ یہ تینوں مقدمے
حسب ہدایت صدر داخل دفتر
کئے جاویں گے یا اس خیال سے کہ یہ مقدمہ
مرجوعہ قبل از اصدار ہدایت کے ہیں -
تحقیقات کر کے تجویز کی جاوے - اس
بارہ میں جیسا لکھا آوے تعمیل کیجاوے -
اور یہ بھی ظاہر ہے کہ اس ہدایت میں بحث
انتفاع گود اور تبنیت کی کی گئی ہے -
بابت سرٹیفکٹ وراثت کے نہیں ہوئی -
اور بذریعہ سرٹیفکٹ وراثت کے
اسامی پر قابض ہو جاتا ہے سو یہ بھی شامل
اسی کے سمجھی جاویگی یا علیحدہ -
جس پر جواب میں یہ لکھا گیا کہ تبنیت

नालिशात तिबनियत व सारटी फ़िकट ख़वा
स चेलों के -

४

मज़मून

१२ मारच सन १८९३ ई० को बाद मालूम बन्द
गान आली श्री जी दाम इक़बाल हुम बाब
त नालशात तिबनियत ख़वास चेलगान यह
हिदायत जारी हुई थी कि चेले ख़वासों की
गोदनशीनी के मुक़द्दमात अदालत में न समा
अत किये जाया करें इन लोगों को वाजिब है
कि अपने बेड़े के अफ़सर की मारफ़त सीगे
कलकरी में दरख़ास्त पेश किया करें -
चुनांचि इस हिदायत के जारी होने पर मुख़्तारान
अदालत दीवानी ने मुक़द्दमात के उनवान दर्ज
करके यह इस्तस्वाब किया कि यह तीनों मुक़द्द
मे हस्ब हिदायत मसदूरा दाख़िल दफ़्तर कि
ये जावेंगे या इस ख़्याल से कि यह मुक़द्दमा
मरजूआ क़बल अज़ इसदार हिदायत के हैं
तहक़ीक़ात करके तजवीज़ की जावे - इस बा
रे में जैसा लिखा आवे तामील की जावे -
और यह भी ज़ाहर है कि इस हिदायत में बहिस
इन्तफ़ाय गोद और तिबनियत की की गई है
बाबत सरटी फ़िकट विरासत के नहीं हुई -
और बज़रये सरटी फ़िकट विरासत के आसा
मी पर क़ाबिज़ हो जाता है सो यह भी शामिल
उसी के समझी जावेगी या अलहिदा -
जिस पर जवाब में यह लिखा गया कि तिबनियत

कि जो हुक्काम ने नतीजा बरआमद करके मुक़दमे
को क़ाबिल इख़राज क़रार दिया था
लिहाज़ा हुक्काम मातहत को फिर तवज्जुह दि
लाई जाती है कि ऐसे मुक़दमात में बख़ूबी
ग़ौर किया करें और कोई दक़ीक़ा तनक़ीह
और तहक़ीक़ का बाक़ी न रहा करे और
ऐसे मुक़दमात की इब्तदा थानों में फ़र्ज़ी
तौर पर मुरत्तिब हुवा करती है यानी जो
वारदातें कुवें से लाश बरआमद होने की
होती हैं वह अमूमन या तो बीमारी मिरगी
या दीवानगी या पैर फिसल कर गिर जा
ना क़रार दी जाती है और उस ही के बमू
जिब रायें क़ायम होजाती हैं यह ख़्याल
नहीं किया जाता कि बीमारी मिरगी या
दीवानगी वग़ैरः इस बात के वास्ते सबूत भी
मौजूद है या नहीं और ऐसी मुश्तबह हाल
त में भी लाशों का मुआयना डाक्टरी नहीं
कराया जाता है अपील और गिराई को
लिखा गया कि हुक्काम मातहत को भी इ
सकी तामील के वास्ते मुत्तला करदें

१	२
नम्बर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
४३	३० मई सन १८९३ ई०

३

खुलासा

ज़मीमे हिदायत नम्बरी (२२) मजरया १६ मा
र्च सन १८९३ ई० मुख़ालफ़त दरबाब समाअत

کہ جو حکام نے نتیجہ برآمد کرکے مقدمہ
کو قابل اخراج قرار دیا تھا۔
لہذا حکام ماتحت کو پھر توجہ دلائی
جاتی ہے کہ ایسے مقدمات میں بخوبی
غور کیا کریں اور کوئی دقیقہ تنقیح
اور تحقیق کا باقی نہ رہا کرے اور
ایسے مقدمات کی ابتدا تھانوں میں فرضی
طور پر مرتب ہوا کرتی ہے۔ یعنی جو
وارداتیں کنوئے سے نعش برآمد ہونیکی
ہوتی ہیں وہ عموماً یا تو بیماری مرگی
یا دیوانگی یا پیر پھسل کر گر جانا
قرار دی جاتی ہے۔ اور اس ہی کے بموجب
رائیں قائم ہو جاتی ہیں۔ یہ خیال
نہیں کیا جاتا کہ بیماری مرگی یا
دیوانگی وغیرہ اس بابت کیواسطے ثبوت بھی
موجود ہے یا نہیں۔ اور ایسی مشتبہ حالت
میں بھی نعشوں کا معائنہ ڈاکٹری نہیں
کرایا جاتا ہے۔ اپیل اور گیرائی کو لکھا
گیا کہ حکام ماتحت کو بھی اس کی
تعمیل کے واسطے مطلع کر دیں۔

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۴۳	۳۰ مئی سنہ ۱۸۹۳ع

۳

خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری (۲۲) مجریہ ۱۶ مارچ
سنہ ۱۸۹۳ع مخالفت در باب سماعت

(۴۲) (۴۳)

تحقیقات وتجویز مقدمات غرقیدگی
وفوتیدگی اتفاقیہ مین بخوبی غور کیا جاوے
اور کوئی دقیقہ تنقیح وتحقیق کا باقی
نہ رکھا جاوے ۔

۴

مضمون

مقدمات غرقیدگی وفوتیدگی اتفاقیہ
کی تحقیقات ابتدائً تھانہ مین ہوا
کرتی ہی اور تھانہ سے معرفت نظامت
اپیل کے واسطے ملاحظہ اور منظوری کے
محکمہ عالیہ مین آتی ہی ۔

محکمات ماتحت کی معرفت ان مثلون
کا محکمہ عالیہ مین منگایا جانا اس غرض
سے قرار دیا ہی کہ حکام ماتحت ان پر
بخوبی غور کرلیا کرین تاکہ کوئی مقدمہ
سنگین مہلوکی وغیرہ کا اس پیرایہ مین
مرتب ہوکر دب نہ جائے ۔

مگر اکثر مقدمات مین دیکھا گیا کہ
حکام ماتحت ان مقدمات مین بہت کم
توجہ کرتے ہین حالانکہ ایسے مقدمات پر
بالخصوص بخوبی غور کرلینا واجب و
مناسب ہے ۔

چنانچہ وقتاً فوقتاً محکمہ عالیہ سے
جب ایسے مقدمات مین بملاحظہ نقص کارروائی
ماتحت کے اعتراض کیا گیا اور مزید
تحقیقات کرائی گئی تو اکثر مقدمات
کی اصلیت اس کے خلاف برآمد ہوئی

तहक़ीक़ात व तजवीज़ मुक़द्दमात ग़रक़ीदगी
व फ़ौतीदगी इत्तफ़ाक़िया में बख़ूबी ग़ौर किया जा
वे और कोई दक़ीक़ा तनक़ीह व तहक़ीक़ का बा
क़ी न रक्खा जावे -

४

मज़मून

मुक़द्दमात ग़रक़ीदगी व फ़ौतीदगी इत्तफ़ा
क़िया की तहक़ीक़ात इब्तदाअन थाने में हुवा
करती है और थाने से मारफ़त निज़ामत व अ
पील के वास्ते मुलाहिज़े और मंज़ूरी के मह
कमे आलिया में आती है -

महकमात मातहत के मारफ़त इन मिसलों
का महकमे आलिया में मंगाया जाना इस ग़रज़
से क़रार दिया है कि हुक्काम मातहत उन पर
बख़ूबी ग़ौर कर लिया करें ताकि कोई मुक़द्द
मा संगीन मक़्तूली वग़ैरः का इस पैराये में मुर
त्तब होकर दब न जाय -

मगर अकसर मुक़द्दमात में देखा गया कि हु
क्काम मातहत इन मुक़द्दमात में बहुत कम तव
ज्जुह करते हैं हालांकि ऐसे मुक़द्दमात पर बि
लख़सूस बख़ूबी ग़ौर कर लेना वाजिब व मु
नासिब है -

चुनांचि वक़्तन फ़वक़्तन महकमे आलिया से जब
ऐसे मुक़द्दमात में बमुलाहिज़े नाक़िस कारवा
ई मातहत के एतराज़ किया गया और मज़ीद त
हक़ीक़ात कराई गई तो अकसर मुक़द्दमात
की असलियत उसके ख़िलाफ़ बरआमद हुई

ो जाती है और आख़िरउलअमर मिसलें बिना
रतहक़ीक़ात मज़ीद भेजी जाती हैं मगर फिर
कुछ असलियत व अशगाफ़ नहीं होती -
और ऐसे मुक़द्दमात की तहक़ीक़ात व तकमी
से मंशाय अदालत यही है कि मुक़द्दमात
हलाकत बपैराये फ़ौतीदगी इत्तफ़ाक़ या
दिये जावें और नीज़ ऐसे मुक़द्दमात कि जि
की तहक़ीक़ात होने से मामूली फ़ौतीदगी
ी नहीं हुई बलकि ऐसी इत्तलाओं में बाद
तहक़ीक़ात से ज़हर खुरी से फ़ौतीदगी
या फांसी से मारकर लाश चाह में डालदेना
अन्दरूनी ज़रबात से हलाक करके डालदेना साबत
हुवा है मगर जबकि थानेदार बिला मुआयना डा
क्टरी के खुद ही हालात ज़ाहरी देखकर दाग़
दिला देवे और फिर तहक़ीक़ात से कोई वजह
पाई जावे तो फिर इतमीनान कुल्ली ब वजह न हो
इम्तहान डाक्टरी के नहीं हो सक्ता -
लिहज़ा मुनासब मालूम होता है कि मारफ़
गिराई के थानेदारों को हिदायत की जाय
कि जब फ़ौती मामूली न हो तब लाश का मुआ
यना ज़रूर कराना चाहिये -

१ नम्बर शुमार	२ तारीख मंज़ूरी
४२	३० मई सन १८९३ ई

३
खुलासा

ہو جاتی ہی اور آخرالامر مسلیں بنابر
تحقیقات مزید بھیجی جاتی ہیں۔ مگر پھر
کچھ اصلیت و اشگاف نہیں ہوتی
اور ایسے مقدمات کی تحقیقات و تکمیل
سے منشائے عدالت یہی ہی کہ مقدمات
ہلاکت بہ پیرایۂ فوتیدگی اتفاقیہ
نہ دیئے جاویں۔ اور نیز ایسے مقدمات کہ
جنکی تحقیقات ہونے سے معمولی فوتیدگی
ہی نہیں ہوئی بلکہ ایسی اطلاعوں میں بعد
میں تحقیقات سے زہر خورانی سے فوتیدگی
یا پھانسی سے مارکر نعش چاہ میں ڈالدینا
اندرونی ضربات سے ہلاک کرکے ڈالدینا
ثابت ہوا ہے۔ مگر جبکہ تھانہ دار
بلا معاینۂ ڈاکٹری کے خود ہی حالات
ظاہری دیکھکر داغ دلا دیوے اور پھر
تحقیقات سے کوئی وجہ پائی جاوے تو پھر
اطمینان کلی بوجہ نہونے امتحان
ڈاکٹری کے نہیں ہو سکتا۔
لہذا مناسب معلوم ہوتا ہی کہ معرفت
گیرائی کے تھانہ داران کو ہدایت کی
جائے کہ جب فوتی معمولی نہو تب نعش
کا معاینہ ضرور کرانا چاہیئے۔

١ نمبر شمار	٢ تاریخ منظوری
۴۲	۳۰ مئی ۱۸۹۳ع

۳
خلاصہ

(४०)
(५०)

तामील करनी चाहिये
इसके जवाब में मुन्शी जगन्नाथ परशाद जी
नाज़िम सांभर ने तहरीर किया कि निज़ामत
हिन्डोन में तो अख़्तियारात बेदख़ली मुझे हासि
ल थे जब से सांभर मुक़र्रर होकर आया हूं इस
के बारे में कोई हुक्म सादिर नहीं हुवा अब जैसा
इरशाद हो तामील कीजावे
चुनांचि उनको भी अख़्तियारात बेदख़ली अता
किये गये और लिखा गया कि बमूजिब हिदा
यत मजरया के इसका इस्तेमाल ठीक ठीक अम
ल में लाया जावे

१	२
नम्बर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
४१	२८ मई सन १८९३ ई

(४१)
(४१)

३

ख़ुलासा

जब मामूली फ़ौती न हो तब लाश का मुआयना डा
करी ज़रूर कराया जावे

४

मज़मून

मुक़द्दमात ग़रक़ीदगी फ़ौतीदगी इत्तफ़ाक़िया
की तहक़ीक़ात इब्तदाई थाने में होती है और फि
र निज़ामत और अपील में होकर अमसला मह
क़मे आलिया तक आती है अकसर मुक़द्दमात
में कारवाई तहक़ीक़ात निहायत नाक़िस हो
ती है और न मुआयना डाकरी कराया जाता है
और तहक़ीक़ात मुज़बज़िब पर आलत से तजवीज़

تعمیل کرنی چاہیئے
اسکے جواب مین منشی جگناتھ پرشاد جی
ناظم سانبھر نے تحریر کیا کہ نظامت
ہنڈون مین تو اختیارات بیدخلی مجھے حاصل
تھے جب سے سانبھر مقرر ہوکر آیا ہون
اسکے بارہ مین کوئی حکم صادر نہین ہوا اب جیسا
ارشاد ہو تعمیل کیجاوے۔
چنانچہ انکو بھی اختیارات بیدخلی عطا
کیئے گئے اور لکھا گیا کہ بموجب ہدایت
مجریہ کے اسکا استعمال ٹھیک ٹھیک عمل
مین لایا جاوے۔

۲	۱
تاریخ منظوری	نمبر شمار
۲۸ مئی ۱۸۹۳ء	۴۱

۳

خلاصہ

جب معمولی فوتی نہو تب نعش کا معائنہ
ڈاکٹری ضرور کرایا جائے۔

۴

مضمون

مقدمات غرقیدگی فوتیدگی اتفاقیہ
کی تحقیقات ابتدائی تھانہ مین ہوتی ہے اور پھر
نظامت اور اپیل مین ہوکر اکثر مسئلہ
محکمہ عالیہ تک آتی ہین۔ اکثر مقدمات
مین کارروائی تحقیقات نہایت ناقص
ہوتی ہے اور نہ معائنہ ڈاکٹری کرایا جاتا ہے
اور تحقیقات مذبذب پر ماتحت سے تجویز

(۳۹) (39)

بھیجا جاوے حساب اور روپیہ کے مخلوط
کر دینے میں بجز خرابی کے کچھ فائدہ نہیں
اور ناظموں کو سخت تاکید کیجاوے
کہ اسکے برخلاف نہونے دیویں - اور جمع
وخرچ نویس کہ اسکے برخلاف عمل
رکھیگا وہ مستوجب تدارک قرار پاویگا
اور اسکا عمل درآمد شروع ماہ سے
جملہ نظامتوں میں جاری کیا جاوے -

(۴۰) (40)

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۴۰	۲۵ مئی ۱۸۹۳ء

۳
خلاصہ

درباب عطائے اختیارات بیدزنی منشی
جگناتھ پرشاد جی ناظم نظامت سانبھر

۴
مضمون

نقل رپورٹ سالانہ صاحب چیف میڈیکل
افسر راجپوتانہ جو بابت معائنہ جیل
۹۳ ۱۸۹۲ء وصول ہوئی اُسمیں منجملہ دفعات
انتظامیہ ایک یہ بھی ہے کہ جیل خانہ
میں قیدی کثرت کیساتھ ہیں -
چنانچہ اس انتظام کے بارہ میں بحکم ۲۳ -
اپریل ۱۸۹۳ء فوجدار اور ناظموں کو
لکھا گیا کہ ہدایت بیدزنی کے اجراء
کو عرصہ گزر گیا - بالکل تعمیل اسکی
نہیں ہوئی اب اُس ہدایت کی پوری پوری

भेजाजावे हिसाब और रुपया के मखलूतकर
देने में बजुज़ खराबी के कुछ फ़ायदा नहीं
और नाज़मों को सख़्त ताकीद की जावे कि
इसके बर खिलाफ़ न होने देवें और जो जमा
व खर्च नवीस कि इसके बरखिलाफ़ अमल
रक्खेगा वह मुसतौजिब तदारुक क़रार पावे
गा और इस का अमलदरा मद शुरू माह स
जुमले निज़ामतों में जारी किया जावे

१ नम्बरशुमार	२ तारीख मंज़ूरी
४०	२५ मई सन १८९३ ई०

३
खुलासा

दरबाब अतायअख्तयारात बेदज़नी मुन्शी
जगन्नाथ परशाद जी नाज़िम निज़ामत सांभर

४
मज़मून

नक़लरिपोर्ट सलाना साहब चीफ़ मेडीकल अ
फ़सर राजपूताना जो बाबत मुआयने जेल सन
१८९३ ई० वसूल हुई उसमें मिनजुमले दफ़आत
इन्तज़ाम यः एक दफ़ा यह भी है कि जेलखा
ने में कैदी कसरत के साथ हैं
चुनांचि इस इन्तज़ाम के बारे में बहुक्म २३ अ
पेरल सन १८९३ ई० फ़ौजदार और नाज़मों को
लिखा गया कि हिदायत बेदज़नी के इजरा
को अरसा गुज़र गया बिलकुल तामील उ
सकी नहीं हुई अब उस हिदायत की पूरी २

नाया करे और हरएक कार्रवाई दाख़ला हिसा
ब निज़ामत का मय तफ़्सीलात के उनको ज़िम्मेवा
र किया जाना मुनासब है सरदारान अपील की
यह राय है कि कार्रवाई सीगे जुडीशल की अल
हदा की जावे मख़लूत कार्रवाई के रहने में स
फ़ाई नामुमकिन है इन जवाबात के आने पर य
ह काग़ज़ात बिना दरशमूल राय सीगे कलक्ट
री में दिये गये सीगे कलक्टरी से यह राय तह
रीर होकर काग़ज़ात वापिस आये कि इसमें को
ई हरज नहीं है मगर इसमें महकमे हिसाब से द
र्याफ़्त कर लेना मुनासब है -
चुनांचि मुहतमिम हिसाब से दर्याफ़्त किया
गया तो वह लिखते हैं कि जमा ख़र्चनवीस
सीगे अदालतैन के सपुर्द सीगे अदालतैन की
रोकड़ रहे और जमा व ख़र्चनवीस अलहदा रहे
और कलक्टरी का जमा ख़र्चनवीस अलहदा
रहे इसमें कोई हर्ज नहीं है -
लिहाज़ा हिदायत जारी की जाती है कि काम
और रुपया जमा व ख़र्चनवीस कलक्टरी का
अलहदा और जमा व ख़र्चनवीस अदालतैन
का अलहदा रहा करे एक का दूसरे से कुछ वा
स्ता न रक्खा जावे हर दो अलहदा काम के ज़ि
म्मेवार रहैं और हर दो अपना अपना ख़रडा
मुहरी मुरत्तब रक्खा करें नाज़िम रोज़ मर्रा उन
ख़रडों पर ताल के दस्तख़त किया करें और जो
रुपया कि सदर में भेजने के काबिल है
[illegible]

جاپاکرے اور ہر ایک کارروائی داخلہ
حساب نظامت کا مع تفصیلات کے انکو ذمہ وار
کیا جانا مناسب ہے سرداران اپیل کی
یہ راے ہی کہ کارروائی صیغہ جوڈیشل کی
علحدہ کیجاوے مخلوط کارروائی کے رہنے مین
صفائی ناممکن ہے - ان جوابات کے آنے پر
یہ کاغذات بنا بر شمول راے صیغہ کلکٹری
مین دئے گئے صیغہ کلکٹری سے یہ راے
تحریر ہوکر کاغذات واپس آئے کہ اسمین
کوئی حرج نہین ہے مگر اسمین محکمہ حساب
سے دریافت کر لینا مناسب ہے -
چنانچہ مہتمم حساب سے دریافت کیا گیا
تو وہ لکھتے ہین کہ جمع و خرچ نویس
صیغہ عدالتین کے سپرد صیغہ عدالتین کی
روکڑ رہے اور جمع و خرچ نویس علحدہ رہے
اور کلکٹری کا جمع و خرچ نویس علحدہ
رہے اسمین کوئی حرج نہین ہی -
لہذا ہدایت جاری کیجاتی ہی - کہ کام
اور روپیہ جمع و خرچ نویس کلکٹری کا
علحدہ اور جمع و خرچ نویس عدالتین
کا علحدہ رہا کرے ایک کا دوسرے سے کچھ
واسطہ نہ رکھا جاوے ہر دو علحدہ کام کے
ذمہ وار رہین - اور ہر دو اپنا اپنا کھرڑہ
مہری مرتب رکھا کرین ناظم روزمرہ
اون پر بعد پرتال کے دستخط کیا کرے
اور جو روپیہ کہ صدر مین بھیجنے کے قابل
ہو وہ بذریعہ فہرست علحدہ علحدہ

गलत मालूम होती है - हंगाम दौरे जहां जमा व ख
र्चनवीस अदालतैन के काम को पर ताला तो जो
रुपया खरड़े में बाकी था कहीं दस्तयाब नहीं
हुआ क्योंकि वह रुपया जमा व खर्चनवीस सीगे क
लक्टरी के पास मख़्लूत था यह बड़े सुकूम की
बात है और कभी किसी वक़्त पर पुर खज़ाना
सम्हल नहीं सक्ता और इस वजह से अकसर
रकूमात अदालतैन की रकूमात सीगे कलक्
टरी में मख़्लूत होकर खज़ाने सदर में जमा हो
जाती हैं और मुद्दत तक पता नहीं लगता
चुनांचि दीवानजी ग़रबी ने तो अपनी यह रा
य लिखी है कि खरड़ा जमा व खर्चनवीस जु
डीशल में से जमा व खर्च रकूमात सीगे मज़कू
र का होना चाहिये और उसी के पास रुपया
रहिना चाहिये मगर संदूक रोकड़ की पर मुहर
नायब फ़ौजदार की हो जाया करे और कुंजी
जमा व खर्चनवीस जुडीशल के पास रहा करे
और हफ़्तेवार सीगे अदालतैन का रुपया खर
ड़ा सीगे कलक्टरी में दर्ज होकर हर साल सदर
हो जाया करे और तफ़सीलवार हिसाब उस
का जमा व खर्चनवीस अदालतैन दाखिल
कर दिया करे
और दीवानजी शरकी ने लिखा कि खरड़ा
अलाहिदा होना ज़रूर नहीं हां जमा व खर्च
नवीसान सीगे जुडीशल से एक पड़त हि
साब बिना बर परगनात और एक पड़त
बिना बर म्हकमे दीवानी तैयार कराई

غلط معلوم ہوتی ہے۔ ہنگام دورہ جہان
جمع و خرچ نویس عدالتین کے کام کو پر تالا تو جو
روپیہ کھرڑہ مین باقی تھا کہین دستیاب نہین
ہوا کیونکہ وہ روپیہ جمع و خرچ نویس صیغہ
کلکٹری کے پاس مخلوط تھا یہ بڑے سقم
کی بات ہے اور کبھی کسی وقت پر پورا خزانہ
سنبھل نہین سکتا۔ اور اسوجہ سے اکثر
رقومات عدالتین کی رقومات صیغہ کلکٹری
مین مخلوط ہوکر خزانہ صدر مین جمع ہوجاتی
ہین۔ اور مدت تک پتہ نہین لگتا۔
چنانچہ دیوانجی غربی نے تو اپنی یہ رائے
لکھی ہے کہ کھرڑہ جمع و خرچ نویس جوڈیشل
مین سے جمع و خرچ رقومات صیغہ مذکور
کا ہونا چاہئے اور اسی کے پاس روپیہ
رہنا چاہئے مگر صندوق روکڑ کے پر مہر
نائب فوجدار کی ہوجایا کرے اور کنجی
جمع و خرچ نویس جوڈیشل کے پاس رہا کرے
اور ہفتہ وار صیغہ عدالتین کا روپیہ کھرڑہ
صیغہ کلکٹری مین درج ہوکر ارسال صدر
ہوجایا کرے اور تفصیل وار حساب اُس
کا جمع و خرچ نویس عدالتین داخل
کردیا کرے۔
اور دیوان جی شرقی نے لکھا کہ کھرڑہ
علیحدہ ہونا ضرور نہین ان جمع و خرچ
نویسان صیغہ جوڈیشل سے ایک پرت
حساب بنا بر پرگنات اور ایک پرت
بنا بر محکمہ دیوانی تیار کرائی

متعلقہ جمع و خرچ نویس صیغہ کلکٹری
میں ہی درج ہوتا ہے اور جمع و خرچ نویس صیغہ
عدالتین اسکی نقل گوشوارہ بلا مہری
میں کر لیتا ہے - روپیہ دونوں صیغوں کا
بتحویل جمع و خرچ نویس صیغہ کلکٹری
رہتا ہے - جملہ نظامتون سے دریافت
کرنے پر ظاہر ہوا کہ علاوہ نظامت
ہنڈون کے اور سب جگہ اسطرح کارروائی
ہوتی ہے اور ناظمون نے اپنی رائے میں یہ بھی
لکھا کہ علیحدہ علیحدہ کام ہونے میں کام کی
کثرت ہو جائیگی اور کارروائی موجودہ میں
کوئی حرج نہیں ہے - چنانچہ ہر دو دیوانان
و سرداران اپیل سے رائے طلب کیگئی
اور یہ نقص بھی اونکو جتلا دئیے گئے کہ
پہلے کوئی ایسا حکم جاری نہیں ہوا ہے کہ
کلکٹری کا جمع و خرچ نویس سب کام کرے
اور عدالتین کا جمع و خرچ نویس کاغذات
کی نقل کرتا رہے - بلکہ اس کے
برعکس کئی بار احکام جاری ہوئے ہیں
کہ عدالتین کے کام کا ذمہ دار جمع
و خرچ نویس صیغہ عدالتین رکھا جاوے
اور اسکی تحویل میں اسٹامپ اور صیغہ
عدالتین کا روپیہ رہا کرے - ناظمون نے
جو اسکے برخلاف عمل در آمد کر دیا
اسکی کوئی وجہ نہیں معلوم ہوتی
اور بعض ناظم جو یہ لکھتے ہیں کہ کام
کی کثرت ہو جاویگی یہ تحریر ان کی

मुतअल्लिके जमा व खर्च नवीस सीगे कलक्टरी
में ही दर्ज होता है और जमा व खर्च नवीस सीगे
अदालतैन उसकी नकल खरड़ा बिला मुह
री में कर लेता है - रुपया दोनो सीगों का
बतहवील जमा व खर्च नवीस सीगे कल
क्टरी रहता है जुमले निज़ामतों से दरयाफ़्
त करने पर ज़ाहिर हुवा कि अलावे निज़ामत हि
न्डौन के और सब जगह इस तरह पर कार्रवा
ई होती है और नाज़िमों ने अपनी राय में यह भी
लिखा कि अलहिदा काम होने में काम की
कसरत हो जायगी और कार्रवाई मौजूदा में को
ई हरज नहीं है - चुनांचि हरदो दीवानान
व सरदारान अपील से राय तलब की गई
और यह नुक्स भी उनको जितलाये गये कि
पहिले कोई ऐसा हुक्म जारी नहीं हुआ है कि
कलक्टरी का जमा व खर्च नवीस सब काम क
रे और अदालतैन का जमा व खर्च नवीस का
ग़ज़ात की नकल करता रहे बल्कि इसके
बरअक्स कई बार अहिकाम जारी हुवे हैं
कि अदालतैन के काम का ज़िम्मेवार जमा
व खर्च नवीस सीगे अदालतैन रक्खा जावे
और उसी की तहवील में इस्टाम्प और सी
गे अदालतैन का रुपया रहा करे नाज़िमों ने
जो इसके बरखिलाफ़ अमलदरामद कर
दिया इसकी कोई वजह नहीं मालूम होती
और बाज़ नाज़िम जो यह लिखते हैं कि का
म की कसरत हो जावेगी यह तहरीर उनकी

۳۸

كيا گيا - اب غور طلب يه امر ہے كه اگر
ايسی ہدايت جاری کی جاويگی تو
کاروبار خلائق مين حرج پيدا ہوگا - وكيل
سررشته كيواسطے ہدايت مذكوره اسواسطے جاری
کيگئی تھی كه وه ايك قسم كا تعلق راج سے
بسبب وكالت سررشته كے ركھتا تھا جب
اس سے كوئی ايسا فعل ناقص سرزد ہوا
كه وه برخاست كيا گيا تو پھر ايسے شخص
كو اجازت عدالتہاے راج مين وكالت
كرنيكی نہين دی گئی كه بطور پيشه كے
وكالت جاری كرے - سواے وكيل كے
اگر كوئی شخص سزا يافته اپنے مقدمه مين
يا كسی كی طرف سے بطور مختار كے پيروی
مقدمات مين كرے تو اسكے واسطے كوئی
ممانعت نہين ہوسكتی -

۱ نمبر شمار	۲ تاريخ منظوری
۳۹	۱۶ - مئی سنه ۱۸۹۳ع

۳ خلاصه

ہدايت درباب جدا جدا كرنے کام جمع خرچ نويس صيغه كلكٹری و صيغه جوڈيشل و رکھنے روكڑ و ذمه داری كے -

۴ مضمون

نظامت سانبھر كی تحرير سے معلوم ہوا كه
صيغه عدالتين كا جمع و خرچ بھی كھرڑه

३८

किया गया - अब गौर तलब यह अमर है कि अ
गर ऐसी हिदायत जारी की जावेगी तो कारो
बार खलायक में हरज पैदा होगा - वकील सरि
श्ते के वास्ते हिदायत मज़कूरा इस वास्ते जारी
की गई थी कि वह एक किस्म का तअल्लुक राज से
बसबब विकालत सरिश्ता के रखता था जब
उससे कोई ऐसा फ़ेल नाकिस सरज़द हुवा
कि वह बरखास्त किया गया तो फिर ऐसे श
ख्स को इजाज़त अदालतहाय राज में विका
लत करने की नहीं दी गई कि बतौर पेशे के
विकालत जारी करे - सिवाय वकील के अ
गर कोई शख्स सज़ा याफ़्ता अपने मुकद्दमे में
या किसी की तरफ़ से बतौर मुख्तार के पैरवी मु
कद्दमात में करे तो उस के वास्ते कोई मुमा
नअत नहीं हो सक्ती -

१ नम्बरशुमार	२ तारीख मंज़ूरी
३९	२६ मई सन १८९३ ई

३ खुलासा

हिदायत दरबाब जुदा जुदा करने काम जमा
खर्च नवीस सीगे कलक्टरी व सीगे जुडीशल
व रखने रोकड़ व ज़िम्मेवारी के

४ मज़मून

निजामत सांभर की तहरीर से मालूम हुवा कि
सीगे अदालत का जमा व खर्च भी खरड़ा

ज़मी मे हिदायत नम्बरी ८३ मजरया सन १८८७
ई० कि सिवाय वकील सरिश्ता सज़ायाफ़्ता के अ
गर कोई शख़्स सज़ायाफ़्ता अपने मुक़द्दमे मे पै
रवी या किसी की तरफ़ से मुख़्तारकारी करे तो मु
मानअत नहीं है -

४

मज़मून

सरदारान अपील ने इस्तसवाब किया था कि
जो हिदायत नम्बरी (८३) सन १८८७ ई जारी हु
ई थी उस की मंशा के मुताबिक़ अगर कोई व
कील सरिश्ता किसी इलज़ाम में बरख़ास्त या
माज़ूल होगा तो फिर वह वकील बतौर मुख़्तार
आम व या मुख़्तार ख़ास के मुक़द्दमात में पैरवी
का मजाज़ न होगा - लेकिन जब कोई आम श
ख़्सों में से सज़ायाफ़्ता हो या आं कि कोई शख़्स
आम में से अपने तौर पर बज़रिये मुख़्तारनामजात
मुख़्तार आम व ख़ास हो कर कारवाई करता रह
ता हो और फिर वह किसी इलज़ाम में सज़ायाब
हो जावे तो ऐसे अशख़ास की निसबत कोई
हिदायत नहीं पाई जाती कि आया वह लोग
बाद सज़ायाफ़्तगी मुख़्तार आम व ख़ास होने
के मजाज़ होंगे या नहीं -

चूंकि बरवक़्त इजराय हिदायत ८३ सन
१८८७ ई० अमर मुस्तफ़सरह बाला पर नज़
र डाल ली गई थी और ऐसी क़ैद आम लोगों
पर लगानी नावाजिब थी लिहाज़ा उसकी
निसबत हिदायत मज़कूरा में कुछ दर्ज नहीं

ضمیمہ ہدایت نمبری ۸۳ مجریہ ۱۸۸۷ء عیسوی
کہ سوائے وکیل سررشتہ سزا یافتہ کے
اگر کوئی شخص سزا یافتہ اپنے مقدمہ میں
پیروی یا کسی کی طرف سے مختار کاری کرے تو
ممانعت نہیں ہے -

۴

مضمون

سرداران اپیل نے استصواب کیا تھا کہ
جو ہدایت نمبری (۸۳) ۱۸۸۷ء جاری
ہوئی تھی اسکی منشا کے مطابق اگر کوئی
وکیل سررشتہ کسی الزام میں برخاست یا
معزول ہوگا تو پھر وہ وکیل بطور مختار عام
و یا مختار خاص کے مقدمات میں پیروی
کا مجاز نہوگا - لیکن جب کوئی عام
شخصوں میں سے سزا یافتہ ہو یا آنکہ کوئی شخص
عام میں سے اپنے طور پر بذریعہ مختارنامجات
مختار عام و خاص ہوکر کارروائی کرتا رہتا
ہو اور پھر وہ کسی الزام میں سزایاب
ہو جاوے تو ایسے اشخاص کی نسبت کوئی
ہدایت نہیں پائی جاتی کہ آیا وہ لوگ
بعد سزا یافتگی مختار عام و خاص ہونے
کے مجاز ہونگے یا نہیں -

چونکہ بروقت اجرائے ہدایت (۸۳)
۱۸۸۷ء امر مستفسرہ بالا پر
نظر ڈال لیگئی تھی اور ایسی قید عام لوگوں
پر لگانی ناواجب تھی - لہذا اس کی
نسبت ہدایت مذکورہ میں کچھ درج نہیں

नाक़िस तरीक़ा कार्रवाई का दरयाफ़्त हो कर बता
रीख़ २ नवम्बर सन १८९१ ई० रोबकार हिदा
यती मुफ़स्सिल जारी हुवा था मगर मालूम हो
ता है कि अब तक उसकी तामील नहीं हुई
यानी मुमानअत की गई थी कि नायबान से
मुक़द्दमात ज़ायद अज़ अख़्तियारात उन के
की तहक़ीक़ात व तजवीज़ न कराई जावे
बलकि ऐसे मुक़द्दमात उनके सपुर्द किये
जावें कि जो उनके हद्द अख़्तियार के मालूम
हों - लेकिन फिर भी देखने में आता है कि
बड़े बड़े मुक़द्दमात की तहक़ीक़ात नायब
किया करते हैं और बाद तहरीर तजवीज़
मंज़ूरी के लिये रूबरू अपने अफ़सर के पेश
करते हैं और हर दो जगह वह ऐक मुक़द्दमा
दो नम्बरों पर दर्ज होता है और कार गुज़ारी
में हर दो के शुमार किया जाता है -

दर असल इसमें ज़ियादा काम नायब का हो
ता है और अफ़सर सिर्फ़ मंज़ूरी या नामंज़ूरी
का हुक्म लिखता है इस वास्ते मुनासिब नहीं
है कि यह तरीक़ा बर ख़िलाफ़ हिदायत जारी
किया जावे जुमले हुक्काम मातहत को वास्ते
तामील के लिखा जावे -

१	२	३
नम्बर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी	ख़ुलासा
३८	११ मई सन १८९३ ई०	

ناقص طریقہ کارروائی کا دریافت ہو کر
بتاریخ ۲- نومبر ۱۸۹۱ء روبکار ہدایتی
مفصل جاری ہوا تھا - مگر معلوم
ہوتا ہی کہ ابتک اسکی تعمیل نہین ہوئی
یعنی ممانعت کیگئی تھی کہ نائبان سے
مقدمات زائد از اختیارات اون کے
کی تحقیقات و تجویز نہ کرائی جاوے
بلکہ ایسے مقدمات انکے سپرد کئے
جاوین کہ جو انکے حد اختیار کے معلوم
ہون - لیکن پھر بھی دیکھنے مین آتا ہی کہ
بڑے بڑے مقدمات کی تحقیقات نائب
کیا کرتے ہین اور بعد تحریر تجویز
منظوری کے لئے روبرو اپنے افسر کے پیش
کرتے ہین اور ہر دو جگہ وہ ایک مقدمہ
دو نمبرون پر درج ہوتا ہی اور کارگزاری
مین ہر دو کے شمار کیا جاتا ہی -
دراصل اسمین زیادہ کام نائب کا ہوتا
ہی اور افسر صرف منظوری یا نامنظوری
کا حکم لکھتا ہی اسواسطے مناسب نہین
ہی کہ یہہ طریقہ برخلاف ہدایت جاری
کیا جاوے جملہ حکام ماتحت کو واسطے
تعمیل کے لکھا جاوے -

۱	۲	۳
نمبر شمار	تاریخ منظوری	خلاصہ
۳۸	۱۱- مئی ۱۸۹۳ء	

साथहै- चुनांचि इस इन्तजाम के बारे में ब हुक्म २३ अप्रैल सन १८९३ ई० फौजदारों ओ र नाज़मों को लिखा गया कि हिदायत बेदज़ नी के इज़रा को अरसा गुज़र गया बिलकुल तामीलउसकी नहीं होती अब उस हिदायत की पूरी २ तामील करनी चाहिये—

इस के जवाब में पंडित बैजनाथ जी नाज़िम कोट कासिम ने लिखा कि इस निज़ामत को अख़्तयारात बेदज़नी हासिल नहीं हैं अब इजाज़त दीजावे—

लिहाज़ा मिसल दीगर नाज़मों के उनको भी अख़्तयारात बेदज़नी अता किये गये और लिखा गया कि जो हिदायत इस बारे में जारी हो चुकी है बमूजिब उसके अमल दरा मद रखना चाहिये

१	२
नम्बर शुमार	तारीख मंज़ूरी
३७	११ मई सन १८९३ ई०

३

खुलासा

ज़मीमे हिदायत नम्बरी ६९ मजरया ४ नवेम्बर सन १८९१ ई० बाबत अख़्तयारात हिकीकात व तजवीज़ मुकदमात (६९) नायबान फौजदार व नायब नाज़मात—

४

मज़मून

बमुलाहिज़े असमलासीगे फौजदारी मुनफ़स लाना पब नाज़मान व नायबान फौजदार एक

ساتھ ہین ۔ چنانچہ اس انتظام کے بارہ بحکم ۲۳- اپریل ۱۸۹۳ء فوجدار اور ناظمون کو لکھا گیا کہ ہدایت بید زنی کے اجراء کو عرصہ گزر گیا بالکل تعمیل اسکی نہین ہوتی اب اس ہدایت کی پوری پوری تعمیل کرنی چاہیئے ۔

اسکے جواب مین پنڈت بیجناتھ جی ناظم کوٹ قاسم نے لکھا کہ اس نظامت کو اختیارات بیدزنی حاصل نہین ہین اب اجازت دی جاوے ۔

لہذا مثل دیگر ناظمون کے انکو بھی اختیارات بیدزنی عطا کئے گئے اور لکھا گیا کہ جو ہدایت اس بارہ مین جاری ہو چکی ہے بموجب اسکے عملدرآمد رکھنا چاہیئے ۔

۲	۱
تاریخ منظوری	نمبر شمار
۱۱- مئی ۱۸۹۳ء	۳۷

۳

خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری ۶۹ مجریہ ۴- نومبر ۱۸۹۱ء بابت اختیار تحقیقات وتجویز مقدمات (۶۹) نائبان فوجدار ونائب ناظمان ۔

۴

مضمون

بملاحظہ امثلہ صیغہ فوجداری منفصلہ نائب ناظمان ونائبان فوجدار ایک

(۳۵)

ہوگا۔
سابق سے اس بارہ میں ممانعت کی گئی
اب ایک مقدمہ میں پھر ایسا دیکھا گیا کہ
نائب فوجدار نے پانچ روپیہ جرمانہ
تجویز کر دیا اور مثل منظوری کے لئے
فوجداری میں بھیجی۔ قبل از منظوری کے
جرمانہ وصول کیا گیا اور منظوری تجویز کی
ہوئی نہیں۔
لہذا یہ ہدایت جاری کی جاتی ہے
کہ جو حکم کہ منظوری طلب ہے اسکا اجراء
قبل از صدور حکم منظوری کیا جانا قطعی
ممنوع اور بے ضابطہ ہے ایسا آیندہ
ہرگز نہ کیا جاوے۔

(۳۶)

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۳۶	۱۱-مئی سنہ ۹۳ء

۳
خلاصہ
عطائے اختیار بیدزنی پنڈت بیجناتھ
جی ناظم کوٹ قاسم۔

۴
مضمون
نقل رپورٹ سالانہ صاحب چیف میڈیکل
افسر راجپوتانہ جو در بارہ معائنہ
جیل سنہ ۹۳ء وصول ہوئی اسمیں منجملہ
دفعات انتظامیہ ایک دفعہ میں یہ بھی درج
تھا کہ جیل خانہ میں قیدی نہایت کثرت کے

(३५)

होगा—
साबिक़ से इस बारे में मुमानअत की गई थी
व एक मुक़द्दमे में फिर ऐसा देखा गया कि
नायब फ़ौजदार ने पांच रुपया जुरमाना त
जवीज़ कर दिया और मिसल मंज़ूरी के लिये
फ़ौजदारी में भेजी क़बल अज़ मंज़ूरी के जुर
माना वसूल किया गया और मनज़ूरी तजवीज़ की
हुई नहीं
लिहाज़ा यह हिदायत जारी की जाती है
कि जो हुक्म कि मंज़ूरी तलब है उसका इजरा
क़बल अज़ सदूर हुक्म मंज़ूरी किया जाना
क़तई ममनूअ और बेज़ाब्ता है ऐसा आयन्दा
हरगिज़ न किया जावे—

(३६)

१ नम्बर शुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
३६	११ मई सन १८९३

३
ख़ुलासा
अताए अख़्तियार बेदज़नी पंडित बैजनाथ
जी नाज़िम कोट क़ासिम—

४
मज़मून
नक़ल रिपोर्ट सालाना साहब चीफ़ मेडीकल
अफ़सर राजपूताना जो दरबारे मुआयने जे
ल सन १८९३ ई॰ वसूल हुई उसमें मिनजुमले
दफ़आत इन्तज़ामया एक दफ़े में यह भी दर्ज
था कि जेलख़ाने में क़ैदी निहायत कसरत के

منظوری لکھدی گئی اور یہ بھی لکھا گیا کہ نقل تنقیح موکل سے دریافت کرکے دیجاوے کہ اوسکی درخواست کے بموجب وکیل نے یہ درخواست کی ہے یا نہیں ۔

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۳۵	۱۰ مئی سنہ ۱۸۹۳ع

۳

خلاصہ

جو حکم کہ منظوری طلب ہے اوسکا اجرا قبل از صدور حکم منظوری کیا جانا قطعی ممنوع اور بیضابطہ ہے ۔

۴

مضمون

جو مقدمہ کہ منظوری کیلئے محکمہ بالادست میں بھیجا جاوے اُسکے حکم سزا کا اجرا تاآنکہ منظوری ہوکر اطلاع منظوری کی نہ پہنچ جاوے بالکل ممنوع اور بیضابطہ ہے مگر فوجداری کے کئی مقدمات کی امثلہ دیکھنے سے معلوم ہوا کہ وہاں ایسا عمل درآمد ہے کہ قبل از منظوری تجویز کے سزا کا اجرا کر دیا جاتا ہے اور اس بات پر خیال نہیں ہوتا کہ جب تجویز جاری ہونیکے قابل نہیں ہے منظوری طلب ہے تو جو تجویز کہ کی گئی وہ جاری کیونکر ہوسکتی ہیں ۔ جاری کرنیکے بعد اگر منظوری نہوئی تو پھر اُسکا ایفا کیونکر

मंज़ूरी लिखदीगई और यह भी लिखागया कि यह नक़ल मुसन्ना मवक्किल से दरयाफ़ करके दीजावे कि उसकी दरख़्वास्त के बमूजिब वकील ने यह दरख़्वास्त की है या नहीं -

१	२
नम्बरशुमार	तारीख़ मंज़ूरी
३५	१० मई सन १८९३ ई०

३

ख़ुलासा

जो हुक्म कि मंज़ूरी तलब है उस का इजराय क़बल अज़ सदूर हुक्म मंज़ूरी कियाजाना क़तई ममनूय और बेज़ाब्ता है -

४

मज़मून

जो मुकदमा कि मंज़ूरी के लिये महकमे बाला दस्त में भेजाजावे उस के हुक्म सज़ा का इजरा ताआंकि मंज़ूरी हो कर इत्तला मंज़ूरी की न पहुंचजावे बिलकुल ममनूय और बेज़ाब्ता है - मगर फ़ौजदारी के कई मुक़द्दमात की अमसला देखने से मालूम हुवा कि वहां ऐसा अमल दरामद है कि क़बल अज़ मंज़ूरी तजवीज़ के सज़ा का इजरा कर दियाजाता है और इस बात पर ख़्याल नहीं होता कि जब तजवीज़ जारी होने के क़ाबिल नहीं है मंज़ूरी तलब है तो जो तजवीज़ कि कीगई वह जारी क्योंकर हो सक्ती है - जारी करने के बाद अगर मंज़ूरी न हुई तो फिर उसका ईफ़ा क्योंकर

होतीहै -

सरदारानअपीलने यहलिखकर किनकल मुख्तारनामजात दियेजानेमें कोईकबाहत मालूम नहीं होती मगर यह नकल ॥ के इस्टाम्प पर होगी औरबवक्तदेनेनकलके उसकेमवक्कलसे इसअमरकी तसदीक करनी चाहिये कि अबभी वह मुख्तार रखना चाहिता है या नहीं काग़ज़ात इस्तसवाबन महकमेआलियेमें इरसालकिये

यहांसेसरदारानअपीलसे यहदरयाफ्त किया गया कि ॥ के इस्टाम्प पर नकलुलनकल दिये जाने की क्या वजह है

इसकेजवाबमें सरदारानअपीलने लिखा कि कानूनइस्टाम्प सम्बत १९१८ हिस्सादोयमदफ़ै (३८) की मनशाके मुवाफ़िक़ ॥ के इस्टाम्प पर नकल देनी महकमेआलिया से क़रार दीगई है -

चुनांचि कानून सम्बत १९१८ को देखा गया तो उसमें नम्बर (३८) यह दर्ज है कि नकल मुसन्ना बयेनामा या इक़रारनामा या रहिननामा या ज़मानतनामा या किसी ऐसी और किस्मकी नविश्त कीजोकोई शख्सअपने पासरखनेको याशामूल मिस्ल के लिये या किसीऔर ग़रज़ के लिये हासिल करे ॥ के इस्टाम्पपर) पस यह नकलमुसन्नामुख्तार नामा भीइसहीमें दाखिल है - लिहाज़ाहस्बदर ख्वास्तसरदारानअपीलजनाब मे

ہوتی ہے -

سرداران اپیل نے یہ لکھکر کہ نقل مختار نامجات دئیجانے مین کوئی قباحت معلوم نہین ہوتی - مگر یہ نقل ۸ر کے اسٹامپ پر ہوگی اور بوقت دینے نقل کے اوسکے موکل سے اس امر کی تصدیق کرنی چاہئے کہ اب بھی وہ مختار رکھنا چاہتا ہے یا نہین کاغذات استصوابًا محکمہ عالیہ مین ارسال کئے -

یہان سے سرداران اپیل سے یہ دریافت کیا گیا کہ ۸ر کے اسٹامپ پر نقل النقل دئیے جانیکی کیا وجہ ہے -

اسکے جواب مین سرداران اپیل نے لکھا کہ قانون اسٹامپ سمت ۱۹۱۸ حصۂ دوم دفعہ (۳۸) کی منشا کے موافق ۸ر کے اسٹامپ پر نقل دینی محکمہ عالیہ سے قرار دیگئی ہے -

چنانچہ قانون سمت ۱۹۱۸ کو دیکھا گیا تو اوس مین نمبر (۳۸) یہ درج ہے کہ نقل مثنے بیعنامہ یا اقرار نامہ یا رہن نامہ یا ضمانت نامہ یا کسی ایسی اور قسم کی نوشت کی جو کوئی شخص اپنے پاس رکھنے کو یا شمول مثل کے لئے یا کسی اور غرض کے لئے حاصل کرے ۸ر کے اسٹامپ پر) پس یہ نقل مثنے مختار نامہ بھی اس ہی مین داخل ہے - لہذا حسب درخواست سرداران اپیل جوایین

हिदायत की पूरी पूरी तामील करनी चाहिये -
इसके जवाब में हकीम मुख़लिस उद्दौला मुन्तज़िम महल के बांदी कुईं ने लिखा कि इस निज़ामत को अख़्तियारात बेदख़नी हासिल नहीं हैं अब इजाज़त फ़रमाई जावे -
लिहाज़ा उनको अख़्तियारात बेदख़नी हल्के महदूद की मिस्ल दीगर नाज़िमों के दीगई और लिखा गया कि बपाबन्दी हिदायत मजरिया अमल दर आमद रखना चाहिये -

(३३)

१	२
नम्बर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
३४	९ मई सन १८९३ ई०

(३४)

३

खुलासा

नक़ल मुख़्तार नामजात व कलाय को बाद दरयाफ़्त उसके मवक्किल के इस्टाम्प (॥) पर दी जावें -

४

मज़मून

नाज़िम जी सांभर ने बज़रये कैफ़ियत ८ अप्रेल सन १८९३ ई० सरदारान अपील से यह इस्तस्वाब किया कि नक़लुल नक़ल मुख़्तारनामे का दिया जाना वाजिब है या नहीं और अगर दिया जाए तो कितने के इस्टाम्प पर मेरी राय में ।) के इस्टाम्प पर दी जानी चाहिये किस लिये कि अमूमन नकल मुख़्तारनामे की ।) के इस्टाम्प पर मुक़द्दमात में दाख़िल

ہدایت کی پوری پوری تعمیل کرنی چاہیئے -
اسکے جواب میں حکیم مخلص الدولہ منتظم حلقۂ باندی کوئی نے لکھا کہ اس نظامت کو اختیارات بیدخلی حاصل نہیں ہیں اب اجازت فرمائی جاوے -
لہٰذا اونکو اختیارات بیدخلی حلقۂ محدود کی مثل دیگر ناظموں کے دیگئی اور لکھا گیا کہ بپابندی ہدایت مجریہ اسکا عمل درآمد رکھنا چاہیئے -

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۳۴	۹ مئی ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

نقل مختارنامجات وکلاء کو بعد دریافت اونکے موکل کے اسٹامپ پر دی جاویں -

۴

مضمون

ناظم جی سانبھر نے بذریعہ کیفیت ۸ اپریل ۱۸۹۳ء سرداران اپیل سے یہ استصواب کیا کہ نقل النقل مختارنامہ کا دیا جانا واجب ہے یا نہیں - اور اگر دیا جائے تو کتنے کے اسٹامپ پر
میری رائے میں ۲ر کے اسٹامپ پر دیجانی چاہیئے کسلئے کہ عموماً نقل مختارنامہ کی ۲ر کے اسٹامپ پر مقدمات میں داخل

(۳۲) (३२)

خواہ وہ نمبری ہو خواہ اجرائے کا قبل از دائری مقدمہ بشرط ضرورت وکالت نامہ کے تصدیق کر دئے جانے مین کوئی قباحت معلوم نہین ہوتی اور خود درخواست مدعیان پر بحوالہ ہدایت نمبری (۶۴) مجریہ ۴ مئی ۱۸۹۰ء استصواب کیا گیا ہے سو ہدایت مذکورہ کا اس سے کچھ تعلق نہین ہے۔

ख़्वाह वह नम्बरी हो ख़्वाह इजराय का क़बल अज़ दायरी मुक़दमा बशर्ते ज़रूरत विकालतनामा के तसदीक़ कर दिये जाने में कोई क़बाहत मालूम नहीं होती और ख़ुद दरख़्वास्त मुद्दैयान पर बहवाले हिदायत नम्बरी (६४) मजरयः ४ मई सन १८८० ई० इस्तस्वाब किया गया है सो हिदायत मज़कूरा का इससे कुछ तअल्लुक़ नहीं है

(۳۳) (३३)

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۳۳	۸ مئی ۱۸۹۳ء

१ नम्बरशुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
३३	८ मई सन १८८३ ई०

۳
خلاصہ

دربارۂ عطائے اختیارات بیدزنی حکیم مخلص الدولہ منتظم حلقہ باندی کوئی۔

३
ख़ुलासा

दरबारे अताए अख़्तियारात बेदज़नी हकीम मुख़्लिस उद्दौला मुन्तज़िम हलके बांदीकुई

۴
مضمون

نقل رپورٹ سالانہ صاحب چیف میڈیکل افسر راجپوتانہ جو بابت معائنہ جیل ۱۸۹۳ء موصول ہوئی اوسمین منجملہ دفعات انتظامیہ ایک دفعہ یہ بھی ہے کہ جیل خانہ مین قیدی نہایت کثرت سے ہین۔ چنانچہ اس انتظام کے بارہ مین بحکم ۲۳ اپریل ۱۸۹۳ء فوجدار اور ناظمون کو لکھا گیا کہ ہدایت بیدزنی کے اجرا کو عرصہ گزر گیا بالکل تعمیل اوسکی نہین ہوئی اب اوس

४
मज़मून

नक़ल रिपोर्ट सालाना साहब चीफ़ मेडीकल अफ़सर राजपूताना जो बाबत मुआयने जेल सन १८८३ ई० मौसूल हुई उसमें मिनजुमले दफ़आत इन्तज़ाम या एक दफ़ा यह भी है कि जेल ख़ाने में क़ैदी निहायत कसरत से हैं- चुनांचि इस इन्तज़ाम के बारे में बहुक्म २३ अप्रेल सन १८८३ ई० फ़ौजदार और नाज़मों को लिखा गया कि हिदायत बेदज़नी के इजरा को अरसा गुज़र गया बिलकुल उसकी तामील नहीं हुई अब उस

قبل از دائری مقدمہ تصدیق کیا جانا ممنوع نہیں ہے ۔۴

مضمون

بمقدمہ اجرائے ڈگری مسمیان چنی لال و رام چندر چودہریان ٹوڈہ رائسنگہ سرداران اپیل نے بذریعہ کیفیت ۱۶ اپریل ۱۸۹۳ع یہ استصواب کیا کہ مدعیان مقدمہ نے مختارنامہ موسومہ بہاری لال وکیل سرشتہ پیش کر کے درخواست کی کہ یہ مقدمہ نظامت مالپورہ میں دائر ہوگا۔ مختارنامہ تصدیق فرمایا جاوے۔

چنانچہ مختارنامہ تو بعد تصدیق حوالہ وکیل کر دیا گیا۔ لیکن منشا ہدایت نمبری (۶۴) مجریہ ۴ مئی ۱۸۹۰ع کا یہ ہے کہ قبل از دائر ہونے مقدمہ کے وکالت نامہ وکیل کا تصدیق نہ کیا جاوے اب اس میں یہ صراحت نہیں ہے کہ اس ہدایت کا اثر مقدمات ابتدائی میں لیا جاویگا یا کہ مقدمات اجرائے ڈگری میں بھی۔ اگر کوئی شخص واسطے دائر کرنے مقدمہ اجرا کے اپنی آسانی کیلئے قبل دائر کرنے مقدمہ کے وکالت نامہ وکیل کا تصدیق کرا دے تو ایسا وکالت نامہ قبل دائر ہونے مقدمہ کے تصدیق کیا جاوے یا نہیں اسکے جواب میں سرداران اپیل کو لکھا گیا کہ مقدمات صیغہ عدالت دیوانی میں

क़बल अज़ दायरी मुक़द्दमः तसदीक़ किया जाना ममनूय नहीं है ४

मज़मून

बमुक़द्दमे इजराय डिगरी मुसम्मीयान चुन्नीलाल व रामचन्दर चौधरयान टोडा रायसिंह सरदारान अपील ने बज़रये कैफ़ियत १६ अप्रेल सन १८९३ ई० यह इस्तस्वाब किया कि मुद्दईयान मुक़द्दमे ने मुख़्तारनामा मौसूमे बिहारीलाल वकील सरिश्ता पेश करके दरख़्वास्त की कि यह मुक़द्दमा निज़ामत मालपुरा में दायर होगा - मुख़्तार नामा तसदीक़ फ़रमाया जावे -

चुनांचि मुख़्तार नामा तो बाद तसदीक़ हवाले वकील कर दिया गया - लेकिन मनशाय हिदायत नम्बरी (६४) मजरया ४ मई सन १८९० ई० का यह है कि क़बल अज़ दायर होने मुक़द्दमे के विकालत नामा वकील का तसदीक़ न किया जावे अब इस में यह सराहत नहीं है कि इस हिदायत का असर मुक़द्दमात इब्तदाई में लिया जावेगा या कि मुक़द्दमात इजराय डिगरी में भी अगर कोई शख़्स वास्ते दायर करने मुक़द्दमह इजरा के अपनी आसानी के लिये क़बल दायर करने मुक़द्दमे के विकालत नामा वकील का तसदीक़ करा वे तो ऐसा विकालतनामा क़बल दायर होने मुक़द्दमा के तसदीक़ किया जावे या नहीं इसके जवाब में सरदारान अपील को लिखा गया कि मुक़द्दमात सीगे अदालत दीवानी में

(۳۱) (३१)

और इजरा निगारों को हिदायत करदें कि मिस्ल दस्तूर मुरव्विजह महकमे आलिय: जिसका ज़िकर ऊपर दर्ज हो चुका है इजरा नवीस हुक्म के तहित में नम्बर किताब इजराव तारीख व नाम महकमा दर्ज करके उस पर दस्तख़त सब्त करदिया करें और अहिलमद और सरिश्तेदार व हाकिम इनके निगरां व ज़िम्मेवार रहें

اور اجرائے نگاروں کو ہدایت کردیں کہ بمثل دستور مروجۂ محکمہ عالیہ۔ جسکا ذکر اوپر ہو چکا ہے۔ اجرائے نویس حکم کے تحت میں نمبر کتاب اجراء و تاریخ و نام محکمہ درج کرکے اوس پر دستخط ثبت کردیا کرے اور اہلمد اور سرشتہ دار و حاکم انکے نگران و ذمہ دار رہیں۔

नमूना रजिस्टर इजराय कागज़ात महकमा:

१	नम्बर शुमार किताब इजरा
२	तारीख इजरा
३	तारीख हुक्म मुन्दर्जे कागज़
४	नाम कागज़
५	उनवान मुक़द्दमा
६	तादाद क़िता आत
७	नाम महकमा जहां भेजा गया
८	रसीद गीरन्दा कागज़
९	कैफ़ियत

نمونہ رجسٹر اجرائے کاغذات محکمہ

۱	نمبر شمار کتاب اجرا
۲	تاریخ اجرا
۳	تاریخ حکم مندرجہ کاغذ
۴	نام کاغذ
۵	عنوان مقدمہ
۶	تعداد قطعات
۷	نام محکمہ جہاں بھیجا گیا
۸	رسید گیرندہ کاغذ
۹	کیفیت

(۳۲) (३२)

१	२
नम्बर शुमार	तारीख मंज़ूरी
३२	७ मई सन १८९३ ई०

३

खुलासा

मुख़्तार नामा मुक़दमात अदालत दीवानी में

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۳۲	۷ مئی ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

مختارنامہ مقدمات عدالت دیوانی میں

काग़ज़ात एक तरीके पर सब जगह नहीं है मुख़्तलिफ़ तौर पर कहीं कुछ और कहीं कुछ है -

और ख़ास महकमे आलिया की कार्रवाई की बाबत सरिश्ते से रपोर्ट ली गई तो ज़ाहर हुवा कि महकमे आलिया में काग़ज़ात के इजराय करने का यह दस्तूर है कि जो काग़ज़ जिस तामील के हुक्म में इजरा होता है उस हुक्म के तहित में इजरा निगार नाम उस महकमे का कि जहां को काग़ज़ भेजा जाता है और तारीख़ इजराय काग़ज़ मय नम्बर किताब इजरा जिसमें वह काग़ज़ दर्ज किया जाता है तहरीर करने वाला उसके नीचे अपने दस्तख़त कर दिया करता है - और किताब इजरा में हर एक काग़ज़ ब नम्बर जुदागाना दर्ज हुवा करता है और वह नम्बर हुक्म के नीचे इजरानवीस लिख दिया करता है चूंकि मिस्ल कार्रवाई महकमे आलिया के इजराय काग़ज़ात का अमल दराम दीगर महकमात मातहत में भी जारी रहना बाइस अस्लूबी कार था लिहाज़ा बतरसील नक़ल नमूना पेशानी किताब इजराय काग़ज़ात मिनसलका जुमले महकमात मातहत को लिखा गया कि इसके मुवाफ़िक़ रजिस्टर इजराय काग़ज़ात अपने अपने महकमे में मुरत्तब करालें

کاغذات ایک طریقہ پر سب جگہہ نہین ہی مختلف طور پر کہین کچھہ اور کہین کچھہ ہے -

اور خاص محکمۂ عالیہ کی کارروائی کی بابت سرشتہ سے رپورٹ لیگئی تو ظاہر ہوا کہ محکمۂ عالیہ مین کاغذات کے اجراء کرنے کا یہ دستور ہی کہ جو کاغذ جس تعمیل کے حکم مین اجراء ہوتا ہی اوس حکم کی تحت مین اجراء نگار نام اُس محکمہ کا کہ جہان کو کاغذ بھیجا جاتا ہی اور تاریخ اجرائے کاغذ مع نمبر کتاب اجراء جسمین وہ کاغذ درج کیا جاتا ہی - تحریر کرنے والا اوسکے نیچے اپنے دستخط کر دیا کرتا ہے - اور کتاب اجراء مین ہر ایک کاغذ بہ نمبر جداگانہ درج ہوا کرتا ہی اور وہ نمبر حکم کے نیچے اجراء نویس لکھدیا کرتا ہی چونکہ مثل کارروائی محکمۂ عالیہ کے اجرائے کاغذات کا عمل درآمد دیگر محکمات ماتحت مین بھی جاری رہنا باعث اسلوبی کار تھا - لہذا بترسیل نقل نمونۂ پیشانی کتاب اجرائے کاغذات منسلکہ - جملہ محکمات ماتحت کو لکھا گیا کہ اسکے موافق رجسٹر اجرائے کاغذات اپنے اپنے محکمہ مین مرتب کرالین

नेएक थानेदारकी शिकायत महकमेआ
लियेमें तहिरीरकी कितामीलके लिये
सम न थानेमें भेजे गयेथे मगरतारीख़
मुक़र्रिरातकथानेदारनेसम-न तामीलकर
केवापिसनभेजे न कुछजवाबतहिरीर
किया -

बरांमहकमे आलियामें परवाना मौसूमे
थानेदार निज़ामत से जारी होनेकीबाबत
तहिक़ीक़ात कीगई तो मालूम हुवा कि
निज़ामत सवाईजेपुरमें कागज़ात केइ
जरायकी कोई किताब नहीं है - कि जि
सपरकागज़दर्ज होकर जारीहोता हैश्रोर
न तहित हुक्मतामील करने वाला अपने
दस्तखत औरतारीख़ तामील लिखताहै
श्रोरन नंबरइजरायकागज़ तहिरीरक
ताहे सिर्फ़ एक किताब एसी है कि जिसमें
रोज़मर्रा नाम उनअशख़ास के दर्ज होते
हैं कि जिनके नाम लिफ़ाफ़ा भेजाजाय
जिस्से कुछ मालूम नहीं होता कि उस
लिफ़ाफ़ा के अन्दर क्या२ कागज़ थे
श्रोरन इन्दुल तहिक़ीक़ात उस्से कुछ
पता चलसक्ता है कि कागज़ कबजारीहु
वा और जारी हुवा या नहीं -

चुनांचिमारफ़त सरदारान अपीलके
दीगर महकमात का हाल दरयाफ़्त कि
यागया कि वहां क्या अमल दरा मद
हैतो जवाब आया कि कारवाई इजराय

(۲۱)
(۳۹)

نے ایک تھانہ دار کی شکایت محکمۂ عالیہ
مین تحریر کی کہ تعمیل کے لئے
سمن تھانہ مین بھیجے گئے تھے مگر تاریخ
مقررہ تک تھانہ دار نے سمن تعمیل کر کے
واپس نہ بھیجے - نہ کچھ جواب تحریر
کیا -

بران محکمۂ عالیہ مین پروانہ موسومۂ
تھانہ دار نظامت سے جاری ہونیکی بابت
تحقیقات کی گئی تو معلوم ہوا کہ
نظامت سوائی جیپور مین کاغذات کے
اجرار کی کوئی کتاب نہین ہی - کہ جس
پر کاغذ درج ہو کر جاری ہوتا ہو اور
نہ تحت حکم تعمیل کرنے والا اپنے
دستخط اور تاریخ تعمیل لکھتا ہی
اور نہ نمبر اجرائے کاغذ تحریر کرتا ہی
صرف ایک کتاب ایسی ہی کہ جسمین
روزمرہ نام اون اشخاص کے درج
ہوتے ہین کہ جنکے نام لفافہ بھیجا جاییے
جس سے کچھ معلوم نہین ہوتا کہ اوس
لفافہ کے اندر کیا کیا کاغذ تھے -
اور نہ عند التحقیقات اوس سے کچھ
پتہ چل سکتا ہی کہ کاغذ کب جاری ہوا -
اور جاری ہوا یا نہین -

چنانچہ معرفت سرداران اپیل کے
دیگر محکمات کا حال دریافت کیا
گیا کہ وہان کیا عمل درآمد
ہی تو جواب آیا کہ کارروائی اجرائے

और जो महीने दो महीने की रुख़सत चाहे तो ब
दुन मुकम्मल इन्तज़ाम के रुख़सत देना मु
नासिब नहीं है और जो शख़्स कि धोका देकर
रुख़सत लेजावे जैसा कि जमा ख़र्च नवीस
अपीलन्ट ने किया कि अव्वल तो थोड़े दिनों की
रुख़सत ली और इस्टाम्प फ़रोश को अप
नी जगह काम करने के लिये तजवीज़ करके
पेश कर दिया - बाद अज़ां तातीलों में भी
रुख़सत पर रहा और बाद ख़तम तातीलों
के फिर और रुख़सत लेली और जो ऐवज़ी
पेश किया उसने जमा ख़र्च नवीसी के का
म की वाक़िफ़ीयत से इनकार किया उस
को कभी तनख़्वाह ऐयाम रुख़सत की
नहीं देनी चाहिये - और रुख़सत की
इत्तला बग़रज़ मंज़ूरी व इजराय हुक्म ब
नाम मोहतमिम ख़ज़ाना हमेशा महकमः
आलिया में आनी चाहिये -

१ नम्बर शुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
३१	४ मई सन १८९३ ई०

३

ख़ुलासा

हिदायत बाबत तरीक़ा इजराय काग़ज़ात मय नमूने रजिस्टर

४

मज़मून

एक मुक़द्दमः में नाज़िम सवाई जैपुर

اور جو مہینے دو مہینے کی رخصت چاہے تو بغیر
مکمل انتظام کے رخصت دینا مناسب
نہیں ہے - اور جو شخص کہ دھوکہ دیکر
رخصت لیجاوے جیسا کہ جمع خرچ نویس
اپیلنٹ نے کیا کہ اول تو تھوڑے دنوں کی
رخصت لی اور اسٹام فروش کو اپنی
جگہہ کام کرنے کے لئے تجویز کرکے
پیش کردیا - بعد ازاں تعطیلوں میں بھی
رخصت پر رہا اور بعد ختم تعطیلوں
کے پھر اور رخصت لیلی اور جو عوضی
پیش کیا اوس نے جمع خرچ نویسی کے کام
کی واقفیت سے انکار کیا اوس
کو کبھی تنخواہ ایام رخصت کی نہیں
دینی چاہئے اور رخصت کی اطلاع
بغرض منظوری و اجرائے حکم
بنام مہتمم خزانہ ہمیشہ محکمہ عالیہ
میں آنی چاہئے -

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۳۱	۴ مئی سنہ ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

ہدایت بابت طریقہ اجرائے کاغذات معہ نمونہ رجسٹر

۴

مضمون

ایک مقدمہ میں ناظم سوائی جیپور

(३०)

खज़ाना भेजा

खज़ाने से पांच रोज़ तक अहिलकारों को और दस रोज़ तक नायबों को तनखाह नहीं दी गई- चूंकि अहालियान खज़ाना और जमा खर्च नवीस अपील की इसमें गफ़लत है लिहाज़ा बाबत ग़फ़लत अहालियान खज़ाने के तो नकल हुक्म २३ मार्च सन १८९३ ई की सीगे कलक्टरी में दी गई - और बहुक्म ११ अप्रेल सन १८९३ ई सरदारान अपील को लिखा गया कि जमा खर्च नवीस को उन ऐयाम रुखसत की तनखाह दिलाना वाजिब नहीं है कि जिन ऐयाम में न खुद उसने काम अंजाम दिया और न उसके एवज़ने-

सरदारान अपील ने बज़रये कैफ़ियत २२ अप्रेल सं १८९३ ई के लिखा कि रुखसतों के बाबत अकसर दिक्कतें और उलझाव पेश आते रहते हैं और इस का कोई क़ायदा और दस्तूरुल अमल मुक़र्रिर नहीं है कि जिस पर अमल दरामद रक्खा जावे- एक मुफ़स्सिल हिदायत भिजवा दी जावे कि आयन्दा इसके इत्तबाय में रुखसतों की कार्रवाई हुवा करे-

जिस पर जवाब में सरदारान अपील को लिखा गया कि रुखसत हर हाल में मिल सकी है- लेकिन इन्तज़ाम काम का भी करना लाबुदी अमर है कि जिस्से हर्ज कार राज का वकूय में न आवे यह अमल थोड़े दिनों की ज़रूरी और इत्तफ़ाकी रुखसत की बाबत है-

(۳۰)

خزانہ بھیجا -

خزانہ سے پانچ روز تک اہلکاروں کو اور دس روز تک نائبوں کو تنخواہ نہیں دیگئی - چونکہ اہالیان خزانہ اور جمع خرچ نویس اپیل کی اسمین غفلت ہے - لہذا بابت غفلت اہالیان خزانہ کے تو نقل حکم ۲۳ - مارچ سنہ ۱۸۹۳ع کی صیغہ کلکٹری مین دیگئی - اور بحکم ۱۱ - اپریل سنہ ۱۸۹۳ع سرداران اپیل کو لکھا گیا کہ جمع خرچ نویس کو اون ایام رخصت کی تنخواہ دلانا واجب نہین ہے کہ جن ایام مین نہ خود اوس نے کام انجام دیا نہ اوسکے عوض نے -

سرداران اپیل نے بذریعہ کیفیت ۲۲ - اپریل سنہ ۱۸۹۳ع کے لکھا کہ رخصتونکی بابت اکثر دقتین اور اولجھاو پیش آتے رہتے ہین - اور اس کا کوئی قاعدہ اور دستورالعمل مقرر نہین ہے کہ جس پر عمل درامد رکھا جاوے - ایک مفصل ہدایت بھجوا دیجاوے کہ آیندہ اوسکے اتباع مین رخصتونکی کارروائی ہوا کرے -

جس پر جواب مین سرداران اپیل کو لکھا گیا کہ رخصت ہر حال مین مل سکتی ہے لیکن انتظام کام کا بھی کرنا لابدی امر ہے کہ جس سے حرج کار راج کا وقوع مین نہ آوے - یہ عمل تھوڑے دنونکی ضروری اور اتفاقی رخصت کی بابت ہے -

स्हतरामउद्दीनहरसह नायबान निज़ामत सवा
ईजैपुर सीग़े ज़ुडीशल ने वज़रयेरिपोर्ट १६मार्च
सन १८६३ शिकायतकी कि होलीकी तातीलों
से पहिले चिट्ठा तनख़्वाह दुमाहा जनवरी व फ़रवरी
सन १८६३ का तक़सीम हुवा और जुमले महकमा
त और नीज़ तक़रीबन निस्फ़ अमले निज़ामत ने त
नख़्वाह पाली मगर हमारी तनख़्वाह अब तक नहीं
मिली और उमूमन ऐसा ही तवक़्क़ुफ़ हमारी तक़सी
म तनख़्वाह में होता है अब तनख़्वाह दिलवाई जा
य और आयन्दा इन्तज़ाम फ़रमाया जावे -
चुनांचि इसका हाल अपील निज़ामत ख़ज़ा
ना से दरयाफ़्त किया गया तो ज़ाहर हुवा कि नि
ज़ामत से तो चिट्ठा २६ फ़रवरी सन १८९३ ई० को
अपील में भेज दिया गया था मगर अपील से दस
रोज़ के बाद ख़ज़ाने भेजा गया और देर यों हुई कि
कालूराम जमा ख़र्च नवीस अपील ने इब्तदाय १६
फ़रवरी सन १८९३ ई० से २६ फ़रवरी सन १८९३
ई० तक की रुख़सत ली और फिर जो होली की ताती
लें आईं उनमें भी रुख़सत पर रहा और जब ४ मा
र्च सन १८९३ ई० को तातीलें ख़तम हुईं तो दो दि
न यानी ५ व ६ मार्च सन १८९३ ई० की छुट्टी और
लेली - और कलयान नरायन इस्टाम्प फ़रोश
जिसको अपना ऐवज़ मुक़र्रिर कर गया था उसने
काम जमा ख़र्च नवीसी का कुछ नहीं किया बल्कि
तैयारी चिट्ठे से भी इन्कार कर गया अंजाम कार
जमा ख़र्च नवीस ७ मार्च सन १८९३ ई० को अपने
काम पर आया था और चिट्ठा तैयार करके ८ मार्च को

احترام الدین ہر سہ نائبان نظامت سوائی
جیپور صیغہ جوڈیشل نے بذریعہ رپورٹ ۱۶ مارچ
سنہ ۹۳ء شکایت کی کہ ہولی کی تعطیلوں
سے پہلے چٹھہ تنخواہ دو ماہہ جنوری و فروری
سنہ ۹۳ء کا تقسیم ہوا اور جملہ محکمات
اور نیز تقریباً نصف عملۂ نظامت نے
تنخواہ پالی مگر ہماری تنخواہ ابتک نہین
ملی اور عموماً ایسا ہی توقف ہماری تقسیم
تنخواہ مین ہوتا ہے - اب تنخواہ دلوائی
جائے اور آیندہ انتظام فرمایا جاوے -
چنانچہ اسکا حال اپیل نظامت خزانہ
سے دریافت کیا گیا تو ظاہر ہوا کہ
نظامت سے تو چٹھہ ۲۶ - فروری سنہ ۹۳ء کو
اپیل مین بھیجدیا گیا تھا مگر اپیل سے دس
روز کے بعد خزانہ بھیجا گیا اور دیر یون ہوئی کہ
کالورام جمعخرچ نویس اپیل نی ابتدائے ۱۶ -
فروری سنہ ۹۳ء سے ۲۶ فروری سنہ ۹۳ء
تک کی رخصت لی اور پھر جو ہولی کی تعطیلین
آئین اونمین بھی رخصت پر رہا اور جب ۴ -
مارچ سنہ ۹۳ء کو تعطیلین ختم ہوئین تو دو دن
یعنی ۵ - اور ۶ - مارچ سنہ ۹۳ء کی چھٹی اور
لیلی اور کلیان نراین اسٹام فروش
جسکو اپنا عوض مقرر کر گیا تھا اوس نے
کام جمعخرچ نویسی کا کچھ نہین کیا - بلکہ
تیاری چٹھہ سے بھی انکار کر گیا انجام کار
جمعخرچ نویس ۷ - مارچ سنہ ۹۳ء کو اپنے
کام پر آیا اور چٹھہ تیار کر کے ۸ - مارچ کو

ثانی کے لئے واپس بھیجا جائے تو وہی حاکم
بعد مزید تحقیقات تجویز کا مجاز ہے
مثل کا ماتحت میں بھیجنا خلاف قاعدہ ہے -

۴

مضمون

جو مقدمات کہ تجویز ثانی کے لئے محکمہ
عالیہ کونسل صیغۂ عدالتین سے اپیل مین
بھیجے جاتے ہین - اپیل سے بجنسہ نظامت مین یا
نظامت سے پاس نائب ناظم باوجودیکہ فیصلہ
اوس کا نہو بھیجدئے جاتے ہین - اسیطرح اپیل
سے عدالتین اور عدالت سے منصفی مین جاتے ہین -
یہ طریقہ بیضابطہ ہے -
قاعدہ کے بموجب جس حاکم کا فیصلہ کہ منسوخ ہوکر
تجویز ثانی کیلئے واپس بھیجا جاوے وہی حاکم اوسکی ضروری
تحقیقات کرکے مجدد تجویز کرنیکا مجاز ہے - اگر کوئی تحقیقات
معرفت گرداور یا تحصیلدار یا ناظم وغیرہ کرانی ضرور
سمجھے تو تحقیقات کراکے پھر بھی خود
تجویز مناسب صادر کرے -

١ نمبر شمار	٢ تاریخ منظوری
١٣٠	٢ - مئی ١٨٩٣ ع

(٣٠)

۳

خلاصہ

قاعدہ رخصت اہلکاران -

۴

مضمون

پنڈت سروپ کشن حکیم احمد علی خان

ज़ सानी के लिये वापिस भेजी जाय वुही हाकिम
बाद मज़ीद तहक़ीक़ात तजवीज़ का मजाज़ है
मिसल का मातहत में भेजना ख़िलाफ़ क़ायदे है

४

मज़मून

जो मुक़द्दमात कि तजवीज़ सानी के लिए हुक्मे
आलिया कौन्सल सीग़ः अदालतैन से अपील में
भेजे जाते हैं अपील में बजिन्सही निज़ामत में और
निज़ामत से पास नायब नाज़िम बावजूदे कि फ़ैसला
उसका न हो भेज दिये जाते हैं इसी तरह अपील से अदालत
में और अदालत से मुनसफ़ी में जाते हैं यह तरीक़ः बेज़ाब्तः
है क़ायदे के बमूजिब जिस हाकिम का फ़ैसला मंसूख़ होकर त
जवीज़ सानी के लिये वापिस भेजा जावे वुही हाकिम उसकी ज़रूरी
तहक़ीक़ात करके मुजद्दिद तजवीज़ करने का मजाज़
है अगर कोई तहक़ीक़ात मारफ़त गिरदावर या
तहसीलदार या नाज़िम वग़ैरः करानी ज़रूर
समझे तो तहक़ीक़ात कराके फिर भी ख़ुद त
जवीज़ मुनासिब सादिर करे-

१ नम्बरशुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
३०	२ मई सन १८९३ ई

३

ख़ुलासा

क़ायदा रुख़सत अहलकारान-

४

मज़मून

पंडित सरूप किशन हकीम अहमद अली ख़ां

लिस नहीं है और फिर अपनी राय यह लिखी
कि बेरूंजात के वास्ते यह कायदा जारी होना
मुनासिब है कि जिस गांव में पुलिस है वहां तो
पुलिस की शहादत होजानी चाहिये और जहां
पुलिस नहीं है वहां पटेल पटवारी की शहादत
मिस्ल पुलिस होजाया करे तो असलूबी कार
है किस लिये कि अगर पुलिस में इत्तलादी जा
वेगी और वहां से कारवाई होगी तो बरिन्दा
समन को भी दिक्कत होगी और पुलिस को भी
तवालत काम की होगी -

जिस पर जवाब में सरदारान अपील को लि
खा गया कि इस मुआमले को इस कदर तूल
देना और जो लोग बेरूंजात के इस अदूल हुक
मी से नावाकिफ़ हैं वाकफ़ियत पैदा कराना
क्या ज़रूर है शहर में अमूमन ऐसी कारवाई
नहीं होती शाज़नादिर कभी ऐसा इत्तफ़ाक
होजाना होगा बरवक्त चस्पां करने समन के
मकान मुद्दायलह पर वहां के बाशिन्दगान
मकान में से कोई अपनी गवाही बाबत चस
पा करने समन के न करे तो पुलिस के सिपाही
की गवाही करादी जाया करे -

१	२
नम्बर शुमार	तारीख मंज़ूरी
२९	२९ अपरेल सन १८९३

(२९)

३

खुलासा

जिस हाकिम का फैसला मंसूख होकर तजवी

پولیس نہیں ہے - اور پھر اپنی راے یہ لکھی
کہ بیرونجات کیواسطے یہ قاعدہ جاری ہونا
مناسب ہے کہ جس گاؤں میں پولیس ہے وہاں تو
پولیس کی شہادت ہوجانی چاہئے اور جہاں
پولیس نہیں ہے وہاں پٹیل پٹواری کی شہادت
مثل پولیس ہوجایا کرے تو اسلوبی کار
ہے کسلئے کہ اگر پولیس میں اطلاع دیجاوے
گی اور وہاں سے کارروائی ہوگی تو برندہ
سمن کو بھی دقت ہوگی اور پولیس کو بھی
طوالت کام کی ہوگی -

جس پر جواب میں سرداران اپیل کو
لکھا گیا کہ اس معاملہ کو اسقدر طول
دینا اور جو لوگ بیرونجات کے اس عدول
حکمی سے ناواقف ہیں واقفیت پیدا کرانا
کیا ضرور ہے شہر میں عموماً ایسی کارروائی
نہیں ہوتی شاذ نادر کبھی ایسا اتفاق
ہوجاتا ہوگا بروقت چسپاں کرنے سمن کے
مکان مدعاعلیہ پر وہاں کے باشندگان
مکان میں سے کوئی اپنی گواہی بابت
چسپاں کرنے سمن کے نکرے تو پولیس کے سپاہی
کی گواہی کرادی جایا کرے -

۲	۱
تاریخ منظوری	نمبر شمار
۲۹-اپریل ۱۸۹۳ء	۲۹

(۲۹)

۳

خلاصہ

جس حاکم کا فیصلہ منسوخ ہو کر تجویز

३

खुलासा

ज़मीमे हिदायत नम्बरी (१८) मजरयह २२ फ़रवरी सन १८९३ ई० बाबत चस्पां करने समन व कराने गवाही के-

४

मज़मून

इस्तस्वाब सरदारान अपील पर २२ फ़रवरी सन १८९३ ई० को यह हिदायत जारी हुई थी कि बसूरत चस्पां किये जाने समन के जबरन किसी की गवाही कराना तो दुरुस्त नहीं बलकि एसा मुनासिब है कि जिस पुलिस के हलके में वह समन चस्पां किया जावे बसूरत न गवाही करने अहलि मुहल्ला के चस्पां कुनिन्दा समन को मुनासिब है कि उस पुलिस पर जाकर इत्तला करे और अहाली पुलिस की शहादत से समन चस्पां करके अहाली पुलिस की शहादत लिखवा लेवे-

सरदारान अपील ने बाद इजराय हिदायत मज़कूर फिर ३० मार्च सन १८९३ ई० को बहवाले तहरीर निज़ामत दौसा और सांभर और सवाई जैपुर यह लिखा कि बसूरत न करने इत्तला याबी के बेरूंजात में थानेदार और मुहर्रिर को इत्तला दी जावेगी और मुहर्रिर और थानेदार को बरिन्दा समन के हमराह जाना होगा तो इसमें बकार सरकार हर्ज होगा और तवालत कार होगी पस बेरूंजात के वास्ते भी क़ायदा मुकर्रिर होना चाहिये क्योंकि बेरूंजात में हर गांव में पु

۳

خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری (۱۸) مجریہ ۲۲ فروری سنہ ۱۸۹۳ء بابت چسپان کرنے سمن و کرانے گواہی کے -

۴

مضمون

استصواب سرداران اپیل پر ۲۲ فروری سنہ ۱۸۹۳ء کو یہ ہدایت جاری ہوئی تھی کہ بصورت چسپان کئے جانے سمن کے جبراً کسی کی گواہی کرانا تو درست نہین بلکہ ایسا مناسب ہے کہ جس پولیس کے حلقہ مین وہ سمن چسپان کیا جاوے بصورت نہ گواہی کرنے اہل محلہ کے چسپان کنندہ سمن کو مناسب ہے کہ اوس پولیس پر جاکر اطلاع کرے اور اہالی پولیس کی شہادت سے سمن چسپان کرکے اہالی پولیس کی شہادت لکھوالیوے -

سرداران اپیل نے بعد اجرائے ہدایت مذکور پھر ۳۰ مارچ سنہ ۱۸۹۳ء کو بحوالہ تحریر نظامت دوسہ اور سانبھر اور سوائی جیپور یہ لکھا کہ بصورت نکرنے اطلاعیابی کے بیرونجات مین تھانہ دار اور محرر کو اطلاع دیجاویگی اور محرر اور تھانہ دار کو برندہ سمن کی ہمراہ جانا ہوگا تو اسمین بکار سرکار حرج ہوگا اور طوالت کار ہوگی پس بیرونجات کیواسطے بھی قاعدہ مقرر ہونا چاہئے - کیونکہ بیرونجات مین ہر گانو

इसके कितई बन्दकरने के लिये हिदायत होनी चाहिये और जोकदीमीदस्तूरबाजाबतः ख़तूत बफ नामा और पुन्यपत्र और रहिननामा के वास्ते नद्धपीका कायदा मुकर्रिरहै वहबदस्तूरजारी रहना चाहिये अगर रजिस्टरी असनाद की इजाज़त आम दी गई तो इससे कोई नतीजा अहसन पैदा नहीं होगा और जो मुद्दत दराज़ से खतदस्तों की इज़्ज़त और ऐतबार आम अशखास में होरहे वह अग़लब कि कम होजावेगा और बवक्त पेश होने दरखास्त रजस्टरी के अगर इश्तहार जारी होगा तो हज़ारहा मुकद्दमात बसीगे मुतफ़रिक उज़रदारियों के दायर हुवा करेंगे और अगर बग़ैर इजराय इश्तहार के रजस्टरी फ़िल फ़ौर कीजावेगी तो किते नज़र इसके कि बाज़ मरतबे अब भी नाजायज़ तौर पर रजस्टरियां हुई हैं लोगों को हुकमन मौका नाजायज़ कार्रवाई का मिलेगा और दरहालेक रजस्टरी के पेश होने के वक्त उज़रदार अपनी उज़रदारी भी पेश करेंगे तो अलबत्त बहुत अफ़सोस की बात होगी कि उन की उज़रदारी न सुनी जावेगी और अगर सुनी जावेगी तो तजवीज़ अदम इजराय इश्तहार की इस सूरत में नाकारा तसव्वुर होगी–	اسکے قطعی بند کرنے کیلئے ہدایت ہونی چاہئے اور جو قدیمی دستور با ضابطہ خطوط بیعنامہ اور پن پتر اور رہن نامہ کے واسطے خط چھپی کا قاعدہ مقرر ہے وہ بدستور جاری رہنا چاہئے - اگر رجسٹری اسناد کی اجازت عام دیگئی تو اس سے کوئی نتیجہ احسن پیدا نہیں ہوگا - اور جو مدت دراز سے خط چھپی کی عزت اور اعتبار عام اشخاص میں رہا ہے وہ اغلب کہ کم ہوجائیگا اور بروقت پیش ہونے درخواست رجسٹری کے اگر اشتہار جاری ہوگا تو ہزارہا مقدمات بعنیہ متفرق عذرداریوں کے دائر ہوا کرینگے اور اگر بلا اجرائے اشتہار کے رجسٹری فی الفور دیگی تو قطع اسکے کہ بعض مرتبہ اب بھی ناجائز طور پر رجسٹریاں ہوئی ہیں لوگوں کو حکماً موقع ناجائز کارروائی کا ملیگا اور درحالیکہ رجسٹری کے پیش ہونیکے وقت عذردار اپنی عذرداری بھی پیش کرینگے تو البتہ بہت افسوس کی بات ہوگی کہ انکی عذرداری نہ سنی جاوے گی اور اگر سنی جاوے گی تو تجویز عدم اجرائے اشتہار کی اس صورت میں ناکارہ تصور ہوگی -

१	२	۲	۱
नम्बरशुमार	तारीख़ मंज़ूरी	تاریخ منظوری	نمبر شمار
२८	२६ अप्रेल सन १८९३	۲۶ - اپریل ۱۸۹۳ء	۲۸

(۲۵) (२६)

لہذا گیرائی کو لکھا گیا کہ بطور تعمیل آئندہ
کو بند کرو اور جو آسامی جس محکمہ مین
بھیجی جاوے اوسکا صاف حکم بنام ناظر فوجداری
بنا بر بھیجدینے محکمہ مذکور کے جاری کیا
جائے تاکہ وہانسے سیدھی اوس محکمہ مین بحراست
ملازمان حوالات فوجداری بلا توقف
پہنچ جائے اور بلا سبب گیرائی مین ہوکر پھیر اوس
محکمہ مین اسامی نجایا کرے - اور جو عذر کہ
پہرائی کرتے ہین انکو موقع ایسے عذر کرنیکا نہ ملے

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۲۷	۲۶ - اپریل سنہ ۹۳ع

(۲۷) (२७)

۳

خلاصہ

علاوہ بیعنامہ اور پٹہ اور رہن نامہ کے
جسکی خط چھپی کا قاعدہ جاری ہی - دیگر
وثیقجات کی رجسٹری بھجاوے -

۴

مضمون

چونکہ خط چھپی مکانات کا قاعدہ تو راج مین
ہمیشہ سے جاری ہی بالفعل علاوہ امن خط چھپی
مکان کے اجارہ نامہ اقرار نامہ اور دیگر
تمسک اور دستاویزین بھی لوگ رجسٹری کرانے
لگے حالانکہ ایسی رجسٹری خط چھپی سے جدا
ایک امر بطور تصدیق مقر کے ہی اور عدالت
مین بغیر حکم اور ہدایت محکمہ عالیہ کے
کارروائی رجسٹری وثیقجات کی جاری کردیگئی

लिहाज़ा गिराई को लिखा गया कि यह नरीका आय
न्दा को बन्द करो और जो आसामी जिस महकमे में
भेजी जावे उसका साफ़ हुक्म बनाम नाज़िर फ़ौज
दारी बिना बर भेजदेने महकमे मज़कूर के जारी कि
या जाय ताकि वहां से सीधे उस महकमे मे बहिरास
त मुलाज़मान हवालात फ़ौजदारी बिला तवक्कुफ़ प
हुंच जाय और बिला सबब गिराई में होकर फिर उस
महकमे में आसामी न जाया करे- और जो उज़्र कि प
हराती करते हैं उनको मोका ऐसे उज़्र करने का न मिले

१	२
नम्बर शुमार	तारीख मंज़ूरी
२७	२६ अप्रेल सन १८९३

३

खुलासा

अलावे बये नामा और पुन्यपत्र और रहिन नामा के
जिसकी खत छपी का कायदा जारी है दीगर व
सीकेजात की रजस्टरी न की जावे-

४

मज़मून

चूं कि खत छपी मकानात का कायदा तो राज में
हमेशे से जारी है बिलफ़ेल अलावे इस खत छपी म
कान के इजारा नामा इकरार नामा और दीगर
तमस्सुक और दस्तावेजें भी लोग रजस्टरी कराने
लगे हालांकि ऐसी रजस्टरी खत छपी से जुदा ए
क अमर बतौर तसदीक मुकिर के है और अदाल
त में बगैर हुक्म और हिदायत महकमे आलया के
कारवाई रजस्टरी व सीकेजात की जारी कर दी गई

(२५)

औरजुमले नाज़मों को यह ताकीद लिखी गई कि जिन लोगों को सज़ायवेद दीजावे उनकी कौम और तन्दरुस्ती व पेशा वगैरह पर बमूजिब हिदायात मुहकमे ख़्याल पूरे तौर पर गौर कर लिया जावे —

اور جملہ ناظموں کو یہ تاکید لکھی گئی - کہ جن لوگون کو سزائے بید دی جاوے اونکی قوم اور تندرستی و پیشہ وغیرہ پر بموجب ہدایات محکمہ خیال پورے طور پر غور کرلیا جاوے -

१	२
नम्बर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
२६	१४ अपरेल सन १८९३ ई

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۲۶	۱۴ اپریل ۱۸۹۳ء

(२६)

३

खुलासा

क़ायदा चालान आसामियान अज़ महकमा गीराई बमहक्मात दीगर —

۳

خلاصہ

قاعدہ چالان آسامیان از محکمہ گیرائی بہ محکمات دیگر -

४

मज़मून

हस्बब्यान भगवानदास नाज़िर गिराई से दरयाफ़्त हुवा कि आसामियान मुतअल्लिक़े गीराई हवालात फ़ौजदारी में रहते हैं और जब गिराई से निज़ामत सवाई जैपुर या फ़ौजदारी वगैरह में भेजे जाने का हुक्म होता है तो नाज़िर गीराई बज़रये रुक्का नाज़िर फ़ौजदारी से अव्वल गिराई में आसामी माख़ूज़ को बुलाता है और फिर जहां चालान करने का हुक्म होता है वहां बहिरासत सिपाहयान पहिरा भेजी जाती है —

चूंकि यह अमल दरामद निहायत नाक़िस था कि जिस आसामी के वास्ते चालान का हुक्म गीराई से लिखा जावे और फिर उसको नाज़िर गिराई अव्वल महक्मे गीराई में बुलावे और फिर गिराई से जहां चालान करना है वहां चालान करे इसमें तवालत कार और आसामी की हैरानी है

۴

مضمون

حسب بیان بھگوانداس ناظر گیرائی ایسا دریافت ہوا کہ آسامیان متعلقہ گیرائی حوالات فوجداری مین رہتی ہین اور جب گیرائی سے نظامت سوائی جیپور یا فوجداری وغیرہ مین بھیجے جانیکا حکم ہوتا ہی تو ناظر گیرائی بذریعہ رقعہ ناظر فوجداری سے اول گیرائی مین آسامی ماخوذ کو بلاتا ہی اور پھر جہان چالان کرنیکا حکم ہوتا ہی وہان بحراست سپاہیان پہرہ بھیجی جاتی ہی -

چونکہ یہ عمل درامد نہایت ناقص تھا کہ جس آسامی کے واسطے چالان کا حکم گیرائی سے لکھا جاوے اور پھر اوس کو ناظر گیرائی اول محکمہ گیرائی مین بلا وے اور پھر گیرائی سے جہان چالان کرنا ہی وہان چالان کرے اسمین طوالت کار اور آسامی کی حیرانی ہی

(۲۵)
(۲۶)

۴

مضمون

فوجداری نے نقل کیفیت نظامت دوسہ کی اپنی کیفیت مورخہ ۲۳ - جنوری سنہ ۱۸۹۳ء کے ساتھ بھیجکر لکھا کہ بموجب ہدایت محکمہ عالیہ نمبری (۸۸) مورخہ ۲۸ - جون سنہ ۱۸۹۰ء جملہ نظامتون سے مقدمات خفیف و سنگین منظوری کیلئے یہان آتے ہین اونمین بعض بعض خفیف مقدمات ایسے بہت کم ہوتے ہین کہ جنمین ناظم لوگ سزا ئے بید کی تجویز کرکے منظوری کیلئے مثلین مع آسامیون کے یہان بھیجتے ہین اب ناظم جی درخواست کرتے ہین کہ پیشہ ور او ٹھائی گیرون اُچکون کو جب بید کی سزا نظامت سے دیجاوے مثل اور آسامی فوجداری مین منظوری کیواسطے نجایا کرے تو بہتر ہوگا - اور اس درخواست کی وجوہ بھی اپنی کیفیت مین درج کین چونکہ یہ درخواست نظامت کی قابل منظوری کے ہے کسلئے کہ جب نظامتون کو اختیارات سزاے بید کے دئے گئے ہین تو اوچکہ گری کے خفیف مقدمات مین سزاے بید کے لئے مجرمون کا یہان آنا غیر ضروری معلوم ہوتا ہے -

لہذا فوجداری کو لکھدیا گیا کہ جو ہدایت نمبری (۸۸) محررہ سنہ ۱۸۹۰ء ہے - سو متعلق خفیف مقدمات کے نہین ہے پس ایسے مقدمات مین تجویز کی منظوری کیلئے فوجداری مین امثلہ کا آنا بشرطیکہ حد اختیار نظامت مین ہو ضرور نہین -

४

मज़मून

फ़ौजदारी जी ने नक़ल कैफ़ियत निज़ामत दौसा की अपनी कैफ़ियत मवर्रखे २३ जनवरी सन १८९३ ई० के साथ भेजकर लिखा कि बमूजिब हिदायत महकमे आलया नम्बरी (८८) मवर्रखे २८ जून सन १८९० जुमले निज़ामतों से मुक़द्दमात खफ़ीफ़ व संगीन मंजूरी के लिये यहां आते हैं उनमें बाज़ बाज़ खफ़ीफ़ मुक़द्दमात ऐसे बहुत कम होते हैं कि जिनमें नाज़िम लोग सज़ाय बेद की तजवीज़ करके मंजूरी के लिये मिसलें मय आसामियों के यहां भेजते हैं - अब नाज़िम जी दौसा दरख़्वास्त करते हैं कि पेशेवर उठाईगीरों उचक्कों को जब बेद की सज़ा निज़ामत से दी जावे - मिस्ल और आसामी फ़ौजदारी में मंज़ूरी के वास्ते न जाया करें तो बहतर होगा और इस दरख़्वास्त की वजूह भी अपनी कैफ़ियत में दर्ज की -

चूंकि यह दरख़्वास्त निज़ामत की क़ाबिल मंज़ूरी के है किसलिये कि जब निज़ामतों को अख़्तियारात सज़ाय बेद के दिये गये हैं तो उचक्केगरी के खफ़ीफ़ मुक़द्दमात में सज़ाय बेद के लिये मुज्रिमों का यहां आना गैर ज़रूरी मालूम होता है -

लिहाज़ा फ़ौजदारी को लिख दिया गया कि जो हिदायत नम्बरी (८८) मजरयः सन १८९० ई० है सो मुतअल्लिक़ खफ़ीफ़ मुक़द्दमात के नहीं है पस ऐसे मुक़द्दमात में तजवीज़ की मंज़ूरी के लिये फ़ौजदारी में अमसला का आना बशर्ते कि हद्द अख़्तियार निज़ामत में हो ज़रूर नहीं -

(१३४)
(३४)

में से जो लोग कि बसबब बदकिरदारी मुफ़क़ूद या मा
खूज़ हो जाते हैं अक्सर उनमें से फ़रारी अख़्तियार
कर लेते हैं लिहाज़ा तजवीज़ तदारुक जारी नहीं हो
सकती न जुरमाना वसूल हो सकता है और इस सबब
से इन्तज़ाम में खलल पड़ता है और बाज़ मरतबे इ
सही तरह से बड़े बड़े मुजरिम सज़ा से महफ़ूज़ रहि
जाते हैं ज़मानत उन की कभी होती है और कभी न
हीं होती इस वास्ते जनरल सुपरंडंट को इसके इन्तज़ाम के
वास्ते लिखा गया तो उन्होंने एक मसव्विदा ज़मा
नत का तैयार करके भेजा - चुनांचि उसको देखा ग
या तो ऐसा ज़मानत नामा जिसमें तादाद ज़र मुन्द
र्ज हो और ज़ामिन मोतबिर हो बरवक़्त नकरूरी अ
हिलकार के लेना मुनासिब है और जिन की ऐसी
ज़मानत नहीं ली गई उन से भी हस्ब दरख़्वास्त गि
राई लेना वाजिब है -

पतरोलान और मुहर्रिरान थाने से २००) की और
अफ़सरान थाने से ५००) की और डिपुटी सुप॰ इन्टान
से १०००) की और उसमें शर्त इस बात की दर्ज होनी
चाहिये कि ऐयाम मुलाज़मत में और बाद बरख़ास्त
गी के तीन माह तक हाज़िर कर देने के ज़िम्मेवार
रहेंगे वरने ज़र ज़मानत अदा करेंगे +

ہین سے جولوگ کہ بسبب بدکرداری مفقود یا
ماخوذ ہوجاتے ہین اکثر انہین سے فراری اختیار
کرلیتے ہین لہذا تجویز تدارک جاری نہین
ہوسکتی نہ جرمانہ وصول ہوسکتا ہی اور اس سبب
سے انتظام مین خلل پڑتا ہی اور بعض مرتبہ
اسی طرح سے بڑے بڑے مجرم سزا سے محفوظ
رہجاتے ہین ضمانت اونکی کبھی ہوتی ہی اور کبھی
نہین ہوتی اسواسطے جنرل سپرنٹنڈنٹ کو اسکے انتظام
کیواسطے لکھا گیا تو اونھون نے ایک مسودہ ضمانت
کا تیار کرکے بھیجا - چنانچہ اوس کو دیکھا
گیا تو ایسا ضمانت نامہ جسمین تعداد زر مندرج
ہو اور ضامن معتبر ہو بروقت بھرتی
اہلکار سے لینا مناسب ہی اور جنکی ایسی
ضمانت نہین لی گئی اون سے بھی حسب درخواست
گیرائی لینا واجب ہی -

پٹرولان اور محرران تھانہ سے ماری کی اور
افسران تھانہ سے صاری کی اور ڈپٹی سپرنٹنڈنٹان
سے الف کی اور اوسمین شرط اسبات کی درج ہونی
چاہیئے کہ ایام ملازمت مین اور بعد برخاستگی
کے تین ماہ تک حاضر کردینے کے ذمہ دار
رہینگے ورنہ زر ضمانت ادا کرینگے -

(२५)
(२५)

१ नम्बरशुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
२५	१३ अप्रेल सन १८९३

۱ نمبرشمار	۲ تاریخ منظوری
۲۵	۱۳ - اپریل سنہ ۱۸۹۳ء

३

ख़ुलासा

ज़मीमे हिदायत नम्बरी ८८ मजरियह २८ जून सन १८९०ई॰ दरबाब सज़ाय बेद -

۳

خلاصہ

ضمیمہ ہدایت نمبری ۸۸ مجریہ ۲۸ - جون سنہ ۱۸۹۰ء درباب سزاے بید -

(२३)

और इसी तरह अदालत के मुक़दमा
त में भी कार्रवाई होती है - मगर यह त
रीक़ः ठीक नहीं क्योंकि यह तजवीज़ क़ै
द व रिहाई व जुरमाने की मुजव्विज़े सर
दारान अपील नहीं है बल्कि फ़ौजदारी
अदालत निज़ामत की होती है - अगर
महकमः मातहेत की तजवीज़ के ज़िकर मे
यह तशरीह सज़ा वग़ैरहः लिख दीजा
वे तो मुनासिब है और अपनी तजवीज़
में सिर्फ़ यह लिखना काफ़ी है कि तजवी
ज़ मातहेत क़ाबिल बहाली के है और मुरा
फ़ा अपीलांट क़ाबिल नामंज़ूरी के - स
रदारान अपील और हुक्काम मातहेत को
तामील के वास्ते लिखा गया -

(२४)

१ नंबर शुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
२४	५ अपरेल सन १८९३

३

ख़ुलासा

क़वायद अख़्ज़ ज़मानत मुलाज़मान पु
लिस मुतल्लिक़े गीराई -

४

मज़मून

तक़र्रुरी मुलाज़मान पुलिस की गीराई की
दरख़्वास्त पर मंज़ूर होती है और हंगाम तजवीज़ त
क़र्रुरी सब बातों का इत्मीनान कर लेना ज़िम्मे
जनरल सुपरंडन्ट के होता है लेकिन इस

(۲۳)

اور اسیطرح عدالت کے مقدمات
مین بھی کارروائی ہوتی ہے - مگر یہ
طریقہ ٹھیک نہین - کیونکہ یہ تجویز قید
ورہائی وجرمانہ کی مجوزہ سرداران
اپیل نہین ہی - بلکہ فوجداری
عدالت نظامت کی ہوتی ہی - مگر
محکمہ ماتحت کی تجویز کے ذکر مین
یہ تشریح سزا وغیرہ لکھدی جاوے
تو مناسب ہے - اور اپنی تجویز
مین صرف یہ لکھنا کافی ہے کہ تجویز
ماتحت قابل بحالی کے ہے اور مرافعہ
اپیلانٹ قابل نامنظوری کے
سرداران اپیل اور حکام ماتحت کو
تعمیل کے واسطے لکھا گیا -

(۲۴)

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۲۴	۵ - اپریل ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

قواعد اخذ ضمانت ملازمان پولیس
متعلقہ گیرائی -

۴

مضمون

تقرری ملازمان پولیس کی گیرائی کی
درخواست پر منظور ہوتی ہی اور ہنگام تجویز
تقرری سب باتون کا اطمینان کرلینا
ذمہ جنرل سپرنٹنڈنٹ کے ہوتا ہی لیکن اس

کے ہین- اسلئے آیندہ کے لئے ہدایت جاری کیجاتی ہے کہ چیلہ خواصون کی گود نشینی کے مقدمات عدالت مین نہ سماعت کئیے جایا کرین-

ان لوگون کو واجب ہے کہ اپنے بڑے کے افسر کی معرفت اپنے صیغہ کلکٹری مین درخواست کیا کرین پھر وہان سے جو کچھ واجب اور مناسب ہوگا رائے ظاہر کیجایا کرے گی-

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۲۳	۴- اپریل ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

جب مرافعہ نامنظور کیا جائے تو صرف نامنظوری مرافعہ ہی حکم مین لکھنی کافی ہے تجویز ماتحت کا اعادہ حکم مین نکیا جائے

۴

مضمون

محکمہ اپیل کے فیصلہ جات کے دیکھنے سے معلوم ہوا کہ سرداران اپیل جن مقدمات کے مرافعہ کو نامنظور کرتے ہین اور تجویز ماتحت کو بحال رکھتے ہین- روبکار اخیر مین بعد تحریر وجوہات ثبوت و نامنظوری مرافعہ کے یہ بھی لکھدیتے ہین کہ فلان فلان ملزم اس اس قدر قید رہین اور اس اس قدر جرمانہ دین فلان فلان رہا کئیے جاوین-

के हैं- इस लिये आयंदः के लिये हिदायत जारी की जाती है कि चेले ख़्वासों की गोदनशीनी के मुक़द्दमात अदालत में न समाअत किये जाया करें-

इन लोगों को वाजिब है कि अपने बड़े के अफ़सर की मारफ़त अपने सीग़े कल्क्टरी में दरख़्वास्त किया करें फिर वहां से जो कुछ वाजिब और मुनासिब होगा रायज़ाहर की जाया करेगी-

१ नंबर शुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
२३	४ अपरैल सन् १८९३ ई॰

३

खुलासा

जब मुराफ़ा नामंज़ूर किया जाय तो सिर्फ़ नामंज़ूरी मुराफ़ा ही हुक्म में लिखनी काफ़ी है तजवीज़ मातहत का अआदा हुक्म में न किया जाय-

४

मज़मून

महकमे अपील के फ़ैसले जात के देखने से मालूम हुआ कि सरदारान अपील जिन मुक़द्दमात के मुराफ़े को नामंज़ूर करते हैं और तजवीज़ मातहत को बहाल रखते हैं, रूबकार अख़ीर में बाद तहरीर वजूहात सबूत व नामंज़ूरी मुराफ़े के यह भी लिख देते हैं कि फ़ुलां२ मुलज़िम इस२ क़दर क़ैद रहें- और इस इस क़दर जुर्माना दें फ़ुलां फ़ुलां रिहा किये जावें-

१	२
नंबरशुमार	तारीख़ मंज़ूरी
२२	१६ मार्च सन् १८९३ ई

३

खुलासा

चेले खवासों की गोद नशीनी के मुक़द्दमात अदालत में समाअत न किये जावें यह लोग मारफ़त अपने अफ़सर बेड़ा के सीग़े कल्करी में दर्ख़ास्त किया करें-

४

मज़मून

आज कल ऐसा अमल जारी हो रहा है कि जब कोई खवास चेला जीते जी गोद लेता है तो दीगर हक़दार दुश्मनआ गोद व ग़ैरः की नालिश मदायर किया करते हैं-अगर कोई इन लोगों में से फ़ौत हो जाता है तो जो शख़्स उस का मुतवन्ना होता है वह सारटी फ़िकट की दरख़्वास्त पेश किया करता है-दीगर कसान की उज़रदारयां पेश होती हैं और अदालत से हस्ब मिक़्तज़ाय ज़ाब्ता तजवीज़ होती हैं लेकिन चूंकि यह फ़िरक़: ख़ास ख़िदमत बंदगान आली मुतआली जी दाम हशमतहुम व इक़बालहुम के लिये मुक़र्रिर है-और उनका रखना न रखना लायक़ मुतसव्विर करना न करना मरज़ी वाला पर मुनहसिर है और नीज़ इनके कार मुतअल्लिक़े निहायत नाज़ुक ज़िम्मेवारी

۲	۱
تاریخ منظوری	نمبر شمار
۱۶-مارچ ۱۸۹۳ع	۲۲

(۲۲)
(२२)

۳

خلاصہ

چیلہ خواصون کی گود نشینی کے مقدمات عدالت مین سماعت نہ کئے جاوین- یہ لوگ معرفت اپنے افسر بیڑہ کے صیغہ کلکٹری مین درخواست کیا کرین-

۴

مضمون

آجکل ایسا عمل جاری ہو رہا ہے کہ جب کوئی خواص چیلہ جیتے جی گود لیتا ہے تو دیگر حقدار اعتناع گود وغیرہ کی نالشات دائر کیا کرتے ہین- اگر کوئی ان لوگون مین سے فوت ہو جاتا ہے تو جو شخص اوس کا متبنے ہوتا ہے وہ سرٹیفکیٹ کی درخواست پیش کیا کرتا ہے- دیگر کسان کی عذرداریان پیش ہوتی ہین- اور عدالت سے حسب مقتضائے ضابطہ تجویزین ہوتی ہین- لیکن چونکہ یہ فرقہ خاص خدمت بندگانعالی متعالی جی دام حشمتہم واقبالہم کے لئے مقرر ہے- اور اونکا رکھنا نہ رکھنا لائق متصور کرنا نہ کرنا مرضی والا پر منحصر ہے- اور نیز ان کے کار نہایت نازک ذمہ داری

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری	१ नंबरशुमार	२ तारीख मंज़ूरी
۲۱	۱۲- مارچ سنہ ۱۸۹۳ء	२१	११ मार्च सन १८९३ ई०

(۲۱) (२१)

۳
خلاصہ

باپ بیٹے کیطرفسے اور بیٹا باپ کیطرفسے بلا مختار نامہ کے کسی مقدمہ مین جوابدہی نہین کر سکتا۔

३
खुलासा

बाप बेटेकी तरफ़से और बेटा बापकी तरफ़से विला मुख़्तार नामे के किसी मुक़द्दमे में जवाबदिही नहीं करसकता-

۴
مضمون

ناظم جی سانبھر نے سرداران اپیل سے استصواب کیا تھا کہ باپ کیطرفسے بیٹا اور بیٹے کیطرف سے باپ کسی مقدمہ مین جوابدہی کرے تو مختار نامہ چاہیئے یا نہین۔

سرداران اپیل نے اپنی رائے مین لکھا کہ بلا مختارنامہ باپ کی جانب سے بیٹا اور بیٹے کیطرفسے باپ پیروی نہین کر سکتا ہے۔ اور پھر یہان سے اس بارہ مین استصواب کیا۔

چونکہ درحقیقت بیٹا باپ کی طرف سے اور باپ بیٹے کی طرف سے کسی مقدمہ مین بلامختارنامہ جوابدہی نہین کر سکتا۔

لہذا جواب مین منظوری سرداران اپیل کو لکھی گئی۔

४
मज़मून

नाज़िमजी सांभर ने सरदारान अपील से इस्तस्वाब किया था कि बाप की तरफ़ से बेटा और बेटे की तरफ़ से बाप किसी मुक़द्दमे में जवाब दिही करे तो मुख़्तार नामा चाहिये या नहीं-

सरदारान अपीलने अपनी राय में लिखा कि बिला मुख़्तार नामा बाप की जानिब से बेटा और बेटे की तरफ़ से बाप पैरवी नहीं करसक्ता है और फिर यहांसे इसबारे में इस तस्वाब किया-

चूंकि दरहक़ीक़त बेटा बापकी तरफ़ से और बाप बेटेकी तरफ़ से किसी मुक़द्दमे में विला मुख़्तार नामा जवाब दिही नहीं करसक्ता-

लिहाज़ा जवाब में मंज़ूरी सरदारान अपील को लिखी गई-

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۲۰	۵ - مارچ ۱۸۹۳ء

(۲۰)
(२०)

۳
خلاصہ

ہدایت درباب مقام نالش -

۴
مضمون

ناظم جی دوسہ نے لکھا کہ اکثر ایسا ہوتا ہے کہ فریقین رہنے والے تو ایک نظامت کے ہوتے ہین - مگر دوسری نظامت مین جاکر نالش کرتے ہین -

اور چاہتے ہین کہ ایک ہدایت اسباب مین جاری ہونا چاہئیے -

چونکہ دائری مقدمہ کے لئے تین ۳ صورتین مقرر ہین -

(۱) ایک تو اوس علاقہ کی عدالت مین جہان مدعا علیہ کی سکونت ہو -

(۲) دوسرے اوس علاقہ کی عدالت مین جہان مدعا علیہ کی جائداد ہو -

(۳) تیسرے اوس علاقہ کی عدالت مین جہان لین دین ہوا ہو -

لہذا ناظم جی کو جواب لکھا گیا کہ بموجب ان صورتون کے سماعت مقدمات کی کرنی چاہئیے -

---

१ नंबर शुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
२०	५ मार्च सन् १८९३ ई.

३
ख़ुलासा

हिदायत दरबाब मुक़ाम नालिश

४
मज़मून

नाज़िमजी दोसा ने लिखा कि अकसर ऐसा होता है कि फ़रीक़ैन रहने वाले तो एक निज़ामत के होते हैं मगर दूसरी निज़ामत में जाकर नालिश करते हैं-

और चाहते हैं कि एक हिदायत इसबाब में जारी होना चाहिये-

चूंकि दायरी मुक़द्दमे के लिये तीन सूरतें मुक़र्रिर हैं-

(१) एक तो उस इलाक़े की अदालत में जहां मुद्दा अलैह की सकूनत हो-

(२) दूसरे उस इलाक़े की अदालत में जहां मुद्दा अलैह की जायदाद हो-

(३) तीसरे उस इलाक़े की अदालत में जहां लेन देन हुआ हो

लिहाज़ा नाज़िमजी को जवाब लिखा गया कि बमूजिब इन सूरतों के समाअत मुक़द्दमात की करनी चाहिये-

नक़्शा भेजे जाने नाशउक़ात दगान चाह वास्ते इत्तलाह के शफ़ाख़ाने जात राज सवाई जैपुर में अज़ तरफ़ मुतअल्लिक़े निज़ामत व शफ़ाख़ाना

नाम मग़रूक़ा ब क़ैद वल्दियत व क़ौमियत व सकूनत जहां तक दर्याफ़्त हुआ हो-	१	١	نام مغروق بقید ولدیت وقومیت وسکونت جہانتک دریافت ہوا ہو-
नाम चाह ब क़ैद उमक़ आब	२	٢	نام چاہ بقید عمق آب-
किस वक़्त और किस ज़रिये से नाश निकाली गई	३	٣	کسوقت اور کس ذریعے سے نعش نکالی گئی-
किस वक़्त चाह में पड़ी थी और कितने अरसे तक पड़ी रही	४	٤	کسوقت چاہ میں پڑی تھی- اور کتنے عرصہ تک پڑی رہی-
किस तरह से निकाली गई	५	٥	کسطرح سے نکالی گئی-
नाम उन लोगों का जो वक़्त निकालने नाश के मौजूद थे	६	٦	نام اون لوگونکا جو وقت نکالنے نعش کے موجود تھے-
क्या कपड़े पहने हुवे थी और गुलू में रस्सी पहले की पाई गई या बाद में रस्सी डाल कर पुलिस ने निकाला था-	७	٧	کیا کپڑے پہنے ہوئے تھی اور گلوں میں رسی پہلے کی پائی گئی یا بعد میں رسی ڈالکر پولیس نے نکالا تھا-
पहले उसको कोई बीमारी थी या नहीं	८	٨	پہلے اوسکو کوئی بیماری تھی یا نہیں-
कोई बच्चा उसके पैदा हुआ था या नहीं	९	٩	کوئی بچہ اوسکے پیدا ہوا تھا یا نہیں-
सूरत हाल यानी मुफ़स्सिल हालत नाश की कि निशानात रस्सी या ज़ंजीर व ज़ख़्म तलवार व लाठी वग़ैरः के कैसे और कहां कहां हैं ज़बान मुंह से बाहर निकली हुई है या अन्दर है और रंग ज़बान का कैसा है और हरदो हाथ किस तरफ़ और किस तरह से थे-	१०	١٠	صورت حال یعنی مفصل حالت نعش کی کہ نشانات رسی یا زنجیر یا زخم تلوار یا لاٹھی وغیرہ کے کیسے اور کہاں کہاں ہیں- زبان منہ سے باہر نکلی ہوئی ہے یا اندر ہے اور رنگ زبان کا کیسا ہے اور ہر دو ہاتھ کس طرف اور کس طرح سے تھے-
कैफ़ियत सबब वफ़ात जहां तक तहक़ीक़ हुआ हो-	११	١١	کیفیت سبب وفات جہانتک تحقیق ہوا ہو-

نقشہ [illegible]

हिदायत व नक़्शा क़वायद भेजने नाश बिनाबर मुआयना डाक्टरी-

४

मज़मून

डाक्टर साहब बहादुर ने क़वायद भेजने नाश बिनाबर मुआयना डाक्टरी के मुरत्तिब करके बज़रये कैफ़ियत १३ फ़र्वरी सन् ९३ ई॰ महकमा आलियः में भेजी कि नाज़िम और तहसीलदार और अफ़सरान थाने जात को इस की तामील के वास्ते लिखवा दियाजावे चुनांचि जोजो मदारिज कि कैफ़ियत और क़वायद में दर्ज थे वह बतौर नक़शे मुनसलका के मुरत्तब होकर शाये किये गये और एक २ परत तमाम महकमों में और ५० पचास फ़र्द थानों में भेजी गई-

(۱۹)
(۹۲)

ہدایت ونقشہ قواعد بھیجنے نعش بنا بر معائنہ ڈاکٹری -

۴

مضمون

ڈاکٹر صاحب بہادر نے قواعد بھیجنے نعش بنا بر معائنہ ڈاکٹری کے مرتب کر کے بذریعہ کیفیت ۱۳ فروری ۱۸۹۳ء محکمہ عالیہ مین بھیجے - کہ ناظم اور تحصیل دار اور افسران تھانہ جات کو اس کی تعمیل کے واسطے لکھوا دیا جاوے - چنانچہ جو جو مدارج کہ کیفیت اور قواعد مین درج تھے - وہ بطور نقشہ منسلکہ کے مرتب ہو کر شائع کئے گئے - اور ایک ایک پرت بتمام محکمون مین اور پچاس پچاس فرد تھانون مین بھیجی گئین -

(१८)
(१८)

दर्ज है कि जिस वक़्त समन चस्पां किया जावे तो गवाही भी हमसायों की कराली जावे - बरिंदा समन की यह रिपोर्ट पेश होती है कि हमसाये गवाही नहीं करते - अब इसबारे में गवाही जबरन कराई जावे या क्या - जिस पर जवाब में लिखा गया कि बसूरत चस्पां किये जाने समन के जबरन गवाही कराना किसी की तो दुरुस्त नहीं बल्कि ऐसा मुनासिब है कि जिस पुलिस के हलक़े में वह समन चस्पां किया जावे -

बसूरत न गवाही करने अहिल मुहल्ला के चस्पां कुनिन्दा समन को मुनासिब है कि उस पुलिस पर जा कर इत्तला करे और अहालियान पुलिस की शहादत से समन चस्पां कर के अहालियान पुलिस की शहादत लिखवा लेवे -

जुमले मातहत महकमात को इत्तला दी गई और फ़ौजदारी को यह भी लिखा गया कि मारफ़त कोतवाल के पुलिस दारान को मुत्तला किया जावे कि बमूजिब इसके तामील करते रहें -

१ नंबर शुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
१९	२४ फ़र्वरी सन १८९३ ई.

(१९)
(१९)

३

खुलासा

پر سمن چسپاں کیا جاتا ہے - مگر ہدایت یہ بھی درج ہے کہ جس وقت سمن چسپاں کیا جاوے تو گواہی بھی ہمسایون کی کرالی جاوے -

برندہ سمن کی یہ رپورٹ پیش ہوتی ہے کہ ہمسایہ گواہی نہین کرتے - اب اس بارہ مین گواہی جبراً کرائی جاوے یا کیا -

جس پر جواب مین لکھا گیا کہ بصورت چسپان کئے جانے سمن کے جبراً گواہی کرانا کسیکی تو درست نہین بلکہ ایسا مناسب ہے کہ جس پولیس کے حلقہ مین وہ سمن چسپان کیا جاوے -

بصورت نہ گواہی کرنے اہل محلہ کے چسپان کنندہ سمن کو مناسب ہے کہ اوس پولیس پر جا کر اطلاع کرے اور اہالیان پولیس کی شہادت سے سمن چسپان کرکے اہالیان پولیس کی شہادت لکھوالیوے -

جملہ ماتحت محکمات کو اطلاع دی گئی اور فوجداری کو یہ بھی لکھا گیا کہ معرفت کوتوال کی پولیس داران کو مطلع کیا جاوے کہ بموجب اس کے تعمیل کرتے رہین -

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
19	۲۴ فروری سنہ ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

(१७) (९६)

साबिक़ में जो हिदायत इस बाब में जारी हुई हैं उन पर पूरा २ लिहाज़ रहे इस लिये अब दुबारा अन्दरीं बाब किसी तज़वीज़ की ज़रूरत नहीं है मगर इस हिदायत की इत्तला कुल महकमात में सरदारान अपील ने नहीं दी थी-

लिहाज़ा सरदारान अपील को लिखा गया कि जुमले महकमात मातहत में इसकी इत्तला दे दें -

اور سابق مین جو ہدایت اس باب مین جاری ہوئی ہین اون پر پورا پورا لحاظ رہے - اس سے لئے اب دوبارہ اندرین باب کسی تجویز کی ضرورت نہین ہے ، مگر اس ہدایت کی اطلاع کُل محکمات مین سرداران اپیل سنے نہین دی تھی -

لہذا سرداران اپیل کو لکھا گیا کہ جملہ محکمات ماتحت مین اس کی اطلاع دیدین -

(१८) (९८)

१ नंबर शुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
१८	२२ फ़र्वरी सन् १८९३

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۱۸	۲۲ - فروری ۱۸۹۳ء

३

ख़ुलासा

हिदायत तामील समन -

۳

خلاصہ

ہدایت تعمیل سمن -

४

मज़मून

सरदारान अपील ने बज़रये कैफ़ियत २३ फ़र्वरी सन् १८९३ ई. यह इस्तस्वाब किया था कि जो समन रसपाउंट के नाम जारी होते हैं उन पर बाज़ औक़ात इत्तलायाबी नहीं होती और वजह यह कि रस्पाउंट दस्तयाब नहीं होता किसी जगह चला जाता है - चुनांचि बसूरत न होने रस्पाउन्ट के हस्ब मन्शा हिदायत महकमः आलियः मकान सिकनि रस्पाउन्ट पर समन चस्पा किया जाता है मगर हिदायत में यह भी

۴

مضمون

سرداران اپیل سنے بذریعۂ کیفیت ۲۳ - فروری ۱۸۹۳ء یہ استصواب کیا تھا کہ جو سمن رسپاڈنٹ سکے نام جاری ہوستے ہین - اون پر بعض اوقات اطلاعیابی نہین ہوتی اور وجہ یہ کہ رسپاڈنٹ دستیاب نہین ہوتا کسی جگہ چلا جاتا ہے - چنانچہ بصورت نہونے رسپاڈنٹ سکے حسب منشا ہدایت محکمۂ عالیہ مکان سکنی رسپاڈنٹ پر

البتہ عدم پیروی مدعی مین جو مقدمہ
داخل دفتر ہوگا- اوس کا مرافعہ
نہین ہوسکتا ہے- کیونکہ نفس مقدمہ
کی بابت کوئی تجویز ہی جب نہین ہوئی
تو پھر اوس کا مرافعہ کیسے ہوسکیگا-
لہذا سرداران اپیل کو لکھا گیا
کہ کل محکمات ماتحت کو اس سے اطلاع دیں

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۱۷	۲۲- فروری سنہ ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

ہدایت درباب سماعت نظر ثانی-

۴

مضمون

برحسب استصواب ناظم توراواٹی
۱۲- فروری سنہ ۱۸۹۳ء کو یہ ہدایت جاری
ہوچکی تھی کہ جو مقدمات یکطرفہ
یا عدم پیروی مین فیصل یا داخل دفتر
ہوجاوین اون کی نظر ثانی تو حاکم ثانی
جو بدل کر آوے بیشک سن سکتا ہے
مگر جو مقدمہ بحث رودادی ہو کر ایک
حاکم کی پیشی سے طے ہوا ہے اسکی نظر ثانی
دوسرا حاکم جو اوّل حاکم کی جگہ بدل کر
آوے سن نہین سکتا- بلکہ اوس
مقدمہ کی فریق ناراض کو بذریعہ
مرافعہ اپنی چارہ جوئی کرنا چاہیے

अल बत्तः अदम पैरवी मुद्दई में जो
मुक़द्दमा दाख़िल दफ़्तर होगा उ
स का मुराफ़ा नहीं हो सकता है-
क्योंकि नफ़्स मुक़द्दमे की बाबत कोई त
जवीज़ ही जब नहीं हुई तो फिर उस का मुराफ़ा कैसे
हो सकेगा- लिहाज़ा सरदारान अपील को
लिखा गया कि कुल महकमात मातहत को
इस से इत्तला दें-

(१) नंबर शुमार	(२) तारीख़ मंज़ूरी
१७	२२ फ़र्वरी सन् १८९३ ई

(३)

ख़ुलासा

हिदायत दरबाब समाअत नज़रसानी-

(४)

मज़मून

बर हस्ब दुरख़्वास्त नाज़िम तोरावाटी १३
फ़र्वरी सन् १८९३ ई. को यह हिदायत जारी
हो चुकी थी कि जो मुक़द्दमात यकतरफ़ा या अ
दम पैरवी में फ़ैसल या दाख़िल दफ़्तर हो जा
वें उनकी नज़रसानी तो हाकिम सानी जो ब
दल कर आवे बेशक सुन सक्ता है मगर जो
मुक़द्दमा बहिस रूदादी हो कर एक हाकिम
की पेशी से तै हुआ है उस की नज़रसानी दूस
रा हाकिम जो अव्वल हाकिम की जगह बद
ल कर आवे सुन नहीं सक्ता- बल्कि उस
मुक़द्दमे के फ़रीक़ नाराज़ को बज़रिये मुराफ़ा
अपनी चाराजोई करना चाहिये और

ضمیمہ ہدایت نمبری ۱۰ مجریہ ۳ فروری ۱۸۸۹ء بابت غیر حاضری مدعی وسماعت نظرثانی وغیرہ۔

۴

مضمون

مختاران عدالت دیوانی نے لکھا کہ ہدایات مین جو درباب حاضری غیرحاضری فریقین جاری ہوئی ہے اوس مین یہہ صراحت اور ہوجاوے کہ اگر عدم پیروی مین مدعی کے کاغذات داخل دفتر کیئے جاوین۔ تو مدعی کو اختیار ہی کہ بذریعہ نظرثانی یا مرافعہ چارہ جوئی کرسکتا ہی۔ چنانچہ اندرین باب جو ہدایتین جاری ہوئی ہین ملاحظہ کیا گیا تو اگرچہ ہدایت ۳ ستمبر ۱۸۸۹ء مین مدعی کی بابت کوئی بحث نہین کی گئی۔ مگر جو ہدایت ۳ فروری ۱۸۸۹ء کو جاری ہوئی ہی اوس کی دفعہ اوّل مین صاف طور پر صراحت ہے کہ اگر عدم حاضری مین کاغذات داخل دفتر کیئے جاوینگے تو ۳۰ دن کے اندر مدعی اپنی عدم حاضری کی وجہ کافی درج کر کے نظرثانی کر کے کاروائی مقدمہ کرا سکیگا۔

پس جدید ایزادی کی کوئی ضرورت نہین۔ اگر مدعی ۳۰ یوم مین نظرثانی نکریگا تو اوس کو دوبارہ رسوم داخل کر کے نالش کرنے کی ممانعت نہین ہے۔

ज़मीमे हिदायत नम्बरी १० मजरयः ३ फ़र्वरी सन् १८८९ ई० बाबत ग़ैर हाज़री मुद्दई व समाअत नज़रसानी वग़ैरह-

४

मज़मून

मुख़्तारान अदालत दीवानी ने लिखा कि हिदायत में जो दर्बाब हाज़री ग़ैर हाज़री फ़रीक़ैन जारी हुई है उसमें यह सराहत और होजावे कि अगर अदम पैरवी में मुद्दई के काग़ज़ात दाख़िल दफ़्तर किये जावें - तो मुद्दई को अख़्तियार है कि बज़रये नज़रसानी या मुराफ़ा चाराजोई करसक्ता है - चुनांचि अन्दरीं बाब जो हिदायतें जारी हुई हैं मुलाहिज़ा किया गया तो अगरचि हिदायत ३ सितंबर सन् १८८९ ई. में मुद्दई की बाबत कोई बहस नहीं की गई मगर जो हिदायत ३ फ़र्वरी सन् १८८९ ई. को जारी हुई है उसकी दफ़े अव्वल में साफ़ तौरपर सराहत है कि अगर अदम हाज़री में काग़ज़ात दाख़िल दफ़्तर किये जावेंगे तो ३० दिन के अन्दर मुद्दई अपनी अदम हाज़री की वजह काफ़ी दरज करके नज़रसानी करके कार्रवाई मुक़द्दमा करा सकेगा-

पस जदीद ईज़ादी की कोई ज़रूरत नहीं - अगर मुद्दई ३० योम में नज़रसानी न करेगा तो उस को दुबारा रसूम दाख़िल करके नालिश करने की मुमानअत नहीं है-

१	२
नंबरशुमार	तारीख मंज़ूरी
१५	१२.फ़र्वरी सन् १८९३ ई०

(15)
(१५)

३

खुलासा

दरख्वास्त मंज़ूरी रुखसत कम अज़ कम एक हफ़्ते पेश्तर करनी चाहिये-

४

मज़मून

सरदारान अपील ने बज़रये कैफ़ियत ४ फ़र्वरी सन् १८९३ ई० हस्ब तहरीर तहसील टोडा भीम दरख्वास्त की कि मनोहर लाल मुहर्रिर जुडीशियल को बज़रूरत शादी हमशीरः ज़ादी खुद दहली जाने की ज़रूरत है रुखसत १ माह की ४ फ़र्वरी सन् १८९३ ई० से ४ मार्च सन् १८९३ ई० को मंज़ूर फ़र्माई जावे-

जवाब में मंज़ूरी रुखसत की सरदारान अपील को लिखी गई और यह भी तहरीर हुआ कि आयन्दा कम अज़ कम एक हफ़्ते पेश्तर से दरख्वास्त मंज़ूरी रुखसत की करनी चाहिये-

१	२
नंबरशुमार	तारीख मंज़ूरी
१६	१६.फ़र्वरी सन् १८९३ ई०

(16)
(१६)

३

खुलासा

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۱۵	۱۲-فروری ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

درخواست منظوری رخصت کم از کم ایک ہفتہ پیشتر کرنی چاہئے۔

۴

مضمون

سرداران اپیل نے بذریعہ کیفیت ۴ فروری ۱۸۹۳ء حسب تحریر تحصیل ٹوڈہ بھیم درخواست کی کہ منوہر لال محرر جوڈیشل کو بضرورت شادی ہمشیرہ زادی خود دہلی جانے کی ضرورت ہے۔ رخصت ایکماہ کی ۴ فروری ۱۸۹۳ء سے ۴ مارچ ۱۸۹۳ء کی منظوری فرمائی جاوے

جواب میں منظوری رخصت کی سرداران اپیل کو لکھی گئی اور یہ بھی تحریر ہوا کہ آئندہ کم از کم ایک ہفتہ پیشتر سے درخواست منظوری رخصت کی کرنی چاہئے

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۱۶	۱۶-فروری ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

वाजिब से महरूम रह जावे गा इस नज़र से हम को इस मुक़द्दमे में मुन्शी भगत बिहारी लालजी की राय से इत्तफ़ाक़ है व मंज़ूरी राय भगत बिहारी लालजी यह मिस्ल महकमः आलिया में इस तरा बाबत हस्ब दरख़्वास्त मुख़्तारान अदालत इस ग़र्ज़ से भेज दी जावे कि जब इस क़िस्म की बेज़ाब्तगी के साथ मुनसिफ़ान किसी दावे को बसीग़े मद्दख़फ़ीफ़ा समाअत करलिया करें तो मुनासिब है कि उस हालत में मुराफ़ा बसीग़े बेज़ाब्तगी हुक्काम अदालत समाअत किया करें -

चुनांचि ब वजह मज़कूर यह मिसल महकमः आलिया में आई -

मुलाहिज़े मिस्ल से ज़ाहर हुआ कि यह दावा जो मुद्दैयान ने किया है मुतअल्लिक़ ब हक़ीयत मालूम होता है और दावा मुतअल्लिक़ ब हक़ीयत में २५) रु तक तजवीज़ मुनसिफ़ान की नातिक़ नहीं है लिहाज़ा सरदारान अपील को लिखा जावे कि ऐसे मुआमलात हक़ीयत में अगर मुनसफ़ी के फ़ैसले से कोई नाराज़ हो कर मुराफ़ा करे तो उसका मुराफ़ा क़ाबिल समायत के है -

---

(۱۴۸)
(२४)

بلا وجہ اپنے حق واجب سے محروم رہ جائیگا۔ اس نظر سے ہمکو اس مقدمہ مین منشی بھگت بہاری لال جی کی رائے سے اتفاق ہے۔ بمنظوری رائے بھگت بہاری لال جی یہ مثل محکمہ عالیہ مین استصوابا حسب درخواست مختاران عدالت اس غرض سے بھیجدی جاوے کہ جب اس قسم کی بیضابطگی کے ساتھ منصفان کسی دعوے کو بصیغہ مدخفیفہ سماعت کرلیا کرین تو مناسب ہے کہ اس حالت مین مرافعہ بصیغہ بیضابطگی حکام عدالت سماعت کیا کرین۔

چنانچہ بوجہ مذکور یہ مثل محکمہ عالیہ مین آئی۔

ملاحظہ مثل سے ظاہر ہوا کہ یہ دعوی جو مدعیان نے کیا ہے متعلق بحقیت معلوم ہوتا ہے اور دعاوی متعلق بحقیت مین صہ تک تجویز منصفان کی ناطق نہین ہے۔

لہذا سرداران اپیل کو لکھا جاوے کہ ایسے معاملات حقیت مین اگر منصفی کے فیصلہ سے کوئی ناراض ہو کر مرافعہ کرے تو اوس کا مرافعہ قابل سماعت کے ہے۔

(१४) (२४)

क़ाबिल नहीं है मुनासिफ़ों ने ग़लत और नादुरुस्त कार्रवाई की और चंद तनक़ीहात क़रार देकर मिस्ल वापिस भेजने की तजवीज़ की और लिखा कि इस मुक़द्दमे के ब महद्द ख़फ़ीफ़ा होने से मुद्दई अपील की चाराजोई से महरूम रह जाता है और यह मुआमला हक़ीयत का है और मिसल को ब वजह इख़्तिलाफ़ राय महकमे अपील में इरसाल किया - और यह भी दरख़्वास्त की कि महकमे आलिया से भी इस मुआमले में इस तस्वाब कर लिया जावे कि ऐसी सूरत में मुराफ़ा क़ाबिल समाअत होगा या नहीं

کی سماعت کے قابل نہیں ہے منصفون نے غلط اور نا درست کارروائی کی اور چند تنقیحات قرار دے کر مثل واپس بھیجنے کی تجویز کی اور لکھا کہ اس مقدمہ کے بحد خفیفہ ہونے سے مدعی اپیل کی چارہ جوئی سے محروم رہجاتا ہے اور یہہ معاملہ حقیت کا ہے - اور مثل کو بوجہ اختلاف رائے محکمہ اپیل مین ارسال کیا - اور یہہ بھی درخواست کی کہ محکمہ عالیہ سے بھی اس معاملہ مین استصواب کر لیا جاوے کہ ایسی صورت مین مرافعہ قابل سماعت ہوگا یا نہین -

सरदारान अपील ने तजवीज़ की कि राय भगत बिहारीलालजी की दुरुस्त है इस में किसी तरह का कलाम नहीं कि दावी आमदनी वृत्ति की किसी हालत में दाख़िल महद्द ख़फ़ीफ़ा नहीं हो सकती क्योंकि यह एक तरह की हक़ीयत है और जो रक़म दावी महद्द ख़फ़ीफ़ा की क़ानून क़रार दी गई हैं उन में यह दावी हरगिज़ दाख़िल नहीं है अगर इस क़िस्म के दावे को महद्द ख़फ़ीफ़ा में शुमार कर लिया जावेगा तो बहुत बड़ी क़बाहत यह लाज़िम आ जावेगी कि बसा औक़ात फ़रीक़ नाराज़ तजवीज़ के फ़ैसले का मुराफ़ा न कर सकने की वजह से बिला वजह अपने हक़ से जो

سرداران اپیل نے تجویز کی کہ رائے بھگت بہاری لال جی کی درست ہے - اس مین کسی طرح کا کلام نہین کہ دعاوی آمدنی برت کے کسی حالت مین داخل مد خفیفہ نہین ہو سکتے - کیونکہ یہہ ایک طرح کی حقیت ہے - اور جو قسم دعاوی مد خفیفہ کی قانونا قرار دی گئی ہین - اون مین یہہ دعوے ہرگز داخل نہین ہے اگر اس قسم کے دعاوی کو مد خفیفہ مین شمار کر لیا جاوے گا تو بہت بڑی قباحتین یہہ لازم آجاوینگی کہ بسا اوقات فریق ناراض تجویز کے فیصلہ کا مرافعہ نکر سکنے کی وجہ سے

(۱۴)
(۹۵)

۴

مضمون

مسمیان رگھناتھ اور بالابخش اقوام برہمن
مسمیان بھور سنگھ اور لال سنگھ جاگیرداران
موندر باڑہ کی نسبت منصفی مین دعوے
دائر کیا کہ دو شادیون کے عوض ۲۰ مجھکو
انھون نے نہین دئیے ڈگری ہو جانے
اور ایک برہمن کو بھی مدعا علیہ گردانا
کہ جس سے بھور سنگھ وغیرہ مدعا علیہم
نے شادی مین کام لیا - منصفان
مد خفیفہ اس مقدمہ کو سنکر فیصل کر دیا
اور لکھدیا کہ بموجب ہدایت مجریہ ۲۰ ستمبر
اس کا مرافعہ محکمہ بالادست مین نہین
ہو سکیگا - مگر مدعی نے بصیغہ بضابطگی
عدالت دیوانی مین مرافعہ کر دیا -
بابو ہیران چند چٹرجی نے ۱۸ ستمبر ۱۸۹۲ع
کو تجویز کی کہ چونکہ تعداد دعوے کی
بقدر مد خفیفہ کے قرار پائی ہے
اور اوسی قاعدہ کے موافق منصفان
نے تجویز کی ہے اور ہر دو منصفان
کی رائے شامل ہو چکی اور مد خفیفہ کی
تجویز منصفان ناطق ہوتی ہے -
اسلئے بصیغہ بے ضابطگی مرافعہ
لائق سماعت کے نہین ہے -
کاغذات داخل دفتر کئے جاوین -
منشی جگت بہاری لال جی نے
یہ رائے دی کہ یہ مقدمہ مد خفیفہ

४

मज़मून

मुसम्मी यान रघुनाथ और बाला बख़्श
अक़वाम पुरोहित ने मुसम्मी यान भूर
सिंह और लाल सिंह जागीरदारान दरवा
ड़ा की निसबत मुनसफ़ी में दावा दायर कि
या कि दो शादियों के २०) रु॰ मुझको इन्हों
ने नहीं दिये डिगरी होजावे - और एक ब्रा
ह्मण को भी मुद्दा अलैह गरदाना कि जिससे
भूर सिंह वग़ैरह मुद्दा अलैहुम ने शादी में काम
लिया - मुनसिफ़ान ने ब मद्द ख़फ़ीफ़ा इ
स मुक़दमे को सुन कर फ़ैसल कर दिया औ
र लिख दिया कि ब मूजिब हिदायत मजरिय
२० सितंबर सन १८९७ ई॰ इस का मराफ़ा मुहकमे
बाला दस्त में नहीं हो सकेगा - मगर मुद्दई ने
ब सीग़े बेज़ाब्तगी अदालत दीवानी में
मुराफ़ा कर दिया - बाबू हरान चन्द्र चटर
जी ने १८ सितंबर सन १८९२ ई॰ को तज
वीज़ की कि चूंकि तादाद दावी की बक़दर
मद्द ख़फ़ीफ़ा के क़रार पाई है और उसी क़ायदे के
मुवाफ़िक़ मुनसिफ़ान ने तजवीज़ की है और हर
दो मुनसिफ़ान की राय शामिल हो चुकी और म
द्द ख़फ़ीफ़ा की तजवीज़ मुनसिफ़ान नातिक़ हो
ती है इस लिये बसीग़े बेज़ाब्तगी मुराफ़ा लाय
क़ समाअत के नहीं है कागज़ात दाख़िल दफ़तर कि
ये जावें - मुन्शी जगत बिहारी लाल जी ने यह रा
य दी कि यह मुक़दमः मद्द ख़फ़ीफ़ा की समाअत के

(१३)

जो जुरमाना मुजव्विज़े हुक्काम मातहे
त महकमः बालादस्त से माफ़ होजाता है
उसकी दरख्वास्त मंज़ूरी वापसी की हर
एक मुक़दमे में जुदाजुदा महकमः अपी
ल से महकमः आलिया में मुक़दमे वारआ
या करती हैं इस में बहुत तवालत तहरीर
और काग़ज़ात की होती है इसलिये मुना
सिब है कि ऐसी रक़ूमात की बाबत एक
नक़शः १५ तारीख़ को बाबत पन्द्रहरोज़ा
अव्वल और दूसरा नक़शः आख़िर माह
को बाबत १५ रोज़ दोम बहुत अहेतयात से
मुरत्तिब होकर महकमः अपील से महकमः
आलिया में आया करे और उसकी जां
च पर ताल बख़ूबी होजाया करे-कोई
अमर इन्दराज से बाक़ी न रहजावे-सर
दारान अपील को लिखा जावे कि माह
मार्च सन् १८९३ ई. से इस की तामी
ल करें-

(१४)

१ नंबर शुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
१४	११ फ़र्वरी सन् १८९३ ई.

३

ख़ुलासा

जमीमे हिदायत नंबरी ५३ मजरयः २० सितंबर स. १८८१ ई. बाबत समाअत मु
क़दमात ख़फ़ीफ़ः महकमः मुनसफ़ी
कि दावी मुत्तअल्लिक़ः व हक़्क़ियत में २५
रु. तक की तजवीज़ मुनसिफ़ान नातिक़
नहीं है-

(۱۳)

جو جرمانہ مجوزہ حکام ماتحت محکمہ بالادست
سے معاف ہوجاتا ہے اوس کی
درخواست منظوری واپسی کی ہر ایک
مقدمہ میں جدا جدا محکمہ اپیل
سے محکمہ عالیہ میں مقدمہ وار
آیا کرتی ہیں اس میں بہت طوالت
تحریر اور کاغذات کی ہوتی ہے
اس لئے مناسب ہے کہ ایسی
رقومات کی بابت ایک نقشہ ۱۵ تاریخ
کو بابت پندرہ روزہ اول اور دوسرا
نقشہ آخر ماہ کو بابت پندرہ روز دوم
بہت احتیاط سے مرتب ہوکر محکمہ
اپیل سے محکمہ عالیہ میں آیا کرے
اور اوس کی جانچ پرتال بخوبی
ہوجایا کرے - کوئی امر اندراج سے
باقی نہ رہجاوے - سرداران اپیل کو
لکھا جاوے کہ ماہ مارچ سنہ ۱۸۹۳ء سے
اس کی تعمیل کریں -

(۱۴)

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۱۴	۱۱- فروری سنہ ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

تتمیمہ ہدایت نمبری ۵۳ مجریہ ۲۰ ستمبر
۱۸۸۱ء بابت سماعت مقدمات خفیفہ
محکمہ منصفی = کہ دعاوی متعلقہ حقیت میں ۲۵ روپے
تک کی تجویز منصفان ناطق نہیں ہے -

(۱۲)
(१२)

ہوتا ہے کہ جب مقدمات سارٹیفکٹ وعذرداری کسی محکمہ مین دائر ہون تو اون مقدمات مین بحلسۂ واحد سب مقدمات کا حوالہ دیا جا کر ایک تجویز صادر کی جانی چاہئیے اور اوسی تجویز کی نقل ہر ایک مثل مین شامل کی جائے کہ سب مقدمات کی تجویز وہی ایک سمجھی جائے تا کہ بروقت مرافعہ اوس تجویز کے تغیر وتبدل مین محکمۂ ماتحت کی تجویز کا اثر وہی رہے کہ جو محکمۂ بالا مین صادر کیا گیا ہے۔ اس کے اجرا کی منظوری بھجوا دین۔

چونکہ رائے سرداران اپیل کی درست تھی جواب مین منظوری لکھی گئی اور لکھا گیا کہ ماتحت کو بھی واسطے عمل درآمد کے اطلاع دین۔

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۱۳	۹- فروری سنہ ۱۸۹۳ع

(۱۳)
(१३)

۳

خلاصہ

درخواست واپسی جرمانہ معاف شدہ کا نقشہ ہر ماہ مین دو بازدہ روز کے حساب سے آئندہ محکمۂ اپیل سے آیا کرے۔

۴

مضمون

दायर हों तो उन मुक़द्दमात में ब्ज़लसे वाहिद सब मुक़द्दमात का हवाला दिया जा कर एक तजवीज़ सादिर की जानी चाहिये-

और उस ही तजवीज़ की नक़ल हर एक मिस्ल में शामिल की जाय कि सब मुक़द्दमात की तजवीज़ वुही एक समझी जाय ताकि वरवक़्त मुराफ़ा उस तजवीज़ के तग़ैयुर व तबद्दुल में महकमे मातहत की तजवीज़ का असर वह ही रहे कि जो महकमे बाला में सादिर किया गया है इस की इजराय की मंज़ूरी भिजवादें- चूंकि राय सरदारान अपील की दुरस्त थी जवाब में मंज़ूरी लिखी गई और लिखा गया कि मातहेत को भी वास्ते अमल दरामद के इत्तलादें-

(१)	२
नंबर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
१३	९ फ़र्वरी सन् १८९३ ई॰

३

खुलासा

दरख़्वास्त वापसी जुरमाने माफ़ शुदह का नक़्शा हर माह में दो पंज़दह रोज़ के हिसाब से आयन्दा महकमः अपील से आया करे-

४

मज़मून

(१२)
(९२)

होते हैं- एक दरख़्वास्त देहन्दा की
जानिब से और एक या दो तीन उज़
रदारों की तर्फ़ से बल कि बाज़ औ
कात चंद दरख़्वास्त देहन्दा सारटी फ़िकट के
होते हैं मुहकमात मातहत में कभी कभी एक
जल्से में तजवीज़ हो जाती है और बाज़ औकात
अलहदः २ इजलासों में तजवीज़ होती है- बाज़ जग
ह ऐसा भी होता है कि उज़रदारी के मुक़द्दमे में त
जवीज़ कर दी जाती है सारटी फ़िकट का मुक़
द्दमा बइंतज़ार तजवीज़ नातिक़ उज़रदारी मु
लतवी रक्खा जाता है सो यह कार्रवाई एक सू
रत से होनी चाहिये- क्यों कि जब हर
एक मुक़द्दमे में अलाहिदा २ तजवीज़
की गई और जिस शख़्स के मुआफ़ि
क़ तजवीज़ न हुई वह उस ही मिस्ल की
नक़्ल लेकर मुराफ़ा करता है और मु
क़द्दमा सानी उसके हक़ में इस सबब
से कि उस ने मुराफ़ा नहीं किया नाति
क़ हो कर उस का इजरा अमल में
आता है- और जब मुराफ़े पर तजवी
ज़ मातहत में तग़ैयुर तबद्दुल हुआ
तो तजवीज़ मातहत और तजवीज़
महकमः आलिया में तनाक़ुस
वाक़े हो जाता है -

ब ग़रज़ रफ़े नुक़्स - मज़कूर
मुनासिब मालूम होता है-

कि जब मुक़द्दमात सारटी
फ़िकट व उज़रदारी किसी महकमे में

سارٹیفکٹ مین چند مقدمے مرتب
ہوتے ہین - ایک درخواست دہندہ
کی جانب سے اور ایک یا دو تین عذر
دارون کی طرف سے بلکہ بعض اوقات
چند درخواست دہندہ سارٹیفکٹ
کے ہوتے ہین - محکمات ماتحت مین
کبھی کبھی ایک جلسہ مین تجویز ہو جاتی ہے
اور بعض اوقات علیحدہ علیحدہ اجلاسون
مین تجویز ہوتی ہے - بعض جگہہ ایسا
بھی ہوتا ہے کہ عذرداری کے مقدمہ
مین تجویز کر دی جاتی ہے - سارٹیفکٹ
کا مقدمہ بانتظار تجویز ناطق عذرداری
ملتوی رکھا جاتا ہے - سو یہ کارروائی
ایک صورت سے ہونی چاہئے
کیونکہ جب ہر ایک مقدمہ مین علیحدہ
علیحدہ تجویز کی گئی اور جس شخص کے
موافق تجویز نہوئی - وہ اوسی مثل
کی نقل لے کر مرافعہ کرتا ہے -
اور مقدمہ ثانی اوس کے حق
مین اس سبب سے کہ اوس نے
مرافعہ نہین کیا ناطق ہو کر اوس کا
اجرا عمل مین آتا ہے - اور جب
مرافعہ پر تجویز ماتحت مین تغیر
تبدل ہوا تو تجویز ماتحت اور
تجویز محکمۂ عالیہ مین تناقض
واقع ہو جاتا ہے -
بغرض رفع نقص مذکور مناسب معلوم

लिख दिया करें-महकमः आलियाको लिखना ग़ैरज़रुरहै और दरहाल्ले कि किसी अमरकी बाबत महकमः आलि याको ही लिखना मुनासिब होतोउस के वास्ते कोई मुमानअत नहीं है-म सलन ठाकुर बहादुर सिंहजी किसीमी ने की आबादी या बरखास्तगी का हाल दर्याफ़्त करना चाहें तो वह नाज़िमसे बराहरास्त दर्याफ़्त करसक्ते हैं महकमः आलिया को इस बारे में लिखना और महकमः आलिया की मारफ़त निजामत से दर्याफ़्त करना लाहासिल है और इसी तरह और महकमात के बाबत लिहाज होना चाहिये-

१	२
नंबर शुमार	तारीख़ मनजूरी
१२	८ फ़र्वरी सन् १८९३ ई

(३)

खुलासा

मुक़दमात सारटी फ़िकट वउज़रदारी मुतअल्लिके में वज़ल्से बाहिर मुक़दमात का हवाला देकर एक तजवीज़ कीजाय और उस ही की नक़ल हर एक मिस्ल में शामिल कीजाय-

४

मज़मून

सरदारान अपील ने बज़रये केफ़ियत १४ नवम्बर सन् १८९२ के एक रूबकार महकमः आलियः में भेजा उस में दर्ज कियाहै कि मुक़दमात सारटी फ़िकट में चंद मुक़दमे मुरत्तब

(११)
(९९)

کو لکھنا غیر ضروری تھی - اور درحالیکہ کسی امر کی بابت محکمہ عالیہ کو ہی لکھنا مناسب ہو تو اوس کے واسطے کوئی ممانعت نہین ہے - مثلاً ٹھاکر بہادر سنگھ جی کسی مینہ کی آبادی یا برخاستگی کا حال دریافت کرنا چاہین تو وہ ناظم سے براہ راست دریافت کرسکتے ہین - محکمۂ عالیہ کو اس بارہ مین لکھنا اور محکمہ عالیہ کی معرفت نظامت سے دریافت کرانا لاحاصل ہے اور اسی طرح اور محکمات کی بابت لحاظ ہونا چاہیئے

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۱۲	۸ - فروری ۱۸۹۳ع

(۱۲)
(۹۲)

۳

خلاصہ

مقدمات سارٹیفکٹ و عذرداری متعلقہ مین بجلسہ واحد مقدمات کا حوالہ دیکر ایک تجویز کی جائے اور اوسی کی نقل ہر ایک مثل مین شامل کیجائے

۴

مضمون

سرداران اپیل نے بذریعہ کیفیت ۱۴ - نومبر ۱۸۹۲ع کے ایک روبکار محکمۂ عالیہ مین بھیجا - اوس مین درج کیا ہے کہ مقدمات

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۱۱	۷ فروری ۱۸۹۳ء

۳ خلاصہ

حکام ماتحت بلا ضرورت خاص محکمہ عالیہ میں اسلئے تاکید یا تعمیل دیگر محکمات وغیرہ سے درخواست نکیا کریں۔ بلکہ براہ راست دریافت کرلیا کریں۔

۴ مضمون

بعض محکمات ماتحت میں البتہ قاعدہ مروج ہے کہ بجائے اس کے کہ ناظم کو یا گیرائی کو کسی امر کی تعمیل کی بابت حسب ضابطہ تحریر کریں محکمہ عالیہ میں درخواست بھیجتے ہیں کہ فلانی تعمیل فلانے محکمہ سے کرائی جاوے۔ یا یہ کہ فلاں وکیل کو یا تھانہ دار کو ہدایت کردیجاوے سو اس قاعدہ کے سبب سے بے فائدہ طوالت تحریر اور کثرت کار ہوتا ہے۔ اسواسطے یہ ہدایت جاری کی جاتی ہے کہ اگر کوئی امر مانع نہو اور ضابطہ کے بموجب لکھنا واجب ہو تو حکام ماتحت تحریرات مندرجہ بالا براہ راست لکھا کریں محکمہ عالیہ

(11)
(११)

१	३
नंबरशुमार	तारीख मंजूरी
११	७ फर्वरी सन् १८९३

३ खुलासा

हुक्काम मातहेत बिलाजरूरत खास महकमः आलियः में वास्ते ताकीद यात मील दीगर महकमात वगैरह के दरख्वास्त न किया करें बल्कि बराह रास्त दर्याफ़्त करलिया करें-

४ मज़मून

बाज़ महकमात मातहेत में ऐसा कायदा मुरौवज है कि बजाय इसके कि नाज़िम को या गिराई को किसी अमर की तामील के बाबत हस्ब ज़ाबता तहरीर करें महकमे आलिया में दरख्वास्त भेजते हैं कि फलानी तामील फलाने महकमे से कराई जावे- या यह कि फलां वकील को या थाने दार को हिदायत [illegible] वे सो इस कायदे के सबब से [illegible] यदा तवालत तहरीर और कसरत [illegible]र होता है- इस वास्ते यह हिदायत जारी कीजाती है कि अगर कोई अमर माने न हो और ज़ाबते के बमूजिब लिखना वाजिब हो तो हुक्काम मातहेत तहरीरात मुन्दर्जे बाला बराह रास्त

(١٠)

کاغذ پر سماعت دعوے ہوتی ہے -
اسیطرح مختار نامہ اور فیس کا کاغذ
بھی پردہ دار عورتوں سے لیا جایا کرے -

۴

مضمون

اب تک ایسا عمل درآمد ہے کہ جب
کوئی مفلس بعد منظوری افلاس
دعوے دائر کرتا ہے تو اوس سے
رسوم سرکاری اول نہین لی جاتی
سادہ کاغذ پر ہی اوس کے دعوی
کی سماعت ہوتی ہے - لیکن جو مختارنامہ
وغیرہ لیا جاتا ہے وہ کاغذ اسٹامپ
پر لیا جاتا ہے - اگر کوئی پردہ دار
عورت کسی کو مختار کرتی ہے تو
اوس سے فیس کا کاغذ حسب دستور
وصول ہوتا ہے - درصورتیکہ اور
رسوم سرکاری ایسے مفلس سے
نہین لی جاتی اس رسوم کا لیا جانا
بھی واجب نہین - جیسے کہ سادہ
کاغذ پر دعوے کی سماعت کی
جاتی ہے اسی طرح مختار نامہ
اور فیس کا کاغذ بھی پردہ دار
اور مفلس عورتوں سے لیا جایا کرے
اہل مذکور کے لئے تشریح کرنے کی کچھ
ضرورت نہین - کیونکہ وہ خود پیروی
کرسکتا ہے - اور جب وہ مفلس ہے تو وکیل
کہان سے کریگا -

सादे कागज़ पर समाअत दावी होती है
इसी तरह मुख़्तार नामा और फ़ीस का
कागज़ भी परदे दार औरतों से लिया जा
या करे-

५

मज़मून

अब तक ऐसा अमल दरामद है कि
जब कोई मुफ़लिस बाद मंज़ूरी इफ़
लास दावी दायर करता है तो उस्से र
सूम सरकारी अव्वल नहीं ली जाती
सादे कागज़ पर भी उसके दावी की समा
अत होती है- लेकिन जो मुख़्तारनामा
वग़ैरह लिया जाता है वह कागज़ इस्टा
म्प पर लिया जाता है अगर कोई पर
दे दार औरत किसी को मुख़्तार करती है
तो उस्से फ़ीस का कागज़ हस्ब दस्तूर व
सूल होता है- दर सूरते कि और रसू
म सरकारी ऐसे मुफ़लिस से नहीं ली
जाती इस रसूम का लिया जाना भी वा
जिब नहीं जैसे कि सादे कागज़ पर दा
वी की समाअत की जाती है इसी तरह
मुख़्तार नामा और फ़ीस का कागज़
भी परदे दार और मुफ़लिस औरतों
से लिया जाया करे अहिल ज़कूर के
लिये तशरीह करने की कुछ ज़रूरत न
हीं क्योंकि वह खुद पैरवी कर सक्ता है
और जब वह मुफ़लिस है तो वकील
कहां से करेगा -

१	२
नंबरशुमार	तारीख मंज़ूरी
९	६ फ़र्वरी सन् १८९३

(९)
(६)

३

ख़ुलासा

नक़ल जवाब दावा मिस्ल बिनाय दावी के लेना बे ज़रूरत है-

४

मज़मून

सरदारान अपील ने बहवाले तहरीर निज़ामत सांभर बज़रिये कैफ़ियत २८ जनवरी सन् १८९३ ई० ब मुक़द्दमे मुसम्मात वज़ीरी मुद्दैय: बनाम रहिमत अली वग़ैरः मुद्दायलहः दावी दिलाये जाने जायदाद मनक़ूला व ग़ैरमनक़ूला इस्तसवाब किया था कि नक़ल जवाब दावी की मिस्ल बयान दावी ली जावे या क्या- जवाब में सरदारान अपील को लिखा गया कि जवाब दावी की नक़ल लिये जाने की बाबत जदीद कार्रवाई शुरू करने की कोई ज़रूरत नहीं किसी फ़रीक़ को ज़रूरत होगी तो हस्ब ज़ाबते नक़ल ले सक्ता है-

नंबरशुमार	तारीख मंज़ूरी
१०	६ फ़र्वरी सन् १८९३

(१०)
(२०)

३

ख़ुलासा

मुक़द्दमात मुफ़लिसी में जिस तरह

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۹	۶ فروری سنہ ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

نقل جواب دعوے مثل بیان دعوی کے لینا بے ضرورت ہے۔

۴

مضمون

سرداران اپیل نے بحوالہ تحریر نظامت سانبھر بذریعہ کیفیت ۲۸ جنوری سنہ ۱۸۹۳ء بمقدمہ مسماۃ وزیری مدعیہ بنام رحمت علی وغیرہ مدعا علیہ دعوی دلائے جانے جائداد منقولہ وغیر منقولہ استصواب کیا تھا کہ نقل جواب دعوی کی مثل بیان دعوے لی جاوے یا کیا- جواب میں سرداران اپیل کو لکھا گیا کہ جواب دعوے کی نقل لئے جانے کی بابت جدید کارروائی شروع کرنے کی کوئی ضرورت نہیں- کسی فریق کو ضرورت ہوگی تو حسب ضابطہ نقل لے سکتا ہے۔

نمبر شمار ۱	تاریخ منظوری ۲
۱۰	۶ فروری سنہ ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

مقدمات مفلسی میں جس طرح سادہ

(७) (۷) اپیل سنے محکمہ عالیہ سے استصواب کیا۔

(९) (۹) چونکہ راے سرداران اپیل درست تھی جواب مین منظوری لکھی گئی۔

अपील ने महकमः आलिये से इस्तस्वाब किया- चूँकि राय सरदारान अपील दुरुस्त थी जवाब में मंज़ूरी लिखी गई-

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۸	۲-فروری ۱۸۹۴ء

१ नंबरशुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
८	२ फ़र्वरी सन् १८९४ ई

۳
خلاصہ

دعوے کرا دئے جانے شادی کا بموجب ضابطہ کے قابل سماعت نہین ہے۔

३
ख़ुलासा

दावा करा दिये जाने शादी का ब मूजिब ज़ाबते के क़ाबिल समाअत नहीं है-

۴
مضمون

گنگارام مہاجن مدعی سنے نارائن مہاجن مدعاعلیہ کی نسبت دعوے کرادئے جانے شادی کا دائر کیا اور ماتحت سے بحق مدعی دعوے ڈگری کیا گیا۔ مگر ایسا دعوے شادی کرا دئے جانے کا بموجب ضابطہ کے قابل سماعت ہی نہ تھا کس لئے کہ درصورت ڈگری کئے جانے کے عدالت سے اس کا اجرا کرایا جانا ایک امر دشوار اور ناممکن ہے۔ لہذا مرافعہ مدعاعلیہ پیش ہونے پر دعوی مدعی ڈسمس کیا گیا۔ اور اپیل کو اطلاعاً اور تعمیلاً لکھا گیا۔

४
मज़मून

गंगाराम म्हाजन मुद्दई ने नारायण म्हाजन मुद्दायलह की निसबत दावा करा दिये जाने शादी का दायर किया और मातहत से ब हक़ मुद्दई दावा डिगरी किया गया मगर ऐसा दावा शादी करा दिये जाने का बमूजिब ज़ाब्ते के क़ाबिल समाअत ही नहीं था किस लिये कि दरसूरत डिगरी किये जाने के अदालत से इसका इजरा कराया जाना एक अमर दुश्वार और नामुमकिन है- लिहाज़ा मुराफ़ा मुद्दायलह पेश होने पर दावा मुद्दई डिसमिस किया गया और अपील को इत्तलाअन और तामीलन लिखा गया

दोयम यह कि मदयून अगर किसी
और इलाके में चला जावे तो मदयू
न के हाज़िर आने के उम्मेद में मुदई
दरख्वास्त सालाना पेश करे या उस इ
लाके में पैरवी करे कि जहां मदयून
सकूनत पिज़ीर हो-
इसके बाबत यह राय लिखी
कि जब मुद्दई को यह मालूम होजावे
कि मदयून दूसरे इलाके में सकूनत
पिज़ीर होगया है तो उस इलाके में
बाबत ज़र डिगरी पैरवी करे-
इसपर सरदारान अपील ने अप
नी राय इन हरदो अमर के बाबत
बतफ़सील ज़ैल ज़ाहर की-
अमर अव्वल के बाबत तो यह कि
इस में राय नाज़िम जी की ठीक है ह
म को भी इत्तफ़ाक है-
अमर दोयम के बाबत यह लिखा
कि जब मदयून की जायदाद इलाके
राज में हो और थोड़े रोज़ के वास्ते मदयू
न किसी दूसरी जगह चला जावे तो को
ई ज़रूरत नहीं है कि मुद्दई इस इलाके
में जहां वह सकूनत पिज़ीर है पैरवी
मुक़दमे की करे मदयून की जायदाद
से दुरस्ती ज़रडिगरी की होनी वाजि
ब है-
यह राय अपनी ज़ाहिर करके सरदारान

دوم یہہ کہ مدیون اگر کسی اور علاقہ
مین چلا جاوے تو مدیون کے
حاضر آنیکے امید مین مدعی
درخواست سالانہ پیش کرے۔ یا
اوس علاقہ مین پیروی کرے کہ
جہان مدیون سکونت پذیر ہو۔
اس کی بابت یہہ راے لکھی کہ جب
مدعی کو یہ معلوم ہو جاوے کہ مدیون
دوسرے علاقہ مین سکونت پذیر
ہوگیا ہے۔ تو اوس علاقہ مین بابت
زر ڈگری پیروی کرے۔
اس پر سرداران اپیل نے اپنی
راے ان ہر دو امر کی بابت بتفصیل
ذیل ظاہر کی۔
امر اول کی بابت تو یہہ کہ اس مین
راے ناظم جی کی ٹھیک ہے۔ ہمکو
بھی اتفاق ہے۔
امر دوم کی بابت یہہ لکھا کہ جب مدیون
کی جائداد علاقہ راج مین ہو اور
تھوڑے روز کے واسطے مدیون
کسی دوسری جگہہ چلا جاوے۔
تو کوئی ضرورت نہین ہے کہ مدعی
اس علاقہ مین جہان وہ سکونت پذیر
ہے پیروی مقدمہ کی کرے۔
مدیون کی جائداد سے درستی زر
ڈگری کی ہونی واجب ہے۔
یہہ راے اپنی ظاہر کرکے سرداران

لिहाज़ा जवाब में मंज़ूरी लिखी गई और तहरीर किया गया कि इसी मुवाफ़िक़ अमल दरामद रखने के लिये कुल मुहकमात मातहत को लिख दें-	مین منظوری لکھی گئی اور تحریر کیا گیا کہ اسی موافق عمل در آمد رکھنے کے لئے کل محکمات ماتحت کو لکھدین
१ नंबर शुमार　　२ तारीख़ मंज़ूरी	۱ نمبر شمار　　۲ تاریخ منظوری
७　　१ फ़रवरी सन १८९३ ई०	۷　　یکم فروری ۱۸۹۳ء
३ ख़ुलासा	۳ خلاصہ
हिदायत मुतअल्लिक मुक़द्दमात इजराय डिगरी	ہدایت متعلق اجراے ڈگری
४ मज़मून	۴ مضمون
नाज़िम जी सवाई माधोपुर ने दो अमर इस्तस्वाब तलब करार देकर मय अपनी राय के सरदारान अपील को हस्ब तफ़सील ज़ैल लिखा-	ناظم سوائی مادھوپور نے دو امر استصواب طلب قرار دیکر مع اپنی راے کے سرداران اپیل کو حسب تفصیل ذیل لکھا-
अव्वल यह कि मदयून की जायदाद बाबत मातमी व तफ़ावत के ज़ब्त हो तो इस ज़ब्ती के ऐयाम में मुद्दई बाबत हिफ़्ज़ मियाद दरख़्वास्त सालाना पेश करे या नहीं-	اوّل یہ کہ مدیون کی جائداد بابت ماتمی و تفاوت کے ضبط ہو تو اس ضبطی کے ایام مین مدعی بابت حفظ میعاد درخواست سالانہ پیش کرے یا نہین-
इसके बाबत तो यह राय लिखी कि बेशक मुद्दई दरख़्वास्त बाबत हिफ़्ज़ मियाद पेश कर सक्ता है- और बसूरत वागुज़ाश्त बाद में भी दरख़्वास्त कर सक्ता है यह ज़रूर नहीं कि ऐयाम ज़ब्ती में दरख़्वास्त पेश करी है-	اس کی بابت تو یہ راے لکھی کہ بیشک مدعی درخواست بابت حفظ میعاد پیش کر سکتا ہے- اور بصورت واگذاشت بعد مین بھی درخواست کر سکتا ہے- یہ ضرور نہین کہ ایام ضبطی مین درخواست پیش کری ہے-

औ़र दूसरे वह कि जिन में तऐयु
न मालियत का नहीं है जैसे – ति
ब नियत नामा-तिलाक़ नामा फ़ारग़ख़
ती वग़ैरः -जिन में कि तऐयुन मा
लियत है उन में तो फ़ीस रजिस्टरी की
बहिसाब एक रुपया फ़ी सदी ली जा
ती है और जिन में तऐयुन मालियत
नहीं है उनमें एक रु॰ बिल मक़ता लि
याजाताहै- चूँकि तिबनियतनामा भी इ
सही क़बील से है कि जिन में तऐयुन
मालियत की नहीं है इसी लिहाज़
से नाज़िमजी भी एक रु॰ बाबत फ़ीस
रजिस्टरी के लेसक्ते हैं- इस मोक़े पर इस
तफ़तीश से यह और मालूम हुआ कि फ़ी
स रजिस्टरी की बाबत जो रुपया लियाजा
ताहै वह ज़र नक़द होता है-
हिदायत नम्बरी (२२) मवर्रखे २८ जनवरी
सन् १९०३ ई॰ दबारे ख़त छपी जारी हुई है
उस में फ़ीस यानी मुहराना का नक़द लिया
जाना बंद किया गया है- और बजाय इ
सके काग़ज़ इस्टाम्प शामिल किया जा
ता है पस फ़ीस रजिस्टरी की भी बजाय
नक़द के काग़ज़ इस्टाम्प पर ली जानी
ग़ैर मुनासिब होगी-
चूँकि यह राय सरदारान अपील की कि
फ़ीस मुहराना की बाबत बजाय नक़द के
काग़ज़ इस्टाम्प लिया जावे दुरुस्त है-

اور دوسرے وہ کہ جن میں تعین مالیت
کا نہیں ہے۔ جیسے تبنیت نامہ۔
طلاق نامہ۔ فارغخطی وغیرہ۔
جن میں کہ تعین مالیت ہے۔ ان
میں تو فیس رجسٹری کی بحساب
ایک روپیہ فی صدی لی جاتی ہے
اور جن میں تعین مالیت نہیں ہے
اونمیں ایک روپیہ بالمقطع لیا جاتا ہے۔
چونکہ تبنیت نامہ بھی اسی قبیل سے
ہے کہ جن میں تعین مالیت کی نہیں ہے
اسی لحاظ سے ناظم جی بھی ایک روپیہ
بابت فیس رجسٹری کے لے سکتے
ہیں۔ اس موقع پر اس تفتیش سے
یہ اور معلوم ہوا کہ فیس رجسٹری
کی بابت جو روپیہ لیا جاتا ہے وہ
زر نقد ہوتا ہے۔
ہدایت نمبری (۲۲) مورخہ ۲۸ جنوری ۱۹۰۳ء
دربارہ خط چھپی جاری ہوئی ہے
اوس میں فیس یعنی مہرانہ کا نقد
لیا جانا بند کیا گیا ہے۔ اور
بجائے اس کے کاغذ اسٹام شامل
کیا جاتا ہے پس فیس رجسٹری کی بھی
بجائے نقد کے کاغذ اسٹام پر لیجانی
غیر مناسب ہوگی۔ چونکہ یہ رائے
سرداران اپیل کی کہ فیس مہرانہ
کی بابت بجائے نقد کے کاغذ اسٹام
لیا جاوے درست ہے۔ لہذا جواب

(५)
(۶)

क़ायदा वसूल फ़ीस मुहराना रजसटरी व बसीक़ेजात कि जिनमें तऐयुन मालियत का नहीं होता-

४

मज़मून

नाज़िम जी गंगापुर ने बज़रये कैफ़ियत २० दिसंबर सन् १८९२ सरदारान अपील से इस्तसवाब किया था कि मुसम्मी कल्या चमार क़सबे बामन वास ने तिबनियत नामा मांजया का मामूली १) रुपया के काग़ज़ पर ब मुराद तसदीक़ पेश किया- इसमें दर्याफ़्त तलब यह अमर है कि अलावे काग़ज़ तिबनियत नामे के मुहराने का रुपया भी सायल तसदीक़ कराने वाले से लिया जाय या किया-

सरदारान अपील ने एक रुपया बज़रये काग़ज़ इस्टाम्प बाबत फ़ीस मज़कूरा लिये जाने की राय लिख कर मंज़ूरी महकमः आलिया से बज़रये कैफ़ियत ११ जनवरी सन् १८९३ ई० को चाही और सराहत इसकी इसतोर से की कि दो किस्म की नविश्तें रजिस्टरी के लिये अदालत सीग़े में पेश होती हैं -एक वह कि जो ज़र नक़द की बाबत है-

قاعدہ وصول فیس مہرانہ رجسٹری وثیقہ جات کہ جن میں تعین مالیت کا نہیں ہوتا-

۴

مضمون

ناظم جی گنگا پور نے بذریعہ کیفیت ۲۰- دسمبر ۱۸۹۲ء سرداران اپیل سے استصواب کیا تھا کہ مسمی کلیا چمار قصبہ بامنواس نے تبنیت نامہ مانجیا کا معمولی ایکروپیہ کے کاغذ پر بمراد تصدیق پیش کیا- اس میں دریافت طلب یہ امر ہے کہ علاوہ کاغذ تبنیت نامہ کے مہرانہ کا روپیہ بھی سایل تصدیق کرانے والے سے لیا جائے یا کیا-

سرداران اپیل نے ایکروپیہ بذریعہ کاغذ اسٹامپ بابت فیس مذکورہ لئے جانے کی رائے لکھکر منظوری محکمہ عالیہ سے بذریعہ کیفیت ۱۱- جنوری ۱۸۹۳ء کے چاہی- اور صراحت اس کی اس طور سے کی کہ دو قسم کی نوشتیں رجسٹری کیلئے عدالت ضیغہ میں پیش ہوتی ہیں- ایک وہ کہ جو زر نقد کی بابت ہیں-

(४)
(४)

ख़ज़ाने में भेज दिया जावे और एक नक़्शा बाबत साले गुज़िश्ता बाबत रासे रुपया के कि बाद इख़राजात के दाख़िल ख़ज़ाने हुआ भेज दें - और आयन्दा को माहवारी नक़्शा भेजते रहें -

१	२
नंबर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
५	१ फ़र्वरी सन् १८९३ ई.

(५)
(५)

३

खुलासा

नक़्ल नवीसों को एक माह तक की रुख़सत हाकिम महकमा बइख़्तियार ख़ुद दे दिया करें और इससे ज़ियादा रुख़सत की मंज़ूरी महकमः आलिया से तलब की जावे -

४

मज़मून

जुमले महकमात मातहत में नक़्लनवीसों को रुख़सत एक माह तक हाकिम महकमा बइख़्तियार ख़ुद दे दिया करें और इससे ज़ियादा रुख़सत बमूजिब दीगर अहलकारान महकमः आलिये से तलब किया करें

१	२
नंबर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
६	१ फ़र्वरी सन् १८९३

(६)
(६)

३

खुलासा

نقل نویسان کے خزانہ مین بھیجدیا جاوے - اور ایک نقشہ بابت سال گزشتہ بابت ایسے روپیہ کے کہ بعد اخراجات کے داخل خزانہ ہوا بھیجدین اور آیندہ کو ماہواری نقشہ بھیجتے رہین فقط -

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۵	یکم فروری ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

نقل نویسون کو ایک ماہ تک کی رخصت حاکم محکمہ باختیار خود دے دیا کرین اور اس سے زیادہ رخصت کی منظوری محکمہ عالیہ سے طلب کیجاوے -

مضمون

جملہ محکمات ماتحت مین نقل نویسون کو رخصت ایک ماہ تک حاکم محکمہ باختیار خود دے دیا کرین - اور اس سے زیادہ رخصت بموجب دیگر اہلکاران محکمہ عالیہ سے طلب کیا کرین فقط

۱	۲
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۶	یکم فروری ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

१	२
नंबर शुमार	तारीख़ मंज़ूरी
४	२५ जनवरी सन् १८९३ ई॰

३

खुलासा

जो रुपया आमदनी नक़ल नवीसी से बाद तक़सीम तनख़्वाह नक़ल नवीसान वग़ैरह बचे वह फ़ौरन जमा ख़ज़ाने किया जावे और एक नक़्शा माहवारी भी उस का आया करे-

४

मज़मून

चूंकि ज़र आमदनी नक़ल नवीसी बाद इस रफ़ ज़रूरी ख़ज़ाने नहीं भेजा जाता है हर महकमे में हर महकमे का ज़र बचत जमा रहता है मुनासिब है कि सरदारान अपील को लिखा जावे कि जिस क़दर रुपया आमदनी नक़ल नवीसी का बाद ख़र्च ज़रूरी मंज़ूर शुदह के महकमात में आख़ीर जनवरी सन् १८९३ ई॰ पर बाक़ी रहे-

उस को दाख़िल ख़ज़ाना व इन्दराज खड़ी करने की हिदायत फ़ौरन जारी करें और आयन्दा को जिस क़दर आमदनी से बाद ज़रूरी ख़र्च मंज़ूर शुदह के बचत होवे वह फ़ौरन बर वक़्त तक़सीम तनख़्वाह के नक़ल नवीसान

١	٢
نمبر شمار	تاریخ منظوری
۴	۲۵-جنوری ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

جو روپیہ آمدنی نقل نویسی سے بعد تقسیم تنخواہ نقل نویسان وغیرہ بچے وہ فوراً جمع خزانہ کیا جائے- اور ایک نقشہ ماہواری بھی اسکا آیا کرے-

۴

مضمون

چونکہ زر آمدنی نقل نویسی بعد صرف ضروری خزانہ نہیں بھیجا جاتا ہے- ہر محکمہ مین ہر محکمہ کا زر بچت جمع رہتا ہے- مناسب ہے کہ سرداران اپیل کو لکھا جاوے کہ جس قدر روپیہ آمدنی نقل نویسی کا بعد خرچ ضروری منظور شدہ کے محکمات مین آخر جنوری ۱۸۹۳ء پر باقی رہے-

اوس کو داخل خزانہ باندراج کھڑہ کرنیکے ہدایت فوراً جاری کرین اور آیندہ کو جس قدر آمدنی سے بعد ضروری خرچ منظور شدہ کے بچت ہووے وہ فوراً بروقت تقسیم تنخواہ

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۳	۱۸ جنوری سنہ ۱۸۹۳ع

۳
خلاصہ

ہدایت درباب رجسٹری تمسکات جو تحریر سے بعد عرصہ کے پیش ہوں

۴
مضمون

مسمیان رام کنوار و رام چندر برہمن قرضدہندہ اور گلا حجام قرض گیرندہ ہردو فریق نے نوشت تعدادی ۱۹ (؟) کی ۱۷ دسمبر سنہ ۹۲ع کو منصفی مین رجسٹری ہونے کے لئے پیش کی نوشت لکھی ہوئی پھاگن بدی یکم سنہ ۱۹۴۸ کی ہی اور عرصہ کے بعد ماہ پوس مین پیش ہوئی تھی منصفون نے عدالت دیوانی سے اس کا استصواب کیا مختاران عدالت نے رجسٹری ہو جانے کی رائے لکھکر محکمہ عالیہ سے استمزاج کیا - چونکہ تمسک قرضہ کا رجسٹری ہونا لازمی نہین تھا - لہذا جواب مین منظوری مختاران عدالت کو لکھدی گئی کہ اگر مقر رجسٹری کرانا چاہے تو کردو فقط -

१ नम्बर शुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
३	१८ जनवरी सन् १८९३

३
खुलासा

हिदायत दर्बाब रजस्टरी तमस्सुकात जो तहरीर से पेश हों -

४
मज़मून

मुसम्मियान रामकुंवार व रामचंदर ब्राह्मण क़रज़ देहन्दा और गुल्ला हज्जाम करज़ गीरन्दः हरदो फ़रीक़ ने नविश्त तादादी ४९) की १७ दिसम्बर सन् १८९२ ई० को मुनसफ़ी में रजिसटरी होने के लिये पेश की - नविश्त लिखी हुई फागुन बदी १ सम्बत् १९४८ की है और अरसे के बाद माह पोस में पेश हुई थी मुनसिफ़ों ने अदालत दीवानी से इसका इस्तस्वाब किया - मुख्तियारान अदालत ने रजस्टरी हो जाने की राय लिखकर महकमः आलिया से इस्तमज़ाज किया - चूंकि तमस्सुक करज़े का होना लाज़मी नहीं था - लिहाज़ जवाब में मंज़ूरी मुख्तियारान अदालत को लिख दी गई कि अगर मुक़िर रजिस्टरी कराना चाहे तो करदो -

लावें उनसे तो मुज़ाहमत न कीजावे और जो सब्ज़ और मोटी लकड़ी लावें उन को शिकारखाने में पेश कियाजावे चुनांचि ऐसी सूरत में शिकारखाने से हस्ब हैसियत सज़ा दीजाती थी और अलावे इस के मौक़े २ के पहेरवाल अपनी फेरीके बनी का बन्दोबस्त रखते थे- अज़ांबाद जंगलात से राय लीगई तो यह लिखा आया कि जंगलात में इस क़दर मुलाज़िम नहीं हैं कि हर मौक़े पर रक्खे जावें - और अगर शिकारखाने की तरह से हर जगह आदमी रक्खे जावें गे तो इसमें सरकार का हरज होगा- अगर दर्वाज़े के दर्वान नुक़सान कर्ने वालों को वक़्तन फ़वक़्तन दर्याफ़्त करके गिरफ़्तार करलेंगे तो सरकार का बहुत फ़ायदा है- और उन को यह भी लिखा दिया जावे कि मुलाज़मान जंगल को मदद भी देते रहें -

चुनांचि फ़ौजदारी को लिखा गया कि दर्वानान को हिदायत कर दो कि हस्ब तजवीज़ महकम: जंगलात इन्तज़ाम रक्खें और जंगलात को भी इत्तला दी गई -

———०।०।०———

(۲) جو غریب آدمی توڑ کر لادین اون سے تو مزاحمت نہ کی جاوے اور (۹) جو سبز اور موٹی لکڑی لادین اون کو شکارخانہ مین پیش کیا جاوے۔ چنانچہ ایسی صورت مین شکارخانہ سے حسب حیثیت سزا دی جاتی تھی۔ اور علاوہ اس کے موقع موقع کے پہرہ وال اپنی پھیری کی بنی کا بندوبست رکھتے تھے۔ ازان بعد جنگلات سے رائے لیگئی تو یہ لکھا آیا کہ جنگلات مین اس قدر ملازم نہین ہین کہ ہر موقع پر رکھے جاوین اور اگر شکارخانہ کی طرح سے ہر جگہہ آدمی رکھے جاوین گے تو اس مین سرکار کا حرج ہوگا۔ اگر دروازہ کے دربان نقصان کرنے والون کو وقتاً فوقتاً دریافت کرکے گرفتار کرلین گے تو سرکار کا بہت فائدہ ہی۔ اور اون کو بھی لکھا دیا جاوے کہ ملازمان جنگل کو مدد بھی دیتے رہین۔ چنانچہ فوجداری کو لکھا گیا کہ دربانان کو ہدایت کردو کہ حسب تجویز محکمہ جنگلات انتظام رکھین۔ اور جنگلات کو بھی اطلاع دی گئی۔

(२)
(२)

जंगल को उनकी गिरफ़्तारी में मदद देना
चाहिये - मगर दर्बानों ने जवाब में यह
बयान किया कि बग़ैर हुक्म कोतवा
ली हम न तो लकड़ी गिरफ़्तार कर सक्ते
हैं और न मदद दे सक्ते हैं - लिहाज़ा
कोतवाली को लिखा दिया जावे
कि दर्बानों को फ़हिमायश करदें
कि मुलाज़मान जंगल को बवक़्त गि
रफ़्तारी मुलाज़िमान मदद दिया करें
और जो लोग वक़्त बे वक़्त लकड़ियां
शहर में लाया करें उनके पास परमट
देख लिया करें - अगर बिला परमट
खिलाफ़ क़ायदे लाया करें उनको
गिरफ़्तार करके मय माल जंगलात
में भेज दिया करें -

जिसपर शिकारखाने से दरयाफ़्त
किया गया कि क़बल अज़ तक़र्रुर
महकमः जंगलात के जो लकड़ी बा
हर से शहर में आती थी उसका इन्त
ज़ाम दर्वाज़ों पर किस तरह रहता था

जवाब में शिकारखाने से यह लि
खा आया कि बाना तैनाती शिकार
यान वग़ैरह के देखने से हर दर्वाज़े
और हर मोरी पर एक एक आदमी का
तैनात रहना पाया जाता है और यह तै
नाती इस ग़रज़ से हुई थी कि मोरपंखी की
खुश्क लकड़ी जो ग़रीब आदमी तोड़कर

کواون کی گرفتاری مین مدد دینا
چاہیئے - مگر دربانون نے جواب
مین یہہ بیان کیا کہ بغیر حکم کوتوالی
ہم نہ تو لکڑی گرفتار کرسکتے ہین
اور نہ مدد دے سکتے ہین -
لہذا کوتوالی کو لکھا دیا جاوے
کہ دربانون کو فہمائش کر دین -
کہ ملازمان جنگل کو بوقت گرفتاری
ملزمان مدد دیا کرین اور جو لوگ
وقت بے وقت لکڑیان شہر
مین لایا کرین اون کے پاس
پرمٹ دیکھ لیا کرین - اگر بلا پرمٹ
خلاف قاعدہ لایا کرین اون
کو گرفتار کرکے معہ مال جنگلات
مین بھیجدیا کرین -

جس پر شکارخانہ سے دریافت
کیا گیا کہ قبل از تقرر محکمہ
جنگلات کے جو لکڑی باہر سے
شہر مین آتی تھی اوس کا انتظام
دروازون پر کس طرح رہتا تھا

جواب مین شکارخانہ سے یہہ لکھا
آیا کہ بانہ تعیناتی شکاریان وغیرہ
کے دیکھنے سے ہر دروازہ اور
ہر موری پر ایک ایک آدمی کا
تعینات رہنا پایا جاتا ہے - اور یہہ
تعیناتی اس غرض سے ہوئی
تھی کہ مور پنکھی کی خشک لکڑی

کی نقول ۲ر کے کاغذ پر دی جاتی
مناسب ہی - اور اس سے زیادہ
۸ر پر محکمات ماتحت مین جو سوا ے
نقول فیصلہ کے باقی جملہ کاغذات
کی نقل ۸ر کے کاغذ پر ص۵ ر سے
کم تعداد کے مقدمات مین دیجاتی
ہی کچھ ٹھیک نہین ہی -

۱ نمبر شمار	۲ تاریخ منظوری
۲	۱۰-جنوری ۱۸۹۳ء

۳

خلاصہ

جو لوگ بیوقت یا بلا پرمٹ جنگلات
کی لکڑی شہر مین لادین اوس کا
انتظام دربانان دروازہ رکھین -

۴

مضمون

محکمہ جنگلات سے بذریعہ کیفیت ۱۰
اکتوبر ۱۸۹۲ء محکمہ عالیہ صیغہ متفرقات
مین لکھا آیا تھا کہ اکثر اقوام شکاری
بنی سرکاری سے لکڑیان چرا کر
لاتے ہین چنانچہ دو تین مرتبہ
گرفتار بھی کئے گئے اور دروازہ
کے دربانون سے کہا گیا کہ
جو لوگ بے وقت لکڑیان
چوری سے لادین - اون کو گرفتار
کرنا چاہئے اور ملازمان جنگل

५०) रु॰ की नक़ूल २) के कागज़ पर दीजा
नी मुनासिब है और इससे ज़ियाद: ८) प
र॰ म्हकमात मातहित में जो सिवाय नक़ू
ल फ़ैसला के बाक़ी जुमले कागज़ात की
नक़ल ८) के कागज़ पर ५०) रु॰ से कम
तादाद के मुक़दमात में दी जाती है ठह
ठीक नहीं है -

१ नम्बर शुमार	२ तारीख़ मंज़ूरी
(२)	१० जनवरी सन् १८९३

३

खुलासा

जो लोग बे वक़्त या बिला परमट जं
गलात की लकड़ी शहर में लावें उस
का इन्तज़ाम दर्बानान दर्वाज़ा रक्खें -

४

मज़मून

महकम: जंगलात से बज़रये कैफि
यत १० अकतूबर सन् १८९२ ई॰ म्हकम:
आलिय: सीग़ा मुतफ़र्रक़ात में लिखा
आया था कि अकसर अक़वाम शिका
री बनी सरकारी से लकड़ियां चुराकर
लाते हैं चुनान्चि दो तीन मर्तबे गिर
फ़्तार भी किये गये और दर्वाज़े के दर्बा
नों से कहा गया कि जो लोग बे वक़्
लकड़ियां चोरी से लावें उन को गिरफ़्ता
र करना चाहिये और मुलाज़िमान

ہدایات مجریہ محکمہ عالیہ کونسل صیغہ جوڈیشل بابت سنہ ۱۸۹۳ ع

۱ نمبر شمار — ۲ تاریخ منظوری

۸ جنوری سنہ ۱۸۹۳ ع

۳
خلاصہ

نقول کاغذات حسب شرح نقول احکام پچاس روپیہ تک کے مقدمات مین ۲ر کے اسٹام پر اور اس سے اوپر ۸ر کے اسٹام پر دی جایا کرین -

۴
مضمون

چونکہ قانون اسٹام مجریہ حال مین بنظر سہولت - نقول احکام کا کاغذ صـہ تک کی مالیت مین ۲ر کا اور اس کے اوپر ۸ر کا کاغذ تجویز ہوا ہی اور جب یہہ قید لگائی گئی ہی تو کاغذات مقدمات متعلقہ صـہ

हिदायात मजरियः महकमः आलियः कौंसिल सीगः जुडीशियल बाबत सन् १८९३ ई०

(१) नम्बर शुमार — (२) तारीख़ मनजूरी

(२) ८ जनवरी सन् १८९३

३
ख़ुलासा

नक़ूल काग़ज़ात हस्ब शरह नक़ूल अहिकाम पचास रुपया तक के मुक़द्दमात में ₅ के इस्टाम्प पर और उसके ऊपर ॥) के इस्टाम्प पर दी जाया करें-

४
मज़मून

चूंकि क़ानून इस्टाम्प मजरिया हाल में ब नज़र सहूलियत नक़ूल अहिकाम का काग़ज़ रु. ५०) तक की मालियत में ₅ का और उसके ऊपर ॥) का काग़ज़ तजवीज़ हुआ है और जब यह क़ैद लगाई गई है तो काग़ज़ात मुक़द्दमात मुतल्लिक़े

		मौत्ल संगीन-
८६	२५	नोंबर- बनाईद हिदायत नंबरी (४१) मंजरये २८ मई सन् १८९३ ई० बाबत मुआयने डॉकटरी नाशहाय फौती गेर मामूली
८७	२५	नोंबर- दर्बाब तरतीब मुकदमात फौती दगी इत्तफ़ाकिया-
८८	५	दिसंबर- हिदायत बाबत नालिशात दावे गल्ले व उसके इजराय की-
८९	१४	दिसंबर- हिदायत बाबत कुरकी व नीलाम जायदाद ब कदर मतालिबे डिगरी-
९०	१४	दिसंबर- बज़मीमे हिदायात नंबरी ७९ मजरये २९ नोंबर सन् १८८७ ई० व नंबरी (६१) मजरये १६ सितंबर सन् १८९१ ई० बाबत तामील्न समन हाय मुनसफ़ी-
९१	२८	दिसंबर- दरख्वास्त हाय रुखसत में साबिके रुख़सत का हाल भी दर्ज होकर आया करे-

——(٥)——

		سنگین۔
۸۶	۲۵	نومبر - بتائید ہدایت نمبری (۴۱) مجریہ ۲۸ مئی ۱۸۹۳ء بابت معائنہ ڈاکٹری نعش ہاے فوتی غیر معمولی۔
۸۷	۲۵	نومبر - درباب ترتیب مقدمات فوتیدگی اتفاقیہ۔
۸۸	۵	دسمبر - ہدایت بابت نالشات دعوی غلہ و اوسکے اجراے کی۔
۸۹	۱۴	دسمبر - ہدایت بابت قرقی و نیلام جائداد بقدر مطالبہ ڈگری۔
۹۰	۱۴	دسمبر - بضمیمہ ہدایات نمبری (۷۹) مجریہ ۲۹ نومبر ۱۸۸۷ء و نمبری (۶۱) مجریہ ۱۶ ستمبر ۱۸۹۱ء بابت تعمیل سمن ہاے منصفی۔
۹۱	۲۸	دسمبر ۱۸۹۳ء - درخواست ہاے رخصت میں سابقہ رخصت کا حال بھی درج ہو کر آیا کرے۔

——(٥)——

		जात व क़ाबिल क़बूल अदालत होने न होने के-	و قابل قبول عدالت ہونے نہونے کے۔		
७८	३०	अक्तूबर- बेड़े पुलिस में साढ़े पांच फुट से कम क़द के आदमी भरती न किये जावें-	اکتوبر۔ بیڑہ پولیس میں ساڑھے پانچ فٹ سے کم قد کے آدمی بھرتی نہ کئے جاویں	۳۰	۷۸
७९	११	नोंबर- हिदायत बाबत छांट दफ़्तर म्हेकमात मातहत-	نومبر۔ ہدایات بابت چھانٹ دفتر محکمات ماتحت۔	۱۱	۷۹
८०	१२	नोंबर- जमीमः हिदायत नंबरी ८ सन् १८८३ ई० व १६९ सन् १८८५ ई० बाबत तहरीर इबारत तसदीक़ इज़हारात-	نومبر۔ ضمیمہ ہدایت نمبری (۸) سنہ ۱۸۸۳ء و (۱۶۹) سنہ ۱۸۸۵ء بابت تحریر عبارت تصدیق اظہارات۔	۱۲	۸۰
८१	१२	नोंबर- मजीद ताकीद तामील हिदायत नंबरी ११६ सन् १८८५ ई० बाबत क़वायद तलबी गवाहान व तरतीब रेजिस्टर-	نومبر۔ مزید تاکید تعمیل ہدایت نمبری (۱۱۶) سنہ ۱۸۸۵ء بابت قواعد طلبی گواہان و ترتیب رجسٹر۔	۱۲	۸۱
८२	१२	नोंबर- चराई मवेशी लावारिस का एक नक़्शा माहवारी आया करे-	نومبر۔ چرائی مویشی لاوارث کا ایک نقشہ ماہواری آیا کرے۔	۱۲	۸۲
८३	१४	नोंबर- कायदः तकर्रुरी शहनः व तअल्लुक़दार माल ज़ब्त	نومبر۔ قاعدہ تقرری شحنہ و تعلقدار مال ضبط۔	۱۴	۸۳
८४	१६	फर्वरी- जमीमः हिदायत नंबरी ६३ मजरयः १ मई सन् १८९० ई० बाबत कायदः इजराय डिगरीयात-	نومبر۔ ضمیمہ ہدایت نمبری (۶۳) مجریہ یکم مئی سنہ ۱۸۹۰ء بابت قاعدہ اجرائے ڈگریات۔	۱۶	۸۴
८५	२५	नोंबर- ज़मीमे हिदायत नंबरी ६२ मजरये २० मार्च सन् १८८४ ई० दरबाब तसदीक इकबाल मुलज	نومبر۔ ضمیمہ ہدایت نمبری (۶۲) مجریہ ۲۰ مارچ سنہ ۱۸۸۴ء درباب تصدیق اقبال ملزمان	۲۵	۸۵

७४	६	अकतूबर हंगाम इज़राय डिगरी कब्ज़ माला कलामी की भी मिसिल कार्रवाई खत्त छपी के इजराय इश्तहार का होना चाहिये-	اکتوبر۔ ہنگام اجرائے ڈگری قبض مالا کلامی کی بھی مثل کارروائی خط چھپی کے اجرائے اشتہار کا ہونا چاہیئے۔	۹	۷۴
७४	१२	अकतूबर- जमीमे हिदायत नंबरी (२२) मजरयः १६ मार्च सन् १८९३ ई० व नंबरी (४२) मजरियः ३० मई सन् १८९३ ई० बाबत समाअत नालिशात खवास चेलों के-	اکتوبر۔ ضمیمہ ہدایت نمبری (۲۲) مجریہ ۱۶ مارچ ۱۸۹۳ء و نمبری (۴۳) مجریہ ۳۰ مئی ۱۸۹۳ء بابت سماعت نالشات خواص چیلوں کے۔	۱۲	۷۴
७५	१४	अकतूबर- मुलाजिम की सवारी का चालान मुलाजिम के चालान से अलहदा किया जावे-	اکتوبر۔ ملزم کی سواری کا چالان ملزم کے چالان سے علیحدہ کیا جاوے۔	۱۴	۷۵
७६	२२	अकतूबर- अगर किसी मौके पर ज़रूरत मुआफ़ी कसूर किसी मुलाजिम की हो तो अव्वल महकमः आलियः से बाज़ाबितः मनज़ूरी हासिल कर लेना चाहिये हुक्काम मातहत बतौर खुद बिला मनज़ूरी महकमः आलियः तजवीज़ मुआफ़ी क़सूर नहीं कर सकते-	اکتوبر۔ اگر کسی موقع پر ضرورت معافی قصور کسی ملزم کی ہو تو اول محکمہ عالیہ سے باضابطہ منظوری حاصل کر لینا چاہیئے حکام ماتحت بطور خود بلا منظوری محکمہ عالیہ تجویز معافی قصور نہیں کر سکتے۔	۲۲	۷۶
		——(०)——	——(۰)——		
७७	२५	अकतूबर- बजमीमः कानून इस्टाम्प मजरयः सन् १८९१ ई० बाबत तहरीर तक़सीमनाम	اکتوبر۔ ضمیمہ قانون اسٹام مجریہ ۱۸۹۱ء بابت تحریر تقسیم نامجات	۲۵	۷۷

		जयपुर खारके नाम से-	جے پور کہار کے نام سے-		
६८	२०	अगस्त- तजावीज़ में ऐसे अलफ़ाज़ कि (देखो फ़ुलां नक़्शा या फ़ुलां इज़हार) जो खिलाफ दाब अदालत व नामौज़ूं हैं आयन्दा न लिखे जावें-	اگست- تجاویز میں ایسے الفاظ کہ (دیکھو فلان نقشہ یا فلان اظہار) جو خلاف داب عدالت و ناموزون ہین آیندہ نہ لکھے جاوین-	۲۰	۶۸
६९	११	सितंबर- जिस सीग़े से कि कार्रवाई नीलाम की होती हो उसही सीग़े में अव्वल उज़रदारी भी समाअत हो सक्ती है-	ستمبر- جس صیغہ سے کہ کارروائی نیلام کی ہوتی ہو اوسی صیغہ میں اول عذرداری بھی سماعت ہوسکتی ہے-	۱۱	۶۹
७०	१३	सितंबर- ज़मीमः हिदायत नंबरी २५ मजरयः १४ अगस्त सन १८९३ ई. बाबत तहरीर फ़ैसले मुक़द्दमात-	ستمبر- ضمیمہ ہدایت نمبری (۲۵) مجریہ ۱۴ اگست سنہ ۱۸۹۳ء بابت تحریر فیصلہ مقدمات-	۱۳	۷۰
७१	१३	सितंबर- ज़मीमः हिदायत नंबरी (४९) मजरयः १६ मई सन १८९३ ई० बाबत जुदा २ करने काम जमाखर्च नवीस कलक्टरी व जुडीशियल-	ستمبر- ضمیمہ ہدایت نمبری (۴۹) مجریہ ۱۶ مئی سنہ ۱۸۹۳ء بابت جدا جدا کرنے کام جمع خرچ نویس کلکٹری و جوڈیشیل-	۱۳	۷۱
७२	२७	सितंबर- अगर कोई शख़्स इस्टाम्प मुक़र्ररः से ज़ियादा क़ीमत के काग़ज़ पर तमस्सुक लिखावे मगर उसको बाक़ायदा न छुपावे तो वोह क़ीमत काग़ज़ मुजरा नहीं होगी- और हस्ब क़ायदा उससे तावान लिया जावेगा-	ستمبر- اگر کوئی شخص اسٹام مقررہ سے زیادہ قیمت کے کاغذ پر تمسک لکھاوے مگر اوسکو باقاعدہ نہ چھپاوے تو وہ قیمت کاغذ مجرا نہین ہوگی اور حسب قاعدہ اوس سے تاوان لیا جاوے گا-	۲۷	۷۲

नं०	तारीख	विवरण	تفصیل	نمبر
		बाबत अखज रसूम चाहात वग़ैरह-	بابت اخذ رسوم چاہات وغیرہ-	
६२	७	अगस्त- मीनोंकी काश्तकारी के बैल दादरसी में मुद्दैयान को न दिलाये जावें-	اگست- مینون کی کاشتکاری کے بیل دادرسی مین مدعیان کو نہ دلائے جاوین-	۱۰۶۲
६३	१०	अगस्त- ज़मीमः हिदायत नंबरी (३६) मजरयः ३ जून सन् १८९२ ई० कि बिला इजाज़त महकमः आलियः नीलाममें भी तवायफ़ोंके नाम जायदाद मुन्तकिल नहीं होसक्ती-	اگست- ضمیمہ ہدایت نمبری (۳۶) مجریہ ۳ر جون سنہ ۱۸۹۲ع کہ بلا اجازت محکمہ عالیہ نیلام مین بھی طوایفون کی نام جائداد منتقل نہین ہوسکتی-	۱۰۶۳
६४	१०	अगस्त- अहकाम इजलास जुमले मेम्बरान में सिर्फ़ तारीख तज्वीज़ सीग़े के इन्दराज परही इक्तिफ़ान कियाजावे बल्कि माहस्ल भी इख्तसारके साथ दर्ज हुक्म कियाजाय-	اگست- احکام اجلاس جملہ ممبران مین صرف تاریخ تجویز صیغہ کے اندراج پرہی اکتفا نکیا جاوے بلکہ ماحصل بھی اختصار کے ساتھ درج حکم کیا جاوے-	۱۰۶۴
६५	१०	अगस्त- जमीमः हिदायत नंबरी (६०) मजरयः ५ अगस्त सन् १८९३ ई० बाबत मुक़दमात बरदाफ़रोशी वग़ैरह कि दरजहबदरजः महकमः आलियामें आयाकरें-	اگست- ضمیمہ ہدایت نمبری (۶۰) مجریہ ۵ اگست سنہ ۱۸۹۳ع بابت مقدمات بردہ فروشی وغیرہ کہ درجہ بدرجہ محکمہ عالیہ مین آیا کرین-	۱۰۶۵
६६	१०	अगस्त- कायदा बाबत तरतीब पाना बटवारा व तखमीना जायदाद के-	اگست- قاعدہ بابت ترتیب پانہ بٹوارہ و تخمینہ جائداد کے-	۱۰۶۶
६७	१७	अगस्त- क़वायद वराय इन्सदाद लिये जाने रवारी अज रियासत	۱۷ اگست- قواعد برائے انسداد لئے جانے کہاری از ریاست	۱۰۶۷

नं	तारीख			تاریخ	نمبر
५७	१७	जुलाई- हिदायत दरबाब इंतजाम मफ़रूरी मुलाजिमान ज़ेर तजवीज़-	جولائی- ہدایت در باب انتظام مفروری ملزمان زیر تجویز-	۱۷	۵۷
५८	१९	जुलाई- अगर किसी को डिगरी दखल यावी ज़मीन की मिलकर नातिक होजाय और निसफ़ी ज़मीन का चक मदयून के नाम बंध रहा हो तो इजराय में उसका चक बनाम डिगरीदार मुंतकिल होकर कबजा दिला या जा सक्ता है-	جولائی- اگر کسی کو ڈگری دخلیابی زمین کی ملکر ناطق ہوجاوے اور نصفی زمین کا چک مدیون کے نام بندہ رہا ہو تو اجراء مین اوس کا چک بنام ڈگریدار منتقل ہوکر قبضہ دلایا جاسکتا ہے-	۱۹	۵۸
५९	१	अगस्त- जब किसी जुर्म का वक़ू अअंदर मुसाफ़िरखानः हद्द इस्टेशन रेलवे के हो तो फौजदारी उसकी तहकीकात व समाअत विला इत्तलाव इसतमज़ाज म्हकमः रज़ीडन्सी न किया करें- और म्हकमः आलियः को बिना बर इत्तला लिखा करें-	اگست- جب کسی جرم کا وقوعہ اندر مسافرخانہ حد اسٹیشن ریلوے کے ہو تو فوجداری اوسکی تحقیقات وسماعت بلا اطلاع واستمزاج محکمہ رزیڈنسی نکیا کرین- اور محکمہ عالیہ کو بنابر اطلاع لکھا کرین-	یکم	۵۹
६०	५	अगस्त- मुकदमात बरदाफ़रोशी व नीज जिन मुकदमात में कि म्हकमः आलियः कौन्सिल को इत्तला देना मुनासब व मसलहत हो उनकी इत्तला म्हकमः आलियः को देना चाहिये-	اگست- مقدمات بردہ فروشی ونیز جن مقدمات مین کہ محکمہ عالیہ کونسل کو اطلاع دینا مناسب ومصلحت ہو اونکی اطلاع محکمہ عالیہ کو دینا چاہیے-	۵	۶۰
६१	५	अगस्त- ज़मीमः हिदायत नंबरी (४८) मजरयः १७ जून सन् १८९३ ई०	اگست- ضمیمہ ہدایت نمبری (۴۸) مجریہ ۱۷ جون ۱۸۹۳ء	۵	۶۱

नं०	तारीख़			تاریخ	نمبر
५१	२५	जून- ज़मीमे हिदायत नंबरी २७ मजरयह २६ अपरेल सन् १८९३ ई० बाबत इसके कि अलावे बयनामा व रहिननामा और पुन्य पत्र के जिनकी खत छुपी का कायदा जारी है दीगर वसी के जात रजस्टरी न कीजावे-	جون- ضمیمہ ہدایت نمبری ۲۷ مجریہ ۲۶ اپریل سنہ ۱۸۹۳ء بابت اسکے کہ علاوہ بیعنامہ اور رہن نامہ اور پُن پتر کے جنکی خط چھپی کا قاعدہ جاری ہے دیگر وثیقجات رجسٹری نہ کیجاوے-	۲۵	۵۱
५२	२७	जून- जब नफस मुकद्दमे में जुमले सरदारान अपील की पेशी से तजवीज़ होजाय तो दरख्वास्त नजर सानी में ब इन्तज़ार एक सरदार अपील के जो मौजूद नहीं मुकद्दमा मुल्तवी नहीं रहसक्ता बाक़ी दो सरदार अपील तजवीज़ करसक्ते हैं-	جون- جب نفس مقدمہ میں جملہ سرداران اپیل کی پیشی سے تجویز ہوجائے تو درخواست نظر ثانی میں بانتظار ایک سردار اپیل کے جو موجود نہوں مقدمہ ملتوی نہیں رہ سکتا باقی دو سردار اپیل تجویز کرسکتے ہیں-	۲۷	۵۲
५३	२९	जून- तशरीह तादाद मियाद केद एवज जुरमाना व दादरसी-	جون- تشریح تعداد میعاد قید عوض جرمانہ و دادرسی-	۲۹	۵۳
५४	१	जुलाई- हर हाकिम मुजव्विज़ को मुलजिम का इज़हार मुफ़स्सिल तहरीर करना और उसके उजरात की समाअत करना और सबूत बरयत लेना वाजिब है-	جولائی- ہر حاکم مجوز کو ملزم کا اظہار مفصل تحریر کرنا اور اسکے عذرات کی سماعت کرنا اور ثبوت بریت لینا واجب ہے-	یکم	۵۴
५५	५	जुलाई- ज़मीमः हिदायत नंबरी (४०) सन् १८८७ ई० बाबत शरह कागज इस्टाम्प नक़ूल किराये नामे जात-	جولائی- ضمیمہ ہدایات نمبری (۴۰) سنہ ۱۸۸۷ء بابت شرح کاغذ اسٹامپ نقول کرایہ نامجات-	۵	۵۵
५६	१२	जुलाई- इज़हार परकातिब इज़हार के नाम दर्ज होने की ज़रूरत नहीं-	جولائی- اظہار پر کاتب اظہار کے نام درج ہونیکی ضرورت نہیں-	۱۲	۵۶

नं०	ता०	हिन्दी	اردو	تاریخ	نمبر
		गैरमें भेजेजावें तो फरीकैनकोहिदायत करदी जावे कि वह बज़रये वकील या मुख्तार के इजरीगवाहों का मुनासिब बंदोबस्त करदिया करें-	غیر مین بھیجے جاوین تو فریقین کو ہدایت کردیجاوے کہ وہ بذریعہ وکیل یا مختار کے حاضری گواہون کا مناسب بندوبست کردیا کرین-		
४६	१२	जून- म्हकमः बाला दस्तमें मुराफा होजाने पर मातहत में इजरा मुक़द्मे का नहीं हो सकता-	جون- محکمہ بالادست مین مرافعہ ہوجانے پر ماتحت مین اجراء مقدمہ کا نہین ہوسکتا-	۱۲	۴۶
४७	१७	जून- ज़मीमे हिदायत नंबरी (२१६) मजरयः १६ सितंबर सन् १८८६ ई० बाबत मुराफेजात मुनसफी मुत्ताल्लिके मुख्तारान अदालत दीवानी-	جون- ضمیمہ ہدایت نمبری (۲۱۶) مجریہ ۱۶ ستمبر ۱۸۸۶ء بابت مرافعہ جات منصفی متعلقہ مختاران عدالت دیوانی-	۱۷	۴۷
४८	१७	जून- वह मन्दिर व कोठयात कि जो सरकारी हों उनकी कीमत का तख्मीना होकर ज़र रसूम लिया जावे-	جون- وہ مندر و کوٹھیات کہ جو سرکاری ہون اونکی قیمت کا تخمینہ ہوکر زر رسوم لیا جاوے-	۱۷	۴۸
४९	१७	जून- जब मुफ़लिस को बज़रये डिगरी कुछ रुपया वसूल होजाय तो उसकी हालत अफ़लास बदल जाती है मिस्ल आम मुस्तगीसों के उसको भी इस्टाम्प पर अरायज़ वगैरह पेश करना चाहिये-	جون- جب مفلس کو بذریعہ ڈگری کچھ روپیہ وصول ہوجاوے تو اوس کی حالت افلاس بدل جاتی ہے مثل عام مستغیثون کے اوسکو بھی اسٹام پر عرائض وغیرہ پیش کرنا چاہیئے-	۱۷	۴۹
५०	२२	जून- कायदा बाबत इजराय मुक़द्दमात दख्ल जौजियत-	جون- قاعدہ بابت اجراے مقدمات دخل زوجیت-	۲۲	۵۰

३९	१६	मई- हिदायत दर्बाब जुदाजुदा करने काम जमाखर्च नवीस सीग़े कल्क्टरी व सीग़े जुडीशियल व रखने रोकड़ ज़िम्मेवारी के
४०	२५	मई- दर्बाब अ़ताय अ़ख़्तियारात बेदज़नी मुन्शी जगन्नाथ परशादजी नाज़िम निज़ामत सांभर-
४१	२८	मई- जब मामूली फ़ौती न होतब नाश का मुआयना डाक्टरी ज़रूर कराया जावे-
४२	३०	मई- तहक़ीक़ात व तजवीज़ मुक़द्दमात ग़रक़ीदगी फ़ौतीदगी इत्तफ़ाक़िया में बख़ूबी ग़ौर किया जावे और कोई दक़ीक़ा तनक़ीह व तहक़ीक़ का बाक़ी न रक्खा जावे-
४३	३०	मई- ज़मीमें हिदायत नम्बरी (२२) मजरयः १६ मार्च सन १८९३ ई० मुमानअ़त दरबाब समाअ़त नालिशात तबनियत व सार्टीफ़िकट खवास चेलों के-
४४	६	जून- ज़मीमे हिदायत नंबरी (५१) मजरये ९ मई सन १८८६ ई दर्बारे ग़ैरहाज़री सीलगान मालज़ः और कम होने तजवीज़ निसबत ग़ैरहाज़रान
४५	१०	जून- जब बंदसवाल मयाहैस वास्ते क़लमबंदी शहादत किसी गवाह के बज़रिये ज़ीडंरी इलाक़े

۳۹	۱۶	مئی - ہدایت درباب جدا جدا کرنے کام جمع وخرچ نویس ضمیمہ کلکٹری وضمیمہ جوڈیشیل ورکہنے روکڑ ذمہ داری کے -
۴۰	۲۵	مئی - درباب عطائے اختیارات بیدزنی منشی جگنا تھ پرشاد جی ناظم نظامت سانبہر
۴۱	۲۸	مئی - جب معمولی فوتی نہو تب نعش کا معائنہ ڈاکٹری ضرور کرایا جاوے -
۴۲	۳۰	مئی - تحقیقات وتجویز مقدمات غرقیدگی فوتیدگی اتفاقیہ مین بخوبی غور کیا جاوے اور کوئی دقیقہ تنقیح وتحقیق کا باقی نرکہا جاوے -
۴۳	۳۰	مئی - ضمیمہ ہدایت نمبری (۲۲) مجریہ ۱۶ مارچ ۱۸۹۳ع ممانعت درباب سماعت نالشات تبنیت وسارٹیفکیٹ خواص چیلون کے -
۴۴	۶	جون - ضمیمہ ہدایت نمبری (۵۱) مجریہ ۹ مئی ۱۸۸۶ع دربارہ غیر حاضری سیلگان مالوزہ اور کم ہونے تجویز نسبت غیر حاضران -
۴۵	۱۰	جون - جب بند سوال فیصلے واسطے قلمبندی شہادت کسی گواہ کے بذریعہ زیڈنٹی علاقہ

३३	८	मई - दर्बारे अताय अख़्तियारात बेदजनी हकीम मुखलिसउद्दौला मुन्तज़िम हल्के बांदीकुई -	مئی - دربارہ عطائے اختیارات بیدزنی حکیم مخلص الدولہ منتظم حلقہ باندی کوئی -	۸ر	۳۳
३४	९	मई - नक़ल मुख्तारनामेजात वुकलाय को बाद दर्याफ़्त उस के मवक्कल के इस्टाम्प ॥) पर दी जावे -	مئی - نقل مختارنامجات وکلار کو بعد دریافت اوسکے موکل کے اسٹامپ ۸ر پر دیجاوین -	۹ر	۳۴
३५	१०	मई - जो हुक्म कि मनज़ूरी तलब है उसका इजराय क़बल अज़ सदूर हुक्म मनजूरी किया जाना कितई ममनूय और बेजाब्ता है -	مئی - جو حکم کہ منظوری طلب ہے اوسکا اجرا قبل از صدور حکم منظوری کیا جانا قطعی ممنوع اور بیضابطہ ہے -	۱۰ر	۳۵
३६	११	मई - अताय अख़्तियार बेदज़नी पंडित बैजनाथ जी नाज़िम कोट क़ासिम -	مئی - عطائے اختیارات بیدزنی پنڈت بیجناتھ جی ناظم کوٹ قاسم -	۱۱ر	۳۶
३७	११	मई - ज़मीमे हिदायत नंबरी ६९ मजरयः ४ नवेम्बर सन् १८९१ ई० बाबत अख़्तियार तहक़ीक़ात व तजवीज़ मुक़दमात (६९) नायबान फ़ौजदार व नायब नाज़मान -	مئی - ضمیمہ ہدایت نمبری ۶۹ مجریہ ۴ر نومبر ۱۸۹۱ء بابت اختیار تحقیقات وتجویز مقدمات (۶۹) نائبان فوجدار و نائب ناظمان -	۱۱ر	۳۷
३८	११	मई - ज़मीने हिदायत नंबरी ८३ मजरयः सन् १८९७ ई० कि सिवाय वकील सरिश्ता सज़ायाफ़्ता के अगर कोई शख्स सज़ाययाफ़्ता अपने मुकदमे में पैरवी या किसी कीलर्फ़से मुख्तारकारी करे तो मुमानअत नहीं है -	مئی - ضمیمہ ہدایت نمبری ۸۳ مجریہ ۱۸۹۷ء کہ سوائے وکیل سررشتہ سزایافتہ کے اگر کوئی شخص سزایافتہ اپنے مقدمہ میں پیروی یا کسی غیر سے مختارکاری کرے تو ممانعت نہیں ہے -	۱۱ر	۳۸

२६	१४	अपरेल- कायदा चालान आसामियान अज़ महकमा गीराई व महकमात दीगर-
२७	२६	अपरेल- अलावे बयेनामा और ग्रुम्म पत्र और रहिन नामा के जिसकी खत छूपी का क़ायदा जारी है दीगर वसीक़ेजातकी रजस्टरी न कीजावे-
२८	२६	अपरेल- ज़मीमे हिदायत नंबरी (१८) मजरयः २२ फ़र्वरी सन् १८९३ ई० बाबत चस्पां करने समन व कराने गवाही के-
२९	२९	अपरेल- जिस हाकिम का फैसला मनसूख होकर तजवीज़ सानी के लिये वापिस भेजा जावे वही हाकिम बाद मज़ीद तहक़ीक़ात तजवीज़ का मजाज है मिस्ल का मातहत में भेजना खिलाफ़ कायदे है-
३०	२	मई- कायदा रुखसत अहिलकारान-
३१	४	मई- हिदायत बाबत तरीक़ा इजराय काग़ज़ात मय नमूने रजिस्टर-
३२	७	मई- मुख्तार नामा मुक़द्दमात अदालत दीवानी में क़ब्ल अज़ दायरी मुक़द्दमः तसदीक़ किया जाना ममनूय नहीं है-

اپریل- قاعدہ چالان آسامیان از محکمہ گرانی بر محکمات دیگر-	۱۴	۲۶
اپریل- علاوہ بیعنامہ اور پٹہ بسترا در رہن نامہ کے جسکی خط چھپی کا قاعدہ جاری ہے- دیگر وثیقجات کی رجسٹری نکیجاوے-	۲۶	۲۷
اپریل- ضمیمہ ہدایت نمبری (۱۸) مجریہ ۲۲ فروری ۱۸۹۳ء بابت چسپان کرنے سمن و کرانے گواہی کے-	۲۶	۲۸
اپریل- جس حاکم کا فیصلہ منسوخ ہو کر تجویز ثانی کے لئے واپس بھیجا جاوے وہی حاکم بعد مزید تحقیقات تجویز کا مجاز ہے مثل کا ماتحت مین بھیجنا خلاف قاعدہ ہے-	۲۹	۲۹
مئی- قاعدہ رخصت اہلکاران-	۲	۳۰
مئی- ہدایت بابت طریقہ اجرائے کاغذات معہ نمونہ رجسٹر-	۴	۳۱
مئی- مختارنامہ مقدمات عدالت دیوانی مین قبل از دائری مقدمہ تصدیق کیاجانا ممنوع نہین ہے-	۷	۳۲

नं०	तारीख़	हिन्दी	اردو	تاریخ	نمبر
१८	२२	फ़र्वरी-हिदायत तामील समन	فروری - ہدایت تعمیل سمن -	۲۲	۱۸
१९	२४	फ़र्वरी-हिदायत व नक़्शा कवायद भेजने नक़्शे बिनाबर मुआयना डाकरी-	فروری - ہدایت و نقشہ قواعد بھیجنے نقشہ بنابر معائنہ ڈاکٹری -	۲۴	۱۹
२०	५	मार्च-हिदायत दरबाब मुकाम नालिश-	مارچ - ہدایت درباب مقام نالش -	۵	۲۰
२१	१२	मार्च-बाप बेटे की तरफ़ से और बेटा बाप की तरफ़ से बिला इख़्तियारनामे के किसी मुक़द्दमे में जवाबदेही नहीं कर सकता-	مارچ - باپ بیٹے کی طرف سے اور بیٹا باپ کی طرف سے بلا مختارنامہ کے کسی مقدمہ مین جوابدہی نہین کرسکتا -	۱۲	۲۱
२२	१६	मार्च-चेले व ख़ासों की गोदनशीनी के मुक़द्दमात अदालत में समाअत न किये जावें यह लोग मारफ़त अपने अफ़सर बेड़ के सीगे कलक्टरी में दरख़्वास्त किया करें-	مارچ - چیلہ خواصون کی گودنشینی کے مقدمات عدالتین سماعت نہ کیے جاوین - یہہ لوگ معرفت اپنے افسر بیڑہ کے صیغہ کلکٹری مین درخواست کیا کرین -	۱۶	۲۲
२३	४	अप्रेल-जब मुराफ़ा नामंज़ूर किया जाय तो सिर्फ़ नामंज़ूरी मुराफ़ा ही तजवीज़ में लिखनी काफ़ी है तजवीज़ मातहत का इआदा हुक्म में न किया जाय-	اپریل - جب مرافعہ نامنظور کیا جاوے تو صرف نامنظوری مرافعہ ہی تجویز مین لکھنی ہی کافی ہے تجویز ماتحت کا اعادہ حکم مین نکیا جاوے -	۴	۲۳
२४	५	अप्रेल-क़वायद अख़ज़ ज़मानत मुलाज़मान पुलिस मुतअल्लिके गीरई-	اپریل - قواعد اخذ ضمانت ملازمان پولیس متعلقہ گیرائی -	۵	۲۴
२५	१३	अप्रेल-ज़मीमे हिदायत नंबरी ८८ मजरयः २८ जून सन् १८९० ई० दरबाब सज़ाय बेद	اپریل - ضمیمہ ہدایت نمبری ۸۸ مجریہ ۲۸ جون ۱۸۹۰ء درباب سزاے بید -	۱۳	۲۵

नं॰	हिन्दी	اردو	تاریخ	نمبر
	...उज़रदारी मुतअल्लिके में बज रिये वाहिद मुक़दमात का हवाला दीगर एक तजवीज़ की जाय और उसही की नक़ल हरएक मिसल में शामिल की जाय-	وعذرداری متعلقہ مین بجلسہ واحد مقدمات کا حوالہ دیگر ایک تجویز کی جائے اور اوسی کی نقل ہر ایک مثل مین شامل کیجائے-		
१३	१० फ़र्वरी- दरख्वास्त वापसी जुर्मा ने माफ़ शुदह का नक़्शा हरमा हमें दो पांज़दह रोज़ के हिसाब से आयन्दा महकमः अपील से आया करे-	فروری- درخواست واپسی جرمانہ معاف شدہ کا نقشہ ہر ماہ مین دو پانزدہ روز کے حساب سے آیندہ محکمہ اپیل سے آیا کرے-	۱۰	۱۳
१४	११ फ़र्वरी- ज़मीमे हिदायत नंब री ५३ मजरयः २० सितंबर सन् १८८७ ई॰ बाबत समाअत मु क़दमात ख़फ़ीफ़ा महकमः मुन सफ़ी कि दावी मुतअल्लिक़ बह क़ियत में २५) रु॰ तक की तज वीज़ मुनसिफ़ान नातिक़ नहीं है-	فروری- ضمیمہ ہدایت نمبری (۵۳) مجریہ ۲۰ ستمبر ۱۸۸۷ء بابت سماعت مقدمات خفیفہ محکمہ منصفی کہ دعاوی متعلق حقیت مین (۲۵) تک کی تجویز منصفان ناطق نہین ہے-	۱۱	۱۴
१५	१२ फ़र्वरी- दरख्वास्त मनज़ूरी रुख सत कम अज़ कम एक हफ़्ते पेश तर करनी चाहिये-	فروری- درخواست منظوری رخصت کم از کم ایک ہفتہ پیشتر کرنی چاہیئے-	۱۲	۱۵
१६	१४ फ़र्वरी- ज़मीमः हिदायत नंबरी १० मजरयः ३ फ़र्वरी सन् १८८९ ई॰ बाबत ग़ैरहाज़री मुद्दई व समाअ त नज़र सानी वग़ैरह-	فروری- ضمیمہ ہدایت نمبری (۱۰) مجریہ ۳ فروری ۱۸۸۹ء بابت غیر حاضری مدعی و سماعت نظر ثانی وغیرہ-	۱۴	۱۶
१७	२२ फ़र्वरी- हिदायत दर बाब समाअ त नज़र सानी-	فروری- ہدایت درباب سماعت نظر ثانی-	۲۲	۱۷

नं०	तारीख़	हिंदी	اردو	تاریخ	نمبر
		करें और इससे जियादा रुख़सत की मनज़ूरी म्हकमः आलियासे तलब की जावे -	اور اس سے زیادہ رخصت کی منظوری محکمہ عالیہ سے طلب کیجاوے-		
६	१	फर्वरी - कायदा वसूल फ़ीस मुहरानः रजिस्टरी व सीकेजात कि जिनमें तईयुन मालियत का नहीं होता -	فروری- قاعدہ وصول فیس محرانہ رجسٹری وثیقہ جات کہ جن مین تعین مالیت کا نہیں ہوتا-	یکم	۶
७	१	फर्वरी - हिदायत मुतअल्लिक इजराय डिगरी -	فروری- ہدایت متعلق اجراے ڈگری-	یکم	۷
८	२	फर्वरी - दावा करादिये जाने शादी का बमूजिब जाबते के काबिल समाअत नहीं है -	فروری- دعوی کرادئے جانے شادی کا بموجب ضابطہ کے قابل سماعت نہین ہے	۲	۸
९	६	फर्वरी - नकल जवाब दावा मिस्ल बयान दावी के लेना बे ज़रूरत है	فروری- نقل جوابدعوی مثل بیان دعوی کی لینا بے ضرورت ہے-	۶	۹
१०	६	फर्वरी - मुक़द्दमात मुफ़लिसी में जिस तरह सादे कागज़ पर समाअत दावी होती है इसी तरह मुख़्तार नामा और फ़ीस का कागज़ भी परदेदार औरतों से लिया जाया करे -	فروری- مقدمات مفلسی مین جس طرح سادہ کاغذ پر سماعت دعوی ہوتی ہے اسیطرح مختارنامہ اور فیس کا کاغذ بھی پردہ دار عورتون سے لیاجایا کرے-	۶	۱۰
११	७	फर्वरी - हुक्काम मातहत बिला ज़रूरत ख़ास महकमः आलियः में वास्ते ताकीद या तामील दीगर म्हकमात वगैरह के दरख़्वास्त न किया करें बल्कि बराह रास्त दर्याफ़्त कर लिया करें -	فروری- حکام ماتحت بلا ضرورت خاص محکمہ عالیہ مین واسطے تاکید یا تعمیل دیگر محکمات وغیرہ کے درخواست نکیا کرین- بلکہ براہ راست دریافت کرلیا کرین-	۷	۱۱
१२	८	फर्वरी - मुक़द्दमात सारटीफ़िकट	فروری- مقدمات سارٹیفکیٹ	۸	۱۲

ऐन्डेक्स सीग़े हिदायात अदालतेन बाबत सन् १८९३ ई०

انڈکس صیغہ ہدایات عدالتین بابت سنہ ۱۸۹۳ عیسوی

नं. मुसल्सल	हि. नंबर	ख़ुलासा	خلاصہ	تاریخ	نمبر
		सन् १८९३			
१	८	जनवरी- नक़्ल काग़ज़ात हस्ब शरह नक़्ल अहिकाम पचास रुपया तक के मुक़दमात में ≈ के इस्टाम्प पर और उसके ऊपर।) के इस्टाम्प पर दीजाया करें-	جنوری ۱۸۹۳ء - نقول کاغذات حسب شرح نقول احکام پچاس روپیہ تک کے مقدمات میں ۲/ کے اسٹام پر اور اس کے اوپر ۸/ کے اسٹام پر دیجایا کریں-	۸/	یکم
२	१०	जनवरी- जो लोग बे वक़्त या बिला परमट जंगलात की लकड़ी शहर में लावें उसका इन्तज़ाम दर्बानान दर्वाज़ा रक्खें-	جنوری - جو لوگ بے وقت یا بلا پرمٹ جنگلات کی لکڑی شہر میں لاویں اوسکا انتظام دربانان دروازہ رکھیں-	۱۰/	۲
३	१८	जनवरी- हिदायत दर्बाब रजस्टरी तमस्सुकात जो तहरीर से बाद अर्से के पेश हों-	جنوری ۱۸۹۳ء - رجسٹری تمسکات جو تحریر سے بعد عرصہ کے پیش ہوں	۱۸/	۳
४	२५	जनवरी- जो रुपया आमदनी नक़्लनवीसी से बाद तक़सीम तनख़्वाह नक़्ल नवीसान वग़ैरह बचे वह फ़ौरन जमा ख़ज़ाने किया जावे और एक नक़्शा माहवारी भी इसका आया करे-	جنوری - جو روپیہ آمدنی نقل نویسی سے بعد تقسیم تنخواہ نقل نویسان وغیرہ بچے وہ فوراً جمع خزانہ کیا جاوے اور ایک نقشہ ماہواری بھی اس کا آیا کرے-	۲۵/	۴
		सन् १८९३			
५	१	फ़र्वरी- नक़्ल नवीसों को एक माह तक की रुख़सत हाकिम मुहकमा व अख़्तयार ख़ुद देदिया	فروری ۱۸۹۳ء - نقل نویسان کو ایک ماہ تک کی رخصت حاکم محکمہ باختیار خود دیدیا کریں	یکم	۵
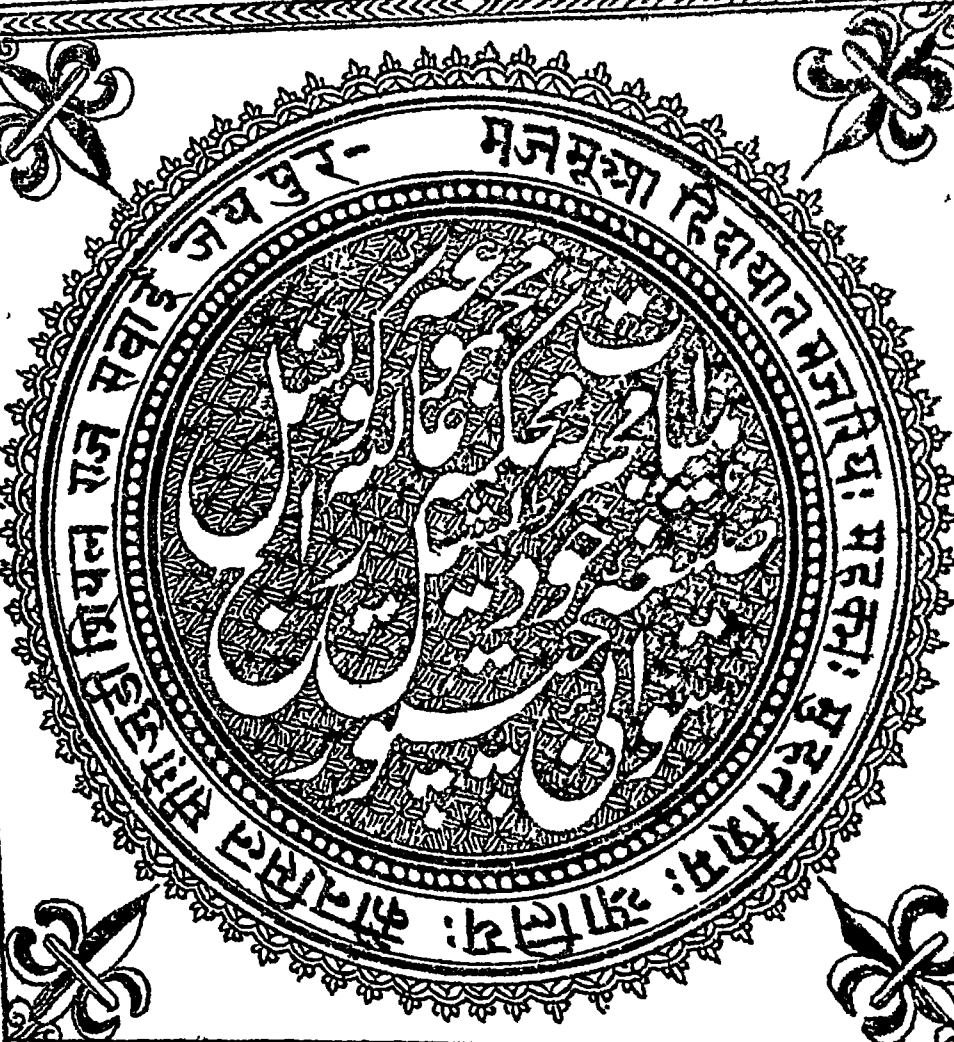
بعہد دولت مہد سری مہاراجہ دھراج راجراجیندر
سری سوائی مادھو سنگھ جی جی سی ایس آئی دام اقبالہ
بموجب حکم محکمہ معتمدہ عالیہ کونسل راج سوائی جیپور مورخہ ۱۱ ماہ اگست سنہ ۱۸۹۴ع
बमूजिब हुक्म — महकमः मुहतमिमः आलियः कौन्सिल
राज सवाई जैपुर मवर्रिखे ११ अगस्त सन १८९४ ई०
ابتداے ماہ جنوری سنہ ۱۸۹۳ع لغایۃ اخیر دسمبر سنہ الیہ
इब्तिदाय माह जनवरी सन १८९३ ई०
लगायत आखिर दिसंबर सन इलैः
راج پریس سوائی جیپور میں ماہ اگست سنہ ۱۸۹۴ع
اہتمام سے منشی محمد اعظم کے چھاپا گیا